आचार्य देव श्री भ्रातृचन्द्रसूरि ग्रन्थमाळा (५५ मुं)

श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागच्छीय

(श्रीपार्श्वचन्द्रसूरि गच्छ)

# श्रीपञ्च प्रतिक्रमण सार्थ

सूरिन्द्रं भ्रातृचन्द्राख्यं दिव्यं स्याद्वादवादिनम् ॥
पदस्थं नयनिष्णातं वन्दे श्रीमुक्तिनन्दनम् ॥१॥

उपदेशक-

जं० यु० प्र० भ०-

पुज्यपाद जैनाचार्यवर्य-

श्रीभ्रातृचंन्द्रसूरिश्वरजीमहाराजसाहेबना-

शिष्यरत्नमुनिराजश्रीप्रसादचन्द्रजीमहाराज

५१) विरमगाम निवासी, शेठ श्री जसराजभाइ मोहनलालना स्मरणार्थे तेमना धर्मपत्नी विधवा बेन छबलबाइ तरफथी.

## अमदावाद सामलानी पोळना माविको तरफथी थयेल मदद

६२) शा. रतिलाल मोकमचंदभाइना तरफथी

५१) शा. पोपटलाल सांकळचंदना स्मरणार्थे तेमना धर्मपत्नी बेन केवळीबाइ तरफथी-

५१) शा. जेशींगभाइ खेमचंदना धर्मपत्नी बेन चंपाबेन तरफथी.

आचार्यश्रीबालचन्द्रसूरि ग्रन्थमाला पुस्तक ५१ मुं

( श्रीपार्श्वचंद्रसूरि गच्छ )

श्रीमन्नागपुरीय बृहत्तपागच्छीय

# श्रीदेवसि-राइप्रतिक्रमणसूत्र

( शब्दार्थ-पदार्थ-विशेषार्थ-फूटनोट-विधि वगेरे अनेक उपयोगी विषयो सहित )

: उपदेशक :

पूज्यआचार्यदेवश्रीसागरचंद्रसूरीश्वरजीना शिष्यरत्न

मुनिश्री वृद्धिचंद्रजी महाराज साहेब.

: द्रव्य सहायक :

शेठ प्राणजीवनदास गुलाबचंदना स्मरणार्थे तेमना पुत्र चीमनलाल तथा शेठ हरिलाल हकमचंदना स्मरणार्थे तेमना भत्रीजा शेठ चीमनलाल वालाभाइ

: प्रकाशक :

शाह गोकलदास मंगलदास (सामळानी पोळ)

वि० सं. १९९८, सन् १९४२ वीर सं. २४६८

प्रथम आवृत्ति अमूल्य प्रति ५००

धी वीरविजय प्रीन्टींग प्रेसमां शा. केशवलाल सांकळचंदे छाप्युं ठे. सलापोस क्रोसरोड—अमदावाद.

# अर्पण पत्रिका

महूंमपरमपूज्य परमोपकारी गुरुराज आचार्यदेव श्रीश्रीश्री १००८ **आतृचंद्रसूरीश्वरजी** महाराज साहेब तथा आचार्यश्रीमद् **सागरचन्द्र सूरीश्वरजी** महाराज साहेब.

जेओए पोताना चारित्रवडे, जगज्जीवोना अंतःकरणने सुवासित करीने, पोतानी अमृतमय वाणीथी अमारा जेवा अनेक जीवोने आनंद पमाडी, उत्तम देहथी, परोपकारादि उत्तम कार्य साधी, विद्वत् शिरोमणि सकलशास्त्र पारगामी, समता अने क्षमाना समुद्ररूप थइ, जगतनी अंदर निर्मल यशने अचल स्थापी, प्रातःस्मरणीय आपश्रीजी स्वर्गवासी थया, ते उक्त आपना अनेक गुणोथी आकर्षाइने, आपना अमर आत्माने, आ लघु पुस्तक समर्पण करीए छीए.

ली. **वृद्धिचंदजी**

# प्रस्तावना

प्रभाते अने सांजे अवश्य करवा जेवुं तेने आवश्यक कहे छे. अने तेने ज प्रतिक्रमण कहे छे. आत्माना विकासने लक्ष्यमां लइने जो प्रत्येक क्रियाओ करवामां आवे तो सम्यक्त्व, चारित्र वगेरे गुणोनी शुद्धि थतां ते करनार मोक्ष मेळवी शके छे माटे आ आवश्यक क्रियाने शास्त्रमां आध्यात्मिक क्रिया कही छे.

आ क्रिया पांच प्रकारे कही छे. दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चौमासिक अने सांवत्सरिक. ज्यारे अहीं प्रथमनी बेज बतावत्रामां आवी छे.

१ सामायिक, २ चतुर्विंशतिस्तव, ३ वांदणां, ४ प्रतिक्रमण, ५ कायोत्सर्ग, अने ६ प्रत्याख्यान आ छ अध्ययनरूप होवाथी प्रतिक्रमणना छ आवश्यक छे.

उपर्युक्त सामायिक आदिनो अर्थ सामान्य रीते विचारतां जणाय छे के, आ आवश्यक क्रिया करवाथी आश्रवनो निरोध थतां, संवरनी प्राप्ति अने तृष्णानो नाश थाय छे अने तेटलो वखत अवश्य समभाव प्रकट थतां, अनुक्रमे ते क्रिया करनार मनुष्य मुक्ति मेळवी शके छे.

आ ग्रन्थना मुख्य आश्रयदाता सेवाभावी मुनिश्री **विद्याचंदजी** महाराजना सदुपदेशथी बीकानेर निवासी शेठ श्रीमान् बाबू **हजारीमलजी नथमलजी संपतलालजी, मूळचंदजी** रामपुरीयाए तेमनां छपातां पुस्तक उपरथी ५००) कोपी वधारे काढवानी अनुमति आपवा माटे

तथा **मुनिश्रीवृद्धिचंदजी महाराजना** सदुपदेशथी खंभातनिवासी, **शेठ चीमनलाल प्राणजीवनदास** तथा **शेठ चीमनलाल बालाभाइ अमदावाद निवासीनो पण** आभार मानवामां आवे छे.

आ ग्रंथनी प्रेस कोपी अने छपातां तेना प्रुफो मननपूर्वक जोइ जवा माटे तथा संपादन कार्य माटे भावनगर निवासी व्याकरणतीर्थ—वैयाकरणभूषण **पंडित अमृतलाल मोहनलाल संघवीने** तथा तेमने केटलीक मौलिकसलाह आपवा बदल पूज्य मुनिराज श्री **लाभचंद्रजी** महाराजसाहेब तथा सुशीलभाइ सुमतिचंद मंगलदासे प्रुफ जोवामां मदद करी छे ते बदल अहीं तेओने तथा शा. वाडीलाल लल्लुभाइ वगेरेने धन्यवाद आपवामां आवे छे.

आ ग्रन्थमां अन्य जे जे भाइओए मदद आपी छे तेओनो आभार मानवामां आवे छे.

प्रमादवश के दृष्टिदोषथी या प्रेसदोषथी शास्त्रविरुद्ध कंइ पण लखाण थयुं होय तेनो त्रिविधे मिच्छामि दुक्कडं दइए छीए.

**श्री**

**पार्श्वचंद्र गच्छीय उपाश्रय**
**वीर संवत् २४६८**
**शामळानी पोळ—अमदावाद**

**प्रकाशक**

स्वर्गस्थ परमपूज्य जैनाचार्य
श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वरजी महाराज.

जन्म : सं. १९२०
वांकडीया वडगाम-मारवाड.
दीक्षा : सं. १९३५ फा. सु. २.
विरमगाम.

सूरिपद : सं. १९६७ वै.
सु. १३ सीवगंज.
स्वर्गवास : १९७२
वै. वदी ८ अमदावाद.

# अनुक्रमणिका


| विषय | पृष्ठांक. |
|---|---|
| नमस्कार मंत्र. | १ |
| पंचिंदिय. | १३ |
| इच्छामि खमासमण | १५ |
| इरियावहियं. | १६ |
| तस्स उत्तरी. | २३ |
| अन्नत्थ ऊससिएणं. | २५ |
| लोगस्स–नामस्तव | ३२ |
| पडिलेहणाना ५० बोल. | ५० |
| (करेमिभंते) | ५२ |
| सुगुरुवंदन. | ५८ |
| चैत्यवंदन (एस–करेमि) | ७३ |
| अन्नाण कोह. | ८२ |
| सिरिरिसहेसरनो थुइ | ९० |
| जं किंचि. | ९३ |
| नमुत्थुणं वा शक्रस्तव. | ९५ |
| इच्छामि ठामि | १०५ |
| अतिचारनी आठ गाथा. | १०९ |
| सातलाख. | ११९ |
| अढार पापस्थानक. | १२१ |
| चारविकथा. | १२२ |
| सव्वस्सव. | १२२ |
| चत्तारिमंगलं. | १२३ |
| वंदित्तु (श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र) | १२४ |

| विषय | पृष्ठांक. |
|---|---|
| अब्भुट्ठिओ. | ११८ |
| आयरिय उवज्झाए. | १९१ |
| सव्वलोए अरिहंत चेइआणं. | १९३ |
| पुक्खरवरदीवड्ढे. | १९४ |
| सिद्धाणं बुद्धाणं. | १९९ |
| इच्छामोऽणुसट्ठिं नमो० | २०३ |
| नमोदुर्वार रागादि. | २०३ |
| शांतिनाथजीनुं स्तवन | २०६ |
| जय वीयराय. | २०८ |
| विनयनी सज्झाय. | २१२ |
| चउक्कसाय. | २१५ |
| जावंति चेइआइं. | २१७ |
| जावंत केविसाहू. | २१८ |
| उवसग्गहरं स्तोत्र. | २१९ |
| सामाइय वयजुत्तो. | २२४ |
| **अथ राइप्रतिक्रमण विधि** | **२२७** |
| जगचिंतामणि चैत्यवंदन. | २२७ |
| भरहेसर बाहुबलीनी सज्झाय | २३५ |
| छमासी तपचिंतवणा. | २४० |
| तीर्थमाला. | २४१ |
| चैत्यवंदन–विशाललोचनदलं | २४६ |
| वीस विहरमाण जिन स्तुति. | २४९ |

| विषय | पृष्ठांक. |
|---|---|
| श्री समेतशिखरजीनुं स्तवन. | २५३ |
| साधुजीने चौद प्रकारना दाननी निमंत्रणा | २५६ |
| श्री सरस्वती–श्रुतदेवीनी स्तुति | २५६ |
| चैत्यवंदन करनेकी विधि. | २५७ |
| गुरुवन्दन करेनेकी विधि. | २५७ |
| सामायिक लेनेकी विधि | २५८ |
| सामायिक पारनेकी विधि | २५८ |

**पच्चक्खाण**

| | |
|---|---|
| नवकारसिनुं पच्चक्खाण | २५९ |
| पोरसिनुं ,, | २५९ |

| विषय | पृष्ठांक. |
|---|---|
| सिद्धचक्रनुं चैत्यवंदन–१ | २५९ |
| सिद्धाचळजीनुं. ,, | २५९ |
| श्रीशांतिनाथनुं. ,, | २५९ |
| श्री जिनप्रतिमा स्थापन स्तुतिः | २६० |
| श्री नवपद स्तवन. | २६१ |
| श्री शत्रुंजय स्तवन | २६१ |
| श्री शांतिनाथजीनु ,, | २६२ |
| ज्ञान पंचमीनी सज्झाय | २६२ |
| श्री पार्श्वचन्द्रसूरिनो छंद | २६३ |
| ,, ,, | २६४ |
| ,, ,, | ,, |
| आचार्य श्री सागरचन्द्रसूरिजीनो छंद | ,, |


## युगप्रधान श्रीपार्श्वचन्द्रसूरि दादाका छंद

सूरिपार्श्वचन्द्र हुवा अवतारी । जस नामतणी महिमा भारी ॥ कष्ट टले मिटे तापतणो । पूज्य दादाजीरो आपजपो ॥ १ ॥ पूज्य नामे सब कष्टटले ॥ वलि भूत प्रेत तो नाहि छले । मिले न चोर होय गप्पचपो ॥ पू० ॥ २ ॥ लक्ष्मी दिनदिन वधजावे । ओर दुख नेडो तो नहि आवे ॥ व्योपारमें होवे बहुत नफो ॥ पू० ॥ ३ ॥ अडयो काम तो होइ जावे । वलि बिगडयो काम तो बनजावे ॥ भूल चूक नहि खाय डफो ॥ पू० ॥ ४ ॥ राजकाजमें तेज रहे । वलि खमा खमा सबलोक कहे ॥ आछिजायगा जाय रूपो ॥ पू० ॥ ५ ॥ पूज्य नामतणो जिण लियो ओटो । तस कदे नहि आवे तोटो ॥ घर घर बारणे कांइ तपो ॥ पू० ॥ ६ ॥ एक माला नित्य नेम रखो । किण वात तणो नहि होय धको ॥ खालि विमान ओर टले जीसपो ॥ पू० ॥ ७ ॥ स्व गच्छतणी प्रतिपाल करे । मुनिराम सदा तुम ध्यान धरे । कोइ प्रत्यक्ष वात मति उथपो ॥ पू० ॥ ॥ ८ ॥ इति ॥ ओं ह्रीँ श्री पार्श्वचन्द्रसूरिसद्गुरुभ्यो नमः ।

## ॥ श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिषट्पदी-स्तवनम् ॥

" व्रजराज आज सांवरो बंसी बजा गयो " इत्यनेन रागेण गीयते.

श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिराजमर्थदायकं ।
भजस्व हे सखे ! गुरुं विरागिनायकम् ॥ ढेर ॥
संसारमेतमुज्झितुं समीहसे यदा ।
मुक्तिं च यातुमिच्छसि प्रमोदतस्तदा ॥ श्रीभ्रातृ० ॥ १ ॥
प्रवेशमीहसे यदा धियो निवेशने ।
तदा मनः प्रसारयेर्ममोपदेशने ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ २ ॥
करालकाल एष संनिधौ समागतः ।
किमीक्षसे विनश्वरं फलं हि रागतः ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ३ ॥
विहाय कर्म शास्त्रमर्म धर्मकर्मणे ।
ग्रहीतुमीहसे यदा तदा सुशर्मणे ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ४ ॥
श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिराजवंशदीपकं ।
सुमुक्तिराजधानिकाध्वनः [1]समीपकम् ॥ श्रीभ्रातृ० ॥ ५ ॥
तपःप्रकर्षनिर्जितोरुपञ्चसायकं ।
महानिदेशनासुधारसप्रदायकम् ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ६ ॥
नित्यानन्देन रचिता भाईलालेन गापिता ।
आचार्यभ्रातृचन्द्रस्य षट्पद्यास्तां मुखाम्बुजे ॥ श्रीभ्रातृ० ॥ ७ ॥

---

१ समीपयतीति समीपकस्तं—मुक्तिराजधान्याः सामीप्यदर्शकम्.

सर्व तीर्थंकरोना माता पिता विगेरे संबंधी संक्षिप्त हकीकत जाणवा माटे नीचेनो कोठो आप्यो छे.—

| तीर्थंकर नाम. | पिता. | माता. | जन्मस्थान | लांछन | शरीरमान. | वर्ण. | आयुष्य. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ ऋषभदेव | नाभि | मरुदेवा | अयोध्या | वृषभ | ५०० धनुष | सुवर्ण | ८४ लाखपूर्व |
| २ अजितनाथ | जितशत्रु | विजया | अयोध्या | हस्ती | ४५० धनुष | सुवर्ण | ७२ लाखपूर्व |
| ३ संभवनाथ | जितारि | सेना | श्रावस्ति | अश्व | ४०० धनुष | सुवर्ण | ६० लाखपूर्व |
| ४ अभिनंदन | संवर | सिद्धार्था | अयोध्या | वानर | ३५० धनुष | सुवर्ण | ५० लाखपूर्व |
| ५ सुमतिनाथ | मेघरथ | सुमंगला | अयोध्या | क्रौंच | ३०० धनुष | सुवर्ण | ४० लाखपूर्व |
| ६ पद्मप्रभ | श्रीधर | सुसीमा | कौशांबी | पद्म | २५० धनुष | रक्त | ३० लाखपूर्व |
| ७ सुपार्श्वनाथ | सुप्रतिष्ठ | पृथ्वी | काशी | स्वस्तिक | २०० धनुष | सुवर्ण | २० लाखपूर्व |
| ८ चंदप्रभ | महासेन | लक्ष्मणा | चंद्रपुरी | चंद्र | १५० धनुष | श्वेत | १० लाखपूर्व |
| ९ सुविधिनाथ | सुग्रीव | रामा | काकंदी | मकर | १०० धनुष | श्वेत | २ लाखपूर्व |
| १० शीतलनाथ | दृढरथ | नंदा | भद्दिलपुर | श्रीवत्स | ९० धनुष | सुवर्ण | १ लाखपूर्व |
| ११ श्रेयांसनाथ | विष्णुराज | विष्णु | सिंहपुर | गेंडो | ८० धनुष | सुवर्ण | ८४ लाखवर्ष |
| १२ वासुपूज्य | वसुपूज्य | जया | चंपा | पाडो | ७० धनुष | रक्त | ७२ लाखवर्ष |
| १३ विमलनाथ | कृतवर्म | श्यामा | कंपिलपुर | भुंड | ६० धनुष | सुवर्ण | ६० लाखवर्ष |
| १४ अनंतनाथ | सिंहषुन | सुयशा | अयोध्या | सिंचाणो | ५० धनुष | सुवर्ण | ३० लाखवर्ष |
| १५ धर्मनाथ | भानु | सुव्रता | रत्नपुर | वज्र | ४५ धनुष | सुवर्ण | १० लाखवर्ष |
| १६ शांतिनाथ | विश्वसेन | अचिरा | हस्तिनापुर | मृग | ४० धनुष | सुवर्ण | १ लाखवर्ष |
| १७ कुंथुनाथ | सूर | श्री | हस्तिनापुर | बकरो | ३५ धनुष | सुवर्ण | ९५ हजारव. |
| १८ अरनाथ | सुदर्शन | देवी | हस्तिनापुर | नंदावर्त | ३० धनुष | सुवर्ण | ८४ हजारव. |
| १९ मल्लिनाथ | कुंभ | प्रभावती | मिथिला | कुंभ | २५ धनुष | नील | ५५ हजारव. |
| २० मुनिसुव्रत | सुमित्र | पद्मा | राजगृह | काचबो | २० धनुष | कृष्ण | ३० हजारव. |
| २१ नमिनाथ | विजय | वप्रा | मिथिला | नीलकमल. | १५ धनुष | सुवर्ण | १० हजारव. |
| २२ नेमिनाथ | समुद्रवि | शिवा | शौरिपुर | शंख | १० धनुष | श्याम | १ हजारव. |
| २३ पार्श्वनाथ | अश्वसेन | वामा | काशी | सर्प | ९ हाथ | नील | १०० वर्ष. |
| २४ वर्धमान-स्वामी | सिद्धार्थ | त्रिशला | क्षत्रियकुंड | सिंह | ७ हाथ | सुवर्ण | ७२ वर्ष. |

श्रीपार्श्वप्रभुपादपद्ममधुलिड्जातः सदा सेवया
श्रीजैनेन्द्रमुखाब्जनिस्सृतवचोविस्तारित श्रेयसे ॥
संसाराब्धिनियामकं बुधवरं देवैः सुसंपुजितम् ।
तं सूरिं सुखदं भजे गुरुवरं चंद्रोत्तरं सागरम् ॥

सं १९४३
भाडिया
सं १९५८
ंभात

परमपूज्य शासनमान्य आगमरहस्यवेदी आचार्यदेव
श्री भ्रातृचंद्र सुरीश्वरजीना पट्टधर शिष्य आचार्य
देवश्री १००८ श्री सागरचंद्र सुरीश्वरजी साहेब.

आचार्य प
सं १९९
अमदावाद.
स्वर्ग सं १९
धांगध्रा.

## आचार्य श्रीसागरचंद्रसूरिगुरुगुणाष्टकम्–

योऽपांसुलैर्मुनिवरैरपि माननीयो–विज्ञानदानकरणेन वदान्यभूमा । दुष्टेन्द्रियाश्वदमनेन धुरीणदान्तो जैनान्शुभं दिशतु सागरचन्द्रसूरिः ॥ १ ॥ मानापमानविजयेन सदैव शान्तः शास्त्रार्थपारगमनेन नितान्तधीरः । आत्मीयधर्मपरिरक्षणजागरूकः, पायात्स सागरमुनिर्भविनो भवाब्धेः ॥ २ ॥ सत्यादिभिक्षुकमहाव्रतपालनोत्कः सद्भावभावितमनाः समभावशाली । षड्जीवरक्षणविधिप्रथिताभिधेयो, भूयाद्भवाब्धितरणे स मुनिस्तरीव ॥ ३ ॥ कर्माष्टकेन्धनकभस्मविधानदक्षो–वैराग्यवाससुरभीकृतदिक्प्रदेशः । त्यागेन साधुजनकीर्तितत्यागिशब्दो–जैनान्सदावतु स सागरचन्द्रसूरिः ॥ ४ ॥ यः शास्त्रसागरविलोडनदेवतेन्द्रो–निष्कास्य ज्ञानममृतं पिबति प्रमोदात् । आचार्यसर्वगुणभृद्यतिधर्मपालो–जैनेन्द्रशासनमणिर्जयतान्मुनीशः ॥ ५ ॥ विज्ञातपाणिनिमहामुनिशास्त्रसारः, काणादशासनविगाहनलब्धबोधः । साहित्यसाररसनिर्झरमज्जनोत्को, जीयात्स सागरमुनिर्भवपाशछेत्ता ॥ ६ ॥ योऽनेकदुर्गमवितर्कविनाशदक्षो, वन्दारुजैनसुजनस्य स कल्पवृक्षः । भक्त्यब्धिवृद्धिकरणे शरदिन्दुकल्पो, भूयादलं मुनिवरो जिनधर्मपुष्ट्यै ॥ ७ ॥ बीजं जिनेन्द्रनिहितं भुवि भारतेऽस्मिन्, उद्गच्छदङ्कुरयुतं गणपा अकार्षुः । तज्जातधर्मविटपी बहुपर्णशाखः, पोषं नयत्यनुदिनं मुनिरेष तं च ॥ ८ ॥

## परमपूज्य मुनि महाराजश्री जगतचन्द्रजी गणिनुं अष्टक

( शिखरिणीवृत्तम् )

सदा शान्तं दान्तं भविजनमनोऽलेः सुकमलम् ।
ददानं सम्यक्त्वं भवजलधिपाराय कृतिने ॥
सुधावाचासज्ञान् शिवपदपथान् संविदधतम् ।
जगच्चन्द्रं वन्दे जितमदरिपुं तं गणिवरम् ॥ १ ॥

नवो जातश्चन्द्रो जगति सुखदः कोऽपि मुनिपो ।
यशोभिर्विख्यातो जित-मदन-मोहादिकलहः ॥

अजस्रं यो वीरप्रभुचरणपद्मे मधुकरः ।
जगच्चन्द्रं वन्दे जितमदरिपुं तं गणिवरम् ॥ २ ॥

अपारे संसारे तरणिरिव सन्तारकुशलः ।
गभीरेणाब्धि योऽजयदनघकल्याणसुखदः ॥
सदा रक्तः पद्मे मधुप इव सुभ्रातृचरणे ।
जगच्चन्द्रं वन्दे जितमदरिपुं तं गणिवरम् ॥ ३ ॥

चकार श्रीपार्श्वप्रभु-गुणगणै-र्योऽतिविमलां ।
कथां सम्पद्दात्रीं भवभयहरां मुक्तिजननीम् ॥
अहंकाराद्रिं यः क्षणमपि बिडौजाः स्म जयति ।
जगच्चन्द्रं वन्दे जितमदरिपुं तं गणिवरम् ॥ ४ ॥

तमोहन्त्रीं यस्य भक्तिमधुरां भव्यसुखदां ।
कथां पीत्वा लोकोऽमृतमपि च पातुं न यतते ॥
सदा भास्वत्तुल्यो जनहृदयपद्मं विघटितुम् ।
जगच्चन्द्रं वन्दे जितमदरिपुं तं गणिवरम् ॥ ५ ॥

मुनिर्विद्याचन्द्रो निजसुत इवाभूत् सहचरः ।
स्वभावं यस्यैतं शशिन इव दृष्ट्वा सुखकरम् ॥
सदानन्दं दाता निरुपमयशा यो दुरितहृत् ।
जगच्चन्द्रं वन्दे जितमदरिपुं तं गणिवरम् ॥ ६ ॥

महामोहस्तम्बेरम-हननकर्त्ता हरिवरः ।
सदा सङ्घैः पूज्यो दिनकर इवाभूत् प्रियवरः ॥
जिनेशोक्ते धर्मे शिवयुवतिसङ्गाय यतते ।
जगच्चन्द्रं वन्दे जितमदरिपुं तं गणिवरम् ॥ ७ ॥

जितान्तः-शत्रुर्वै बुधजनशरण्यो मुनिवरो ।
भजन् यो देवेशाश्रितचरणपद्मं जिनवरम् ॥
गतः स्वर्गं कल्पद्रुरिव मुनिलाभाय सुखदः ।
जगतच्चन्द्रं वन्दे जितमदरिपुं तं गणिवरम् ॥ ८ ॥

स्वर्गस्थ परम पूज्य तपस्वी
मुनिमहाराज श्रीजगतचंद्रजी गणी (बावाजी)

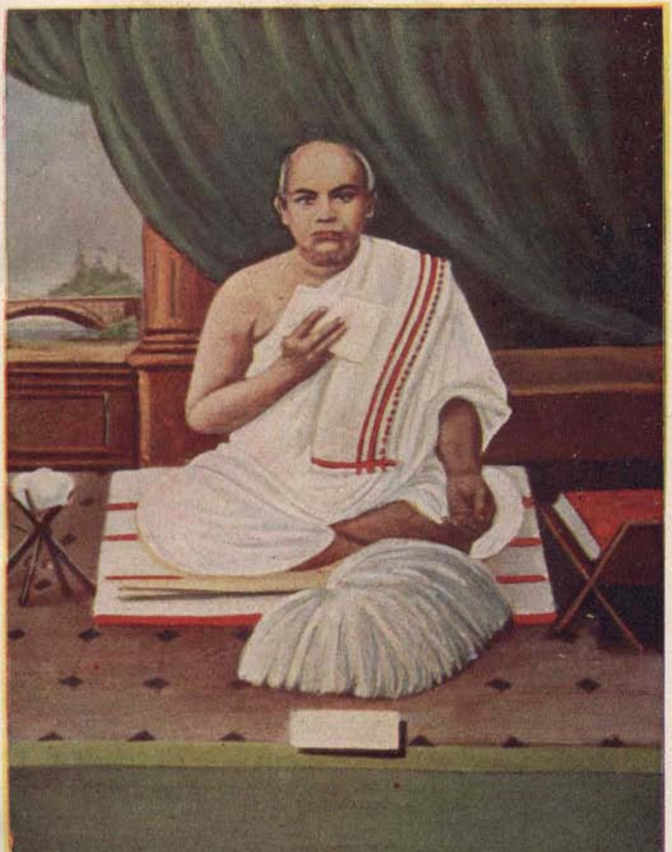

जन्म : सं. १९३५ देशलपुर, दीक्षा : सं. १९५५ कच्छ-अंजार
स्वर्गस्थ : सं. १९९७ वै. शु. ४ बुध. उनावा.

| विषय | पृष्ठांक. |
|---|---|
| चतुर्विंशति-जिन-अर्हत चैत्यवंदन | २५७ |
| श्री महावीरस्वामिनी स्तुति | २९३ |
| श्रावक पाक्षिकादि अतिचार | ३०१ |
| पुढवाइसु पत्तेयं | ३५१ |
| अजितशांति स्तवन | ३५५ |
| पक्खि सज्झाय | ४०१ |
| चोमासी प्रतिक्रमण विधि | ४०२ |
| सांवत्छरिक ,, ,, | ४०२ |
| पोसह विधि | ४०३ |
| पोसहनुं पच्चक्खाण | ४०३ |
| सवारना पडिलेहण विधि | ४०४ |
| अरहंदेवोनी सज्झाय | ४०५ |
| देववंदन विधि | ४०६ |
| चैत्यवंदन | ४०६ |
| जिनेन्द्र स्तुति | ४०८ |
| पच्चक्खाण पारवानी विधि | ४०९ |
| ,, ,, गाथा | ४१० |
| सांजना पडिलेहण विधि | ४११ |
| मांडला | ४१२ |
| राइ संथारा विधि | ४१४ |
| संथारा पोरिसि | ४१४ |
| पोसह पारवानी गाथा | ४१८ |
| पच्चक्खाण पच. | ४१९ |
| पुरिमड्ढ अवड्ढ ,, | ४१९ |

| विषय | पृष्ठांक |
|---|---|
| एकासणा बियासणानु ,, | ४१९ |
| आयंबिलनु ,, ,, | ४२० |
| तिविहार उपवासनु ,, | ४२० |
| चउविहार ,, ,, | ४२१ |
| पाणहारनु ,, | ४ ,, |
| चउविहारनु ,, | ४ ,, |
| तिविहारनु ,, | ४ ,, |
| दुविहारनु ,, | ४ ,, |
| चउद नियमनु ,, | ४ ,, |
| मुठ्ठिसहियं गंठ्ठसहियंनु ,, | ४२२ |
| देशावगाशिक ,, | ४ ,, |
| श्री आदि-अजितशांति स्तवन | ४ ,, |
| शांतिनाथ स्तवन ,, | ४२३ |
| श्री पार्श्वनाथनु ,, | ४ ,, |
| श्री पार्श्वनाथ मंत्रगर्भित ,, | ४२४ |
| ,, ,, ,, | ४ ,, |
| श्री जगडीआ मंडन ,, | ४२५ |
| श्री जिनेन्द्र ,, | ४ ,, |
| श्री सद्गुरुनी स्तुति | ४२६ |
| श्री भ्रातृचंन्द्र सूरीश्वरजीनो छंद | ४२७ |
| आ० दे० श्री भ्रातृचन्द्रसूरीश्वर गुणनी सज्झाय | ४२८ |
| ,, सागरचन्द्रसूरि स्तुति | ४३० |
| ,, ,, ,, ,, | ४३१ |
| स्व. मु. श्री जगतचन्द्रजीगणीनी स्तुति | ४३२ |

# शुद्धिपत्रक

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| ८ | ६ | अंत | अनंत |
| ३४ | १४ | राणा | राणी |
| ६५ | ४ | आसाययाए | आसायणाए |
| ८२ | ४ | थाओ | हुओ |
| ८२ | ५ | जे | जेणे |
| ८२ | ६ | थया बतावे छेः– | हुआ कहेवा |
| ९० | २१ | मनहारी | मनोहारी |
| ९१ | १५ | जगह | जगही |
| १११ | १४ | त्राजो गाथा डबल छे एकवार बोलवी | |
| ११६ | १३ | उळोदरी | उणोदरी |
| १९२ | २३ | चार नवकार | आठ नवकार |
| १९९ | ७ | परंपरागयाणं | परंपरगयाणं |
| २४१ | २० | विपुलगिरि० | विपुलगिरि वैभारगिरि |
| २५९ | २० | आद्रा | आर्द्रा |
| २६० | २ | मण्ड | मण्डन |
| २६५ | १५ | ० जेयल | ० जेयबलः |
| २६५ | १६ | समहार० | समाहार० |
| २६७ | ९ | प्राप्तुवन्तः | प्राप्तवन्तः |
| २६८ | ११ | यानसदृशाः | यानयानसदृशाः |
| २७२ | १ | शंखवत् | शंखवन् |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २७२ | १४ | उज्झित० | उज्झित० |
| २७४ | १२ | द्वादशमं | द्वादशं |
| २८१ | २ | संहननंः | संहननं |
| २८४ | १६ | समिचीना | समीचीना |
| २८४ | २० | १८४ | १८० |
| २८७ | ८ | उत्तरः | उत्तरम् |
| २८८ | १० | ना-मनुष्यने | न-नहीं |
| २९६ | १९ | ० डुद्योत | ०डुद्योत |
| ३२४ | १५ | स्वदारासंतोष० | स्वदारासंतोष परदारा- |
| ३२७ | १२ | दो० | दोष |
| ३३४ | ८ | पर | परे |
| ३४० | ११ | भूके | मूके |
| ३६६ | २ | गय-हाथ | गय-हाथी |
| ३६७ | १७ | विधानमां | निधानमां |
| ३७७ | ८ | विण-नियम | विण-विनय |
| ३९१ | २ | पूर्वक० | पूर्वक जेमणे प्रभुना सुंदर गतिवाला बे पगोने वारंवार |
| ४०३ | ७ | खमासभण | खमासमण |
| ४०४ | २४ | अरहंदेवीनी | अरहंदेवोनी |
| ४०५ | १० | सम्मत्तमि | संमत्तंमि |
| ४१० | १० | आहाराहियं | आराहियं |
| ४११ | २५ | प्रभुख | प्रमुख |

# पच्चक्खाणनो कोठो·

ता. १ थी १६ सुधीनु अंतर काढीने पच्चक्खाणनो समय पारवो.

नीचेनो कोठो अमदावादना टाइम प्रमाणे छे. बहारगामवाळाए

५ मीनीट उमेरीने पच्चख्खाण पारवुं.

| मास | | सू. उ. | सू. अ. | नवका. | पोरिसी | साठ पो. | पुरिमड्ढ. | अवड्ढ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | क. मि. | क. मि. | क. मि. | क. मि. | क. मि. | क. मि. | क. मि. |
| जान्यु | १ | ७–२१ | ६–५ | ८–१० | १०–३ | ११–२४ | १२–४४ | ३–२५ |
| ,, | १६ | ७–२५ | ६–१५ | ८–१३ | १०–८ | ११–२९ | १२–५० | ३–३३ |
| फेब्रुआरी | १ | ७–२१ | ६–२७ | ८–९ | १०–८ | ११–३१ | १२–५४ | ३–४१ |
| ,, | १६ | ७–१३ | ६–३६ | ८–१ | १०–४ | ११–३० | १२–५५ | ३–४६ |
| मार्च | १ | ७–४ | ६–४२ | ७–५२ | ९–५९ | ११–२६ | १२–५३ | ३–४८ |
| ,, | १६ | ६–५० | ६–४८ | ७–३८ | ९–५० | ११–२० | १२–४९ | ३–४९ |
| एप्रील | १ | ६–३४ | ६–५४ | ७–२२ | ९–३९ | ११–१२ | १२–४४ | ३–४९ |
| ,, | १६ | ६–२० | ७–० | ७–८ | ९–३० | ११–५ | १२–४० | ३–५० |
| मे | १ | ६–८ | ७–६ | ६–५६ | ९–२३ | ११–० | १२–३७ | ३–५२ |
| ,, | १६ | ६–० | ७–१३ | ६–४८ | ९–१९ | १०–५८ | १२–३७ | ३–५५ |
| जुन | १ | ५–५५ | ७–२० | ६–४३ | ९–१७ | १०–५८ | १२–३८ | ३–५९ |
| ,, | १६ | ५–५४ | ७–२६ | ६–४२ | ९–१७ | १०–५९ | १२–४० | ४–३ |
| जुलाइ | १ | ५–५८ | ७–२९ | ६–४३ | ९–२१ | ११–३ | १२–४४ | ४–७ |
| ,, | १६ | ६–४ | ७–२७ | ६–५२ | ९–२५ | ११–६ | १२–४६ | ४–७ |
| ऑगष्ट | १ | ६–११ | ७–२१ | ६–५९ | ९–२९ | ११–८ | १२–४६ | ४–४ |
| ,, | १६ | ६–१७ | ७–११ | ७–५ | ९–३१ | ११–८ | १२–४४ | ३–५८ |
| सप्टे | १ | ६–२३ | ६–५७ | ७–११ | ९–३२ | ११–६ | १२–४० | ३–४९ |
| ,, | १६ | ६–२७ | ६–४२ | ७–१५ | ९–३१ | ११–३ | १२–३५ | ३–३९ |
| ऑकटो. | १ | ६–३३ | ६–२७ | ७–२१ | ९–३२ | ११–१ | १२–३० | ३–२९ |
| ,, | १६ | ६–३८ | ६–१३ | ७–२६ | ९–३२ | १०–५९ | १२–२६ | ३–२० |
| नवेम्बर | १ | ६–४६ | ६–१ | ७–३४ | ९–३५ | ११–० | १२–२४ | ३–१३ |
| ,, | १६ | ६–५५ | ५–५४ | ७–४३ | ९–४० | ११–३ | १२–२५ | ३–१० |
| डीसेम्बर | १ | ७–५ | ५–५२ | ७–५३ | ९–४७ | ११–८ | १२–२९ | ३–११ |
| ,, | १६ | ७–१५ | ५–५६ | ८–३ | ९–५६ | ११–१६ | १२–३६ | ३–१६ |

॥ ॐ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

श्री

# पञ्चप्रतिक्रमणसूत्र.

## ( अर्थसहित )

### १ नवकार ( नमस्कार ) सूत्र.

**मू०**—*नमो अरिहंताणं १। नमो सिद्धाणं २। नमो आयरियाणं ३। नमो उवज्झायाणं ४। नमो लोए सव्वसाहूणं ५। एसो पंचनमुकारो ६। सव्वपावप्पणासणो ७। मंगलाणं च सव्वेसिं ८। पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

**शब्दार्थः**—

**नमो**—नमस्कार थाओ.

**अरिहंताणं**—अरिहंतोने.

**सिद्धाणं**—सिद्धोने.

**आयरियाणं**—आचार्योने.

**उवज्झायाणं**—उपाध्यायोने.

**लोए**—लोकने विषे एटले अढी द्वीपने विषे वर्तता.

---

*आ अने आना पछीनुं बन्ने सूत्रो स्थापना करती वखते उपयोगी छे. आ सूत्रमां अरिहंत अने सिद्ध ए बे प्रकारना देवने तथा आचार्य, उपाध्याय अने साधु ए त्रण प्रकारना गुरुओने नमस्कार कर्या छे. आ पांच परमेष्ठी परमपूज्य गणाय छे.

**सव्वसाहूणं**–सर्व साधुओने.

**एसो**–आ.

**पंचनमुकारो**–पांच परमेष्ठीने करेलो नमस्कार.

**सव्वपावप्पणासणो** – सर्व-पापोनो नाश करनार छे.

**मंगलाणं**–मंगलोने मध्ये.

**च**–तथा.

**सव्वेसिं**–सर्व.

**पढमं**–प्रथम, पहेलुं.

**हवइ**–छे.

**मंगलं**–मंगल.

**नमो अरिहंताणं**–नमस्कार हो अरिहंतोने।

**नमो सिद्धाणं**–नमस्कार हो सिद्धोने।

**नमो आयरियाणं**–नमस्कार हो आचार्योने।

**नमो उवज्झायाणं**–नमस्कार हो उपाध्यायोने।

**नमो लोए सव्वसाहूणं**–नमस्कार हो लोकमां सर्व साधुओने।

**एसो पंचनमुक्कारो**–ए पांचेने करेलो नमस्कार।

**सव्वपावप्पणासणो**–सर्व पापने सर्वथा नाश करनार छे।

**मंगलाणं च सव्वेसिं**–मंगलोमां अने सर्वमां।

**पढमं हवइ मंगलं**–पहेलुं होय छे मंगल.

**भावार्थ**—श्री अरिहंत भगवान १, श्री सिद्ध भगवान २, श्री आचार्य महाराज ३, श्री उपाध्यायजी महाराज ४, तथा अढीद्वीपरूप लोकने विषे वर्तता सर्वसाधुओ ५, ए पांच × परमेष्ठीओने के जेमना १०८ गुणो छे, तेमने मारो नमस्कार छे. आ पंच परमेष्ठीने करेलो

नमस्कार सर्व पापोने नाश करनार छे, तथा सर्व एटले लौकिक अने अलौकिक सर्व प्रकारना मंगळोमां प्रथम मंगल छे.

इति नमस्कार सूत्र १.

---

## ×आ पांच परमेष्ठीना एकसो ने आठ गुणो छे ते नीचे प्रमाणे.

" बारस गुण अरिहंता, सिद्धा अठ्ठेव सूरि छत्तीसं ।
उवज्झाया पणवीसं, साहू सगवीस अट्ठसयं ॥ "
बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजे भावे ।
सिद्ध आठ गुण समरतां दुःख दोहग जावे ॥
आचारज गुण छत्रीस, पचवीस उवज्झाय ।
सत्तावीस गुण साधुना, जपतां शीवसुख थाय ॥

" अरिहंतना बार गुण छे, सिद्धना आठ गुण छे, आचार्यना छत्रीश गुण छे, उपाध्यायना पचीश गुण छे अने साधुना सत्तावीश गुण छे. सर्व मळीने पंचपरमेष्ठीना १०८ गुण छे. " ते नीचे प्रमाणे—

## अरिहंतना आठ प्रातिहार्य अने चार मूळ अतिशय मळीने कुल बार गुण आ प्रमाणे छे—

अरि एटले राग-द्वेषादि अभ्यंतर शत्रुने हंत एटले हणनारा, जे

केवळज्ञान प्राप्त करीने भव्यजीवोने प्रतिबोध दे अने प्रतिबोध देवा माटे विहार करे एवां बार गुणवाळा तीर्थंकर भगवानने अरिहंत कहे छे.

१ **अशोकवृक्ष**—ज्यां भगवाननुं समवसरण रचवामां आवे छे, त्यां तेमना देहथी बार गुणो उंचो अशोकवृक्ष रचवामां आवे छे, तेनी नीचे बेसी भगवान देशना आपे छे.

२ **सुरपुष्पवृष्टि**—एक योजन प्रमाण समवसरणनी भूमिमां जळमां तथा स्थळमां उत्पन्न थयेलां सुगंधी पांच वर्णोवाळां तथा भगवानना अतिशयने लइने जेना जीवोने बाधा–पीडा थती नथी, एवां सचित्त पुष्पोनी ढींचण सुधी वृष्टि–वरसाद देवताओ करे छे.

३ **दिव्यध्वनि**—भगवाननी वाणीने मालकोश राग, वीणा, वांसळी विगेरेना स्वरवडे देवो पूरे छे.

४ **चामर**—रत्नजडित सुवर्णनी दांडीवाळा चार जोडी श्वेत चामरो समवसरणमां देवताओ भगवानने वींझे छे.

५ **आसन**—देवताओ भगवानने बेसवा माटे रत्नजडित सुवर्णनुं सिंहासन रचे छे.

६ **भामंडल**—भगवानना मस्तकनी पाछळ शरद ऋतुना सूर्य जेवुं उग्र तेजस्वी भामंडल देवताओ रचे छे, तेमां भगवाननुं तेज संक्रमे छे, तेम न करे तो भगवाननुं मुख जोइ शकाय नहीं.

७ **दुंदुभि**—भगवानना समवसरण वखते देवताओ देवदुंदुभि

वगाडे छे, ते एम सूचवे छे के--हे भव्य प्राणीओ! तमे शिवपुरना सार्थवाह तुल्य आ भगवाननी सेवा करो—तेमनुं शरण करो.

८ छत्र—समवसरणमां देवताओ भगवानना मस्तक उपर शरद्चंद्र जेवां उज्ज्वल अने मोतीना हारोथी सुशोभित उपराउपर त्रण त्रण छत्रो रचे छे. भगवान पोते समवसरणमां पूर्वाभिमुख—पूर्व दिशानी सामे बेसे छे, अने बीजी त्रण दिशाओमां देवताओ भगवंतना ज प्रभावथी प्रतिबिंबो रचीने स्थापे छे, तेथी कुल बार छत्रो ते वखते होय छे. अन्य वखते त्रण ज छत्र होय छे. समवसरण न होय त्यारे पण आ आठ प्रातिहार्यो तो होय ज छे.

## हवे चार मूळ अतिशय (उत्कृष्ट गुण) कहे छे—

९ अपायापगमातिशय—अपायनो एटले उपद्रवनो अपगम--नाश. ते पोताने आश्रयी अने बीजाने आश्रयी एवा बे प्रकारे छे. तेमां बीजाने आश्रयी अपायापगम अतिशय ए के—जेनाथी बीजाना उपद्रवो नाश पामे, अर्थात् ज्यां भगवान विहार करता होय त्यां दरेक दिशामां मळी सवासो योजन सुधी प्रायः रोग, मरकी, वेर, अवृष्टि, अतिवृष्टि, वगेरे थाय नहीं. हवे पोताने आश्रयी अपायापगम अतिशयना द्रव्यथी अने भावथी एम बे प्रकार छे. तेमां द्रव्यथी अपाय एटले सर्व प्रकारना रोगो, ते पोताने सर्वथा क्षय थया होय छे. तथा भावथी अपाय एटले अढार प्रकारना अभ्यंतर दोषो, ते पण पोताने सर्वथा होता नथी. ते अढार दोषो आ छे.—दानांतराय १, लाभांतराय २, भोगांतराय ३,

उपभोगांतराय ४, वीर्यांतराय ५, हास्य ६, रति ७, अरति ८, भय ९, शोक १०, जुगुप्सा ११, काम १२, मिथ्यात्व १३, अज्ञान १४, निद्रा १५, अविरति १६, राग १७, अने द्वेष १८.

**१० ज्ञानातिशय**—भगवान केवलज्ञानवडे सर्व लोकालोकनुं संपूर्ण स्वरूप जाणे छे.

**११ पूजातिशय**—श्रीतीर्थंकर सर्वने पूज्य छे. अर्थात् राजा, वासुदेव, बलदेव, चक्रवर्ती, देवताओ अने इंद्रो विगेरे सर्वे तेमने पूजे छे, अथवा तेमने पूजवानी इच्छा करे छे.

**१२ वचनातिशय**—श्रीतीर्थंकरनी वाणी देव, मनुष्य अने तिर्यंच सर्वे पोतपोतानी भाषामां समजे छे. केम के तेमनी वाणी अर्धमागधी होय छे. ते वाणीना ३५ गुणो आप्रमाणे छे.—सर्व ठेकाणे समजाय तेवी १, योजन प्रमाण भूमिमां सरखी रीते संभळाय २, प्रौढतावाळी ३, मेघ जेवी गंभीर ४, स्पष्ट शब्दवाळी ५, संतोष उपजावनारी ६, दरेक श्रोता मने ज कहे छे एम जाणे तेवी ७, पुष्ट अर्थवाळी ८, पूर्वापर विरोध न आवे तेवी ९, महापुरुषने छाजे तेवी १०, संदेह विनानी ११, दूषणरहित अर्थवाळी १२, कठण विषय पण सुगम लागे तेवी १३, ज्यां जेवुं शोभे तेवुं बोलाय एवी १४, छ द्रव्य अने नवतत्त्वनी पुष्टि करे तेवी १५, प्रयोजनवाळी १६, पद रचनावाळी १७, छ द्रव्य अने नव तत्त्वनी पटुतावाळी १८, मधुरतावाळी १९, बीजानो मर्म न भेदाय तेवी चतुराइवाळी २०, धर्म अने अर्थ ए बे पुरुषार्थने साधनारी २१, दीवानी जेम अर्थनो प्रकाश करनारी २२, परनिंदा अने आत्मश्लाघारहित

२३, कर्ता, कर्म, क्रियापद, काळ अने विभक्तिवाळी २४, सांभळनारने आश्चर्य उत्पन्न करे तेवी २५, वक्ता सर्व गुण संपन्न छे एवुं स्पष्ट जणाइ आवे तेवी २६, धैर्यतावाळी २७, विलंबतारहित २८, भ्रांतिरहित २९, सर्व श्रोता प्राणी पोत पोतानी भाषामां समजे तेवी ३०, सारी बुद्धि उत्पन्न करे तेवी ३१, पदना एटले शब्दना अर्थने अनेक अर्थपणे बोले तेवी ३२, साहसिकपणे बोले तेवी ३३, पुनरुक्ति दोषरहित ३४, तथा सांभळनारने खेद न उपजे तेवी ३५.

## सिद्ध भगवानना आठ गुण आ प्रमाणे—

आठ कर्मनो सर्वथा क्षय करीने जेओए मोक्षपद मेळव्युं छे तेने सिद्ध कहे छे.

**१ अनंतज्ञान**—ज्ञानावरणीय कर्मनो सर्वथा क्षय थवाथी केवलज्ञान प्राप्त थाय छे, तेनाथी सर्व लोकालोकनुं स्वरूप जाणे छे.

**२ अनंतदर्शन**—दर्शनावरणीय कर्मनो सर्वथा क्षय थवाथी केवलदर्शन प्राप्त थाय छे, तेनाथी लोकालोकना स्वरूपने देखे छे.

**३ अव्याबाध सुख**—वेदनीय कर्मनो सर्वथा क्षय थवाथी सर्वप्रकारनी पीडारहित निरुपाधिपणुं प्राप्त थाय छे.

**४ अनंतचारित्र**—मोहनीय कर्मनो क्षय थवाथी आ गुण प्राप्त थाय छे तेमां क्षायिक सम्यक्त्व अने यथाख्यात चारित्रनो समावेश थाय

छे, तेथी सिद्ध भगवान आत्मस्वभावमां सदा अवस्थित रहे छे. तेज त्यां चारित्र छे.

५ **अक्षयस्थिति**—आयुष्यकर्मनो क्षय थवाथी नाश न थाय एवी अनंत स्थिति प्राप्त थाय छे. सिद्धनी स्थितिनी आदि छे, पण अंत नथी, तेथी सादि अनंत कहेवाय छे. एक सिद्ध आश्री सादि अनंतस्थिति छे अने अनंतसिद्ध आश्री अनादि अंत स्थिति छे.

६ **अरूपीपणुं**—नामकर्मनो क्षय थवाथी वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शरहित थाय छे, केम के शरीर होय तो ज वर्णादिक होय छे, पण सिद्धने शरीर नथी, तेथी तेने अरूपीपणुं प्राप्त थाय छे.

७ **अगुरुलघु**—गोत्रकर्मनो क्षय थवाथी आ गुण प्राप्त थाय छे, तेथी भारे, हळवो के उंच नीचपणानो व्यवहार रहेतो नथी.

८ **अनंतवीर्य**—अंतराय कर्मनो क्षय थवाथी अनंत दान, अनंत लाभ, अनंत भोग, अनंत उपभोग अने अनंत वीर्य प्राप्त थाय छे, एटले के समग्र लोकने अलोक करी शके अने अलोकने लोक करी शके तेटली सिद्धमां स्वाभाविक शक्ति होय छे, छतां ते सिद्धोए कदि पण तेवुं वीर्य फोरव्युं नथी, फोरवता नथी अने फोरवशे पण नहीं, केमके तेमने पुद्‌गलनी साथे कांइ पण संबंध होतो नथी. आ अनंतवीर्यना गुणथी पोताना आत्मिक गुणोने जे रूपे छे ते रूपे ज धारी राखे छे. फेरफार थवा देता नथी.

## आचार्यना छत्रीश गुण नीचे मुजब—

पांच आचारने जे पाळे, अने बीजाने पळावे, अने धर्मना जे नायक छे, साधुओमां राजासमान तेने आचार्य कहे छे. तेमना छत्रीस गुणो—

स्पर्श-त्वचा १, रसना-जिह्वा २, घ्राण-नासिका ३, चक्षु-नेत्र ४, अने श्रोत्र-कान ५, ए पांच इंद्रियोनो संवर करनार एटले पोत-पोताना शुभाशुभ विषयोमां रागद्वेषथी प्रवर्तता ते ते इंद्रियोनो रोध करनार मारा गुरु छे. जेमके कोमळ वस्तुनो स्पर्श थतां तेने सुख-कारक मानी तेनापर राग न करे, तथा कर्कश वस्तुनो स्पर्श थतां तेने दुःखदायक मानी तेना पर द्वेष न करे. ए रीते पांचे* इंद्रियोना विषयोमां जाणवुं. तथा नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने धारण करनार मारा गुरु छे. अहीं ब्रह्मचर्यनी नव गुप्ति (वाड) आ प्रमाणे छे.—

१ स्त्री, पशु के नपुंसकनो निवास होय त्यां शीलव्रत धारीए रहेवुं नहीं. २ स्त्रीनी कथा न करवी अथवा स्त्रीनी साथे सराग दृष्टिए

---

***पांच इंद्रियोना २३ विषय.**

**स्पर्शनेन्द्रियना आठ विषय**—हलकुं, भारी, लुखुं, चोपडेल, खरबचडुं, सुंवाळुं, ठंडुं अने गरम.

**रसनेन्द्रियना पांच विषय**—मीठुं, खाटुं, कडवुं, कषायलुं, अने तीखुं.

**घ्राणेन्द्रियना बे विषय**—सुगंध अने दुर्गंध.

**चक्षुरिन्द्रियना पांच विषय**—सफेद, काळुं, पीळुं, लीलुं अने रातुं.

**श्रोत्रेन्द्रियना त्रण विषय**—सचित्त, अचित्त अने मिश्र.

वातचीत न करवी. ३ स्त्रीओना एक आसन पर एटले शयन, आसन, पाट, पाटला उपर ज्यां स्त्री बेठी होय ते स्थाने बे घडी थया पहेलां बेसवुं नहीं. ४ स्त्रीना अंगोपांग जोवा के चिंतववा नहीं. ५ भींत, पडदा के खपेडाने ओथे स्त्री–पुरुष कामक्रीडा करता होय त्यां बेसवुं नहीं. ६ पूर्वे करेली कामभोगनी क्रीडानुं स्मरण करवुं नहीं. ७ ब्रह्मव्रतधारीए स्निग्ध–रसकसवाळो मादक आहार लेवो नहीं. ८ शरीरनी विभूषा एटले शृंगारवडे शोभा करवी नहीं. ९ क्षुधा शांत थाय तेथी अधिक लुखो आहार पण करवो नहीं. तथा क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार प्रकारना कषायरहित मारा गुरु छे. आ प्रमाणे कुल अढार गुणे करीने युक्त मारा गुरु छे. आ सूत्रमां अढार दोषो बतावेला छे तेनो त्याग ए ज गुणो तरीके मानेलो छे. अर्थात् हेयद्वारा गुणो बताव्या छे.

## हवे अढार गुणो बतावे छे. ते आ प्रमाणे—

प्राणातिपात विरमण १, मृषावाद विरमण २, अदत्तादान विरमण ३, मैथुन विरमण ४, अने परिग्रहविरमण ५, ए पांच महाव्रतोए करीने सहित मारा गुरु छे.

## पांच प्रकारनो आचार बतावे छे ते नीचे मुजब.

आठ प्रकारना ज्ञानाचारनी शुद्धि १, आठ प्रकारना दर्शनाचारनी शुद्धि २, आठ प्रकारना चारित्राचारनी शुद्धि ३, तप आचार एटले छ बाह्य अने छ आभ्यंतर एम बार प्रकारना तपनी शुद्धि ४, अने वीर्याचार एटले मन, वचन अने कायानी शक्तिने धर्मकार्यमां जोडवारूप

त्रण प्रकारना वीर्यनी शुद्धि ५, ए पांच प्रकारनो आचार पाळवामां समर्थ मारा गुरु छे.

## पांच समिति अने त्रण गुप्ति बतावे छे ते आ प्रमाणे.

इर्यासमिति एटले मार्गमां जतां—आवतां जीवोनी रक्षा माटे उपयोग पूर्वक चालवुं ते १, भाषासमिति एटले निरवद्य—पापरहित अने कोइ पण जीवने दुःख उत्पन्न न थाय तेवुं वचन बोलवुं ते २, एषणासमिति एटले आहार, वस्त्र, पात्र विगेरे शुद्ध विधिपूर्वक दोष टाळीने ग्रहण करवां ते ३, आदानभांडमात्रनिक्षेपणासमिति एटले जीवरक्षा माटे यतना—जयणापूर्वक वस्त्र, पात्रादिक लेवां तथा मूकवां ते ४, तथा पारिष्ठापनिकासमिति एटले जीवनी रक्षापूर्वक शुद्ध भूमिने विषे यतनाथी मळ, मूत्र, श्लेष्म विगेरे परठववां—मूकवां ते ५, आ पांच समितिवडे युक्त मारा गुरु छे, तथा मनोगुप्ति एटले पाप कार्यना विचारथी मनने गोपववुं—अटकाववुं ते १, वचनगुप्ति एटले निरवद्यवचन पण कारण विना बोलवा नहि ते २, अने कायगुप्ति एटले शरीरने पापकार्यथी अटकाववुं तथा यतनापूर्वक जग्याने पुंजी प्रमार्जी उठवुं, बेसवुं, जवुं, आववुं विगेरे क्रिया करवी ते ३, आ त्रण गुप्तिए सहित मारा गुरु छे.

प्रथमना अने पछीना मळी ३६ गुणो थया, आ छत्रीश गुणो आचार्यना छे.

## उपाध्यायना पचीस गुणो आ प्रमाणे.

जेओ सिद्धांतने भणे अने बीजाने भणावे, अने पचीस गुणयुक्त

होय तेने उपाध्याय कहे छे. आचार्यजी साधुओमां राजा समान छे ज्यारे उपाध्यायजी महाराज प्रधान समान छे. तेओना पचीश गुण आ छे.

आचारांग १, सूयगडांग २, ठाणांग ३, समवायांग ४, भगवती ५, ज्ञाताधर्मकथा ६, उपासकदशांग ७, अंतगडदशांग ८, अनुत्तरोववाइ ९, प्रश्नव्याकरण १०, अने विपाक ११, आ अग्यार अंग, तथा उववाइ १, रायपसेणी २, जीवाभिगम ३, पन्नवणा ४, जंबुद्वीपपन्नत्ति ५, चंदपन्नत्ति ६, सुरपन्नत्ति ७, कप्पिया ८, कप्पवडिंसिया ९, पुष्फिया १०, पुष्फचूलिया ११, अने वह्निदशांग १२, आ बार उपांगने भणे तथा भणावे तेथी ११ अंग अने १२ उपांग मळी (२३) गुण थया, अने चरणसित्तरि (२४) तथा करणसित्तरिने (२५) पाळे ए बे गुण मेळवतां कुल २५ गुण उपाध्यायना छे.

## साधु महाराजना सत्तावीस गुण आ प्रमाणे जाणवा.

मोक्षमार्गने साधवानो यत्न करे, सर्वविरति चारित्र लइने सत्तावीस गुणयुक्त होय तेने साधु कहेवाय छे, ते साधु महाराजना सत्तावीस गुण नीचे प्रमाणे छे.—

प्राणातिपात विरमण १, मृषावाद विरमण २, अदत्तादान विरमण ३, मैथुन विरमण ४, अने परिग्रह विरमण ५, ए पांच महाव्रत, तथा रात्रिभोजन विरमण ६, ए छ व्रतना छ गुण. पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय अने त्रसकाय ए छ कायनी रक्षा करे ते छ गुण होवाथी कुल बार गुण थया. पांच इंद्रियोनो निग्रह करे, ते पांच गुणो मेळववाथी १७, गुण थया. तथा लोभनिग्रह १८, क्षमा

## २ पंचिंदिय सूत्र.

**मू०—पंचिंदिअसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो। चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वयजुत्तो, पंचविहायारपालणसमत्थो। पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥**

### शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **पंचिंदिअ**—पांच इंद्रियोना विषयोने | **तह**—तथा, |
| **संवरणो**—रोकनार | **नवविह**—नव प्रकारना |

१९, चित्तनी निर्मळता २०, शुद्ध रीते वस्त्रादिकनी पडिलेहण २१, संयमयोगमां प्रवृत्ति एटले पांच समिति अने त्रण गुप्ति आदरवी तथा निद्रा, विकथा अने अविवेकनो त्याग २२, अकुशळ मननो निरोध २३, अकुशळ वचननो निरोध २४, अकुशळ कायानो निरोध ( एटले तेमने कुमार्गे जता अटकाववा ) २५, शीतादिक परीषहो सहेवा २६, अने मरणादि उपसर्गो सहेवा २७.

× पद ९, संपदा ८, गुरु ७, लघु ६१, सर्व वर्ण ६८.

× विभक्ति अंतमां होय तेने पद कहे छे, अर्थ संपूर्ण थया पछी विश्राम स्थानने वाक्य अथवा संपदा कहे छे, विसर्गवाळा, अनुस्वारवाळा अने जोडीया अक्षरनी पूर्वना ह्रस्वअक्षरने पण गुरु–दीर्घ कहे छे. एक मात्रावाळो, संयोग वगरनो अक्षर होय तेने ह्रस्व अक्षर कहे छे अने अ थी ह सुधीना वर्णो कहेवाय छे. वर्णोना बे भेद छे. स्वर अने व्यंजन. अ थी औ सुधीना स्वरवर्ण अने क थी ह सुधीना व्यंजन वर्ण कहेवाय छे.

**बंभचेर**—ब्रह्मचर्यनी
**गुत्तिधरो**—गुप्तिने धारण करनार
तथा
**चउविह**—चार प्रकारना
**कसाय**—कषायथी
**मुक्को**—रहित
**इअ**—आ उपर कहेला,
**अट्ठारसगुणेहिं**—अढार गुणोए करीने,
**संजुत्तो**—सहित,
**पंचमहव्वय**—पांच महाव्रतोए करीने
**जुत्तो**—सहित
तथा
**पंचविहायार**—पांच प्रकारनो आचार
**पालणसमत्थो**—पाळवामां समर्थ
तथा
**पंचसमिओ**—पांच प्रकारनी समितिवाळा, तथा
**तिगुत्तो**—त्रण गुप्तिए गुप्त,
ए रीते कुल,
**छत्तीसगुणो**—छत्रीश गुणवाळा,
**गुरू**—गुरु छे.
**मज्झ**—मारा,

**पंचिंदिअसंवरणो**—पांच इंद्रियोने संवरनार रोकनार,
**तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो**—तेमज नव प्रकारनी ब्रह्मचर्य गुप्तिना धारण करनारा,
**चउविहकसायमुक्को**—चार प्रकारना कषायथी रहित,
**इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो**—एम अढार गुणोए सहित,
**पंचमहव्वयजुत्तो**—पांच महाव्रत सहित,
**पंचविहायारपालणसमत्थो**—पांच प्रकारना आचार पाळवामां समर्थ,
**पंचसमिओ तिगुत्तो**—पांच समितिवाळा अने त्रण गुप्तिवाळा,
**छत्तीसगुणो गुरू मज्झ**—छत्रीश गुणवाळा गुरु मारा,

**भावार्थः**—पांच इंद्रियोनो संवर एटले निग्रह करनार, तथा नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी गुप्ति (वाड) ने धारण करनार, तथा चार प्रकारना कषायथी रहित, आ अढार गुणोए सहित तथा पांच महाव्रतोए करीने सहित तथा पांच प्रकारनो आचार पाळवामां समर्थ, तथा पांच प्रकारनी समितिवाळा, तथा त्रण गुप्तिए गुप्त ए रीते कुल छत्रीश× गुणवाळा मारा गुरु छे. २

पद ८, गाथा २, गुरु १०, लघु ७०, सर्ववर्ण ८०.

**इति पंचिंदिअ सूत्र. २.**

## ३ * खमासमण वा प्रणिपात सूत्र.

**मू०—इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ॥**

**शब्दार्थः—**

**इच्छामि**-हुं इच्छुं छुं अने तेथी करीने.
**खमासमणो**-हे क्षमाश्रमण-क्षमावान् तपस्वी !,
**वंदिउं**-वांदवाने.
**जावणिज्जाए**-शक्तिने अनुसारे,
**निसीहिआए**-सर्व पाप व्यापारनो निषेध करीने,
**मत्थएण**-मस्तकवडे.
**वंदामि**-वांदुं छुं.

---

× आ छत्रीश गुण विस्तारथी आचार्य महाराजना गुणोना वर्णनमां वर्णव्या छे.

* आ सूत्र श्री वीतराग देव अने गुरु महाराजनी सामे उभा रही बे हाथ जोडी पंचांग—बे हाथ, बे ढींचण, अने मस्तक आ पांच अंग जमीने लगाडी प्रणाम—वंदना करवानुं छे.

**इच्छामि खमासमणो**—हे क्षमावंत तपस्वी हुं इच्छुं छुं.

**वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए**—बीजां पाप व्यापारनो त्याग करी शक्ति मुजब वांदवाने.

**मत्थएण वंदामि**—मस्तकवडे वंदन करुं छुं.

**भावार्थः**—हे क्षमाश्रमण तपस्वी मुनिराज ! हुं सर्व पाप व्यापारनो त्याग करी शरीरनी शक्ति प्रमाणे एटले शरीरनी शक्ति गोपव्या विना सर्व शक्तिने फोरवीने आप गुरु महाराजने वंदना करवा इच्छुं छुं, अने तेज प्रमाणे मस्तक नमावीने आपने वांदुं छुं.

गुरु ३, लघु २५, सर्ववर्ण २८.

**इति खमासमण सूत्र ३.**

## ॥ ४ अथ इरियावहियं सूत्र ॥

**मू०—इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं १। इरियावहियाए विराहणाए २।**

**शब्दार्थः—**

**इच्छाकारेण**—इच्छाथी, इच्छापूर्वक.

**संदिसह**—आज्ञा आपो.

**भगवन्**—हे भगवन् ! हे पूज्य गुरुमहाराज.

**इरियावहियं**—इरियावहि—गमनागमन करतां थयेल जीवबाधादि पापक्रिया.

**पडिकमामि**—हुं पडिक्कमुं (पाछो हठुं) छुं.

**इच्छं**—आपनी आज्ञा प्रमाण छे.

**इच्छामि**—हुं इच्छुं छुं.

**पडिकमिउं**—पापक्रियाथी पाछो हठवा, बचवा.

**इरियावहियाए**—मार्गमां चालतां फरतां.

**विराहणाए**—जीवनी विराधना थइ होय.

**इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !**—हे पूज्य गुरु महाराज ! आपनी इच्छाथी आज्ञा आपो.

**इरियावहियं पडिकमामि***—रस्तामां चालता अथवा फरतां लागेली पापक्रियाथी हुं पाछो हठुं !

**इच्छं**—आपनी आज्ञा प्रमाण छे.

**इच्छामि पडिकमिउं इरियावहियाए विराहणाए**—हुं पापथी निवर्त्तवाने इच्छुं छुं. जवा-आववाना मार्गमां तथा साधु श्रावकना धर्ममार्गमां जे विराधना ( पापयुक्त क्रिया ) थइ होय.

**भावार्थ**—हे पूज्य गुरुमहाराज ! आपनी इच्छाए करीने मने आज्ञा आपो के जेथी हुं इर्यापथिकीने पडिकमुं एटले मार्गमां चालतां जे पाप

---

* अहीं गुरुमहाराज कहे के-पडिक्कमेह-पापक्रियाथी पाछो हठ, पछी आगलनो पाठ बोलवो।

लाग्युं होय तेनाथी निवर्तुं. ( त्यारे गुरु महाराज आदेश आपे के–पडिक्कमह–तुं प्रतिक्रमण कर ) पछी शिष्य ' इच्छं ' कहे एटले आपनी आज्ञा प्रमाण छे एम कहे. १

इर्यापथिकी संबंधी एटले मार्गमां जतां आवतां जे कांई विराधना एटले जीवहिंसादिक पाप मने लाग्युं होय, ते पापथी पाछो फरवाने हुं इच्छुं छुं. २

## ते इर्यापथिकी विराधनाने ज बतावे छे—

**मू०—गमणागमणे ३। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे ४।**

### शब्दार्थः—

**गमणागमणे**–जतां आवतां.

**पाणक्कमणे**–प्राणी (जीव) चांप्या होय.

**बीयक्कमणे**–धान्यना बीज चांप्या होय.

**हरियक्कमणे** – लीली वनस्पति चांपी होय.

**ओसा**–झाकळ.

**उत्तिंग**–कीडियारुं.

**पणग**–सेवाळ, पांच प्रकारनी लील-फूल.

**दग**–काचुं पाणी.

**मट्टी**–माटी.

**मक्कडासंताणा**–करोळीयानी जाळ

**संकमणे**–चांपी होय.

**गमणागमणे पाणक्कमणे**—एक स्थानेथी बीजे स्थाने जतां-आवतां कोई पण प्राणी (जीवो)नुं आक्रमण करतां—दबावतां.

**बीयक्कमणे हरियक्कमणे**—बीजने आक्रमण करतां, लीली वनस्पतिनुं आक्रमण करतां.

**ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे**—झाकळ, कीडीयोना दर, पांचवर्णनी लील-फूल-सेवाळ, काचुं पाणी, माटी, सचित्त माटी सहित काचुं पाणी, कीच्चड, अने करोळीयानी जाळ ए बधांने आक्रमण करतां—दबावतां—चांपतां. ४

**भावार्थ**—मार्गमां जतां आवतां जीवोने दबाववाथी, बीजने चांपवाथी, लीली वनस्पति खुंदवा—चांपवाथी, तथा झाकळ, कीडीओनां दर, पंचवर्णी लील फूल—सेवाळ, काचुं पाणी, सचित्त माटी अने करोळीयानी जाळ ए सर्वने दबाववाथी जे कोई जीवोनी में विराधना करी होय एटले तेमने पीडा उपजावी होय.

## ते केवा जीवो ? ते बतावे छे—

**मू०—जे मे जीवा विराहिया ५। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ६।**

### शब्दार्थः—

**जे**—जे कोई

**मे**—में

**जीवा**—जीवो

**विराहिया**—विराध्या—दुःखी कर्या होय

**एगिंदिया**—एक इन्द्रियवाळा

| | |
|---|---|
| **बेइंदिया**—बे इन्द्रियवाळा | **चउरिंदिया**—चार इन्द्रियवाळा |
| **तेइंदिया**—त्रण इन्द्रियवाळा | **पंचिंदिया**—पांच इन्द्रियवाळा |

**जे मे जीवा विराहिया**—जे जीवोनी में विराधना करी होय अर्थात् जे जीवोने दुःखी कर्या होय, कया कया जीव? ते बतावे छे.

**एगिंदिया**—एक इन्द्रियवाळा—पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु—हवा, अने वनस्पति,

**बेइंदिया**—बे इन्द्रियवाळा—शंख, पूरा, अळसीया विगेरे.

**तेइंदिया**—त्रण इन्द्रियवाळा—कीडी, कुंथवा, मकोडा, माकड, जू विगेरे.

**चउरिंदिया**—चार इन्द्रियवाळा—माखी, वींछी, भमरा, विगेरे.

**पंचिंदिया**—पांच इन्द्रियवाळा—साप, जानवर, पक्षी, तिर्यंच, नारकी, देवता, माणस विगेरे.

**भावार्थ**—पृथ्वी, जळ (पाणी), अग्नि, वायु—हवा, अने वनस्पति आदि एक इन्द्रियवाळा, शंख, पुरा, अळसीया आदि बे इन्द्रियवाळा, कीडी, कुंथवा, मकोडा, माकड, जू आदि त्रण इंद्रियवाळा, माखी, वींछी, भमरा आदि चार इन्द्रियवाळा, अने साप, जानवर-गाय-भेंस-बळद-वाघ-सिंह-चित्तो तथा पक्षी-मोर-ढेल-पारेवुं-चकली-पोपट तथा माणस-स्त्री-पुरुष-छोकरो-छोकरी विगेरे पांच इन्द्रियवाळा.

**तेओनी केवी रीते विराधना थइ होय ? ते बतावे छे–**

**मू०—अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुकडं ७।**

## शब्दार्थः—

**अभिहया**–लाते मार्या
**वत्तिया**–धूळवडे ढांक्या
**लेसिया**–भोंय साथे घस्या
**संघाइया**–भेगा कर्या
**संघट्टिया**–स्पर्श कर्या
**परियाविया**–परिताप उपजाव्या
**किलामिया**–खेद पमाड्या
**उद्दविया**–बीवराव्या
**ठाणाओ ठाणं**–एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे
**संकामिया**–मूक्या
**जीवियाओ**–जीवितथी
**ववरोविया** – चूकाव्या–मारी नाख्या
**तस्स**–ते
**मिच्छा**–मिथ्या–निष्फळ थाओ.
**मि**–मारुं
**दुकडं**–पाप, दुष्कृत.

**अभिहया**—उपर कहेला एकेन्द्रिय विगेरे जीवोमांथी सामे आवता होय तेने मार्या होय.

**वत्तिया**–कोई पण जीवोने धूळ अथवा एवा बीजा पदार्थोथी ढांक्या होय.

**लेसिया**—परस्पर अथवा जमीन या भींत साथे घस्या होय.

**संघाइया संघट्टिया**—एक बीजाने मेळव्या होय अथवा हाथ आदि लगाडी दुःख आप्युं होय.

**परियाविया**—कष्ट आप्युं होय.

**किलामिया**—थकाड्यां होय, मरवा जेवा कर्या होय.

**उद्दविया**—हेरान कर्या होय, बीवराव्या होय.

**ठाणाओ ठाणं संकामिया**—एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे बहुज खराब रीते मूक्या होय.

**जीवियाओ ववरोविया**—आयुष्यथी चूकाव्या होय अथवा जीवननो नाश कर्यो होय.

**तस्स मिच्छामि दुक्कडं**—ते संबंधी जे कांइ पाप मने लाग्युं, अथवा ते ते जीवोने कोइ प्रकारनुं कष्ट पहोंचाड्युं होय ते पाप मारुं निष्फल थाओ, हुं दोष रहित थाउं.

**भावार्थ**—ते जीवाने में लाते मार्या होय अथवा सामे आवतां हण्यां होय, धूळे ढांक्या होय, भींते के भोंये के परस्पर घस्यां होय, परस्पर जीवोना शरीरो एकठां कर्यां होय, स्पर्श करवाथी दुःखी कर्या होय, परिताप-दुःख उपजाव्युं होय, किलामणा उपजावी होय एटले मरण तुल्य कर्या होय, त्रास पमाड्या होय, एक स्थानेथी बीजे स्थाने मूक्या होय के जीवितथी जूदा कर्या होय आ रीते करवाथी मने जे पाप लाग्युं होय ते मारुं पाप निष्फल थाओ अर्थात् ते पापनुं हुं मिच्छामि दुक्कडं आपुं छुं.

पद २६, संपदा ८, गुरु १४, लघु १३६, सर्ववर्ण १५०.

इति इरियावहियं सूत्र ४

## ॥ ५ अथ तस्स ×उत्तरी ॥

**मू०—तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥**

### शब्दार्थ.

**तस्स**—ते पापने,
**उत्तरीकरणेणं**—तेने विशेष शुद्ध करवा माटे,
**पायच्छित्तकरणेणं**—प्रायश्चित्त करवा माटे,
**विसोहीकरणेणं**—विशेष शुद्धि करवा माटे
**विसल्लीकरणेणं**—शल्य रहित करवा माटे
**पावाणं कम्माणं**—पाप कर्मोने
**निग्घायणट्ठाए**—नाश करवा माटे
**ठामि**—करुं छुं
**काउस्सग्गं**—काउस्सग्ग

---

× आत्माने लागेला पापोनी शुद्धि इरियावहियं करवाथी थाय छे, छतां आत्माना परिणामो बराबर शुद्ध न होवाथी—कंइक अशुद्धि रहेवाथी तेवा आत्माने वधारे श्रेष्ठ—उत्कृष्ट शुद्ध करवा माटे आ सूत्र छे.

**तस्स उत्तरीकरणेणं**—ते आत्माने विशेष शुद्ध करवा माटे अथवा ते पापनी विशेष शुद्धि—फरी शुद्धि करवा माटे,

**पायच्छित्तकरणेणं**—प्रायश्चित्त करवा माटे,

**विसोहीकरणेणं**—आत्माना परिणामनी विशेष शुद्धि करवा माटे अथवा आत्माना आंतरिक मेलनो नाश करवा माटे,

**विसल्लीकरणेणं**—माया, निदान, अने मिथ्यात्व ए त्रण शल्य रहित करवा माटे,

**पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए**—बधां पाप कर्मोनो नाश करवा माटे,

**ठामि काउस्सग्गं**—हुं कायाना व्यापार—प्रवृत्तिने छोडीने काउस्सग ध्यानमां रहुं छुं—स्थिर थाउं छुं.

**भावार्थः**—पापथी मलीन थयेलो आत्मा इरियावहीथी मिच्छामि दुक्कडं देवावडे शुद्ध थाय छे, तो पण आत्मानो परिणाम पूर्ण शुद्ध न होय तो तेने अधिक निर्मळ बनाववा माटे वारंवार आत्माने उत्तम संस्कारवाळो करवो जोइए, तेथी करीने प्रायश्चित्त करवुं जोइए, प्रायश्चित्त पण परिणामनी विशुद्धि विना थइ शकतुं नथी, तेथी परिणामनी शुद्धि करवी आवश्यक छे, परिणामनी शुद्धिने माटे पण ( माया—कपट रूप शल्य, निदान—फलनी इच्छा रूप शल्य, अने मिथ्यात्व—कदाग्रह रूप शल्य ) आ त्रणे शल्यनो त्याग करवो जरुरी छे, तेथी करीने

शल्यना त्याग माटे तथा बीजां सर्व पाप कर्मोंनो नाश करवा माटे हुं कायोत्सर्ग करुं छुं. कारण के कायोत्सर्गथी ज ते सर्व थइ शके छे.

पद ६, संपदा १, गुरु १०, लघु २९, सर्ववर्ण ४९,

## इति तस्स उत्तरी सूत्र ५

कायोत्सर्ग एटले सर्व प्रकारना पाप व्यापारथी कायाने वोसराववी अर्थात् कायानो त्याग करवो ते, आवी कायोत्सर्ग करवानी प्रतिज्ञा करवाथी कायानो कांइपण व्यापार थाय तो कायोत्सर्गनी प्रतिज्ञानो भंग थाय तेथी तेनो भंग न थवा माटे अमूक आगारो मोकळा राखवामां आवे छे एटले के केटलाक अशक्य परिहारवाळा व्यापारोनी छूट मूकवामां आवे छे तेथी प्रतिज्ञानो भंग थतो नथी. ते आगारोने ज हवे बतावे छे.

## ॥ ६ अथ *अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र ॥

**मू०—अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए १ ।**

---

* आ सूत्रवडे करवानो काउस्सग्ग १९ दोष छोडीने करवानो छे. ते १९ दोष नीचे प्रमाणे—

**१. घोटकदोष—**घोडानी जेम एक पग ऊंचो राखे, वांका पग राखे ते.

## शब्दार्थ

**अन्नत्थ**—बीजेठेकाणे, उच्छ्वास आदि आगारो सिवाय अन्य क्रियाद्वारा,
**ऊससिएणं**—उंचो श्वास लेवाथी,
**नीससिएणं**—नीचो श्वास लेवाथी
**खासिएणं**—उधरस आववाथी
**छीएणं**—छींक आववाथी
**जंभाइएणं**—बगासुं आववाथी
**उड्डुएणं**—ओडकार आववाथी
**वायनिसग्गेणं**—वाछूट थवाथी
**भमलीए**—चक्करी आववाथी
**पित्तमुच्छाए**—पित्तवडे मूर्च्छा आववाथी

---

२. **लतादोष**—वायराथी जेम वेलडी चाले तेम शरीरने धूणावे ते.

३. **स्तंभादिदोष**—थांभला आदिने ओठींगण दइ बेसे ते.

४. **मालदोष**—उपर मेडी अथवा माळ होय तेने मस्तक टेकावी रहे ते.

५. **उद्धिदोष**—गाडानी उंधनी पेठे अंगुठा तथा पानी मेळवीने पग राखे ते.

६. **निगडदोष**—निगड (बेडी)मां पग नांख्यानी पेठे पग पहोळा राखे ते.

७. **शबरिदोष**—नागी भीलडीनी पेठे गुह्य स्थाने हाथ राखे ते.

८ **खलिणदोष**— घोडाना चोकडा (लगाम)नी जेम हाथ रजोहरण (ओघा) युक्त आगळ राखे ते.

**अन्नत्थ**—अन्यत्र एटले नीचे लखेला आगार—अपवादो सिवाय बीजी क्रियाओ द्वारा, अर्थात्—नीचे बतावेला उच्छ्‌वास—निःश्वास विगेर आगारो—अपवादो काउस्सग्ग करती वेळाए थाय तो दोष—अतिचार लागतो नथी, काउस्सग्ग भंग थयो गणातो नथी, परन्तु ते सिवाय बीजी कोइ पण क्रिया काउस्सग्ग ध्यानमां थइ शकती नथी, अर्थात् काउस्सग्ग भंग थयो गणाय छे, आ बार आगारो सिवाय कायाना व्यापारनो त्याग करुं छुं. क्या क्या आगारनी छूट छे ? ते नीचे प्रमाणे

---

९. **वधूदोष**—नवी परणेली स्त्रीनी जेम माथुं नीचुं राखे ते.

१० **लंबोत्तरदोष**—डूंटीनी उपर अने ढींचणथी नीचे लांबुं कपडुं राखे ते.

११ **स्तनदोष**—डांस मसाना भयथी, अज्ञानथी अथवा शरमथी हृदयने स्त्रीनी जेम ढांकी राखे ते.

१२ **संयतिदोष**—टाढ आदिना भयथी साध्वीनी जेम बेउ खंभा ढांकी राखे एटले आखुं शरीर ढांकी राखे ते.

१३ **भमुहंगुलिदोष**—आलावो गणवाने अर्थे अथवा काउस्सग्गनी संख्या गणवाने आंगळी तथा पांपणना चाळा करे ते.

१४ **वायसदोष**—कागडानी जेम डोळा फेरवे ते.

१५ **कपित्थदोष**—पहेरेलां कपडां जू अथवा परसेवाए करी गंदा—मेला थवानी बीकथी कोठनी जेम छूपावी राखे ते.

**ऊससिएणं**—उंचा श्वास लेवाथी,

**नीससिएणं**—नीचो श्वास मूकवाथी,

**खासिएणं छीएणं जंभाइएणं**—उधरस, छींक अने बगासुं आववाथी

**उड्डुएणं**—ओडकार आववाथी,

**वायनिसग्गेणं**—पुंठ द्वारा वा संचार थवाथी,

**भमलीए पित्तमुच्छाए**—चकरी आववाथी, पित्तना प्रकोपथी मूर्च्छा आववाथी,

**भावार्थ**—हवे हुं कायोत्सर्गनी प्रतिज्ञा करुं छुं, तेमां नीचे जणावेला आगार सिवाय बीजे कोई पण कारणे मारा कायोत्सर्गनो हुं भंग नहीं करुं. ते आगारो आ प्रमाणे–उंचो श्वास लेतां, नीचो श्वास मूकतां, उधरस खातां, छींक आवतां, बगासुं खातां, ओडकार खातां, पूंठे पवन छूटतां, चकरी आवतां, पित्तनां प्रकोपथी बेभान थइ जतां.

---

**१६ शिरःकंपदोष**—भूत अथवा यक्षना आवेशवाळा माणसनी जेम माथुं धूणावे ते.

**१७ मूकदोष**—मूंगानी जेम हुं हुं करे ते.

**१८ मदिरादोष**—आलावा गणतां दारु पीधेलानी जेम बडबडाट करे ते.

**१९ प्रेक्ष्यदोष**—वांदरानी जेम आसपास जोया करे, होठ हलाव्या करे ते.

**मू०—सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥**

## शब्दार्थः—

**सुहुमेहिं**–सूक्ष्म
**अंगसंचालेहिं**–अंग चालवाथी
**खेलसंचालेहिं**–बळखो आववाथी (कफ)
**दिट्ठिसंचालेहिं**–दृष्टि चालवाथी
**एवमाइएहिं**–ए विगेरे
**आगारेहिं**–आगारों
**अभग्गो**–अखंडित
**अविराहिओ**–अविराधित विराधना रहित
**हुज्ज**–हो
**मे**–मारो
**काउस्सग्गो**–काउस्सग्ग

**सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं**—सूक्ष्म प्रकारथी शरीरनो संचार थवाथी, शरीर जरापण चालवाथी.

**सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं**—सूक्ष्म कफ या थूंकनो संचार थवाथी.

**सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं**—सूक्ष्म दृष्टि संचार थवाथी, आंखनी कीकी या भ्रमर वगेरे चालवाथी.

***एवमाइएहिं आगारेहिं**—ए विगेरे आगारो–अपवादोथी.

**अभग्गो अविराहिओ**—अभंग अने विराधना रहित.

**हुज्ज मे काउस्सग्गो**—मारो काउस्सग्ग हो-थाओ.

**भावार्थ**—सहेज शरीर ध्रूजवाथी–फरकवाथी, जराक थुंक के कफ गळवाथी तथा नेत्रनी पापण के कीकी चलाववाथी आटली छूटथी मारो कायोत्सर्ग अखंडित अने अविराधित होजो ॥३॥

## ते कायोत्सर्ग क्यां सुधी अखंड राखवो? ते बतावे छे.

**मू०—जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।५। (चार नवकार अथवा एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पछी लोगस्स बोलवो. )**

---

१ अहीं आदि शब्द आप्यो छे तेथी नीचे लखेला बीजा पण चार आगारो लेवाना छे—ते आ प्रमाणे—

अग्निना उपद्रवथी बीजे स्थाने जवुं पडे, तथा अग्नि, दीवा वीजलीना प्रकाशथी वस्त्रादिक ओढवां पडे १, बिलाडी, उंदर विगेरेनी आड पडे अथवा पंचेंद्रिय जीवनुं छेदन भेदन थतुं होय तो बीजे स्थाने जवुं पडे २, अकस्मात् चोरनी धाड पडे तेथी अथवा राजादिकना भयथी बीजे स्थाने जवुं पडे ३, सिंह विगेरे उपद्रव करता होय अथवा सर्पादिक झेरी प्राणीओ डंश करवा आवता होय अथवा भींत पडती होय एवे एवे कारणे बीजे स्थाने जवुं पडे. ४

## शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **जाव**—ज्यांसुधी | **कायं**—कायाने |
| **अरिहंताणं**—अरिहंत | **ठाणेणं**—एक स्थानके |
| **भगवंताणं**—भगवंतोने | **मोणेणं**—मौनपणे |
| **नमुक्कारेणं**—नमस्कार करीने | **झाणेणं**—ध्यानवडे |
| **न पारेमि**—न पारुं | **अप्पाणं**—पोतानी |
| **ताव**—त्यां सुधी | **वोसिरामि**—वोसिरावुं छुं. |

**जाव**—ज्यां सुधी.

**अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं**—अरिहंत भगवंतोने नमस्कार वडे, अर्थात् 'नमो अरिहंताणं' एवुं पद न बोलुं त्यां सुधी.

**न पारेमि**—हुं कायोत्सर्गने पारुं नहीं.

**ताव**—त्यां सुधी.

**कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं**—पोतानी कायाने स्थिर स्थानक वडे, मौन धारण करवावडे तथा शुभ ध्यान वडे.

**वोसिरामि**—पापक्रियाथी वोसरावुं छुं—तजुं छुं. अर्थात् पोताना शरीरने अशुभ-पाप व्यापारथी दूर राखुं छुं. 'नमो अरिहंताणं' पद बोली अरिहंत भगवंतोने नमस्कार करी काउस्सग्ग पूर्ण न करुं त्यां सुधी हुं शरीरने निश्चल राखुं छुं, वचनथी मौन धारण करुं छुं, अने मनथी शुभध्यान धारण करी पापना बधां कृत्योथी जूदो थाउं छुं.

**भावार्थ**—ज्यांसुधी अरिहंत भगवानने नमस्कारवडे एटले 'नमो अरिहंताणं' एम बोली नमस्कार करीने हुं कायोत्सर्ग पारुं नहीं एटले समाप्त करुं नहीं, त्यांसुधी हुं मारी पोतानी कायाने स्थिर राखी, मौन धारण करी तथा शुभ ध्यानमां रही सर्व पापकार्योथी वोसरावुं छुं—मारी कायाने पाप कार्यथी जूदी राखुं छुं.

पद २८, संपदा ८, गुरु १३, लघु १२७, सर्ववर्ण १४०

इति अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र ६

---

## ॥ ७ अथ लोगस्स–नामस्तव× सूत्र ॥

**मू०—लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।**
**अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥**

**लोगस्स**—लोकने,
**उज्जोअगरे**—उद्योत करनारा,
**धम्मतित्थयरे**--धर्मरूप तीर्थना करनारा,
**जिणे**--जिनोने
**अरिहंते**--अरिहंत भगवानोने,
**कित्तइस्सं**--हुं स्तवीश,
**चउवीसं**--चोवीशे
**पि**--पण
**केवली**--केवली भगवानोने

---

× आ सूत्रमां चोवीस तीर्थंकरोनी नामपूर्वक स्तुति छे, माटे आनुं वीजुं नाम **नामस्तव** अथवा **चतुर्विंशति स्तव** या **चउवीसत्थो** एम बीजां त्रण नामो पण बोलाय छे.

**लोगस्स उज्जोअगरे**---लोकमां एटले स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल आ त्रण जगतमां धर्मनो उद्योत करवावाळा,

**धम्मतित्थयरे जिणे**---धर्मरूप तीर्थने स्थापवावाळा, राग--द्वेषादि अंतरंग शत्रुओने जीतवावाळा,

**अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली**—एवा चोवीशे केवळ-ज्ञानी तीर्थंकरोनी हुं स्तुति करीश, कीर्त्तन करीश ॥१॥

**भावार्थ**—स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळ ए त्रणे लोकमां प्रकाश करनारा, धर्मरूपी तीर्थनुं स्थापन करनारा, राग—द्वेषने जीतनारा अने केवळज्ञान तथा केवळ दर्शनने धारण करनारा चोवीशे* तीर्थंकरोनी हुं स्तुति करीश एटले हुं स्तुति करुं छुं ॥ १ ॥

---

* **श्रीऋषभदेवनो** जन्म विनितानगरीमां थयो. तेमना नाभिराजा पिता अने मरुदेवा माता हतां. बधा तीर्थंकरोनी माताओ पहेला स्वप्ने सिंह देखे पण मरुदेवा माताए प्रथम वृषभ दीठो. एने गर्भनो महिमा जाणी तेमनुं श्री ऋषभदेव नाम राख्युं तथा धर्मनी आदिना प्रवर्त्तावनार होवाथी बीजुं आदिनाथ नाम पण कहीए. तेमनुं पांचसें धनुष्य प्रमाण शरीर अने चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य हतुं. तेओ सुवर्ण वर्णवाळा अने वृषभ लांछनवाळा हता. तेमने सो पुत्र हता. मोटानुं नाम भरत हतुं जेमने आरिसाभुवनमां केवळज्ञान थयुं हतुं अने ९९ पुत्रो दीक्षा लइ केवळज्ञान पामी मोक्षे गया हता.

## ते स्तुति आ प्रमाणे—

मू०—उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

### शब्दार्थः—

**उसभम्**–श्रीऋषभदेव स्वामीने
**अजिअं**–अजितनाथने
**च**–अने
**वंदे**–हुं वंदना करुं छुं
**संभवं**–संभवनाथने
**अभिणंदणं**–अभिनंदन स्वामीने
**सुमइं**–सुमतिनाथने
**पउमप्पहं**–पद्मप्रभुने
**सुपासं**–सुपार्श्वनाथने
**जिणं**–जिनेश्वरने
**चंदप्पहं**–चंदप्रभप्रभुने

---

**श्री अजितनाथ**—अयोध्या नगरीमां जन्म्या. तेमना पिता जीतशत्रु राजा हता अने तेमनी मातानुं नाम विजयाराणी हतुं. ते राजा राणी प्रथम पासाबाजी रमतां त्यारे राणी हारी जती अने राजानी जीत थती पण भगवंत गर्भे आव्या पछी राणी जीते अने राजा हारे, एवो गर्भनो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं. तेमनुं साडाचारसें धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोतेर लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्णवर्ण अने लांछन हाथीनुं हतुं.

**उसभमजिअं च वंदे**—श्री ऋषभदेव भगवान अने श्री अजित-नाथ भगवानने हुं वंदन करुं छुं.

**संभवमभिणंदणं च सुमइं च**—श्री संभवनाथ प्रभुने, श्री अभिनंदन प्रभुने, तथा श्री सुमतिनाथ भगवानने.

---

**श्री संभवनाथनो**—श्रावस्ति नगरीमां जन्म थयो हतो तेमना पिता जीतारि राजा अने माता सेना राणी हतां. देशमां दुष्काळ हतो छतां भगवंत गर्भे आव्याथी अणचिंतव्यो पृथ्वीमां धान्यनो संभव थयो तेथी संभवनाथ नाम दीधुं. तेमनुं चारसें धनुष्य प्रमाण शरीर अने साठ लाख पूर्वनुं आयु हतुं. सुवर्ण वर्णवाळा हता तथा लांछन घोडानुं हतुं.

**श्री अभिनंदन**—स्वामीनो अयोध्या नगरीमां जन्म हतो. तेमना पिता संवर राजा अने माता सिद्धार्था राणी हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी इंद्रमहाराज आवीने भगवंतनी माताने घणीवार स्तवी जता हता, तेथी राजाप्रमुखे जाण्युं जे ए गर्भनोज महिमा छे माटे अभिनंदन नाम दीधुं. साडा त्रणसें धनुष्य प्रमाण शरीर तथा पचास लाख पूर्वनुं आयुष्य हतुं. लांछन वानरनुं अने सुवर्ण वर्णवाळा हता.

**श्री सुमतिनाथनो**—अयोध्या नगरीमां जन्म हतो. तेमना पिता मेघरथ राजा अने माता सुमंगळा हतां. प्रभु गर्भमां रह्या पछी ते गाममां एक वणिकनी बे स्त्रीओ हती. तेमां न्हानीने पुत्र हतो अने म्होटी वंध्या हती पण ते छोकरानुं प्रतिपालन बन्ने माताओ करती

**पउमप्पहं सुपासं**--श्री पद्मप्रभस्वामीने, श्री सुपार्श्वनाथ प्रभुने,

**जिणं च चंदप्पहं वंदे**—अने राग–द्वेषने जीतवावाळां श्री चंद्रप्रभ भगवानने हुं वंदन करुं छुं ॥ २ ॥

**भावार्थ**—श्री ऋषभदेव १, श्री अजितनाथ २, श्री संभवनाथ ३, श्री अभिनंदन स्वामी ४, श्री सुमतिस्वामी ५, श्री पद्मप्रभ ६, श्री सुपार्श्वनाथ ७, अने राग–द्वेषने जीतवावाळां श्री चंद्रप्रभ ८, भगवानने हुं वंदन करुं छुं. ॥ २ ॥

---

हती. एम करतां ते वाणियो ज्यारे मरण पाम्यो त्यारे म्होटी स्त्री धननी लालचे कहेवा लागी जे "पुत्र मारो छे माटे जेनो पुत्र होय तेनु धन थाय." तेमज न्हानीनो तो दीकरो हतो तेथी तेणे कह्युं के "ए पुत्र म्हारो छे अने धन पण मारुंज छे." एम बन्ने शोक्योनो टंटो थयो. ते वधती वधती दरबारमां आवो ते वारे गर्भना महिमाथी राणीने चुकादो करवानी भली बुद्धि उत्पन्न थइ, तेथी ए बन्नेने राणीए कह्युं के "बन्ने मळीने धन अर्द्धो अर्द्ध वहेंची लो अने छोकराना पण बे भाग करी अर्द्धो अर्द्ध वहेंची लो!" ते सांभळी नानी स्त्री बोली के "मारे द्रव्य जोइतु नथी, छोकराना कांइ बे विभाग थाय नहि, ए छोकरो एनो छे ते म्हारोज छे." ते सांभळी राणी बोली के— "ए छोकरो न्हानी स्त्रीनो छे. केमके पुत्रनु मृत्यु थाय त्यां सुधी पण म्होटी स्त्रीथी ना कहेवाणी नहीं अने न्हानी स्त्रीए मारवानी मनाइ करी, माटे पुत्र अने धन एने हवाले करो अने म्होटी स्त्रीने घरथी बहार

**मू०—सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।**
**विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥**

**शब्दार्थः—**

**सुविहिं च पुप्फदंतं**-जेमनुं बीजुं नाम पुष्पदंत छे एवा श्री सुविधिनाथने

**सीयल**-श्री शीतलनाथने

**सिज्जंस**-श्रेयांसनाथने

**वासुपुज्जं**—वासुपूज्यस्वामीने

**विमलं**—विमलनाथने

**अणंतं**—अनंतनाथने

**धम्मं**—धर्मनाथने

**संतिं**—शांतिनाथने

---

काढो." गर्भना महिमाथी भगवंतनी माताने एवी बुद्धि उपजी ते माटे सुमति नाम दीधुं. तेमनुं त्रणसें धनुष्य प्रमाण शरीर, चालीश लाख पूर्वनुं आयुष्य, सुवर्ण वर्ण तथा क्रौंच पक्षीनुं लांछन हतुं.

**श्री पद्मप्रभ**—स्वामीनो कौशांबीनगरीमां जन्म हतो. तेमना पिता श्रीधरराजा अने माता सुसीमाराणी हतां, भगवंत गर्भे आव्या पछी माताने कमळनी शय्याए सूवानो दोहलो उपज्यो ( जे देवताए पूर्ण कर्यो ) तेथी अने भगवंतनुं शरीर पद्म ( कमल ) सरखुं रक्तवर्णी हतुं तेथी पद्मप्रभ नाम दीधुं. तेमनुं अढीशें धनुष्य प्रमाण शरीर अने त्रीश लाख पूर्वनुं आयुष्य हतुं. लांछन पद्मनुं हतुं तथा वर्णे रक्त हता.

**श्री सुपार्श्वनाथनो**—वणारसी नगरीमां जन्म हतो. तेमना पिता सुप्रतिष्ठ राजा अने माता पृथ्वीराणी हतां. मातानां बन्ने पासां

**सुविहिं च पुप्फदंतं**—जेमनुं बीजुं नाम पुष्पदंत छे एवा श्री सुविधिनाथ भगवानने.

**सीयलसिज्जंसवासुपुज्जं च**—श्री शीतलनाथ, श्री श्रेयांसनाथ अने श्री वासुपूज्य भगवानने.

---

रोगे करी व्याप्त हतां, ते भगवान गर्भे आव्या पछी (बन्ने पासां) सुवर्णवर्णी अने घणां सुकोमळ थयां माटे सुपार्श्व नाम दीधुं. (एक प्रतमां 'भगवंतना पितानां बे पासां कोढ रोगवाळां हतां, तेने भगवंतनी माताए हाथ फेरव्याथी सुकुमाळ नीरोगी थयां' एवो पाठ लख्यो छे.) तेमनुं बसो धनुष्य प्रमाण शरीर अने वीश लाख पूर्वनुं आयुष्य हतुं. सुवर्ण वर्ण अने लांछन साथियानुं हतुं.

**श्री चंद्रप्रभस्वामी**—चंद्रपुरी नगरीमां जन्म्या हता. तेमना पिता महसेन राजा अने माता लक्ष्मणा राणी हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी माताने चंद्रमानुं पान करवा (पीवा)नो दोहलो उपज्यो (जे प्रधाने बुद्धिए करी पूर्ण कराव्यो) ए गर्भनो प्रभाव जाणी चंद्रप्रभ नाम दीधुं, तेमनुं एकसो पचास धनुष्य प्रमाण शरीर अने दश लाख पूर्वनुं आयुष्य हतुं. श्वेत वर्ण अने लांछन चंद्रनुं हतुं.

**श्री सुविधिनाथ**—(एमनुं बीजुं नाम पुष्पदंत छे.) तेमनो काकंदी नगरीमां जन्म हतो. तेमना पिता सुग्रीवराजा अने रामा राणी माता हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी माता तथा पिता भली विधिए

**विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि**—श्री विमलनाथप्रभु, श्री अनंतनाथप्रभु, राग—द्वेषने जीतवावाळा श्री धर्मनाथप्रभु अने श्री शांतिनाथ प्रभुने हुं वंदन करुं छुं ॥ ३ ॥

**भावार्थ**—जेमनुं बीजुं नाम पुष्पदंत छे एवा श्री सुविधिनाथ ९ भगवानने, शीतळनाथने १०, श्रेयांसनाथने ११, अने श्री वासुपूज्य १२ भगवानने, विमळनाथने १३, अनंतनाथने १४, अने राग—द्वेषना जीतनारा धर्मनाथने १५, तथा श्री शांतिनाथने १६, हुं वंदना करुं छुं ॥ ३ ॥

---

करी धर्म करवा लाग्या, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी सुविधिनाथ नाम दीधुं. अने मचकुंदनां फूलनी कळी सरखा प्रभुना उज्ज्वळ दांत हता माटे बीजुं पुष्पदंत नाम दीधुं. तेमनुं एकसो धनुष्य प्रमाण शरीर, बे लाख पूर्वनुं आयुष्य, श्वेत वर्ण अने मगरमच्छनुं लांछन हतुं.

**श्री शीतळनाथनो**—भद्दिलपुर नगरमां जन्म हतो. तेमना पिता दृढरथ राजा अने माता नंदा राणी हतां. पिताना शरीरे दाहज्वर थयो हतो ते भगवंत गर्भे आव्या पछी राजाना शरीरनी उपर राणीए हाथ फेरव्याथी शीतलता थइ, एवो गर्भनो महिमा जाणी शीतळनाथ नाम दीधुं. तेमनुं नेवुं धनुष्य प्रमाण शरीर अने एक लाख पूर्वनुं आयुष्य हतुं. सुवर्ण वर्ण अने श्रीवच्छनुं लांछन हतुं.

**श्री श्रेयांसजिननो**—सिंहपुरनगरमां जन्म हतो. तेमना पिता विष्णुराजा अने माता विष्णुराणी हतां. कोइ देरासरमां परंपरागत देवता अधिष्ठित सज्जा (शय्या)नी पूजा थती हती. ते सज्जाए जे बेसे अथवा

मू०—कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

## शब्दार्थः—

कुंथुं—कुंथुनाथने
अरं—अरनाथने
मल्लिं—मल्लिनाथने
वंदे—वंदन करुं छुं
मुणिसुव्वयं—मुनिसुव्रतस्वामीने
नमिजिणं—नमिजिनने
वंदामि—हुं वंदन करुं छुं
रिट्ठनेमिं—अरिष्टनेमिने
पासं—पार्श्वनाथने
तह—तथा
वद्धमाणं—वर्द्धमानस्वामीने

---

सूवे तेने उपद्रव ऊपजे. ते भगवंत गर्भे आव्या पछी माताना मनमां आव्युं जे देवगुरुनी प्रतिमानी पूजा थाय ते तो खरुं छे पण सज्जानी पूजा तो कयांए सांभळी नथी. एम चिंतवी सज्जाना रक्षा करनार पुरुषे मनाइ कर्या छतां पण प्रभुनी माता ते सज्जा उपर बेठां तथा सूतां ते छतां गर्भना प्रभावथी अधिष्ठित देवता उपद्रव न करी शक्यो अने सज्जा मूकी जतो रह्यो. त्यार पछी राजा प्रमुखे ते सज्जा वपराशमां लीधी, एवो गर्भनो महिमा जाणी श्रेयांस नाम दीधुं. तेमनुं एंशी धनुष्य प्रमाण शरीर अने चोराशी लाख वर्षनुं आयुष्य हतुं. सुवर्ण वर्ण हतो अने लांछन गेंडानुं हतुं.

**कुंथुं अरं च मल्लिं**—श्री कुंथुनाथ भगवान, श्री अरनाथ भगवान, अने श्री मल्लिनाथ भगवानने.

**वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च**—श्री मुनिसुव्रतस्वामी अने राग–द्वेषने जीतवावाळा श्री नमिनाथ भगवानने हुं वंदन करुं छुं.

---

**श्री वासुपूज्य**—स्वामीनो चंपानगरीमां जन्म हतो. तेमना पिता वसुपूज्यराजा अने माता जयाराणी हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी इंद्रमहाराज वारंवार आवी वसु एटले रत्ननी वृष्टि करीने मातापितानी पूजा करता तेथी वासुपूज्य नाम दीधुं. तेमनुं सित्तेर धनुष्य प्रमाण शरीर अने बहोतेर लाख वर्षनुं आयुष्य हतुं. रक्त वर्ण अने लांछन पाडानुं हतुं.

**श्री विमळनाथनो**—कंपिलपुरनगरमां जन्म हतो. तेमना पिता कृतवर्मराजा अने माता श्यामाराणी हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी तेमना नगरमां कोइ स्त्री–भर्तार देहरे आवी उतर्यां. त्यां कोइ व्यंतरी–देवी रहेती हती तेणे ते पुरुषनुं रूप दीठुं. तेथी तेने कामक्रीडा करवानी अभिलाषा थइ. पछी तेनी स्त्रीना जेवुं पोतानुं रूप विकुर्वी व्यंतरी तेनी पासे सूती. प्रभाते बन्ने स्त्री समान देखी पुरुषे कह्युं जे "आमां म्हारी स्त्री कोण ?" त्यारे पहेली बोली के ए म्हारो भर्तार छे अने बीजी बोली के ए म्हारो भर्तार छे. एम वदतां वदतां सर्व राजा पासे आव्यां. राजा तथा प्रधान बेहु स्त्रीने समान देखी कोइ रीते निवेडो करी शक्या नहिं. पछी राणीए पुरुषने दूर ऊभो राख्यो अने बन्ने स्त्रीने पण दूर ऊभी

**वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च**—अरिष्टनेमि जेमनुं प्रसिद्धनाम श्री नेमिनाथ छे तेमने, श्री पार्श्वनाथ भगवानने, अने श्री वर्धमान स्वामीने जेमनुं प्रसिद्ध नाम श्री महावीर स्वामी छे तेओने हुं वंदन करुं छुं ॥ ४ ॥

**भावार्थ**—श्री कुंथुनाथने १७, तथा अरनाथने १८, मल्लिनाथने १९, मुनिसुव्रतस्वामीने २०, तथा राग–द्वेषने जीतनारा नमिनाथने २१, वांदुं छुं. श्री अरिष्टनेमिने २२, तथा पार्श्वनाथने २३, अने श्री महावीर स्वामीने २४, हुं वंदन करुं छुं ॥ ४ ॥

---

राणीने कह्युं के "जे पोताना सत्यना प्रभावथी भर्तारने स्पर्श करे तेनो ए भर्तार जाणवो." ते सांभळी व्यंतरीए देवशक्तिना प्रभावे पोतानो हाथ लांबो करी भर्तारने स्पर्श कर्यो तेवोज राणीए तेनो हाथ पकडी लइने कह्युं के "तुं तो व्यंतरी छे माटे तारे स्थानके जती रहे." एवी रीते चुकादो थवाथी विमळ मतिवाळी राणी कहेवाणी, ते गर्भनोज प्रभाव जाणी विमळनाथ नाम दीधुं. तेमनुं साठ धनुष्य प्रमाण शरीर अने साठ लाख वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. सुवर्ण वर्ण अने सूकर (भुंड)नुं लांछन जाणवुं.

**श्री अनंतनाथनो**—अयोध्या नगरीमां जन्म हतो, तेमना पिता सिंहसेन राजा अने माता सुयशा राणी हतां. एक वखत स्वप्नमां जेनो अंत न आवे एवुं मोटुं चक्र राणीए आकाशने विषे भमतुं दीठुं अने अनंत रत्ननी माळा दीठी तथा अनंत गांठना दोरा करी बांध्या, तेथी

मू०—एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥

## शब्दार्थः—

**एवं**—एवी रीते

**मए**—में

**अभिथुआ**—स्तव्या

**विहुयरयमला**—टाळ्या छे कर्मरूप रज अने मल जेमणे

**पहीणजरमरणा**—विशेष क्षय कर्यां छे, जरा अने मरण जेमणे

**चउवीसं पि**—चोवीसेने पण

**जिणवरा**—जिनवरो, सामान्य केवळीओमां श्रेष्ठ

**तित्थयरा**—तीर्थंकरो

**मे**—मने, मारा उपर

**पसीयंतु**—प्रसन्न थाओ

---

लोकोना ताव गया, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी अनंतनाथ नाम दीधुं. तेमनुं पचास धनुष्य प्रमाण शरीर अने त्रीशलाख वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. सुवर्ण वर्ण तथा लांछन सिंचाणानुं जाणवुं.

**श्री धर्मनाथस्वामी—**रत्नपुर नगरमां जन्म्या हता. तेमना पिता भानुराजा अने माता सुव्रता राणी हतां. राजा राणीने पूर्वे धर्म उपर अल्प राग हतो ते भगवंत गर्भे आव्या पछी तन्नेने धर्म उपर अत्यंत राग थयो, एवो गर्भनो महिमा जाणी धर्मनाथ नाम दीधुं. तेमनुं ४५

**एवं मए अभिथुआ**—ए रीते माराथी स्तवायेला अर्थात् स्तुति करायेला.

**विहुयरयमला पहीणजरमरणा**—जेओ कर्मरूप रज अने मेलथी रहित छे अने जे वृद्धावस्था तथा मरणथी छुटा छे.

**चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु**—अने जेओ सामान्य केवळीओमां श्रेष्ठ छे, एवा चोवीसे तीर्थंकर भगवान् मारा उपर प्रसन्न थाओ ॥ ५ ॥

---

धनुष्य प्रमाण शरीर अने दश लाख वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. सुवर्ण वर्ण तथा वज्रनुं लांछन जाणवुं.

**श्री शांतिनाथनो**—गजपुर नगरमां जन्म हतो. तेमना पिता विश्वसेन राजा अने माता अचिरा राणी हतां. वळी ते देशमां मरकीनो उपद्रव घणो हतो ते भगवंत गर्भे आव्या पछी माताए अमृत छांटचुं तेथी मरकीथी शांति थइ. एवा गर्भना प्रभावथी शांतिनाथ नाम दीधुं. तेमनुं चालीश धनुष्य प्रमाण शरीर अने एक लाख वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. सुवर्ण वर्ण तथा लांछन मृगनुं जाणवुं.

**श्री कुंथुनाथनो**—हस्तिनापुर नगरमां जन्म हतो अने तेमना पिता सूर राजा अने माता श्री राणी हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी माताजीए स्वप्नमां रत्ननो थूभ पृथ्वीने विषे दीठो तथा शत्रु हता ते कुंथुआनी जेवा न्हाना थया अथवा कुंथुआ प्रमुख न्हाना महोटा

**भावार्थ**—ए प्रकारे में (नामपूर्वक) स्तव्या, ते चोवीशे तीर्थंकरो तथा बीजा पण तीर्थंकरो जेओए (कर्मरूप) रज तथा मळने टाळ्या छे तथा जेमणे जरा—वृद्धावस्था अने मरण अतिशये करीने क्षय कर्या छे

---

जीवोनी जयणा देशमां प्रवर्त्ती, तेथी कुंथुनाथ नाम दीधुं. तेमनुं पांत्रीश धनुष्यनुं शरीर अने पंचाणुं हजार वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. सुवर्ण वर्ण तथा लांछन छाग (बोकडा) नुं जाणवुं.

**श्री अरनाथनो**—गजपुर नगरमां जन्म हतो. तेमना पिता सुदर्शन राजा अने माता देवी राणी हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी राणीए स्वप्नमां रत्नमय आरो तथा थूभ दीठां, एवो गर्भनो महिमा जाणी अरनाथ नाम दीधुं. तेमनुं त्रीश धनुष्य शरीरनुं मान अने चोराशी हजार वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. सुवर्ण वर्ण तथा लांछन नंदावर्त्तनुं जाणवुं.

**श्री मल्लीनाथ**—मिथिलानगरीमां जन्म्या हता. तेमना पिता कुंभराजा अने माता प्रभावती राणी हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी माताने एक रात्रिए छए ऋतुनां फूलनी शय्याए सूवानो दोहलो ऊपज्यो, ते देवताए पूर्यो, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी श्री मल्लिनाथ नाम दीधुं. तेमनुं पचीश धनुष्य शरीरनुं मान अने पंचावन हजार वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. नीलवर्ण तथा लांछन कुंभनुं जाणवुं.

**श्री मुनिसुव्रत स्वामिनो**—राजगृह नगरीमां जन्म हतो. तेमना पिता सुमित्र राजा अने माता पद्मा राणी हतां. भगवंत गर्भे

तथा जे सामान्य केवळीओमां श्रेष्ठ छे, एवा ते तीर्थंकरो मारा उपर प्रसन्न थाओ ॥ ५ ॥

---

आव्या पछी मातापिता मुनिराजनी पेरे श्रावकनां भलां बार व्रत साचववा लाग्यां, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी मुनिसुव्रत नाम दीधुं. तेमनुं वीश धनुष्य शरीरमान अने त्रीश हजार वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. कृष्ण वर्ण तथा लांछन काचबानुं जाणवुं.

**श्री नमिजिन**—मिथिला नगरीमां जन्म्या हता. तेमना पिता विजय राजा अने माता वप्रा राणी हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी सीमाडिया राजा भगवंतना पिताना शत्रु हता ते चढी आव्या. गामना किल्लाने चारे बाजु लस्करनो पडाव नांखी घेरी लीधुं. राजाने घणी बीक लागी पण राणीए किल्ला उपर चढीने शत्रुओने वांकी नजरे जोया. राणीनुं तेज वैरी राजाओथी खमायुं नहि, तेथी सर्व आवीने भगवंतनी माताने नमस्कार करी कहेवा लाग्या के अमारा उपर सौम्यदृष्टिए जुओ. राणीए तेमना उपर सौम्य नजरे जोइ माथे हाथ मूक्यो. सर्व राजाओ राणीने पगे लागी आज्ञा मागी पोतपोताने नगरे गया, एवो गर्भनो प्रभाव जाणीने नमिनाथ नाम दीधुं. तेमनुं पन्नर धनुष्य शरीरनुं मान अने दश हजार वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. सुवर्ण वर्ण तथा लांछन नीला कमळनुं जाणवुं.

**श्री अरिष्टनेमि**—प्रभुनो सौरीपुर नगरमां जन्म हतो. तेमना पिता समुद्रविजय राजा अने माता शिवादेवी राणी हतां. प्रभु गर्भे

मू०—कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥

## शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **कित्तिय**—स्तव्या | **सिद्धा**—सिद्ध थया छे |
| **वंदिय**—वांद्या | **आरुग्ग**—आरोग्य |
| **महिया**—पूज्या | **बोहिलाभं**—सम्यग् दर्शननो लाभ |
| **जे ए**—जेओ, ए | **समाहिवरं**—प्रधान समाधि |
| **लोगस्स**—लोकमां | **उत्तमं**—उत्तम |
| **उत्तमा**—उत्तम | **दिंतु**—आपो |

---

आव्या पछी माताए स्वप्नमां अरिष्ट एटले काळा रत्ननी रेल दीठी तथा आकाशमां चक्र उछळतुं दीठुं, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी अरिष्टनेमि नाम दीधुं. बीजुं नाम श्री नेमिनाथ. तेमनुं दश धनुष्य शरीरमान अने एक हजार वर्षनुं आयुष्य, श्याम वर्ण अने लांछन शंखनुं हतुं.

**श्री पार्श्वनाथस्वामीनो**—वणारसीनगरीमां जन्म हतो. तेमना पिता अश्वसेन राजा अने वामा राणी माता हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी माताए अंधारी रात्रे पोतानी पासे सर्प जतो दीठो. ते सर्पना जवाना मार्गनी वचमां राजानो हाथ देखी राणीए ऊंचो कर्यो, तेथी राजा जागी ऊठ्या ने बोल्या के 'शा माटे हाथ ऊंचो कीधो?' राणीए सर्प दीठानुं

**कित्तियवंदियमहिया**—जेओ इन्द्रआदि देवताओथी स्तवायेला छे, वंदायेला छे, अने पूजायेला छे.

**जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा**—जेओ समस्त लोकोमां उत्तम छे, अने सिद्ध थयेला छे, अर्थात् सिद्धि पदने पामेला छे ते भगवान् मने..

**आरुग्गबोहिलाभं**—आरोग्य तथा सम्यक्त्वनो लाभ.

**समाहिवरमुत्तमं दिंतु**—तथा प्रधान-उत्तम समाधि आपो अर्थात् समाधिनुं श्रेष्ठ वरदान आपो ॥ ६ ॥

**भावार्थ**—जेमने इंद्रादिक देवोए पण स्तव्या छे, वांद्या छे अने पूज्या छे, तथा जेओ लोकने मध्ये उत्तम-प्रधान सता सिद्धि पदने पाम्या छे, ते सर्व तीर्थंकरो मने आरोग्य-नीरोगीपणुं, बोधिनी प्राप्ति अने उत्तम समाधिनुं वरदान आपो ॥ ६ ॥

---

कह्युं. राजा कहे 'तमे जूठुं बोलो छो.' पछी दीपक मंगावी जोयुं तो सर्प दीठो. ते वारे विस्मय पामी राजाए विचार्युं जे में न दीठो ने राणीए दीठो ए गर्भनो प्रभाव छे, एम जाणी श्री पार्श्वनाथ नाम दीधुं. तेमनुं नव हस्त प्रमाण शरीर अने एक सो वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. नील वर्ण तथा लांछन सर्पनुं जाणवुं.

**श्री वर्द्धमानस्वामीनो**—क्षत्रियकुंडनगरमां जन्म हतो. तेमना पिता सिद्धार्थ राजा अने माता त्रिशला राणी हतां. भगवंत गर्भे आव्या पछी माता पिता समस्त ऋद्धिए वृद्धि पाम्या, धन धान्यादिकना भंडार

मू०—चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

**शब्दार्थः—**

**चंदेसु**—चंदना समूहथी
**निम्मलयरा**—अतिनिर्मळ
**आइच्चेसु**—सूर्यना समूहथी
**अहियं**—अधिक
**पयासयरा**—प्रकाश करनारा
**सागरवर**—स्वयंभूरमण समुद्रनी पेठे, मोटा समुद्र जेवा
**गंभीरा**—गंभीर
**सिद्धा**—सिद्ध भगवानो
**सिद्धिं**—सिद्धि—मोक्षने
**मम**—मने
**दिसंतु**—आपो

---

तथा देश नगरादिकनी वृद्धि थइ. सर्व राजा आज्ञामां वर्त्तवा लाग्या, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी वर्द्धमान नाम दीधुं. वळी बाल्यावस्थामां मेरु-पर्वत अंगुठे चांप्यो तथा आमलकी क्रीडा करतां देवता हार्यो, माटे इंद्रमहाराजे श्री महावीर एवुं बीजुं नाम दीधुं. तेमनुं सात हाथनुं शरीर अने बहोतेर वर्षनुं आयुष्य जाणवुं. सुवर्ण वर्ण अने लांछन सिंहनुं जाणवुं. महावीरस्वामी २४ मा तीर्थंकर थया. त्यार पछी कोइ पण तीर्थंकर भगवान थया नथी तेमज आ अवसर्पिणी काळमां थवाना पण नथी. हालमां जे जैनधर्म प्रवर्त्ते छे ते श्री वीरप्रभुनुं ज शासन समजवुं. तेमनी पाटे सुधर्मास्वामी गणधर थया. हालमां जे साधुओ जैनधर्मने माननारा छे ते सघळा तेओनी पाटपरंपराए थयेला समजवा.

**चंदेसु निम्मलयरा**—जेओ चन्द्रोथी पण अधिक निर्मळ छे.

**आइच्चेसु अहियं पयासयरा**—जेओ सूर्योथी पण अधिक प्रकाश करवावाळा छे.

**सागरवरगंभीरा**—अने जेओ मोटा समुद्र—स्वयंभूरमण नामना-समुद्रनी जेम गंभीर छे.

**सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु**—एवा सिद्ध भगवान मने मोक्ष आपो, अर्थात् सिद्ध परमात्माना अवलम्बनथी मने मोक्ष पद मळो ॥ ७ ॥

**भावार्थ**—सर्वचंद्रोथी विशेष निर्मळ, सर्व सूर्योथी अधिक प्रकाश करनारा अने स्वयंभूरमण समुद्र जेवा गंभीर सिद्ध भगवंतो मने मोक्षमार्ग देखाडो, एटले मोक्ष आपो, अर्थात् तेमना आलंबनथी मने मोक्षनी प्राप्ति थाओ ॥ ७ ॥

पद २८, संपदा २८, गुरु २७, लघु २२९, सर्ववर्ण २५६.

**इति लोगस्स- नामस्तव सूत्र ७.**

## ॥ ८ अथ पडिलेहणा ॥

१ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहणं संदिस्साए मि ॥ इच्छं ॥

२ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहणं करेमि ॥ इच्छं ॥

( पछी मुहपत्तिनी २५ पडिलेहणा तथा शरीरनी २५ पडिलेहणा करवी । पडिलेहणा करती वखते नीचे लखेला पचास बोल चिंतववा )

## ॥ पडिलेहणाना ५० बोल ॥

**मुहपत्तिनी २५ पडिलेहणा**—सम्यक्त्वमूल निर्मल दृष्टिए जीव जोई जयणा करुं. ( एम बोली दृष्टि पडिलेहणा करवी ) सम्यक्त्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय, मिथ्यात्वमोहनीय परिहरुं ॥ कामराग, स्नेह राग, दृष्टिराग परिहरुं ॥ सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरुं ॥ कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरुं ॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरुं ॥ ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्रविराधना परिहरुं ॥ मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति आदरुं ॥ मनोदंड, वचनदंड, कायदंड परिहरुं ॥

**शरीरनी २५ पडिलेहणा**—हास्य, रति, अरति परिहरुं ॥ भय, शोक, दुगंच्छा परिहरुं ॥ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या परिहरुं ॥ ऋद्धिगारव, रसगारव, सातागारव, परिहरुं ॥ मायाशल्य, नियाणशल्य, मिथ्यात्वशल्य परिहरुं ॥ क्रोध, मान, परिहरुं ॥ माया, लोभ परिहरुं, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय विराधना परिहरुं ॥ ( पछी )

१ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामाइयं संदिस्साएमि ॥ इच्छं ॥

२ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामाइयं ठाएमि ॥ इच्छं ॥

( पछी एक नवकार गणी नीचे प्रमाणे बोले )

इच्छाकारेण संदिसह, भगवन् सामायिक दंडक उच्चरावोजी ॥ एम बोली सामायक उचरे ॥

## ॥ ९ अथ× करेमि भंते सूत्र वा सामायकनुं पच्चक्खाण ॥

**मू०—करेमि भंते! सामाइयं। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं ॥**

### शब्दार्थः—

**करेमि**—करुं छुं
**भंते !**—हे भगवन् !
**सामाइयं**—सामायिक
**सावज्जं**—सावद्य, पाप सहित
**जोगं**—व्यापारनो
**पच्चक्खामि**—निषेध करुं छुं, त्याग करुं छुं
**जाव**—ज्यांसुधी
**नियमं**—नियमोनुं
**पज्जुवासामि**—सेवन करुं
**दुविहं**—बे प्रकारे
**तिविहेणं**—त्रण प्रकारे

---

× **सम** एटले सरखुं छे मोक्ष साधन प्रत्ये सामर्थ्य जेनुं एवा ज्ञान दर्शननो **आय** एटले लाभ छे जेमां ते अथवा **सम** एटले मध्यस्थ भाव तेनो लाभ जेमां थाय छे ते अथवा **सम** एटले समानभाव—सर्व

**करेमि भंते सामाइयं**—हे भगवन् (हुं सामायक ग्रहण करुं छुं)

**सावज्जं जोगं पच्चक्खामि**—ते माटे पापवाळा व्यापारनो त्याग करुं छुं.

---

जीवने मित्र तरीके लेखवारूप लाभ जेमां थाय छे ते सामायक कहियें, प्रत्याख्याननना भांगा ४९ छे, तेमां ४० मा भांगे सामायक थाय छे. पाप सहित व्यापार करुं नहि, करावुं नहि, मन वचन कायायें. ए ४० मो भांगो छे.

## भांगा ४९ करवानी रीतः–

| | | | |
|---|---|---|---|
| आंक ११—१ करण. | १ योग. | भांगा ९ | ९ मळी. |
| आंक १२—१ करण. | २ योग. | भांगा ९ | १८ ,, |
| आंक १३—१ करण. | ३ योग. | भांगा ३ | २१ ,, |
| आंक २१—२ करण. | १ योग. | भांगा ९ | ३० ,, |
| आंक २२—२ करण. | २ योग. | भांगा ९ | ३९ ,, |
| आंक २३—२ करण. | ३ योग. | भांगा ३ | ४२ ,, |
| आंक ३१—३ करण. | १ योग. | भांगा ३ | ४५ ,, |
| आंक ३२—३ करण. | २ योग. | भांगा ३ | ४८ ,, |
| आंक ३३—३ करण. | ३ योग. | भांगो १ | ४९ ,, |

४९ ते आ प्रमाणे—

**जाव नियमं पज्जुवासामि**—ज्यांसुधी हुं आ नियमनुं सेवन करुं त्यां सुधी.

**दुविहं तिविहेणं**—बे करण ( करवुं, करावvुं, ) अने त्रण योगथी मन वचन, कायारूप.

**भावार्थ**—हे भगवन् ! हुं सामायिक व्रत ग्रहण करुं छुं. एटले रागद्वेषनो अभाव अने ज्ञान, दर्शन तथा चारित्रनी प्राप्तिरूप सामायिकने करुं छुं, तेथी सावद्य योगनो हुं त्याग करुं छुं, अने ज्यांसुधी आ नियमनुं हुं सेवन करुं त्यांसुधी बे करण अने त्रण प्रकारे एटले.

---

१ मने करवुं नहीं.
२ मने करावvुं नहीं,
३ मने अनुमोदवुं नहीं.
४ वचने करवुं नहीं.
५ वचने करावvुं नहीं.
६ वचने अनुमोदवुं नहीं.
७ कायाए करवुं नहीं.
८ कायाए करावvुं नहीं.
९ कायाए अनुमोदवुं नहीं.
१० मन वचने करवुं नहीं.
११ मन वचने करावvुं नहीं.
१२ मन वचने अनुमोदवुं नहीं.
१३ मन कायाए करवुं नहीं.
१४ मन कायाए करावvुं नहीं.
१५ मन कायाए अनुमोदवुं नहीं.
१६ वचन कायाए करवुं नहीं.
१७ वचन कायाए करावvुं नहीं.
१८ वचन कायाए अनुमोदवुं नहीं.
१९ मन वचन कायाए करवुं नहीं.
२० मन वचन कायाए करावvुं नहीं.

मू०—मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

### शब्दार्थः—

मणेणं—मनथी

वायाए—वचनथी

काएणं—कायाथी

न करेमि—न करुं

न कारवेमि—न करावुं

तस्स—तेथी, पूर्वे में करेला पापथी

भंते—हे भगवन् !

पडिक्कमामि—निवृत्त थाउं छुं, पाछो हटुं छुं

निंदामि—निंदा करुं छुं

गरिहामि—गुरु महाराजनी साक्षीए निंदा करुं छुं

अप्पाणं—पोताने, आत्माने

वोसिरामि—पापथी हटुं छुं

---

२१ मन वचन कायाए अनुमोदवुं नहीं.

२२ मने करवुं कराववुं नहीं.

२३ वचने करवुं कराववुं नहीं.

२४ कायाए करवुं कराववुं नहीं.

२५ मने करवुं, अनुमोदवुं नहीं.

२६ वचने करवुं अनुमोदवुं नहीं.

२७ कायाए करवुं अनुमोदवुं नहीं.

२८ मने कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

२९ वचने कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

३० कायाए कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

३१ मन वचने करवुं करावतुं नहीं.

**मणेणं वायाए काएणं**—मन, वचन अने काय ए त्रण प्रकारना योगथी.

**न करेमि न कारवेमि**—हुं पोते पाप व्यापारने न करुं, अने बीजाने न करावुं, अर्थात् पाप व्यापारने पोते करवो अने बीजा पासे कराववो ए बन्ने क्रियानो त्याग करुं.

---

३२ मन कायाए करवुं कराववुं नहीं.

३३ वचन कायाए करवुं कराववुं नहीं.

३४ मन वचने करवुं अनुमोदवुं नहीं.

३५ मन कायाए करवुं अनुमोदवुं नहीं.

३६ वचन कायाए करवुं अनुमोदवुं नहीं.

३७ मन वचने कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

३८ मन कायाए कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

३९ वचन कायाए कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

४० मन वचन कायाए करवुं कराववुं नहीं.

४१ मन वचन कायाए करवुं अनुमोदवुं नहीं.

४२ मन वचन कायाए कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

४३ मने करवुं, कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

४४ वचने करवुं कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

४५ कायाए करवुं कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

**तस्स भंते ! पडिक्कमामि**—हे भगवन् ! ते पूर्वे करेलां पापथी पाछो हटुं छुं.

**निंदामि गरिहामि**—आत्म साक्षीए ते अपराधनी निंदा करुं छुं, अर्थात् हृदयथी तेने खराब समजुं छुं, गुरु महाराजनी सामे गुरु महाराजनी साक्षीए ते पापनी विशेष निन्दा करुं छुं.

**अप्पाणं वोसिरामि**—आ रीते हुं पोताना आत्माने पापथी पाछो हठावुं छुं,

**भावार्थ**—मन, वचन अने कायाए करीने बे करणनो त्याग एटले हुं पोते पापव्यापार करुं नहीं, तथा करावुं नहीं, हे भगवन्! पूर्वे करेला ते पाप व्यापारथी हुं निवर्तु छुं, तेनी हृदयमां निंदा करुं छुं, गुरुनी समक्ष गर्हा करुं छुं, अने एवा पापवाळा मारा आत्माने हुं वोसरावुं छुं एटले तजुं छुं, अर्थात् पापथी मुक्त करुं छुं ॥

गाथा १, गुरु ७, लघु ६९, सर्ववर्ण ७६.

---

४६ मन वचने करवुं कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

४७ मन कायाए करवुं कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

४८ वचन कायाए करवुं कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

४९ मन वचन कायाए करवुं कराववुं अनुमोदवुं नहीं.

ए ४९ भांगाने त्रण काल ( भूत भविष्य वर्तमान )थी गणतां १४७ भांगा थाय.

## ॥ अथ सुगुरु वन्दन सूत्रम्* ॥

**मू०**—इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥

### शब्दार्थः—

**इच्छामि**—हुं इच्छुं छुं

**खमासमणो**—हे क्षमाश्रमण!

**वंदिउं**—वंदनकरवाने

**जावणिज्जाए**—शरीरनी शक्तिने अनुसारे

**निसीहिआए**—अन्य व्यापारनो त्याग करीने, (निवृत्तथइने)

---

*आ सूत्रवडे आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक, स्थविर अने रत्नाधिक ए पांच पदस्थ गुरुमहाराजने वंदन कराय छे तेथी आ सूत्रनुं नाम सुगुरु-वांदणा, ज्यारे गुरुमहाराज शांत चित्ते, सन्मुख आसने बेठा होय अने वंदन देवरावबामां उजमाळ होय त्यारे तेओनी आज्ञा मागीने वंदना करवी. पण व्याक्षिप्त चित्त होय, अवळा मुखे बेठा होय, आहार नीहार करतां होय अगर करवाने इच्छता होय, त्यारे वंदन करवुं नहि. केमके तेथी तेमनो अनादर अने आशातना थाय छे, ए वात लक्ष्यमां राखवी, प्रतिक्रमण करतां, वाचना लेतां, काउस्सग्ग करतां, अपराध खमावतां, प्राहुणा साधुजी आवे त्यारे, आलोचना लेतां, पच्चक्खाण करतां, अने अंत समय अनशन आदरतां वंदन अवश्य करवुं जोइए.

**इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए—** हे क्षमाश्रमण गुरुमहाराज ! हुं शरीरनी शक्तिने अनुसारे आपने वांदवा चाहुं छुं ( इच्छुं छुं ) ॥ १ ॥

**भावार्थ—**हे क्षमाश्रमण ! हुं शरीरने अन्य पाप व्यापारथी निवृत्त करी शक्ति प्रमाणे आपने वंदना करवा इच्छुं छुं. (आ प्रमाणे शिष्य पूछे त्यारे जो गुरुमहाराज अस्वस्थ होय तो 'तिविहेण' एवो शब्द बोले, आथी शिष्य संक्षेपथी वंदन करवानी आज्ञा मळी एम समजे छे, आवी गुरुनी इच्छा जणाय तो शिष्ये पण संक्षेपथी ज वंदना करवी, परंतु जो गुरु स्वस्थ होय तो 'छंदेण' एवो शब्द बोले, तेथी इच्छानुसार वंदननी आज्ञा मळी एम शिष्य समजे छे.) त्यारे शिष्य आ प्रमाणे प्रार्थना करे छे—

---

मस्तक नमाववावडे वंदन थाय ते **फिट्टावंदन,** बे खमासमण देवा वडे वंदन थाय ते **थोभवंदन** अने बे वांदणां देवावडे **द्वादशावर्त्त-वंदन** थाय छे. ए त्रण वंदनाना अनुक्रमे जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एम त्रण भेद गणाय.

आ वांदणां देतां पच्चीश आवश्यक साचववां जोइए ते न साचवे तो वंदन करनार पण निर्जराफळ पामे नहि. ते आवश्यक आ प्रमाणे—

'इच्छामि खमासमणो' प्रमुख 'अणुजाणह' पर्यंत बोलतां पोतानुं अर्धुं शरीर नमाडी देवामां आवे ते प्रथम **अवनत** अने फरी बीजीवार पण तेमज करतां बीजुं **अवनत** जाणवुं. जन्म थती वखते

**मू०—अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥ २ ॥**

## शब्दार्थ.

**अणुजाणह**—आज्ञा आपो
**मे**—मने
**मिउग्गहं**—परिमित अवग्रहनी

**अणुजाणह मे मिउग्गहं**—माटे मने परिमित अवग्रहनी आज्ञा आपो ॥ २ ॥

**भावार्थ**—हे गुरुमहाराज ! मने मित अवग्रहनी एटले साडात्रण हाथ प्रमाण क्षेत्रनी आज्ञा आपो, ते सांभळी गुरुमहाराज 'अणुजाणामि' हुं आज्ञा आपुं छुं एम कहे.

---

अथवा दीक्षा योग आदरती वखते जेवी मुद्रा होय तेवी नम्र मुद्रा (बे हाथ जोडी ललाटे लगाडवारूप) वंदन करती वखते धारण करवी ते **यथाजात** जाणवुं. 'अहो कायं, काय' रूप त्रण अने 'जत्ता मे, जवणिज्जं च मे' रूप बीजा त्रण एम छ, एक वखतना वंदनमां अने ते छ बीजी वखतना वंदनमां मळी **१२ आवर्त** (गुरुचरणे हाथनां तळां लगाडी पछी ते पोताना ललाटे लगाडवारूप) थाय छे. 'काय संफासं' कहेतां स्वमस्तक गुरुचरणे नमाडवुं. तथा "खामेमि खमासमणो" कहेतां फरी स्वमस्तक नमाडवुं एवी रीते बीजीवार वंदन करतां बे वखत मस्तक नमाडवुं. एम सर्व मळी चार वखत **शिर नमन** थाय छे, मन, वचन अने कायाने अन्य व्यापारथी निवर्तावी वंदन करती वखते सारी रीते गोपवी राखवारूप त्रण **गुप्ति** जाणवी. 'अणुजाणह मे मिउग्गहं'

## त्यारे शिष्य आ प्रमाणे करे—

**मू०—निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ! ॥३॥ जत्ता भे ? ॥४॥ जवणिज्जं च भे ? ॥५॥**

### शब्दार्थ

**निसीहि**—पापक्रिडाने रोकीने
**अहोकायं**—आपना चरणने
**कायसंफासं**—मारा उत्तमांगवडे स्पर्श करुं छुं
**खमणिज्जो**—आप क्षमा करवा योग्य छो
**भे**—आपनो
**किलामो**—खेद थयो होय—कांइ बाधा पीडा थइ होय तो ते
**अप्पकिलंताणं**—अल्प ग्लानि-वाळा एवा
**बहुसुभेण**—घणा शुभ भाववडे करीने
**दिवसो**—आ दिवस
**वइक्कंतो !**—व्यतीत थयो छे ?
**जत्ता**—यात्रा
**भे**—आपनी
**जवणिज्जं**—मन तथा इंद्रियोनी पीडा रहित वर्त्ते छे ?

---

कही बन्ने वखत वंदन करतां गुरु—आज्ञा पामीने अवग्रहमां प्रवेश करवो ते बे **प्रवेश** जाणवा, अने प्रथम वंदन करती वखते 'आवस्सि-आए' कहीने अवग्रहमांथी बाहेर नीकळवुं ते एक **निष्क्रमण** समजवुं एवी रीते द्वादशावर्त वंदन करती वखते पचीश आवश्यक साचववां ज जोइए. तेमज द्वादशावर्त वंदनना ३२ दोष ते पण टाळवा जोइए. ते ३२ दोष नीचे प्रमाणे:—

**निसीहि**—गुरुवंदन सिवाय बीजो व्यापार निषेध्यो छे, एवो शिष्य.

**अहो-कायं**—आपना चरणने.

**कायसंफासं**—मारा उत्तमांगवडे स्पर्श करुं छुं.

**खमणिज्जो मे किलामो**—मारा स्पर्श करवाथी आपने कांइ पण बाधा—पीडा थइ होय तो ते आप क्षमा करवा योग्य छो.

**अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो**—अल्प ग्लानिवाळा एवा आपनो आ दिवस घणा शुभ भाववडे करीने व्यतीत थयो छे ?

**जत्ता भे ?**—आपनी यात्रा.

**जवणिज्जं च भे ?**—तथा आपनुं शरीर मन तथा इन्द्रियोनी पीडारहित वर्ते छे ?

---

१ **अनाहृतदोष**—गुरुनो अनादर करवो ते.

२ **स्तब्धदोष**—विनयपूर्वक गुरुने नमन नहि करतां स्तब्धपणे टटार उभा रहे ते. सुलादिक रोग थयो होय तो द्रव्यथी न नमी शके पण नमवाना भाव होय तो ते श्रेष्ठ कहेवाय. पण जे जाणी जोइने स्तब्धपणे उभो रहे तेने अविनयी जाणवो.

३ **पविद्धदोष**—कांइपण व्यवस्था वगर जवा देवानी क्रिया ते वेठरूप जाणीने करे अने संपूर्ण करे नहि ते त्रीजो पविद्ध दोष.

४ **सपिंडितदोष**—मुखथकी सूत्रना वचन सिवाय बीजा वचन बोले अने पोताना हाथ पग स्थिर राखे नहीं ते सपिंडित दोष.

**भावार्थ**—पछी शिष्य मात्र गुरुवंदन सिवाय अन्य क्रियारूप व्यापारनो निषेध करी, अवग्रहमां प्रवेश करी, विधिपूर्वक बेसी साधु होय तो डाबा ढींचण उपर अने श्रावक होय तो चरवला उपर मुखवस्त्रिका मूकी बे हाथ ललाटे लगाडी गुरुना चरणने स्पर्श करतो आ प्रमाणे बोले—आपना अध:कायने एटले चरणोने मारा हाथ अने मस्तके करी सारी रीते स्पर्श करवाने मने आज्ञा आपो. पछी गुरुनी आज्ञा पामी गुरुना चरण प्रत्ये पोताना हाथ तथा मस्तके करी स्पर्श करे. पछी मस्तके बे हाथ लगाडी गुरुनी सन्मुख दृष्टि राखी—' खमणिज्जो भे ' इत्यादि पदो बोले. एटले के हे भगवंत ! मारा स्पर्शथी आपने कांइ खेद थयो होय तो ते आप क्षमा करवाने लायक छो. तथा अल्प ग्लानिवाळा आपनो

---

**५ टोलकदोष**—तीडपक्षीनी पेठे एक जग्याए स्थिर नहि बेसतां जेमतेम उठबेश करी वंदन कर्या करे ते.

**६ अंकुशदोष**—गुरु उभा होय के बेठा होय तेनो विचार कर्या वगर तेमने आग्रहथी बेसाडीने पोते वांदे. महाराज बेसी जाओ मारे वांदवा छे एम कहे, ते छठो अंकुशदोष.

**७ कच्छपदोष**—वांदती वखते काचबानी पेटे आगळ पाछळ फर्या करे ते सातमो कच्छपदोष.

**८ मत्स्यदोष**—माछलुं जेम पाणीमां स्थिर रहेतुं नथी तेम जे वंदन करतां स्थिर रहे नहि ते आठमो मत्स्यदोष.

**९ मनप्रदुष्टदोष**—गुरु पासेथी पोतानी इच्छा प्रमाणे कार्यसिद्ध न थवाथी मनमां द्वेष अने इर्षा लावीने वांदे ते नवमो मनप्रदुष्टदोष.

आजनो दिवस सुखे समाधिए निर्गमन थयो छे ? त्यारे गुरु 'तहत्ति' कहे, एटले हा, सुखे समाधिए व्यतीत थयो छे. पछी शिष्य आ प्रमाणे कहे–हे पूज्य ! आपनी तप, नियम, संयम अने स्वाध्यायरूप यात्रा निराबाधपणे वर्ते छे ? त्यारे गुरु कहे के–'तुब्भं पि वट्टए' तमारी पण संयम यात्रा निराबाधे वर्ते छे ? त्यारे शिष्य बोले के–आपनुं शरीर इंद्रिय तथा नोइंद्रियनी ( मन ) पीडा रहित छे ? त्यारे गुरु कहे के 'एवं' हा. एम ज छे.

---

**१० वेदिकादोष**—बे हाथ घुंटण उपर मुकवा अथवा बन्ने हाथनी वच्चे घुंटण राखवा, बे हाथनी वच्चे एक घुंटण राखे अथवा खोळामां हाथ राखे एवी रीते वंदन क्रिया करे ते वेदिकादोष.

**११ भयदोष**—जो हुं नहि वांदुं तो आचार्य मने काढी मुकशे अथवा एमने माठुं लागशे, एम भयथी वांदवुं ते अगीआरमो भयदोष.

**१२ भजंतदोष**—बीजाओ पण गुरुने भजे छे माटे हुं पण भजवाना पूर्वक वांदु तो ठीक, एम विचारवुं ते भजंतदोष.

**१३ मैत्रीदोष**—जो हुं आचार्यने वांदीश तो आचार्य मारी साथे मैत्रीभाव राखशे अने मारापर प्रीति राखशे ते मैत्रीदोष.

**१४ गारवदोष**—समाचारीमां लोको मने श्रेष्ठ क्रियापात्र कहेशे एम विचारीने वांदवुं ते गारवदोष.

**१५ कारणवांदणुं**—आलोकना सुखनी इच्छाथी जे वांदे ते कारणदोष.

## हवे शिष्य पोताना अपराधनी क्षमा मागे छे—

मू०—खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं ॥ ६ ॥ आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसाय-याए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वय-दुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए माणाए मायाए लोहाए सव्वकालिआए • सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडि-क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥

शब्दार्थः—

खामेमि—हुं खामुं छुं
खमासमणो—हे क्षमाश्रमण !
देवसिअं—दिवस संबंधी
वइक्कम्मं—अपराधने
आवस्सियाए—आवश्यक क्रिया संबंधी अतिचारने

---

१६ स्तैन्यदोष—बीजाथी शरमाइने तेमनी नजर चुकवीने वांदी लेवुं ते स्तैन्यदोष.

१७ प्रत्यनीकदोष—आहारनिहारना काम वखते जे वांदवुं ते प्रत्यनीकदोष.

१८ रुष्टदोष—क्रोधायमान थयो थको अथवा गुरुने क्रोधाय-मान करतो थको वांदे ते रुष्टदोष.

१९ तर्जीतदोष— मस्तक, आंगळी के भ्रकुटीवडे गुरुनी तर्जना करवी एटले याद राखजो, एम भय गुरुने बतावे अने वांदे ते तर्जीतदोष..

**पडिक्कमामि**--पडिक्कमुं छुं एटले ते थकी निवृत्त थाउं छुं

**खमासमणाणं**—आप क्षमाश्रमणोनी

**देवसिआए**—दिवस संबंधी

**आसायणाए**—आशातना वडे

**तित्तीसन्नयराए**—तेत्रीशमांथी कोइ पण एक

**जं किंचि**--जे कांइ

**मिच्छाए** --मिथ्याभावथी थयेली

**मणदुक्कडाए**—मनना दुष्कृतवाळी

**वयदुक्कडाए**—वचनना दुष्कृतवाळी

**कायदुक्कडाए**—कायाना दुष्कृतवाळी

**कोहाए**—क्रोधथी थयेली

**माणाए**—मानथी थयेली

**मायाए**—मायाथी थयेली

**लोहाए**—लोभथी थयेली

**सव्वकालिआए**—सर्वकाल संबंधी

**सव्वमिच्छोवयाराए**—सर्व प्रकारना मिथ्या उपचार संबंधी

**सव्वधम्म**—सर्व्व प्रकारना धर्मनुं

**अइक्कमणाए**—उल्लंघन करवाथी थयेली

---

**२० शठदोष**——वांदवाथी गुरु अने बीजाओ मारो विश्वास करशे एम विचारीने वांदवुं ते शठदोष.

**२१ हीलितदोष**——पाछळथी गुरुनी हेलनाकरे अने वांदे ते

**२२ कुंचितदोष**——वांदतां वांदतां देशादि संबंधी वचन विकथा करे ते कुंचितदोष.

**२३ द्रष्टाद्रष्टदोष**——लोकोने देखाडवाने लोको होय त्यारे जे वांदे ते द्रष्टाद्रष्टदोष.

**आसायणाए**—आशातनावडे
**जो**—जे कांइ, **मे**—में
**अइयारो**—अतिचार
**कओ**—कर्यो होय,
**तस्स**—तेने
**पडिक्कमामि**—हुं पडिक्कमुं छुं
**निंदामि**—निंदुं छुं
**गरिहामि**—गुरु साक्षीए गर्हा करुं छुं
**अप्पाणं**—तेवा पापमय आत्माने
**वोसिरामि**—वोसरावुं छुं—पाछो खेंची लउं छुं

**२४ शृंगदोष**—सन्मुख हाथ नहि राखतां जमणी अने डाबी बाजुए राखीने वांदवुं ते शृंगदोष-

**२५ करदोष**—वांदवानो कर मानीने वांदवुं एटले शुं करीए वांद्या विना छुटको नथी एम कहे ते करदोष.

**२६ मोचनदोष**—वांदवाना करमांथी मुक्त थवानी इच्छाथी वांदवुं एटले चालो आ काम एक उकेली लइए ते मोचनदोष.

**२७ आश्लिष्टअनाश्लिष्टदोष**—जमीन उपर मस्तक लगाडे न लगाडे अथवा रजोहरण साथे हाथ लगाडे पण मस्तके न लगाडे, मस्तके लगाडे पण रजोहरणे न लगाडे, मस्तके न लगाडे अने रजोहरणे पण न लगाडे ते आश्लिष्ट अनाश्लिष्टदोष जाणवो अने चोथो भांगो जे बन्नेने हाथ लगाडीने वांदे ते दोष नथी.

**२८ न्यूनदोष**—उतावळथी पाठ कहेतां वचन रही जाय ते न्यूनदोष.

**खामेमि खमासमणो! देवसिअं, वइक्कमं**—हे क्षमाश्रमण! दिवस संबंधी अपराधने हुं खामुं छुं ॥ ६ ॥

**आवस्सियाए पडिक्कमामि**—आवश्यक क्रियासंबंधी अतिचारने पडिक्कमुं छुं एटले ते थकी निवृत्त थाउं छुं.

**खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए तित्तीसन्नयराए**—आप क्षमाश्रमणोनी दिवस संबंधी तेत्रीश आशातनामांथी कोइ पण एक आशातनावडे.

**जं किंचि मिच्छाए**—अने जे कांइ मिथ्याभावथी थयेली.

**मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए**—मनना दुस्कृतवाळी, वचनना दुष्कृतवाळी, कायाना दुष्कृतवाळी.

**कोहाए माणाए मायाए लोहाए**—क्रोधथी थयेली, मानथी थयेली, मायाथी थयेली, लोभथी थयेली.

---

२९ **चुलिकादोष**—वांद्या पछी वधारे मोटे सादे मथ्थएण वंदामि एम वळी विशेष कहे ते चुलिकादोष.

३० **मूकदोष**—मुंगे मोढे वांदे ते मूकदोष.

३१ **ढड्ढरदोष**—मोटा सादथी वांदणासूत्रनुं बोलवुं ते ढड्ढरदोष.

३२ **चुडलीकदोष**—रजोहरण आम तेम फेरवतां वांदे ते चुडलीकदोष.

**सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए**—सर्वकाळसंबंधी, सर्व-प्रकारना मिथ्या उपचार संबंधी.

**सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए**—सर्वप्रकारना धर्मनुं उल्लंघन करवाथी थयेली आशातनावडे.

**जो मे अइयारो कओ**—जे कांइ में अतिचार कर्यो होय.

**तस्स खमासमणो पडिक्कमामि**—तेने हे क्षमाश्रमण ! हुं पडिक्कमुं छुं.

**निंदामि गरिहामि**—तेने हुं निंदुं छुं. गुरु साक्षीए गर्हा करुं छुं.

**अप्पाणं वोसिरामि**—तथा तेवा पापमय आत्माने वोसरावुं छुं—पाछो खेंची लउं छुं.

**भावार्थः**—अवश्य कर्तव्य जे चरणसित्तरी अने करणसित्तरी विगेरे सेवतां पाळतां जे कांइ अतिचार लाग्या होय ते थकी हुं निवर्तुं छुं. वळी आप क्षमाश्रमणनी दिवस संबंधी* तेत्रीशमांथी कांइ पण आशातना थइ होय, तथा मिथ्याभावरूप आशातना थइ होय,

---

* गुरु महाराज संबंधी तेत्रीश आशातना अवश्य वर्जवी जोइए ते आ प्रमाणे—

१ गुरु महाराजनी एक पडखे, बीजे पडखे तेमज अत्यंत नजदीक अडकीने १ चालतां—हींडतां, २ उभा रहेतां अने ३ बेसतां आशातना लागे छे. परंतु जो खास अगत्यना कारणसर तेम करवुं पडे, तो आशयशुद्धिथी अने अधिक लाभना कारणथी आशातनानो

तथा दुष्ट मनथी, दुष्ट वचनथी, दुष्ट कायाथी, क्रोधथी, मानथी, मायाथी, लोभथी, सर्वकालसंबंधी, सर्व मिथ्या उपचारथी एटले कूड-

---

दोष गणातो नथी. एम दरेकना त्रण त्रण भेद करतां तेना ९ भेद थइ शके छे. १० गुरु महाराज पहेलां भोजन वखते चलु करी लेवाथी के आचमन लेवाथी दोष लागे. ११ बाहेरथी गुरु साथे आव्या छतां जो गुरु महाराजथकी पहेलां गमणागमणे आलोवे एटले 'इरियावही' पडिकमे तो गुरुनो अनादर-विनयभंग करवाथी दोष लागे. १२ रात्री-संथारो कर्या बाद गुरु महाराज कंइ पुछे के बोलावे त्यारे सांभळ्युं नहीं सांभळ्युं करी उत्तर नहीं आपतां केवळ मौनज धारी रहे तो आशातना लागे. १३ गुरु पासे आवेला कोइ गृहस्थादिकने वश करी लेवा गुरु महाराज तेमने बोलावे ते पहेलां पोते बोलावी ले, तो गुरुआशातना लागे. १४ भिक्षावृत्तिथी आणेलां आहार पाणी प्रमुख गुरु महाराज पासेज प्रथम हाजर करी देवां जोइए अने गोचरी पण त्यांज आलोववी जोइए, तेने बदले तेम नहीं करतां ते संबंधी इच्छा मुजब वर्ततां एटले गुरु पहेलां उतावळ करी आवेली गोचरी कोइ साधु जोइ ले. तेमज ते बीजा साधु पासे आलोवी ले तो गुरुआशातना लागे. १५ आवेली गोचरी गुरु पहेलां बीजाने बतावी दे, तो दोष लागे. १६ आवेलां आहार पाणी वापरवा बीजाने निमंत्रण करीने पछी गुरु महाराजने निमंत्रण करे तो तेथी अनादर दोष लागे. १७ मधुर खाद्य पदार्थ भिक्षामां आवेलो जाणी आपइच्छाए गुरुने पूछ्या वगर पोताने गमे तेने आपी देवाथी आशातना लागे. १८ सरस स्निग्ध पदार्थ आवेलो

कपटथी, अष्टप्रवचनमातारूप सर्व धर्म कार्यनुं अतिक्रमण करवाथी जे कांइ आशातना लागी होय अने तेणे करीने में जे अतिचार कर्यो होय,

---

होय तो ते गुर्वादिकने नहीं आपता पोतेज आरोगी जाय, तो गुरु आशातना लागे. १९ गुरु महाराज साद करीने बोलावे त्यारे व्हेरानी पेर कशो पण उत्तर पाछो न आपे, शून्यवत् बेसी रहे; तो दोष लागे. २० ज्यारे कोई बडील साधु साद करे त्यारे सामा थइ जेम आवे तेम बोले—आ मारीज केडे लाग्या छे. मनेज देख्यो छे, आमनी साथे क्यांथी पानां पड्यां, इत्यादिक कटु भाषण करतां दोष लागे. २१ गुरु पासे जइ नम्रपणे जवाब देवाने बदले पोताना आसने बेठा बेठा उत्तर आपवाथी गुरुआशातना लागे. २२ शुं कहो छो! शुं छे? कहोने! इत्यादिक विनय रहित भाषण गुरु साथे करतां आशातना लागे. २३ कंइ काम करवा गुरु महाराज शिष्यने बोलावे त्यारे तोछडाइ भरेली रीते बोले के तमेज करोने! मने शामाटे कहो छो? अथवा हुंकारादि देतां गुरु आशातना लागे. २४ वाह! अमनेज दिठा छेने! तमे जाते केम करता नथी? अथवा बीजा शिष्यने करवा केम कहेता नथी? एम गुरुमहाराजने तर्जना करतां गुरुआशातना लागे. २५ गुर्वादिक बडील साधुओने व्याख्यान प्रमुख करतां देखी शिष्य दुमणो थाय पण प्रमुदित न थाय, तो गुरुआशातना लागे अथवा गुर्वादिक बडीलनो कोइ रोगी होय तेने देखी दुमणो थाय तो तेथी पण गुरुआशातना लागे. २६ गुरुमहाराज व्याख्यानादिक करता होय त्यारे 'ए तमे भूली गया छो, आ वात तमने याद नथी, एनो अर्थ ए न होय' इत्यादिक अनुचित

तेने हे क्षमाश्रमण! गुरु! आपनी समीपे हुं पडिक्रमुं छुं, आत्म साक्षीए निंदुं छुं. आप गुरुनी साक्षीए गर्हा करूं छुं. अने तेवा पापमय मारा आत्माने हुं वोसरावुं छुं–तजुं छुं.

बीजी वारना वांदणामां 'आवस्सिआए' ए पद कहेवुं नहीं. अने रात्रि प्रतिक्रमणमां 'राइ वइक्कंता', पाक्षिकप्रतिक्रमणमां 'पक्खो

---

वचन बोलतां गुरुआशातना लागे. २७ अथवा ए बाबत हुं तमने पछी सारी रीते समजावीश एम आप डहापण बतावता सभा समक्ष बोली, चालती कथानो भंग करे, तो तेथी गुरुआशातना लागे. २८ अथवा एवे अवसरे आवीने शिष्य कहे के महाराज! पोरसीवेळा के आहारवेळा थइ गइ छे एम कहीने पर्षदानो भंग करे तो गुरुआशातना लागे. २९ अथवा पर्षदा उठी गइ न होय एटलामां आप डहापण बताववा माटे गुरुमहाराजे व्याख्यानमां कहेलीज वात वधारे विस्तारी बतावे तो गुरु-आशातना लागे. ३० गुरु संबंधी शय्या–संथारा प्रमुखने पोताना पग विगेरेथी संघट्ट करी पाछुं खमावे नहीं तो आशातना लागे. ३१ गुरुनी शय्या के संथारादिक उपर पोते बेसे के आळोटे के असभ्य रीते तेनो स्पर्श करे तो गुरुआशातना लागे. ३२ गुरुथकी उंचा आसने बेसे, अथवा गादी करी बेसे अथवा गुरु जेवां के तेथी अधिक मूल्यवाळां वस्त्र वापरे तो दोष लागे. ३३ गुरु जेवा समान आसन उपर बेसे अथवा गुरु जेवां समान वस्त्र लइ वापरे तो गुरुआशातना लागे.

वइक्कंतो, चातुर्मासिक प्रतिक्रमणमां ' चउमासी वइक्कंता ' अने सांवत्सरिक प्रतिक्रमणमां ' संवच्छरो वइक्कंतो ' ए रीते पाठ कहेवो.

पद ५८, गुरु २५, लघु २०१, सर्ववर्ग २२६.

॥ इति सुगुरुवंदना सूत्र १० ॥

( ए रीते बे वांदणा देवा. बीजो वांदणो बेठा रही पूरो करवो. चउविहार उपवास करनारे वांदणा देवा नहि. पछी " आवस्सई " भणी अवग्रह बहार नीकळी कहेवुं—इच्छकारी भगवन् पसाय करी पच्चक्खाण करावो एम कही यथाशक्ति पच्चक्खाण करवुं. ) पछी

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ॥ इच्छं ॥

( एम कही डाबो ढीचण भूमिथी ऊंचो, ने जमणो ढीचण भूमि उपरज राखवो अने बे हाथ जोडी मुहपत्ति मोढा पासे राखी बोलवुं. )

## ॥ ११ अथ चैत्यवंदन ॥

**मू०—श्रीपार्श्वनाथो भवपापताप-प्रशांतधाराधरचारुरूपः ।**
**विघ्नौघहंता भणतोरगेन्द्रः,समस्तकल्याणकरो जिनेन्द्रः ॥१॥**

### शब्दार्थः—

**श्रीपार्श्वनाथः**—श्री पार्श्वनाथ भगवान्

**भव**—संसारना

**पाप**—पापरूप

**ताप**—तापने

**प्रशांत**—खूब सारी रीते शांत करवामां

**धाराधर**—वरसाद ( जेवा )

**चारुरूपः**—सुंदर रूपवाळा

**विघ्न**—अंतरायना

**ओघ**—समूहने

**हंता**—हणनारा—नाश करनारा

**प्रणत**—नमस्कार करवावाळां

**उरगेन्द्रः**—नागकुमार देवना अधिपति—धरणेन्द्र

**समस्त**—तमाम

**कल्याणकरः**—कल्याणोने करवावाळां

**जिनेन्द्रः**—सामान्य केवळीनां नायक

**श्रीपार्श्वनाथो भवपापताप**—अतिशयरूप लक्ष्मीए युक्त श्री पार्श्वनाथ भगवान् संसारना दुःख रूप तापने.

**प्रशांतधाराधरचारुरूपः**—खूब सारी रीते शांत करवामां वरसादनी जेम सुंदर रूपवाळां.

**विघ्नौघहंता प्रणतोरगेन्द्रः**—अंतरायनी परंपराने नाश करवावाळा अने जेओ धरणेन्द्रथी वंदायेला छे.

**समस्तकल्याणकरो जिनेन्द्रः**—तमाम जातना कल्याणने करवावाळां, अने सामान्य केवळीना स्वामी.

**भावार्थ**—आठ महा प्रातिहार्यरूप लक्ष्मीवाळा, अने पार्श्व नामना यक्षना उद्धारक, तथा नाथ—स्वामी एटले योग—क्षेमने करवावाळां, योग एटले नहीं मळवावाळां दर्शन, ज्ञान अने चारित्र तेने मेळवी आपनारा

अने ते मळ्या पछी तेनुं रक्षण करवावाळां, एवां गुणोवाळा होवाथी तेओने नाथ कहे छे, संसारमां बनता अशुभ कर्म—पाप तद्रूप ताप—दुःख—ग्लानि—खेद तेनाथी हेरान थयेला जीवोने खूब सारी रीते शान्ति करवामां पाणीथी भरेला वादळ जेवां, (पार्श्वनाथ भगवाननो वर्ण नील छे अने वर्षाऋतुना वादळ पण नील होय छे अने ते उन्हाळाना असह्य तापथी हेरान थयेला लोकोने वरसाद वरसावी शांति आपे छे एज प्रमाणे पार्श्वनाथ परमात्मा पण शांति आपनारा छे.) अर्थात् नील वर्णवाळा अने भव्य जीवोने विघ्न—अंतराय—दुःख तेना समूहने नाश करनारा, तथा नागकुमार देवताना अधिपति धरणेन्द्र तेनाथी सेवायेला तथा तेरमा गुणस्थानमां रहेला सामान्य केवळी तेना पण अधिपति, श्री पार्श्वनाथ परमात्मा बधानां कल्याण करवावाळां थाओ अर्थात् सर्व प्रकारनुं कल्याण करवावाळां थाओ ॥ १ ॥

**मू०—एस करेमि पणामं, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।**
**सेसाणं च जिणाणं, सगणहराणं च सव्वेसिं ॥१॥**

## शब्दार्थः—

**एस**—आ हुं,
**करेमि**—करुं छुं,
**पणामं**—प्रणाम—नमस्कार,
**जिणवर**—जिनवरोमां,
**वसहस्स**—वृषभ—मुख्य जेवां,
**वद्धमाणस्स**—महावीर स्वामीने
**सेसाणं**—शेष, बाकी,
**च**—अने
**जिणाणं**—जिनेश्वरोने,
**सगणहराणं**—गणधरोथी सहित,
**सव्वेसिं**—सर्वेने,

**एस करेमि पणामं**—आ हुं प्रणाम करुं छुं,

**जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स**—जिनवरोमां श्रेष्ठ श्री वर्द्धमान स्वामीने,

**सेसाणं च जिणाणं**—तथा बीजा जिनेश्वरोने,

**सगणहराणं च सव्वेसिं**—तथा गणधरो युक्त बधांने

**भावार्थ**—मोहनो नाश करवावाळा मुनिवरोमां, तथा क्रोध, मान, माया अने लोभरूप चार कषायने नाश करनारा सामान्य केवळीओमां धुरंधर वृषभ जेवा, श्री वर्धमान महावीर स्वामीने तथा भूत अने भविष्यना सर्व तीर्थंकरो तथा बाकी रहेला त्रेवीश तीर्थंकरो तथा तेमना गणधरो ते सर्वने हुं नमस्कार–वंदन करुं छुं ॥ १ ॥

**मू०—जगमत्थयत्थियाणं, वियसियवरनाणदंसणधराणं ।**
**नाणुज्जोयगराणं, लोगंमि नमो जिणवराणं ॥२॥**

**शब्दार्थः—**

**जग**—जगतना
**मत्थय**—मस्तक उपर
**त्थियाणं**—स्थिर रहेला
**वियसिय**—विकसेला
**वर**—श्रेष्ठ—उत्तम
**नाण**—ज्ञान
**दंसण**—दर्शन,
**धराणं**—धारण करनारा
**नाण**—ज्ञान
**उज्जोयगराणं**—उद्योत—प्रकाश करनारा
**लोगंमि**—लोकमां रहेला
**नमो**—नमस्कार हो
**जिणवराणं**—जिनेश्वरोने

**जगमत्थयत्थियाणं**—जगतना मस्तक उपर रहेलाओने.

**वियसियवरनाणदंसणधराणं**—विकसित उत्तम ज्ञान तथा दर्शनने धारण करनाराने.

**नाणुज्जोयगराणं**—ज्ञाननो प्रकाश करवावाळाने.

**लोगंमि नमो जिणवराणं**—लोकोमां, जिनवरोने नमस्कार हो.

**भावार्थ**—जगतना मस्तक उपर रहेला ताज जेवा तथा उज्जवळ अने श्रेष्ठ ज्ञान तथा दर्शनने धारण करनारा, लोकोमां ज्ञानरूपी तेजने प्रकाशकरनारा श्री जिनेश्वर परमात्माने नमस्कार थाओ ॥२॥

**मू०—तित्थयरे भगवंते, अणुत्तरपरक्कमे अमियनाणी ।**
**तिन्ने सुगइगइगए, सिद्धिप्पहदेसए वंदे ॥३॥**

**शब्दार्थः—**

**तित्थयरे**—तीर्थंकरो
**भगवंते**—भगवंतोने
**अणुत्तर**—अत्यंत श्रेष्ठ
**परक्कमे**—पराक्रमी
**अमिय**—माप न थइ शके
**नाणी**—ज्ञानवाला
**तिन्ने**—तरेला
**सुगइ**—उत्तमगति
**गइ**—गति
**गए**—गयेला
**सिद्धि**—मोक्षनो
**प्पह**—मार्ग
**देसए** – देखाडनारा, उपदेश देनारा
**वंदे**—वंदन करुं छुं

**तित्थयरे भगवंते**—तीर्थनी स्थापना करनारा भगवानोने.

**अणुत्तरपरक्कमे अमियनाणी**—अत्यंत श्रेष्ठ पराक्रमवाळा, तथा अनहद ज्ञानवाळा.

**तिन्ने सुगइगइगए**—पोते संसार समुद्रने तरी गयेला, तथा सिद्धिगतिने पामेला.

**सिद्धिप्पहदेसए वंदे**—मोक्षनो मार्ग बतावनारने हुं वांदुं छुं.

**भावार्थ**—साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध संघनी स्थापना करनारा तीर्थंकर भगवानोने, तथा अधिक पराक्रमवाळा—उत्कृष्ट आत्मबळवाळां, तथा कोइथी माप न थइ शके तथा हणी न शकाय एवा उत्कृष्ट ज्ञानवाळां, तथा ज्यांथी कदापि पाछुं नथी आववानुं एवा सिद्धिगति नामना स्थानने पामेला, तथा मोक्षमार्गने बताववावाळां श्री देवाधिदेवने हुं नमस्कार करुं छुं—वांदुं छुं. ॥३॥

**मू०—वंदामि महाभागं, महामुणिं महायसं महावीरं।**
**अमरनररायमहियं, तित्थयरमिमस्स तित्थस्स ॥४॥**

## शब्दार्थः—

**वंदामि**—हुं वंदन करुं छुं

**महाभागं**—मोटा भाग्यशाळीने

**महामुणिं**—मुनिवरोमां श्रेष्ठने

**महायसं**—महान् यशस्वीने

**महावीरं**—अधिक बळवान् एवा महावीर स्वामीने,

**अमर**—देवता

**नर**—मनुष्य

**राय**–राजा (आदिथी)
**महियं**–पूजित
**तित्थयरम्**–तीर्थंकरने
**इमस्स**–आ वर्त्तमान–चालु
**तित्थस्स**–तीर्थने

**वंदामि महाभागं**—म्होटा नसीबवाळाने हुं वांदुं छुं

**महामुणिं महायसं महावीरं**—महान् यशस्वी, मुनिश्रेष्ठ श्री महावीर परमात्माने

**अमर–नर–रायमहियं**—देव, मनुष्य अने राजा अथवा देव अने मनुष्यना अधिपतिओथी पूजायेला

**तित्थयरमिमस्स तित्थस्स**—वर्त्तमान तीर्थना तीर्थंकरने

**भावार्थ**—जन्मथीज जे महा भाग्यशाळी छे, मुनि समुदायना वडील छे, तथा जेओ महा यशस्वी छे, देव अने मनुष्यना स्वामीओथी पूजित छे तथा साधु–साध्वी–श्रावक तेमज श्राविकारूप चतुर्विध तीर्थसंघना अंतिम स्थापक होवाथी परम तीर्थना तीर्थपति छे, एवा परम तीर्थंकर परमात्मा महावीर देवने हुं वंदन करुं छुं. ॥ ४ ॥

**मू०—वयणामएण भुवणं, निव्वावंता गुणेसु ठावंता ।**
**जियलोय–मुद्धरंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥५॥**

**शब्दार्थः—**

**वयण**–वाणीरूप
**अमएण**–अमृतवडे
**भुवणं**–भुवनना लोकोने
**निव्वावंता**–शांतिपमाडता
**गुणेसु**–गुणोने विषे
**ठावंता**–स्थापन करता

**जियलोयं**--जीव लोकने
**उद्धरंता**--उद्धार करता
**अरिहंता**--अरिहंतो
**हुंतु**--थाओ
**मे**--मारुं
**सरणं**--शरण

**वयणामएण भुवणं**—वचनरूप अमृतवडे, जगतमां रहेला प्राणीओने.

**निव्वावंता गुणेसु ठावंता**—शांति आपता तथा गुणोने विषे स्थिर करतां.

**जियलोयमुध्धरंता**—तथा जीवलोकनो उद्धार करतां.

'**अरिहंता हुंतु मे सरणं**—अरिहंत भगवंतो मारुं शरण थाओ आश्रय स्थान बनो.

**भावार्थ**—देव, मनुष्य अने तिर्यंच सर्वे जीवो पोतपोतानी भाषामां समजी शके तेवी संस्कारीत पांत्रीश गुणवाळी वाणीरूप अमृत वडे अशुभ कर्मना योगथी भव--संसारनी अंदर पीडा पामता प्राणीओने उपदेशरूप अमृत चखाडी अने संपूर्ण गुणोने विषे स्थिर करनारा अने ते द्वाराज समग्र जीव लोकनो उद्धार करनारा अरिहंत परमात्मा मारुं शरण थाओ मने आश्रय आपो. ॥ ५ ॥

**मू०—उज्झियजरमरणाणं, समत्तदुक्खत्तसत्तसरणाणं ।**
**तिहुयणजणसुहियाणं, अरिहंताणं णमो ताणं ॥ ६ ॥**

## शब्दार्थ—

**उज्झिय**—त्याग कर्यो छे

**जर**—वृद्धावस्था

**मरणाणं**—तथा मरणनो

**समत्त**—बधां

**दुक्खत्त**—दुःखोथी

**सत्त**—पीडायेलां

**सरणाणं**--(प्राणीओना) शरणरूप

**तिहुयण**—त्रण जगतना

**जण**—लोकोनुं

**सुहियाणं**—खूब सारी रीते हीत करनारा

**अरिहंताणं**—अरिहंतोने

**णमो**--नमस्कार थाओ

**ताणं**—रक्षण करनाराने,

**उज्झियजरमरणाणं**—दूर कर्यां छे जन्म, जरा अने मरण जेमणे.

**समत्तदुक्खत्तसत्तसरणाणं**—तमाम दुःखोथी पीडाता प्राणीओना शरण--आश्रयस्थान.

**तिहुयणजणसुहियाणं**—त्रणे जगतना जीवोनुं सारी रीते हीत करनारा, तथा

**अरिहंताणं णमो ताणं**—रक्षण करनारा, अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

**भावार्थ**—जेओए फरीवखत नहीं जन्मवानो, वृद्धावस्थानो तथा मरणनो भय सदाने माटे नाश कर्यो छे, तथा संसारना पारावार दुःख परंपराथी त्राय त्रायमान थइ गयेला जीव समुदायना जेओ रक्षण स्थान

समा छे, अने स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळ आ त्रणे जगतना प्राणी मात्रनुं सूक्ष्ममां पण सूक्ष्म रीते हीत करनारा छे एवा रक्षक श्री अरिहंत परमात्माने मारो नमस्कार थाओ ॥६॥

तेह श्री अरिहंतजीने म्हारो नमस्कार थाओ, केवा ते श्री अरिहंत जे श्री अरिहंते राग-द्वेषरूपी अरि—वैरी जीत्या अने अढार दोषरहित थया ते अढार दोष बतावे छेः—

॥ अथ अन्नाण कोह ॥

मू०—अन्नाण १ कोह २ मय ३ माण ४ लोह ५ माया ६
रइअ ७ अरइअ ८ ॥ निद्दा ९ सोग १० अलियवयण
११, चोरिया १२ मच्छर १३ भयाय १४ ॥१॥

शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **अन्नाण**—अज्ञान | **अरइअ**—अरति |
| **कोह**—क्रोध | **निद्दा**—निद्रा |
| **मय**—मद | **सोग**—शोक |
| **माण**—मान | **अलियवयण**—असत्य वचन |
| **लोह**—लोभ | **चोरिया**—चोरी |
| **माया**—माया | **मच्छर**—मत्सर |
| **रइअ**—रति | **भयाय**—भय—बीक |

**भावार्थ**—१ दोष अज्ञान, २ दोष क्रोध, ३ दोष मद, ४ दोष मान, ५ दोष लोभ, ६ दोष माया, ७ दोष रति, ८ दोष अरति, ९ दोष निद्रा, १० दोष शोक, ११ दोष असत्य वचन, १२ दोष चोरी करवापणुं, १३ दोष मत्सर (एटले अदेखाइ) १४ दोष बीक लागवी ॥ १ ॥

**मू०—पाणिवह १५ पेमकीला १६, पसंग १७ हासा १८ य जस्स ए दोसा । अट्ठारस वि पणट्ठा, नमामि देवाहिदेवं तम् ॥ २ ॥**

**शब्दार्थः—**

**पाणिवह**—जीवने मारवो
**पेमकीला**—प्रेमनी रमत
**पसंग**—परिचय
**हासा**—हसवुं
**य**—अने
**जस्स**—जेना
**ए**—आ
**दोसा**—दोष—दुर्गुण
**अट्ठारस**—अढार
**वि**—पण
**पणट्ठा**—नाश पाम्या
**नमामि**—नमस्कार करुं छुं
**देवाहिदेवं**—देवना पण देव
**तम्**—तेने

**भावार्थः**—१५ दोष कोइ पण प्राणी जीवनी हिंसा करवी, १६ दोष प्रेमपूर्वक रमत करवी, १७ दोष कोइनी साथे परिचय करवो १८ दोष हसवापणुं, ए अढार दोषो जेमने समूळगा नाश थयेला छे एवा ते देवाधिदेवने हुं नमुं छुं. ॥ २ ॥

मू०—एहवा देवाधिदेव सुरासुरविहितसेव सर्वज्ञ भगवन्त जगन्नाथ जगजीवना तारक कुगतिमार्ग निवारक

## शब्दार्थः—

**एहवा**–एवा, उपर वर्णवेला

**देवाधिदेव**—देवना पण देव

**सुर**—देवता

**असुर**—असुरदेव

**विहित**—करी छे

**सेव**—सेवा—भक्ति

**सर्वज्ञ**—सर्व पदार्थोने तथा भावोने संपूर्ण रीते जाणनारा

**भगवन्त**—सर्व शक्तिवाळा परमात्मा

**जगन्नाथ**—त्रण जगतना नाथ योग अने क्षेमने करनारा

**जगजीवना**—दुनियामां रहेला प्राणीओने

**तारक**—तारवावाळा

**कुगतिमार्ग**—कुगतिमार्गने

**निवारक**—अटकाववावाळा

**भावार्थ**—बीजी गाथामां वर्णव्या प्रमाणे जेओ देवोना पण देव छे, सुर अने असुर पण जे परमात्मानी भक्ति करे छे, तथा जेओ सर्व वस्तु तथा सर्व प्रकारना भावोने संपूर्ण रीते जाणे छे, सर्व प्रकारनुं ज्ञान होवाथी शक्तिवाळा छे, स्वर्ग, मृत्यु अने तिर्च्छा ए त्रणे लोकना स्वामी छे अने तेथी करीने सर्वनुं योग—क्षेम—रक्षण करनारा छे, त्रण जगतमां रहेला प्राणी मात्रना जेओ तारणहार छे, अने कुगतिनो पोते अंत—पार पामेला होवाथी तेनाथी अटकाववा जेओ समर्थ छे. तथा

मू०—निरीह निरहंकार निस्संग निर्मम शान्त दान्त करुणासमुद्र विश्वोपकारसागर अनंतगुणना आगर चउसठ इंद्रना पूजनीक

## शब्दार्थः—

**निरीह**—जेओने कोइ जातनी इच्छा नथी

**निरहंकार**—अने तेटला माटेज अभिमान वगरना

**निस्संग**—माटेज सर्व प्रकारना संबंध रहित

**निर्मम**—सर्व प्रकारनी आसक्तिथी रहित

**शान्त**—मनना विकारो रहित शान्त स्वभावी

**दान्त**—इन्द्रियोनुं दमन करनारा

**करुणासमुद्र**—दयाना एक सागर एवा

**विश्वोपकारसागर** — समुद्रनी जेम जगतमां उपकार करनारा

**अनंतगुणना आगर** — समस्त गुणोनी खाण जेवा

**चउसठ इंद्रना पूजनीक**—चोसठ इन्द्रथी पूजायेला

**भावार्थ**—जेओने कोइ जातनी इच्छा नथी, अने तेटला माटे अभिमान वगरना, तथा सर्वप्रकारना संबंधरहित, ममत्व—मारापणाथी रहित, मनना विकारोने जीतवाथी शान्त बनेला, इंद्रियोने काबूमां राखनारा, प्रत्येक जीव उपर दयाभाव वरसावनारा होवाथी करुणाना समुद्र जेवा, समुद्र जेम रत्न—आदि आपीने उपकार करे छे ते प्रमाणे

सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन अने सम्यक्चारित्र रूप त्रण रत्नना आपनारा होवाथी समस्त प्रकारना उपकार करवामां सागर जेवा, जेनो कोइ पण वखत अंत नही थइ शके एवा समग्र गुणोनी खाण जेवा अने तेथी करीने भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक ए चार निकायना मळी चोसठ देवोथी पूजाएला.

**मू०—वज्रऋषभनाराच संघयण, समचतुरस्रसंस्थान,**
**अष्टसहस्र वरपुरुषलक्षणना धरणहार**

**शब्दार्थः—**

**वज्रऋषभनाराच संघयण**—वज्रऋषभ नाराच संघयण वाळा

**समचतुरस्रसंस्थान**—समाकृतिवाळा

**अष्टसहस्र**—आठ हजार

**वरपुरुष**—श्रेष्ठ पुरुषना

**लक्षणना**—लक्षणोने

**धरणहार**—धारण करनारा

**भावार्थः**—वज्रऋषभनाराचसंघयणवाळा, (एटले प्रथम संघयणवाळा) सरखी आकृतिवाळा, एक हजार ने आठ उत्तम पुरुषोना लक्षणो सहित एटले एक हजार ने आठ जेमां उत्तम लक्षणो छे एवा तथा

**मू०—समुद्रनी पेरे गंभीर, मेरुपर्वतनी परे धीर**
**संखनी परे निरंजन, वायुनी परे अप्रतिबद्ध विहार,**
**आकाशनी परे निरालंब, जीवनी परे अप्रतिहतगति,**
**कूर्मनी परे गुप्तेन्द्रिय, खडगीजीवना श्रृंगनी परे एक,**

**भावार्थः**—समुद्रनी जेम गंभीर स्वभाववाळा, विनाश समयना पवनथी पण कोइ वखत मेरु पर्वत जेम चालतो नथी तेम उपसर्गनी परंपराथी परमात्मा कदिपण चलायमान थतां नथी, जेम शंख उज्ज्वल छे तेवी रीते पोताना गुणोथी उज्ज्वल छे, जेम हवा पोतानी इच्छा प्रमाणे स्वतंत्र चाले छे, तेवी रीते कोइनी पण रोकावट वगर स्वतंत्र रीते विहार करवावाळा छे, जीवनी गति जेम सदाय चालवानीज छे तेवीज रीते तेमनी पण गति कोइ जग्याए अटकायेल नथी अर्थात् तेमने कोइ रोकी शकतुं नथी, काचबानी जेम सर्वे इन्द्रियोने गोपाववाळा छे, जेम गेंडानुं एक शिंगडुं छे तेम ज भगवान पोते पण एकलाज छे बीजा कोइनी सहायतावाळा नथी.

**मू०—भारंडपंखियानी परे अप्रमत्त, सिंहनी परे दुर्धृष्य,**
**वृषभनी परे अढारसहस, सीलंगरथ धुरंधर,**
**चंद्रमानी परे सौम्यकान्ति, सूर्यनी परे सतेज,**
**पंखियानी परे विप्रमुक्त,कुक्षिसंबल, वसुंधरानी परे सर्वसह,**

**भावार्थः**—भारंड पक्षीनी जेम आळस वगरना छे, सिंहनी जेम कोइ पण वखत कोइनाथी पण हार पामवावाळा नथी, वृषभ—बळदनी जेम अढार हजार शीलांगरथनी धूरा—धूसरीने धारण करनारा छे, चंद्रनी जेम शीतलताना गुणने—तेजने धारण करवावाळा छे, सूर्यनी जेम तेजवाळा छे, पक्षिनी जेम स्वतंत्र छे. कोइनी रोक—टोकवाळा नथी, कुखमां रहेल तेज शंबल (भातुं) छे जेमनी पासे तथा पृथ्वी—भूमिनी जेम तमाम बाबतोने सहन करनारा छे.

**मू०–अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, चउत्रीश अतिशयसंयुक्त,**
**पांत्रीश भाषागुणपरिकलित, अष्टमहाप्रातिहार्य विराजमान**
**पादपीठिका सहित सिंहासनासीन,छत्रत्रयचामर शोभायमान**
**पूठ पाछळ भामंडल दीपे, तेजे करी श्रीसूर्यने जीपे,**

**भावार्थः**—जेमना ज्ञाननो पार नथी एवुं अनंत ज्ञानने धारण करनारा, अनंतदर्शनवाळा, चार अतिशय जन्मथी, ओगणीश देवताओए करेला तथा कर्मनो क्षय–विनाश थवाथी अग्यार एम मळी चोत्रीश अतिशयने धारण करवावाळा छे, भाषाना पांत्रीश गुणोए सुशोभित, अशोकवृक्ष १, सुरपुष्पवृष्टि २, दिव्यध्वनि ३, चामर ४, आसन ५, भामंडळ ६, दुंदुभि ७, अने छत्र ८ आ आठ प्रातिहार्यथी शोभायमान, पग मूकवानी पीठिकायें सहित जे सिंहासन तेना उपर बीराजेला, त्रण लोकनुं रक्षण करवा रूप माथे त्रण छत्रोथी सुशोभित तथा बन्ने बाजु इंद्रादिकथी वींझाता बे चामरोए सुशोभायमान, जेमनी पूंठ पाछल नील वर्णवाळुं सूर्यना आकारना सरखा तेजवाळुं भामंडल शोभे छे तथा अत्यंत तेजना समुदाय होवाथी सूर्यने पण जीती लीधेल छे,

**मू०–श्रीअरिहंत उपर अशोकवृक्ष छाया करतो संघाते चाले,**
**धर्मध्वज आगल छती लहलहे, आकाशगत धर्मचक्र जलहले,**
**देवदुंदुभि स्वामी आगल वाजे, श्रीअरिहंतनी वाणी**
**मेघनी परे गाजे,**
**योजनहारिणी वाणी-अमृतसमाणी-सर्वभाषानुगामिनी,**

**भावार्थः**—आपना सामीप्यपणाथी शोकरहित थतुं अशोक वृक्ष आपनी उपर छाया करतुं साथे चाले छे, इंद्रध्वज पण आपना आगमननी सूचना आपवाज जाणे आगळ चालती होय नहीं तेवी रीते शोभे छे, आपनी विद्यमानताने सूचवतो धर्मध्वज पण आकाशमां प्रकाश फेंके छे, प्रत्येक प्राणीना कानमां मंगलिक ध्वनि फेंकतो देवतानो दुंदुभिनो शब्द पण वागे छे, वर्षाऋतुना मेघनी गंभीरतावाळी श्री अरिहंत परमात्मानी वाणी गाजे छे, तथा एक योजन सुधी तथा प्रत्येक प्राणीने पोतपोतानी भाषामां संभळाय तेवी परमात्मानी वाणी छे अने अमृत जेवी उपमावाळी तथा सर्व भाषाने मळती छे.

**मू०—सकल लोकना संशय हरे,**
**त्रिभुवनजनना मनने करे उत्साह,**
**मुक्तिनगरी प्रते सार्थवाह,**

**भावार्थः**—सर्व लोकना संशयने हणनारा, त्रण भुवननी अंदर रहेनारा जनोना मनने उत्साह करनारा, तथा सार्थवाहनी जेम मुक्तिपथे लइ जनारा.

**एहवा श्रीअरिहंत भगवंत गुणवंत देवाधिदेव, तेहनी गुणस्तुति भणुंः—**

( एम बोली उभा थइ थूइ भणवी )

## आचार्य श्रीमत् श्री समरचन्द्र सूरिजीनी बनावेली पांच गाथावाळी
## ॥ १२ अथ सिरि रिसहेसरनी थूइ ॥
( छप्पय छंद )

**मू०—सिरिरिसहेसर गुणनिधान, सेवक सुखदायक**
**अजिते जीत्या कर्म सबल, हुवा जगनायक**
**संभव भवना भय हरेवि, पाम्या शिवराज**
**अभिनंदन जिन मुझ मिल्या, सिद्धा सवि काज**
**सुमति सुमति दायक जिनह, सुरनर सारे सेव**
**पद्मप्रभ जिनदंसणे, जनम मरण संखेव ॥ १ ॥**

**भावार्थः**—पहेला श्री ऋषभदेव स्वामी गुणोना भंडार छे अने सेवकने सुखना आपनारा छे, बीजा श्री अजितनाथ भगवान छे के जेओ महा बळवान होवाथी कठीन एवां कर्मोने पण सहेजमां जीती शक्या अने तेथी करीने जगतना नायक थया. त्रीजा श्री संभवनाथ भगवान के जेओए पोताना भव—संसारना जे भय तेने दूर करी—तेनो विनाश करी मोक्षना राज्यने पाम्या, चोथा श्री अभिनंदन स्वामी मने मळ्यां जेथी मारां बधां कामो सिद्ध थयां. सारी बुद्धिने आपनारा पांचमा श्री सुमतिनाथ भगवान छे के जेओनी देव अने मनुष्य सेवा करे छे, छट्ठा श्री पद्मप्रभ प्रभु छे जेओना दर्शनथीज जन्म—वृद्धावस्था अने मरण आ त्रणे टळी जाय छे. ॥ १ ॥

**मू०—श्री सुपास मुज पूरे आश, भवना दुःख वारी,**
**चंद्रप्रभ जिनतणी, कान्ति देखत मनहारी,**
**सुविधि सुविधिपरि धर्म कह्यो, तिहुयण जणसाखी,**

शीतल संयमसिरि वरी, षट् जीवसु राखी,
श्री श्रेयांस पाय प्रणमीये, इग्यारमो जिणिंद
वासुपूज्य मन ध्याइये, केवलनाण दिणिंद ॥२॥

**भावार्थः**—सातमा श्रीसुपार्श्वजिन मारी आशा पुरे छे अने भवना दु:खोने निवारनारा छे, आठमा श्री चन्द्रप्रभजिननी कान्ति देखवा मात्रथीज भव्योना मनने हरी ले छे, नवमा श्री सुविधिनाथे सुविधिए करीने त्रण भुवनना लोकनी सामे धर्मनुं स्वरूप बताव्युं छे, दशमा श्री शीतलजिनेश्वरे संयमरूप लक्ष्मीने अंगीकार करी छ काय जीवोनी सारी रीते रक्षा करी, अगीयारमा जिनेश्वर श्री श्रेयांसनाथना चरणने नमीये, बारमा केवळ ज्ञानरूपी सूर्यवाळा एवा वासुपूज्यने मनमां चिंतवीये ॥२॥

**मू०**—विमल विमलधीकरण, तरण-भवसायर-प्रवहण
जिण अनंते भवअंत कर्यो, जाणे सुरनर जण
धर्मजिणेसर सोमवयण, तप तेजे दिनमणि
कृपाकरण श्रीशांतिनाथ, त्रसथावर अणूदिणि
कुंथुनाथ चक्रीजगह, छट्ठो सत्तरमो धर्म
अर जिनवर पय ओलगे लब्भे शिवपदशर्म ॥३॥

**भावार्थः**—तेरमा विमलबुद्धिना करनारा एवा विमलजिन भव-समुद्र तरवामां वहाण समान छे, चौदमा श्री अनंतनाथ जिनेश्वरे भवनो अंत कर्यो ते वातने देवलोक तथा मनुष्य लोक निवासी भव्यो जाणे छे. पंदरमा सौम्य मुखवाळा एवा धर्म जिनेश्वर तप तेजे करीने सूर्य समान छे, त्रस अने थावर प्राणीओ उपर हमेशा कृपा करनार एवा श्री सोळमा शांतिनाथ भगवान छे. सत्तरमा श्री

कुंथुनाथ भगवान आ जगतमां छट्ठा चक्रवर्ती छे अने सत्तरमा धर्म चक्रवर्ती छे. अढारमा श्री अरजिनवरना चरणनी आगल सेवा करवाथी शिवपदना सुखो मळे छे. ॥ ३ ॥

मू०—मल्लिनाथ दुय मल्ल दुज्जय, अंतरना जीत्या
मुनिसुव्रत व्रत सुष्ठु धरी, लोकाग्रे पहुता
नमी नामी रतिपतिय मान, रिपु सर्व खपाव्या
नेमि जिणेसर ब्रह्मकवच, पहेरि गिरि आव्या
श्रीपार्श्वनाथ त्रेवीसमो, त्रिभुवन सकल सरूप
श्रीमहावीर तीर्थेसरु, नमिये विविध सरूप ॥४॥

**भावार्थः**—आत्मानी साथे लागेला दुर्जय एवा राग अने द्वेष रूप बे मल्लोने ओगणीशमा तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ भगवाने सहजमां जीती लीधा छे, उत्तम उत्त व्रत धारण करी वीशमा मुनिसुव्रतस्वामी लोकना अग्रभागने विषे पहोच्या—मोक्षपद पाम्या छे. एकवीशमा श्री नमीनाथे अजेय एवा कामदेवना मानने नमावी अंतर्गत सर्व शत्रुओने खपाव्या छे. बावीसमा श्री नेमिजिनेश्वर ब्रह्मचर्यरूप बख्तरने पहेरीने गिरनार पर्वत उपर बीराज्या—आव्या छे. त्रेवीसमा श्री पार्श्वनाथस्वामी त्रिभुवनना समग्र स्वरूपने जाणनारा छे. चोवीशमा विविध स्वरूपवाळा तीर्थना स्वामी श्री महावीरस्वामीने नमस्कार करीए ॥ ४ ॥

मू०—एणीपरे जिण चोवीस थव्या, पुरुषोत्तम सिद्धा
सेव करी एक चित्त जेणे, ते साथे लीधा
यद्यपि जिणवर रागरहित, पण सेवकने तारे
द्वेष तज्यो पण अवर लोगसुं संग निवारे

**तिण कारण भगते भणिय, वंदु देव त्रिकाल**
**प्रभु तुठे वंछित फले, जाणे बाल गोपाल ॥५॥**

**भावार्थः**—एवी रीते पुरुषोत्तम–पुरुषोमां उत्तम तथा सिद्ध थयेला चोवीस जिनो में स्तव्या, तथा एकचित्ते जेमणे सेवा करी तेओने पोतानी साथे लीधा. जो के जिनेश्वर भगवंतो राग–द्वेष आदि दूषणोथी रहित छे छतां पण पोताना सेवकने तारे छे. द्वेषने छोडीने पण बीजा लोकोनी साथे जेणे संग निवार्यो छे—अर्थात् संगरहित छे. ते कारणथी हुं भक्तिपूर्वक आ स्तुति करवापूर्वक देवताने त्रणे काळ स्तवुं छुं—वांदुं छुं. कारण प्रसन्न थयेला सामान्य देवताओ पण आ फळने आपनारा छे, ज्यारे जिनेश्वर परमात्मा तो देवना पण देव छे तो पछी तेवा अलौकिक देवने भजवाथी निष्फल केम थवाय अर्थात् अवश्य फळ मळेज छे. आ वात प्रसिद्ध छे अर्थात् बाळकथी लइ पुरुष पर्यन्त जाणे छे ॥ ५ ॥

---

## ॥ १३ अथ जं किंचि सूत्र ॥

हवे सामान्य रीते सर्व जिनबिंबोने वांदे छे—

**मू०—जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि-तिरिय-लोयम्मि।**
**जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥**

### शब्दार्थ.

**जं**—जे
**किंचि**—कोइ
**नाम तित्थं**—नाम मात्रथी पण प्रसिद्ध एवुं तीर्थ अने ते विषे
**सग्गे**—स्वर्गमां

| | |
|---|---|
| **पायालि**–पाताळमां | **जिणबिंबाइं**–जिनबिंबो छे |
| **तिरिय**–तीर्च्छा | **ताइं**–ते |
| **लोयम्मि**–लोकमां | **सव्वाइं**–सर्वेने |
| **जाइं**–जे | **वंदामि**–हुं वांदुं छुं |

**जं किंचि नामतित्थं**—जे कोइ नाम मात्रथी पण प्रसिद्ध एवुं तीर्थ छे अने तेने विषे.

**सग्गे पायालितिरियलोयम्मि**—स्वर्गमां, पाताळमां अने तीर्च्छा लोकमां.

**जाइं जिणबिंबाइं**—जे कोइ जिनबिंबो छे.

**ताइं सव्वाइं वंदामि**—ते सर्वेने हुं वांदुं छुं.

**भावार्थ**—स्वर्ग, पाताळ अने तिर्यंच लोकमां जे कोइ नाम* मात्रथी पण तीर्थ छे अने तेमां जे जिनप्रतिमाओ छे, ते सर्वेने हुं वांदुं छुं. ॥ १ ॥

गाथा १, पद ४, संपदा ४, गुरु ३, लघु २९, सर्ववर्ण ३२.

---

* वर्त्तमानकाळे वर्तता केटलांक तीर्थोनां नाम—श्रीशत्रुंजय, गिरिनार, तारंगा, शंखेश्वर, कुंभारीआ, आबू, (देलवाडा, अवचळगढ) राणकपुर, केसरियाजी, बामणवाडा, मांडवगढ, अंतरिक्ष, मक्षी, हस्तिनापुर, अल्हाबाद, बनारस, अयोध्या, संमेतशिखर, राजगृह, काकंदी, क्षत्रियकुंड, पावापुरी, चंपापुरी, सेरिसा, कुलपाक, फलोधि, स्तंभन पार्श्वनाथ, अजाहरा पार्श्वनाथ, तलाजा, वरकाणा, भोयणी, पानसर, शेरीसा, वामज, मातर, जीराउला पार्श्वनाथ, कापरडाजी विगेरे.

## ॥ १४ अथ नमुत्थुणं वा *शक्रस्तव ॥

**मू०—नमुत्थुणं ×अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥**

**आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥**

### शब्दार्थः—

**नमुत्थुणं**—नमस्कार हो

**अरिहंताणं**—अरिहंतने

**भगवंताणं**—भगवंतने

**आइगराणं**—तीर्थनी आदि करनारने

**तित्थयराणं**—तीर्थंकरने

**सयंसंबुद्धाणं**--पोतानी मेळे बोध पामेलाने

---

* शक्र एटले इंद्र तेनी करेल स्तुति ते शक्रस्तव.

× अरिहंत भगवानने चोत्रीश अतिशय होय छे, ते आ प्रमाणे—

१. शरीर अनंतरूपमय, सुगंधमय, रोगरहित, परसेवा रहित, अने मलरहित होय.

२. रुधिर तथा मांस, गायना दूधसमान धोळां अने दुर्गंध वगरनां होय.

३. आहार तथा निहार, चर्मचक्षुथी अदृश्य होय.

४. श्वासोश्वासमां कमळ जेवी सुगंध होय.

आ ( १–४ ) चार अतिशय जन्मथीज होय माटे स्वाभाविक—**सहजातिशय** अथवा **मूलातिशय** कहेवाय छे.

५. योजन प्रमाण समवसरणमां मनुष्य, देव, अने तिर्यंचनी कोडाकोड समाय ने तेमने बाधा थाय नहि.

**नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं**—अरिहंत भगवानोने नमस्कार हो. ते अरिहंत भगवान केवा छे? तेमना विशेषणो आपे छे.

**आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं**—एटले धर्मनी आदिने करनारा, तीर्थनी स्थापना करनारा, पोतानी मेळेज बोध पामेला छे, (तीर्थंकरोने अन्यना उपदेशनी अपेक्षा होती नथी.)

**मू०—पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर–पुंडरीयाणं। पुरिसवर–गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोग–नाहाणं लोग–हियाणं लोग–पइवाणं लोग–पज्जोअगराणं ॥४॥**

---

६. पचीश योजन एटले बसें गाउ सुधी पूर्वोत्पन्न रोग उपशमें अने नवा रोग थाय नहि.

७. वैरभाव जाय.

८. मरकी थाय नही.

९. अतिवृष्टि एटले हद उपरांत वरसाद थाय नहि.

१०. अनावृष्टि एटले वरसादनो अभाव थाय नहि.

११. दुर्भिक्ष एटले दुकाळ न पडे.

१२. स्वचक्र अने परचक्रनो भय न होय.

१३. भगवंतनी भाषा मनुष्य, तिर्यंच, अने देवता सर्व पोतपोतानी भाषामां समजे. (वाणी पांत्रीश गुणवाळी होय छे ते गुण नवकारनी नोटमांथी जोवा.)

## शब्दार्थः—

**पुरिसुत्तमाणं**—पुरुषोनी मध्ये उत्तम

**पुरिससीहाणं**—पुरुषोमां सिंह समान

**पुरिसवर-पुंडरीयाणं**—पुरुषोमां श्रेष्ठ कमल समान

**पुरिसवरगंधहत्थीणं**—पुरुषोने विषे श्रेष्ठ गंध हस्ती समान

**लोगुत्तमाणं**—लोकने विषे उत्तम

**लोगनाहाणं**—लोकना नाथ

**लोगहियाणं**-लोकना हित-कारक

**लोगपईवाणं**—लोकना दीवा समान

**लोगपज्जोअगराणं**—लोकना अ-तिशे प्रकाश करनारा

---

१४. एक योजन सुधी सरखी रीते भगवंतनी वाणी संभळाय.

१५. सूर्यथी बारगणुं तेजवाळुं भामंडळ होय.

आ अगीयार ( ५–१५ ) अतिशयो केवळज्ञान थाय त्यारे थाय तेथी ते **कर्मक्षयजातिशय** कहेवाय छे. ६–१२ मां जणावेला रोगादिक सात उपद्रवो ते भगवंत विहार करे त्यारे पण चारे दिशाए फरता पचीश योजन सुधी न होय.

१६. आकाशमां धर्मचक्र होय.

१७. बारजोडी ( चोवीश ) चामर अणवींज्यां वींजाय.

१८. पादपीठ सहित स्फटिक रत्ननुं उज्ज्वल सिंहासन होय.

१९. त्रण छत्र दरेक दिशाए होय.

२०. रत्नमय धर्मध्वज होय ( तेने इन्द्रध्वज पण कहे छे. )

**भावार्थ**—पुरुषोनी मध्ये उत्तम, पुरुषोमां सिंह समान, पुरुषोमां श्रेष्ठ कमल समान, पुरुषोने विषे श्रेष्ठ गंध हस्ती समान, लोकने विषे उत्तम, त्रण लोकना नाथ, लोकना हित करनारा, लोकना दीवा समान, लोकना अतिशे प्रकाश करनारा, पोताना संपूर्ण ज्ञाने करीने त्रण लोकने विषे सूर्यनी जेम.

**मू०—अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥**

---

२१. नव सुवर्ण कमळ उपर चाले (बे उपर पग मुके अने सात पाछळ रहे. तेमांथी वारा फरती बे बे आगळ आवे.)

२२. मणि, सुवर्ण अने रुपाना ए रीते त्रण गढ होय.

२३. चार मुखे करी धर्मदेशना दे, (बाकीना त्रण प्रतिबिंब देव करे.)

२४. स्वशरीरथी बारगणुं उंचुं अशोकवृक्ष छत्र, घंट, पताका आदिथी युक्त होय.

२५. कांटा अधोमुख एटले अवळा थइ जाय.

२६. चालती वखते सर्व वृक्ष नमी प्रणाम करे.

२७. आकाशमां दुंदुभि चालती वखते वागे,

२८. योजन प्रमाण अनुकूळ वायु होय.

२९. मोर वगेरे शुभ पक्षीओ प्रदक्षिणा करतां फरे.

३०. सुगंधी जळनी वृष्टि थाय.

## शब्दार्थः—

**अभयदयाणं**—अभयदान आपनारने

**चक्खुदयाणं**—अंतरचक्षुना उघाडनाराने

**मग्गदयाणं**—मोक्षमार्गने आपनाराने

**सरणदयाणं**—शरण आपनाराने

**जीवदयाणं**—संयमरुपी जीवितव्यने देवावाळां

**बोहिदयाणं**—बोधिबीजने आपनाराने

**धम्मदयाणं**—धर्मना आपनारा

**धम्मदेसियाणं**—धर्मनो उपदेश करनाराने

**धम्मनायगाणं**—धर्मना नायकने

**धम्मसारहीणं**—धर्मना सारथीने

**धम्मवर**—धर्मरूपी श्रेष्ठ

**चाउरंत**—चार गतिनो अंत करनार

**चक्कवट्टीणं**—चक्रवर्तीने

---

३१. जळ स्थळमां उपजेलां पांच वर्णवाळा फूलनी ढींचण सुधी वृष्टि थाय.

३२. केश, दाढी—मूंछ, नख, वधे नहि, ( संयम लीधा पछी. )

३३. जघन्यपणे चार निकायना क्रोड देवता पासे रहे.

३४. सर्व ऋतुओ अनुकूल रहे.

आ छेल्ला १६—३४ एटले ओगणीश अतिशयो देवता करे. तेथी ते **देवकृतातिशय** कहेवाय छे. आ चौत्रीश अतिशयनो जे चार अतिशयमां समावेश थाय छे ते अरिहंतना गुणनुं वर्णन करवामां अगाउ जणावी गया छीए ते समजवा.

**भावार्थ**—संसारना सर्व जीवोने अभयदान आपनारा छे, ज्ञानरूपी चक्षुने आपनारा छे, मोक्षमार्गने देखाडनारा छे, निराधार प्राणीओने शरण आपनारा छे, संयमरूपी जीवितव्यने देववाळाने धर्मने आपनारा छे, धर्मना उपदेश आपनारा छे, धर्मना नायक छे, धर्मरूपी रथने चलाववामां सारथि समान छे, धर्मचक्र वडे चार गतिनो अंत करवामां चक्रवर्ती समान छे,

**मू०—दीवो ताणं सरणगइपइट्ठा, अप्पडिहयवरनाणदंसण धराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥**

**शब्दार्थः**—

**दीवो**—द्वीप समान
**ताणं**—रक्षण करनार
**सरण**—शरणरूप
**गइ**—गतिरूप
**पइट्ठा**—आकाररूप
**अप्पडिहय**—कोइथी हणाय नहि तेवा
**वर**—श्रेष्ठ—उत्तम
**नाण**—केवळ ज्ञान
**दंसण**—केवळ दर्शन
**धराणं**—धारण करनारने
**वियट्ट**—निवर्त्या छे
**छउमाणं**—छद्मस्थावस्थामांथी तेमने
**जिणाणं**—रागादि शत्रुओने जीतनारने
**जावयाणं**—जीताडनारने
**तिन्नाणं**—तरनारने
**तारयाणं**—तारनारने
**बुद्धाणं**—तत्त्व जाणनारने
**बोहयाणं**—बोध आपनारने
**मुत्ताणं**—पोते कर्मथी मूकायेलाने
**मोअगाणं**—बीजाने कर्मथी मूकावनारने

**दीवो ताणं सरणगइपइट्ठा**—द्वीप समान रक्षण करनार, शरणरूप, गतिरूप, आधाररूप

**अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्टछउमाणं**—अस्खलित श्रेष्ठ ज्ञान दर्शन धारण करनारने. घातीकर्म रहितने.

**जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं**—जिनोने, जय करावनारने, तरेलाने, तारनारने.

**बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं**—बोध पामेलाने, बोध पमाडनाराने मुक्ति, पामेलाने, मुक्ति करावनारने.

**भावार्थः**—संसार समुद्रमां डूबता जीवोने द्वीपनी जेम आश्रय आपी रक्षण करनारा, अनर्थना नाश करनारा, एथीज कर्मना उपद्रवोथी भय वाळाने शरणरूप, सुखने माटे दुःखियाने आश्रयरूप, भवकुवामां पडता प्राणिने आलंबनरूप एवा परमात्मा, कोइथी हणाय नहीं एवा श्रेष्ठ ज्ञान अने दर्शनने धारण करनारा छे, छद्मस्थ अवस्था तेमनी दूर थइ छे एटले घातिकर्मोनो नाश थयो छे. पोते कर्मशत्रुने जीतनारा छे. अने बीजानी पासे कर्मशत्रुने जीतावनारा छे, पोते संसारसमुद्रने तरी गया छे अने बीजाने तारे छे, पोते बोध पामेला छे अने बीजाने बोध पमाडनारा छे, पोते कर्मथी मूक्त थया छे अने बीजाने तेथी मुक्त करनारा छे.

**मू०—सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव–मयल–मरुअ–मणंत–**
**मक्खय–मव्वाबाह–मपुणराविति–सिद्धिगइनामधेयं**
**ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥**

**जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ।**
**संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १ ॥***

**शब्दार्थः—**

**सव्वन्नूणं**—सर्वज्ञोने

**सव्वदरिसीणं**—सर्वदर्शीने

**सिवं**—उपद्रवरहितने

**अयलं**—अचळने

**अरुअं**—रोगरहितने

**अणंतं**—अनंतने

**अक्खयं**—अक्षयने

**अव्वाबाहं**—बाधारहितने

**अपुणरावित्ति**—ज्यांथी फरी अवतार लेवो नथी एवुं

**सिद्धिगइनामधेयं**—सिद्धिगति नामनुं

**ठाणं**—स्थानने

**संपत्ताणं**—पामेलाने

**नमो**—नमस्कार हो

**जिणाणं**—जिनेश्वरोने

**जिअभयाणं**—जीत्या छे इह लोकादि सात भय जेमणे एवाने

**जेअ**—जेओ

**अईआ**—अतीत (गयेला) काळमां

**सिद्धा**—सिद्ध थया छे

**भविस्संति**—(आवतां) भविष्य काळमां थशे

**णागए काले**—अनागत (आववा वाळां) काळमां

**संपइ अ**—वर्त्तमान (हाल) काळमां

---

*नमुत्थुणंनी नव संपदाओ—१ स्तोतव्य संपत् २ ओघसंपत् ३ इतर हेतु संपत् ४ विशेष हेतु संपत् ५ तद्धेतु संपत् ६ विशेषोपयोग संपत् ७ स्वरूपयोग संपत् ८ निजसमफल संपत् ९ मोक्ष संपत्.

**वट्टमाणा**–विद्यमान छे
**सव्वे**–ते सर्वे (द्रव्यजिन) ने
**तिविहेण**–मन, वचन, कायाए
करी
**वंदामि**–हुं वंदना करुं छुं

**सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं**–सर्वज्ञने, सर्वदर्शीने,

**सिव–मयल–मरुअ–मणंत– मक्खय–मव्वाबाह –मपुण-रावित्ति**—निरुपद्रव, निश्चल, रोगरहित, अनंत, अक्षय, अव्याबाध, ज्यांथी फरी पाछुं आववुं नथी एवा.

**सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं**—सिद्धिगति नामना स्थान-ने पामेलाने.

**नमो जिणाणं**—नमस्कार हो जिनोने.

**जिअभयाणं**—भय जेओए जीत्या छे तेओने.

**जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले**—वली जे भूतकालमां थइ गयेला सिद्धो. वळी जे भविष्यमां थनारा, (आवता काळमां.)

**संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि**–वर्त्तमानमां छे तेओने, सर्वने त्रिविधे वांदुं छुं.

**भावार्थ**—सर्व पदार्थने सर्व प्रकारे जाणनारा छे, सर्व पदार्थने जोनारा छे, उपद्रव रहित, निश्चळ, रोगरहित, अंतरहित, क्षयरहित, बाधापीडारहित अने ज्यांथी पाछुं कोइ वखत आववानुं नथी एवा सिद्धि-गति नामना स्थानने पामेला छे, सर्व भयने जीतनारा छे एवा जिनेश्वरोने नमस्कार हो.

वळी जेओ अतीत ( गया ) काळे मोक्ष पाम्या छे, भविष्य ( आवतां ) काळे मोक्षे जशे, तथा जेओ वर्त्तमान ( चाली रहेला ) काळे विद्यमान छे. ते सर्वे ( द्रव्य जिनेश्वरो ) ने हुं शुद्ध मन, वचन अने कायाए करीने नमस्कार करुं छुं.

१ इच्छामि खमासमणो वन्दिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीआचार्य वांदुजी ।।

२ इच्छामि खमासमणो वन्दिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वन्दामि ।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्-श्रीउपाध्याय वांदुजी ।।

३ इच्छामि खमासमणो वन्दिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वन्दामि ।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सर्व-साधुजीने त्रिकाल वन्दना होज्यो ।।

४ इच्छकार भगवन् सुहराइ सुहदेवसि सुख तप शरीर-निराबाध सुख संजम जात्रा निर्वहो छो जी ।।

इच्छामि खमासमणो वन्दिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वन्दामि ।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि ?

( गुरु कहे " ठाएह ") इच्छं, भगवन् तहत्ति ( पछी " नमो अरिहंताणं " तथा " करेमि भंते " कही )

## ॥ १५ अथ इच्छामि ठामि सूत्रम् ॥

**मू०—इच्छामि, ठामि काउस्सग्गं ॥**

**शब्दार्थः—**

**इच्छामि**—इच्छुं छुं
**ठामि**—करुं छुं
**काउस्सग्गं**—काउस्सग्ग

**इच्छामि ठामि काउस्सग्गं**—हुं इच्छुं छुं. काउस्सग्ग करुं छुं.

**भावार्थ**—हुं कायोत्सर्ग करवा इच्छुं छुं. कायोत्सर्गने करुं छुं.

**मू०—जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ,**

**शब्दार्थः—**

**जो**—जे
**अइआरो**—अतिचार
**कओ**—कर्यो होय
**काइओ**—काया संबंधी
**वाइओ**—वचन संबंधी
**माणसिओ**—मन शंबंधी

**जो मे देवसिओ अइयारो**—जे में दिवस संबंधी अतिचार

**कओ काइओ वाइओ माणसिओ**—काया संबंधी वचन संबंधी, मन संबंधी कर्यो होय.

**मू०—उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए।**

## शब्दार्थः—

**उस्सुत्तो**—सूत्र—जिनागम विरुद्ध बोलवाथी
**उम्मग्गो**—मार्गविरुद्ध चालवाथी
**अकप्पो**—आचार विरुद्ध
**अकरणिज्जो**—नहीं करवा लायक
**दुज्झाओ**—आर्त्त रौद्ररूप दुर्ध्यान
**दुव्विचिंतिओ**—दुष्ट चिंतवन करवाथी
**अणायारो**—आचरवाने अयोग्य
**अणिच्छिअव्वो**—जे इच्छवा योग्य नथी तेथी
**असावगपाउग्गो**—श्रावकने नहीं करवा योग्य एवो
**नाणे**—ज्ञानने विषे
**तह**—तथा
**दंसणे**—दर्शनने विषे
**चरित्ताचरित्ते**—देशविरतिरूप श्रावक धर्मने विषे
**सुए**—शास्त्रने विषे
**सामाइए**—सामायकने विषे

**उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो**—सूत्र—जिनागम विरुद्ध बोलवाथी, मार्ग विरुद्ध चालवाथी, आचार विरुद्ध करवाथी तथा नहीं करवा लायक करवाथी.

**दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो**—आर्त्त रौद्ररूप दुर्ध्यान ध्यावाथी, दुष्ट चिंतवन करवाथी, आचरवा नहीं योग्य आचरण करवाथी, जे इच्छवा योग्य नथी तेथी.

**असावगपाउग्गो**—श्रावकने अनुचित नहीं करवा योग्य करवाथी.

**नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए**—ज्ञानने विषे, दर्शनने विषे, देश विरतिरुप श्रावक धर्मने विषे, शास्त्रने विषे सामायकने विषे

**भावार्थः**—प्रथम उपर कह्युं के हुं इच्छुं छुं के हुं कायोत्सर्ग करुं ते पहेलां प्रथम आ प्रमाणे दोषनी आलोचना करुं छुं--ज्ञान, दर्शन, देशविरतिरूप चारित्र, श्रुत धर्म अने सामायिक, आटला विषयमां में आखो दिवस जे कायिक, वाचिक के मानसिक अतिचार सेवन कर्यों होय ते संबंधी तथा सूत्र जिनागम विरुद्ध, मार्ग विरुद्ध, आचार विरुद्ध, नही करवा लायक, दुर्ध्यान कर्युं होय, दुष्ट चिंतवन कर्युं होय, नहीं इच्छवा योग्य अने श्रावकने नहीं करवा योग्य, ए सर्व संबंधी जे कांइ अतिचार सेव्यो होय.

**मू०—तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥**

**शब्दार्थः—**

**तिण्हं**—त्रण

**गुत्तीणं**—गुप्तिने विषे

**चउण्हं**—चार

**कषायाणं**—कषाये करी

**पंचण्हं**—पांच

**अणुव्वयाणं**—अणुव्रत

**गुणव्वयाणं**—गुणव्रत मध्येथी

**सिक्खावयाणं**—शिक्षाव्रत मध्येथी

**बारसविहस्स**—बार प्रकारनां व्रतरूप

**सावगधम्मस्स** – श्रावकधर्म मांहेथी

**जं**–जे

**खंडिअं**–देशथकी भांग्युं होय

**विराहिअं**–सर्व थको विराध्युं होय.

**तिण्हं गुत्तीणं**—त्रण गुप्तिनां

**चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं**—चार कषायोना पांच अणुव्रतोना.

**तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं**—त्रण गुणव्रतोनां चार शिक्षाव्रतोनां

**बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं**—( सर्व मळी ) बार प्रकारना श्रावक धर्मनुं जे देशथकी खंडित.

**जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं**—जे सर्व थकी भांग्युं होय ते मारुं दुष्कृत मिथ्या करुं छुं.

**भावार्थः**—तथा चार कषाय द्वारा त्रण गुप्ति संबंधी, पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रतरूप बार प्रकारना श्रावक धर्म संबंधी जे कांइ व्रत खंडित थयुं होय, अथवा तेने विषे जे कांइ विराधना थइ होय ते संबंधी पण मारुं पाप मिथ्या थाओ

गुरु ३२, लघु १२०, सर्ववर्ण १५२.

## इति इच्छामि ठामि देवसिअं आलोउ सूत्र १५*

---

* आ सूत्र वडे दिवस संबंधी मन, वचन अने कायाथी श्रावक-

(पछी "तस्स उत्तरी" तथा "अन्नत्थ ऊससिएणं" कही अतिचारनी आठ गाथा अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो.

## ( अतिचारनी आठ गाथा आ प्रमाणे छे. )

## १६ अथ अतिचारनी आठ गाथा× ॥

**मू०—नाणम्मि दंसणम्मि अ, चरणम्मि तवम्मि तह य विरि-यम्मि। आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **नाणंमि**—ज्ञानने विषे | **आयरणं**—जे आचरण |
| **दंसणंमि**—दर्शनने विषे | **आयारो**—ते आचार कहेवाय छे |
| **चरणम्मि**—चारित्रने विषे | **इअ**—एवी रीते |
| **तवंमि**—तपने विषे | **एसो**—ए आचार |
| **तह य**—तेमज | **पंचहा**—पांच प्रकारनो |
| **विरियंमि**—वीर्यने विषे | **भणिओ**—कहेलो छे |

धर्ममां करेला पापनी आलोचना थाय छे, तेथी आ सूत्र बोलती वखत उपयोग राखीने पोते आखा दिवसमां जे जे पाप सेव्यां होय ते सर्व याद करीने शुद्ध अंतःकरणथी तेनो पश्चात्ताप करवानो छे.

×आ सूत्रमां ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार ए पांच आचारना आचरणाना भेद जणाव्या छे. ते आचरणामां जे स्खलनाप्रमाद ते अतिचार जाणवा. तेथी, आ आचारनी गाथाओने ज अतिचारनी गाथा रूपे कही छे. अर्थात् तेमां कहेला आचारथी जे

**भावार्थ**—ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने वीर्यने विषे तेनी प्राप्तिने निमित्ते जे आचरण कराय ते आचार कहेवाय छे. आ प्रमाणे ते आचार पांच प्रकारनो कहेलो छे.

**तेमां प्रथम ज्ञानाचारना आठ भेद बतावे छे—**

**मू०—काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिन्हवणे ।**
**वंजणअत्थतदुभए, अट्ठविहो नाण*-मायारो ॥२॥**

**शब्दार्थः—**

**काले**—काळने विषे
**विणए**—विनयने विषे
**बहुमाणे**—बहुमानने विषे
**उवहाणे**—उपधान तपने विषे
**तह**—तथा
**अनिन्हवणे**—नहीं ओळववाने विषे
**वंजण**—व्यंजन अक्षरने विषे
**अत्थ**—अर्थने विषे तथा
**तदुभए**—व्यंजन अने अर्थ बन्नेने विषे
**अट्ठविहो**—(आ प्रमाणे) आठ
**नाणं**—ज्ञानने विषे
**आयारो**—(एटले) ज्ञाननो आचार.

**भावार्थ**—नवुं ज्ञान प्राप्त करवा माटे तथा प्राप्त थयेला ज्ञाननी रक्षा करवा माटे जे अवश्य आचरवा योग्य होय ते ज्ञानाचार कहेवाय छे. तेना आठ प्रकार आ प्रमाणे छे.—शास्त्रमां जे काळे जे सूत्र भणवानी आज्ञा आपी होय, ते काळे सूत्र भणवुं, ते काळाचार कहेवाय

---

विपरीत आचरणा ते अतिचार कहेवाय छे, ते अतिचारो आ सूत्र वडे आलोचाय छे.

* सप्तमीस्थाने द्वितीया ।

छे. १ ज्ञानीओ तथा ज्ञानना साधनरूप पुस्तकादिकनो विनय करवो ते विनयाचार कहेवाय छे. २, ज्ञानीनो तथा ज्ञानना उपकरणोनो अंतरंगथी आदर करवो ते बहुमान कहेवाय छे. ३, आगम भणवाने माटे जे शास्त्रमां कह्या प्रमाणे तपक्रिया करवामां आवे छे ते उपधान कहेवाय छे. ४, भणावनार गुरुने ओळववो नहीं एटले जेनी पासे भण्या तेनुं नाम नहीं देतां बीजा पासे भण्यानुं कहेवुं, आवुं मिथ्या कथन न करवुं, ते अनिन्हवन कहेवाय छे. ५, सूत्रना अक्षरोनो शुद्ध उच्चार करवो ते व्यंजनाचार कहेवाय छे. ६, सूत्रनो अर्थ साचो करवो ते अर्थाचार कहेवाय छे. ७. तथा सूत्र अने अर्थ बन्ने शुद्ध बोलवा ते तदुभयाचार कहेवाय छे. ८, आ आठ प्रकारना ज्ञानाचारथी जे विपरीत आचरणा करवी ते अतिचार कहेवाय छे. तेना पण काळातिचार, विनयातिचार इत्यादि तेना ते ज भेदो जाणवा एम सर्वत्र जाणी लेवुं.

## हवे दर्शनाचारना आठ भेदो बतावे छे—

**मू०—निस्संकिअ निकंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठीअ।**
**उववूहथिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥**

**निस्संकिअ**–शंका रहितपणुं
**निकंखिअ**—आकांक्षारहितपणुं
**निव्वितिगिच्छा**—फलप्रत्ये संदेह रहितपणुं
**अमूढदिट्ठीअ**—मोहदृष्टि रहित
**उववूह**—गुणप्रशंसावडे, उत्साहनी वृद्धि
**थिरीकरणे**—स्थिर करवापणुं
**वच्छल्ल**—वात्सल्य अने
**पभावणे**—प्रभावना
**अट्ठ**—(आ) आठ आचार (दर्शनना छे).

## हवे दर्शनाचारना आठ भेदो बतावे छे—

**मू०**—निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ।
उववूहथिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥३॥

### शब्दार्थः—

**निस्संकिअ**—शंकारहितपणुं
**निक्कंखिअ**—आकांक्षारहितपणुं
**निव्वितिगिच्छा**—फल प्रत्ये संदेह रहितपणुं
**अमूढदिट्ठी अ**—मोहरहित दृष्टि
**उववूह**—गुणप्रशंसावडे, उत्साहनी वृद्धि
**थिरीकरणे**—स्थिर करवापणुं
**वच्छल्ल**—वात्सल्य अने
**पभावणे**—प्रभावना
**अट्ठ**—(आ) आठ आचार (दर्शनना छे)

**भावार्थ**—वीतरागना वचनमां देशथी के सर्वथी शंका न करवी ते निःशंकित १, जिनमत विना अन्य अन्य मतनी इच्छा न करवी ते निष्कांक्षित २, धर्मना फळमां संदेह न करवो ते, अथवा साधु–साध्वीओनां शरीर, वस्त्र विगेरे मलिन देखी दुगंछा न करवी ते निर्विचिकित्सा अथवा निर्विजुगुप्सा ३, मिथ्यात्वीना अज्ञान कष्ट, मंत्र के चमत्कार देखी तेना पर मोह न पामवो ते अमूढदृष्टि ४, * समकितधारीना अल्पगुणनी पण शुद्ध मनथी प्रशंसा करी तेने धर्ममार्गमां उत्साहवाळो ते उपबृंहणा ५.

---

* आ चार आचार आभ्यंतर छे, बाकीना चार बाह्य छे.

जेने धर्मनी प्राप्ति थइ न होय तेने धर्म पमाडवो अने जे धर्म पामेलो होय तेनी धर्ममां स्खलना थाय तो तेने धर्ममां पाछो दृढ करवो ते स्थिरीकरण ६, साधर्मी बंधुनुं अनेक प्रकारे हित करवुं ते वात्सल्य ७, तथा अन्यधर्मीओ पण जैनशासननी अनुमोदना करे तेवा कार्य करवां ते प्रभावना ८, आ आठ प्रकार दर्शनाचारना ×छे. ॥ ३ ॥

## हवे आठ प्रकारनो चारित्राचार कहे छे–

**मू०—पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ।**
**एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥**

### शब्दार्थः—

**पणिहाणजोग**–प्रणिधान योग एटले मन, वचन अने कायानुं जे एकाग्रपणुं
**जुत्तो**–युक्त एवो
**पंचहिं**–पांच
**समिईहिं**–समिति
**तीहिं**–त्रण
**गुत्तीहिं**–गुप्तिवडे
**एस**–ए
**चरित्तायारो**–चारित्राचार
**अट्ठविहो**–आठ प्रकारनो
**होइ**–छे
**नायव्वो**–जाणवा योग्य

**पणिहाणजोगजुत्तो**—प्रणिधान योग एटले मन, वचन अने कायानुं जे एकाग्रपणुं, तेणे करीने युक्त एवो.

---

× आ आठथी समकित प्राप्त थाय छे अथवा प्राप्त थयुं होय तेने दृढ करे छे तेथी आ दर्शनाचार कहेवाय छे.

**पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं**—पांच समितिए करीने तथा त्रण गुप्तिए करीने.

**एस चरित्तायारो**—आ चारित्राचार.

**अट्ठविहो होइ नायव्वो**—आठ प्रकारनो छे, एम जाणवुं.

**भावार्थ**—आ चारित्राचार मनोयोग, वचनयोग अने काययोगनी एकाग्रताए करीने युक्त छे, ते पांच समिति अने त्रण गुप्तिवडे करीने आठ प्रकारनो छे ॥ ४ ॥

## हवे तपाचार कहे छे—

**मू०—बारसविहम्मि य तवे, सब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।**
**अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥५॥**

**बारसविहम्मि य**—बार प्रकारना पण

**तवे**-तपने विषे

**सब्भिंतर**—छ प्रकारे आभ्यंतर

**बाहिरे**—छ प्रकारे बाह्य

**कुसलदिट्ठे**-कुशळ पुरुष—तीर्थंकरोए उपदेशेला

**अगिलाइ**—ग्लानि—खेदरहित

**अणाजीवी**—आजीविका रहित पणे

**नायव्वो**—जाणवो

**सो**—ते

**तवायारो**—तप आचार

**बारसविहम्मि य तवे**—बार प्रकारना तपने विषे.

**सब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे**—तीर्थंकरे जाणेला एटले प्ररूपेला आभ्यंतर अने बाह्यसहित.

**अगिलाइ अणाजीवी**—ग्लानिरहितपणे तथा आजीविकारहित-पणे.

**नायव्वो सो तवायारो**—ते तपाचार जाणवो.

**भावार्थ**—तीर्थंकरोए छ आभ्यंतर अने छ बाह्य एम तपना बार भेद कहेला छे. तेमांथी हरकोइ तप करतां खेद थवो न जोइए, तथा ते तप आजीविकाने माटे थवो न जोइए, एवी रीते मूर्छा रहितपणे करेलो तप ते तपाचार कहेवाय छे ॥ ५ ॥

### तेमां प्रथम छ प्रकारनो बाह्य तप कहे छे—

**मू०—अणसणमूणोअरिआ, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।**
**कायकिलेसो संली णया य बज्झो तवो होइ ॥६॥**

### शब्दार्थ.

**अणसणं**—चार प्रकारना आहारनो त्याग अने अनशन

**ऊणोअरिआ**—पांच सात कोळिया ओछा खावा अथवा ओछा वस्त्र-पात्र राखवां ते ऊणोदरी

**वित्तीसंखेवणं**—द्रव्य वगेरेनो संक्षेप करवो ते वृत्तिसंक्षेप

**रसच्चाओ**—विगय प्रमुख रसनो थोडो वा अधिक त्याग ते रसत्याग

**कायकिलेसो**—कायाने कष्ट आपवुं—लोच कराववो ते कायक्लेश

**संलीणया**—विषयादिकनी उदीरणा करवी नहि तेमज अंगोपांग संकोची राखवां ते संलीनता

**बज्झो**—बाह्य

**तवो**—तप

**अणसणमूणोअरिआ**—चारे प्रकारना आहारनो थोडा अथवा घणा समय सुधी त्याग ते अनशन, वस्त्रपात्र ओछां ओछां राखवां वा पांच सात कोळीआ ओछा जमवा ते ऊणोदरि.

**वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ**—द्रव्यादिनो संक्षेप ते वृत्तिसंक्षेप, विगय प्रमुख रसनो थोडो वा अधिक त्याग ते रसत्याग.

**कायकिलेसो संलीणया**—कायाने कष्ट प्रमुख आपवां–लोच कराववा इत्यादि ते कायक्लेश, विषयादि उदीरवा नहीं तेमज अंगोपांग संकोची राखवा ते संलीनता.

**य बज्झो तवो होइ**—ते ( छ प्रकारे ) बाह्य छे.

**भावार्थ**—छ प्रकारनो बाह्य तप आ प्रमाणे छे—थोडा काळ सुधी के घणा काळ सुधी चारे प्रकारना आहारनो त्याग करवो ते अनशन कहेवाय छे. १, पोताना नियमित भोजनथकी पांच सात कवळ ओछा खावा, वस्त्र पात्रादिक ओछा राखवा ते ऊळोदरी कहेवाय छे. २, खावा–पीवानी के भोग–उपभोगनी वस्तुओ ओछी करवी ते वृत्तिसंक्षेप कहेवाय छे. ३, घी, दूध विगेरे विगयनो थोडो अथवा अधिक त्याग करवो अथवा तेना परनी लोलुपतानो त्याग करवो ते रसत्याग कहेवाय छे. ४, केशनो लोच विगेरेनुं कष्ट सहन करवुं ते कायक्लेश कहेवाय छे. ५, विषयादिकनी उदीरणा करवी नही तथा अंगोपांग संकोची राखवां ते संलीनता कहेवाय छे. ६, आमांनो कोइ पण तप करनार मनुष्य बाह्यदृष्टिथी तपस्वी कहेवाय छे, तेथी आ छ प्रकारो बाह्य तपमां गणाय छे ॥ ६ ॥

## हवे छ प्रकारनो आभ्यंतर तप कहे छे—

**मू०—पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ।**
**झाणं उस्सग्गोऽवि अ, अब्भिंतरओ तवो होइ ॥७॥**

### शब्दार्थः—

**पायच्छित्तं**-लागेल दोषनो गुरु पासे प्रकाश करी तेना निवारणने अर्थे गुरु जे आलोयण आपे ते करवुं ते प्रायश्चित्त तप,

**विणओ**-ज्ञान तथा ज्ञानीनो विनय करवो ते विनय तप

**वेयावच्चं**-गुरु प्रमुखनी आहार वगेरेथी भक्ति करवी ते वैयावच्च तप

**तहेव**-तेवीज रीते तेमज

**सज्झाओ**-वांचना पृच्छना प्रमुख पांच प्रकारथी अभ्यास करवो ते स्वाध्याय तप

**झाणं**-आर्त्त तथा रौद्र ध्यान निवारी धर्म तथा शुक्ल ध्यानमां प्रवर्त्तवुं ते ध्यान

**उस्सग्गो**-कर्मक्षय अर्थे कायाने वोसराववी ते कायोत्सर्ग तप

**वि अ**-निश्चय

**अब्भिंतरओ**-अभ्यंतर

**तवो**-तप

**पायच्छित्तं विणओ**—प्रायश्चित्त अने अविनय,

**वेयावच्चं तहेव सज्झाओ**—वैयावच्च तथा स्वाध्याय,

**झाणं उस्सग्गोऽवि अ**—ध्यान, तथा उत्सर्ग-कायोत्सर्ग पण

**अब्भिंतरओ तवो होई**—आभ्यंतर तप छे.

**भावार्थ**—आभ्यंतर तपना छ प्रकार आ प्रमाणे छे—लागेलो दोष गुरुपासे प्रगट करी तेना निवारण माटे गुरुए जे आलोयण आपी होय ते प्रमाणे करवुं ते प्रायश्चित्त १, ज्ञान तथा ज्ञानीनो विनय करवो ते विनय तप कहेवाय छे. २, गुरु, ग्लान, बाळ विगेरे साधुओनी आहार, पाणी, औषध विगेरे वडे भक्ति करवी ते वैयावच्च तप कहेवाय छे. ३, वाचना, पृच्छना, तप परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा अने धर्मकथा ए पांच प्रकारे शास्त्रनो अभ्यास करवो ते स्वाध्याय कहेवाय छे ४, आर्त्त अने रौद्रनो त्याग करी धर्म अने शुक्ल ध्यानमां प्रवर्त्तवुं ते ध्यान कहवाय छे ५, तथा कर्मना क्षयने माटे कायानो त्याग करवो एटले शरीर परनी मूर्छानो त्याग करवो ते उत्सर्ग—कायोत्सर्ग कहेवाय छे ६, आमांनो कोइ पण तप करनार मनुष्य सामान्य दृष्टि वडे तपस्वी कहेवातो नथी, परंतु शास्त्रदृष्टिए जोतां अवश्य तपस्वी छे, तेथी आ आभ्यंतर तप कहेवाय छे. ॥ ७ ॥

## हवे छेल्लो वीर्याचार कहे छे—

**मू०—अणिगूहिअबलवीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।**
**जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥८॥**

### शब्दार्थः—

**अणिगूहिअ**—गोपव्या वगरनुं छे
**बलवीरिओ**—बलवीर्य जेनुं
**परक्कमइ**—पराक्रम करे छे
**जो**—जे
**जहुत्तम्**—तीर्थंकर देवे जेम कह्युं छे तेम

| | |
|---|---|
| **आउत्तो**–सावधान थइने | **जहाथामं**–पोतानी शक्तिने अनुसारे |
| **जुंजइ**–प्रवर्त्ते | **वीरिआयारो**–वीर्याचार |

**अणिगूहिअबलवीरिओ**—नथी गोपव्युं बलवीर्य जेणे एवो

**परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो**—शास्त्रमां कह्या प्रमाणे जे मनुष्य सावधान अथवा उद्यमवंत थयो छतां पराक्रम करे

**जुंजइ अ जहाथामं**—तथा शक्ति प्रमाणे प्रवृत्ति करे

**नायव्वो वीरिआयारो**—ते वीर्याचार जाणवो.

**भावार्थ**—बळ वीर्यने गोपव्या विना तथा सावधानपणे उद्यमवंत थइने जे मनुष्य शास्त्रमां कह्या प्रमाणे पराक्रम करे अने शक्ति प्रमाणे ते ते धर्म क्रियादिकमां प्रवृत्ति करे, ते वीर्याचार कहेवाय छे. ॥ ८ ॥

## ॥ इति अतिचार गाथा १६ ॥

( पछी काउस्सग्ग पारी " लोगस्स " कही, त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही बे " वांदणा " दइ बोलवुं ) इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोएमि, जो मे देवसिओ विगेरे पाने १०५ मेंथी कहेवो पछी,

---

## ॥ १७ अथ सातलाख ॥

**सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय,**

**चउद लाख अनन्तकाय, बे लाख बेइन्द्री, बे लाख तेइन्द्री, बे लाख चउरिन्द्री, चार लाख नारकी, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यंच, पंचेन्द्रि चउद लाख मनुष्यपंचेन्द्री एवंकारे चोराशी लाख जीवा × जोनिने विषे जे कोई माहरे जीवे, पाप कर्युं होय, कराव्युं होय, करतां प्रत्ये भलुं जाण्युं होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।**

---

× योनि एटले जीवने उपजवाना स्थानक. ते बधा जीवोनां मळीने ८४ लाख उत्पत्ति स्थान छे. जो के स्थानक तो ते करतां पण वधारे छे पण वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थानवडे करी जेटलां स्थानक सरखां होय ते सर्व मळी एक स्थानक गणाय, तेनी गणतरी आ प्रमाणे छे—पृथ्वीकायना मूळभेद ३५० तेने पांच वर्णे गुणतां १७५०) थया, तेने बे गंधे गुणतां ३५००) थया, तेने पांच रसे गुणतां १७५००) थया, तेने आठ स्पर्शे गुणतां १४०००० थाय, तेने पांच संस्थाने गुणतां सात लाख भेद पृथ्वीकायना थाय; एम बधानी गणतरी करवी. उपरोक्त ८४ लाख जीवयोनि मांहे उत्पन्न थयेल हरकोइ जीवने हण्यो होय, हणाव्यो होय, अगर हणताने अनुमति आपी होय ते संबंधी मन, वचन अने कायावडे मिथ्या दुष्कृत आ सूत्रवडे देवानुं छे.

**अर्थः**—सुगम छे

**॥ इति सातलाख १७ ॥**

## ॥ १८ अथ अढार पापस्थानक ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशून्य, पन्दरमे रति–अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे मायामोस, अढारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अढारे पापस्थानकमांही जे कोइ पापस्थानक में सेव्युं होय, सेवाव्युं होय, सेवतां प्रते भलुं जाण्युं होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

अर्थः—परजीवना प्राणनो नाश चिंतववो ते प्राणातिपात १, असत्य बोलवाना परिणाम ते मृषावाद २, पारकी वस्तु धणीनी संमति विना लइ लेवानी वृत्ति ते अदत्तादान ३, विषयभोगनी वांच्छा रूप परिणाम ते मैथुन ४, नव प्रकारे बाह्य अने* चौद प्रकारे अभ्यंतर वस्तु आदिनी वांच्छा अथवा मूर्च्छा ते परिग्रह ५, परनी उपर तीव्र परिणामे मुखादि अवयवने तपाववां ते क्रोध ६, प्राप्त वा अप्राप्त वस्तुनो अहंकार ते मान ७, गुप्तपणे स्वार्थवृत्ति सिद्ध करवानी वांच्छा ते माया ८, धना-दिक संपत्तिने एकठी करी संग्रही राखवानी मनोवृत्ति ते लोभ ९, पौद्-गलिक वस्तु उपर प्रीति ते राग १०, अणगमता जीवादिक पदार्थो उपर अरुचि ते द्वेष ११, परनी साथे विखवाद करवानी वृत्ति ते कलह १२, परजीवने नहीं दीठेलुं, नही सांभळेलुं खोटुं आळ देवुं ते

---

* मिथ्यात्व, त्रणवेद, हास्यादि षट्क अने चार कषाय.

अभ्याख्यान १३, पर जीवना दोषनी बीजा पासे चाडी खावी ते पैशून्य १४, सुख अनुभवी हर्ष करवो ते रति अने शोक करवो ते अरति १५, गुणी वा निर्गुणी जीवनी निंदा करवी ते परपरिवाद १६, कपटवृत्तिथी असत्यबोली छळ करीने लोकोने ठगवाना परिणाम ते मायामृषावाद १७, व्यवहारथी कुदेव, कुगुरु अने कुधर्म सेववानी अभिलाषा अने निश्चयथी आत्मस्वरूपना अनुभवने विघ्न करवा रूप आत्माना परिणाम ते मिथ्यात्व शल्य १८, ए अढार प्रकारे जीवने चित्तमां जे पापरूप भाव उत्पन्न थाय ते 'भावपाप' अने ते भावनी चीकाशथी जीवने सत्ताए कर्मनां दळीयां लागे ते 'द्रव्यपाप' कहेवाय छे.

॥ इति प्राणातिपात सूत्र १८ ॥

## ॥ १९ अथ चार विकथा ॥

**राजकथा, देशकथा, भक्तकथा, स्त्रीकथा, ए चार विकथामांही जे कोइ विकथा करी होय, करावी होय, करतां भते भली जाणी होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥**

## ॥ २० अथ सव्वस्सवि ॥

**मू०—सव्वस्स वि देवसिय दुचिंतिअ दुब्भासिअ दुचिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह इच्छं। तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति**

## शब्दार्थः—

सव्वस्सवि–सर्वे पण
देवसिय–दिवससंबंधीनुं
दुच्चिंतिय–दुष्ट चिंतवननुं
दुब्भासिय–दुष्ट भाषण
दुच्चिट्ठिय–दुष्ट चेष्टानुं
इच्छाकारेण–इच्छाथी
संदिसह–आज्ञा आपो
इच्छं–आज्ञा प्रमाण छे.
तस्स–तेनुं
मिच्छा–फोगट करुं छुं.
मि दुक्कडं–मारा दुष्कृतने

**अर्थः**—सर्वे दिवससंबंधीनुं दुष्ट चिंतवन करवाथी, दुष्ट भाषण करवाथी, दुष्ट चेष्टा करवाथी दुष्कृत ( अतिचार ) लाग्युं होय, इच्छाथी आज्ञा आपो, हुं इच्छुं छुं, ते मारुं पाप मिथ्या थाओ!

( एम कही विषमासने जमणो ढींचण उभो राखी बेसी पछी ) " नमो अरिहंताणं" "करेमि भंते सामाइयं " ( कहीने ).

## ॥ २१ अथ चत्तारि मंगलं ॥

**चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥**

**भावार्थ**—मंगळ चार प्रकारना छे, अरिहंत, सिद्ध, साधु अने केवळी भगवाने बतावेलो धर्म, लोकोमां उत्तम पण चार छे; अरिहंत, सिद्ध, साधु अने केवळीए बतावेलो धर्म, शरणा पण चार छे. अरिहंत, सिद्ध, साधु, अने केवळी भगवाने बतावेलो धर्म.

( इच्छामि पडिक्कमिउं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, ए पाठ कहीने इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए (इत्यादिक पाठ कही पछे "अढार लाख चोवीस हजार एकसो ने वीश इरियावहीने विषे जे कोइ दूषण लाग्युं होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं" आ प्रमाणे बोलीने पछे नीचे प्रमाणे "वंदित्तु सूत्र" भणवुं.

## २२ वंदित्तु–श्रावकनुं प्रतिक्रमण सूत्र.*

* श्रावकने दिवससंबंधी लागेला अतिचारने आलोववा माटे आ सूत्र सांजे अर्ध सूर्य अस्त पामेलो होय ते वखते कहेवानुं छे. श्रावकना बारव्रत विगेरेमां लागेला १२४ अतिचार आ सूत्रवडे आलोववामां आवे छे.

प्रगट थयेला गुणने जे मलिन करे ते अतिचार कहेवाय छे, अने प्रगट थयेला गुणनो जे सर्वथा नाश करे ते भंग कहेवाय छे. अमुक अपेक्षाए व्रतनो भंग अने अमुक अपेक्षाए तेनो अभंग थाय ते अतिचार छे. जेमके कोइने प्राणातिपात विरमण व्रत छे. तेणे चौरादिकने खूब मार्यो. तेमां तेणे तेना प्राणनो वियोग कर्यो नहीं तेथी तेना व्रतनो

मू०—वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स* ॥ १ ॥

शब्दार्थः—

वंदित्तु–वांदीने
सव्वसिद्धे–सर्वने हितकारक एवा सिद्धोने
धम्मायरिए अ–तथा धर्माचार्योने
सव्वसाहू अ–तथा सर्व साधुओने
इच्छामि–हुं इच्छुं छुं.
पडिक्कमिउं–पाछा फरवाने
सावगधम्माइआरस्स–श्रावक धर्मसंबंधी अतिचार थकी

भावार्थः—सर्व एटले सर्वने हितकारक एवा सिद्धोने एटले अरिहंत तथा सिद्धने अथवा सर्व एटले तीर्थंकर, अतीर्थंकर विगेरे पंदर भेदे जे सिद्ध थया तेमने, धर्माचार्योने एटले सम्यग्धर्म आपनार गुरु महाराजने तथा सर्व साधुओने एटले आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक, स्थविर विगेरे सर्व मुनिओने वांदीने श्रावक धर्मने विषे लागेला अतिचारोनुं प्रतिक्रमण करवा हुं इच्छुं छुं.× १. प्रथम सामान्य रीते बार व्रतना तथा ज्ञानादिकना अतिचारोने आलोवे छे.—

---

भंग थयो नथी, परंतु निर्द्धंस परिणाम थवाथी दयानो नाश थयो तथा मारवाथी कदाच मरण पण थाय, तेथी ते प्राणी वियोगनुं कारण होवाथी कांइक भंग पण थयो, तेथी ते अतिचार कहेवाय छे.

* पंचमीना अर्थमां षष्ठी विभक्ति करी छे, अथवा कर्ममां षष्ठी छे.

× जीव प्रमादने लीधे पोताना स्थानथी बीजे स्थाने गयो होय,

मू०—जो मे वयाइयारो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥

### शब्दार्थः—

**जो**—जे
**मे**—मने
**वयाइआरो**—बार व्रतने विषे अतिचार लाग्यो होय
**नाणे**—ज्ञानने विषे
**तह**—तथा
**दंसणे**—दर्शनने विषे
**चरित्ते**—चारित्रने विषे
**अ**—'च' शब्दथी संलेखना, तप अने वीर्यने विषे जे अतिचार लाग्यो होय
**सुहुमो अ**—सूक्ष्म अथवा
**बायरो वा**—बादर एवो
**तं**—तेने
**निंदे**—हुं निंदुं छुं
**तं च**—तथा तेने
**गरिहामि**—हुं गर्हुं छुं.

**भावार्थ**—बार व्रतोना कुल अतिचारो ७५ छे, तेमां सातमा व्रतना वीश छे अने बाकीना अग्यार व्रतना पांच पांच होवाथी ५५ छे बन्ने मली ७५ थाय छे तथा ज्ञानना आठ, दर्शनना आठ अने तेमां समकितना शंकादिक पांच मळवाथी २१ अतिचारो छे, तथा चारित्रना आठ छे, 'च' शब्दथी संलेखनाना पांच, तपना बार अने वीर्याचारना त्रण अतिचार छे सर्व मळी १२४ अतिचार छे तेमांनो सूक्ष्म के बादर

---

त्यांथी पाछुं करी पोताने स्थाने आववुं ते प्रतिक्रमण कहेवाय छे, जीवने पोतानुं स्थान धर्म अने पर स्थान अधर्म छे.

कोइ अतिचार माराथी थयो होय, तेने हुं आत्म साक्षीए निंदुं छुं अने गुरु साक्षीए गर्हा करुं छुं× २.

## हवे परिग्रह अने आरंभना सामान्यरीते अतिचारने आलोवे छे—

**मू०—दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।**
**कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥**

### शब्दार्थः—

**दुविहे**—बे प्रकारना
**परिग्गहम्मि**—परिग्रहने विषे तथा
**सावज्जे**—पापवाळा
**बहुविहे अ**—अने बहु प्रकारना
**आरंभ**—आरंभने विषे
**कारावणे अ** – कोइ पासे करावबाने विषे
**करणे**—पोते करवाने विषे तथा 'च' शब्द छे तेथी अनुमोदनाने विषे
**पडिक्कमे**—हुं पडिक्कमुं छुं.
**देसिअं**—दिवससंबंधी
**सव्वं**—सर्व अतिचारने

---

× अहीं सर्वत्र अतिचार आलोवतां अतिक्रमादिक पण आलोव्या एम जाणवुं, तेमनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे.—व्रतभंगने माटे कोइ प्रेरणा करे तेने जो पोते निषेध न करे तो अतिक्रम लागे छे १, व्रतभंग माटे गमन विगेरे व्यापार करतां व्यतिक्रम थाय छे २, क्रोधथी वध बंधादिक करतां अतिचार थाय छे ३, अने जीवहिंसादिक करतां अतिचार थाय छे ४.

**भावार्थ**—घणुं करीने सर्व व्रतोना अतिचारो परिग्रह अने आरंभथी ज उत्पन्न थाय छे, तेथी सामान्यपणे तेना ज अतिचारोने आलोवे छे—तेमां परिग्रहना बे भेद छे—सचित्त अने अचित्त, अथवा बाह्य अने आभ्यंतर. तेमां धन धान्यादिक बाह्य परिग्रह कहेवाय छे अने मिथ्यात्व, अविरति विगेरे आभ्यंतर परिग्रह कहेवाय छे. तथा कृषि, वाणिज्य विगेरे आरंभ कहेवाय छे. ते परिग्रह अने आरंभने करवामां, कराववामां के अनुमोदना करवामां जे कांइ दिवस संबंधी सूक्ष्म अथवा बादर अतिचार लाग्यो होय ते सर्वने हुं पडिकमुं छे. अहीं जिनप्रतिमा, तीर्थयात्रा, रथयात्रा विगेरेने निमित्ते शासननी प्रभावना माटे परिग्रह राखवो पडे अने चैत्य कराववुं संघवात्सल्य करवुं विगेरे कार्यमां आरंभ करवो पडे ते धर्मनिमित्ते होवाथी ते संबंधी प्रतिक्रमण करवानुं नथी, एम जणाववा माटे सावद्य एटले पाप सहित ए विशेषण आप्युं छे, तथा सावद्य एवा पण केटलाक परिग्रह अने केटलाक आरंभ विना गृहस्थीओनो निर्वाह थइ शकतो नथी, तेथी 'बहुविधे' एटले निःशूकपणाए करीने अनेक प्रकारना ए विशेषण आप्युं छे. अर्थात् सावद्य अने अनेक प्रकारना ए बन्ने विशेषणवाळा परिग्रह अने आरंभने निमित्ते आ प्रतिक्रमण छे. ३.

हवे प्रत्येकनुं प्रतिक्रमण करवानी इच्छाथी प्रथम ज्ञानातिचारने प्रतिक्रमे छे—

**मू०**—जं बद्धमिंदिएहिं चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥

## शब्दार्थः—

जं–जे ज्ञानातिचाररूप अशुभ कर्म
बद्धं–में बांध्युं होय
इंदिएहिं–इंद्रियोवडे अने
चउहिं–चार
कसाएहिं–कषायोवडे
अप्पसत्थेहिं अप्रशस्त–अशुभ एवा
रागेण व–रागथी के
तं–तेने
निंदे–हुं आत्मसाक्षीए निंदुं छुं

**भावार्थ**—अप्रशस्त एवा श्रोत्रादिक पांच इंद्रियोवडे, क्रोधादिक चार कषायवडे अने उपलक्षणथी मन, वचन, कायाना योगवडे राग के द्वेषने लीधे जे कांइ ज्ञानना अतिचाररूप अशुभ कर्म में बांध्युं होय, तेनी हुं आत्मसाक्षीए निंदा अने गुरु साक्षीए गर्हा करुं छुं.

अहीं इंद्रियो प्रशस्त अने अप्रशस्त आ रीते कही शकाय छे.—देवादिकना गुणादिक सांभळवामां श्रोत्र, तेमनुं दर्शन करवाथी चक्षु, देवादिकनी पूजा निमित्ते केसर, कर्पूर विगेरेनी गंध परीक्षा करवामां नासिका, स्वाध्याय अने देवादिकनी स्तुति करवामां जिह्वा तथा जिनेश्वरनी स्नात्रादिक पूजा करवामां स्पर्श इंद्रिय प्रशस्त छे. तथा इष्ट अनिष्ट शब्द सांभळवाथी राग द्वेष थाय, तेथी श्रोत्र इन्द्रिय अप्रशस्त छे १, स्त्रीना सुंदर अंगोपांग जोवाथी राग थाय अने अनिष्ट वस्तु जोवाथी द्वेष थाय ते चक्षु इन्द्रिय अप्रशस्त छे २, सुगंधि अथवा दुर्गंधि वस्तु सुंघवाथी राग द्वेष थाय ते घ्राणेंद्रिय अप्रशस्त छे ३, विकथादिकमां प्रवर्तेली जिह्वा राग द्वेषनो हेतु होवाथी तथा इष्ट अनिष्ट आहार करवाथी राग द्वेष

थाय ते जिह्वा इन्द्रिय अप्रशस्त छे ४, अने स्त्री आदिक इष्ट वस्तुना स्पर्शथी राग थाय तथा कंटकादिकना स्पर्शथी द्वेष थाय ते स्पर्श इन्द्रिय अप्रशस्त छे. ५.

कषाय पण प्रशस्त अने अप्रशस्त आ प्रमाणे छे.—अविनीत शिष्यादिक परिवारने शिक्षा आपवा माटे क्रोध थाय ते प्रशस्त छे अने कोइ साथे कल्हादिक करतां क्रोध थाय ते अप्रशस्त छे १, सुदेवादिकने नमवुं अने कुदेवादिकने न नमवुं इत्यादिक सारी प्रतिज्ञानो निर्वाह करवा माटे मान राखवुं ते प्रशस्त छे अने नमन करवा योग्य देवादिकने न नमवुं ए अप्रशस्त मान छे २, व्याधनी पासे मृगादिकनो अपलाप करवामां, व्याधिवाळाने कटु औषध पावामां तथा दीक्षामां विघ्न करनारा माता पितादिकने समजाववामां जे माया करवी पडे ते स्वपरने हितकारक होवाथी प्रशस्त छे, अने द्रव्यादिकनी इच्छाथी परवंचनादिक करवामां जे माया करवी ते अप्रशस्त छे ३, तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, विनय, वैयावच्च, शिष्य विगेरेनो संग्रह करवामां जे लोभ राखवो ते प्रशस्त छे अने धनादिकना संग्रहमां लोभ करवो ते अप्रशस्त छे. ४.

त्रण योग पण प्रशस्त अप्रशस्त आ प्रमाणे छे.—धर्म शुक्लध्यानमां मनने प्रवर्तावबुं ते प्रशस्त अने आर्त रौद्र ध्यानमां प्रवर्तावबुं ते अप्रशस्त मनयोग छे १, देव गुर्वादिकना वर्णनमां प्रवर्तती वाणी प्रशस्त छे अने चौरादिकनो आक्षेप करवामां प्रवर्तती वाणी अप्रशस्त छे २, सामायिक, प्रतिक्रमणादिक धर्मकृत्यमां प्रवर्तती काया प्रशस्त छे अने विषय द्यूतादिकमां प्रवर्तती काया अप्रशस्त छे. ३.

## हवे दर्शनना अतिचार आलोवे छे—

**मू०**—आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे।
अभिओगे अ निओगे पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥

### शब्दार्थः—

**आगमणे**—मिथ्यादृष्टिना रथयात्रादिक उत्सवो जोवाने माटे आववामां

**निग्गमणे**—ते ज माटे गृहादिक थकी नीकळवामां

**ठाणे**—मिथ्यादृष्टिना देवगृहादिकने विषे उभा रहेवामां अने

**चंकमणे**—त्यां ज आम तेम फरवामां

**अणाभोगे**—उपयोग रहितपणे—अणजाणतां

**अभिओगे**—राजाभियोगादिकने कारणे

**अ**—तथा

**निओगे**—नोकरी विगेरेना नियोगने कारणे

**देसिअं**—दिवस संबंधी जे कांइ अतिचार लाग्यो होय

**सव्वं**—ते सर्वनुं हुं

**पडिक्कमे**—प्रतिक्रमण करूं छुं

**भावार्थः**—अनाभोगने लीधे एटले अजाणपणाथी, ×राजादिकना

---

× राजा १, गण एटले स्वजनादिक समूह २, बळ एटले ते सिवाय कोइ बळवान ३, देव एटले दुष्ट देवता ४, गुरु एटले माता पितादिक ५, तेमना आग्रहथी एटले बलात्कारथी तथा वृत्तिकांतार एटले दुकाळमां के अरण्यादिकमां निर्वाह नहीं थवाथी.

अभियोगथी एटले बलात्कारथी अथवा मंत्री श्रेष्ठी आदिक अधिकारनी परतंत्रताने लीधे मिथ्यादृष्टिना रथयात्रादिक उत्सवो जोवा माटे आववुं थयुं होय, घरमांथी बहार नीकळवुं पड्युं होय, मिथ्यादृष्टिना चैत्यादिकमां उभा रहेवुं पड्युं होय अथवा त्यां चोतरफ फरवुं पड्युं होय, तेम करवामां दर्शनसंबंधी मने जे कांइ दिवसे दोष लाग्यो होय ते सर्वने हुं प्रतिक्रमुं छुं. ५.

## हवे समकितना पांच अतिचारने आलोवे छे—

**मू०—संका १, कंख २, विगिच्छा ३, पसंस ४, तह संथवो ५ कुलिंगीसु ।**
**सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ६ ॥**

### शब्दार्थः—

**संका**—शंका
**कंख**—कांक्षा
**विगिच्छा**—फळ संबंधी संदेह
**पसंस**—प्रशंसा
**तह**—तथा
**कुलिंगिसु**—कुलिंगीयानो
**संथवो**—परिचय
**सम्मत्तस्स**—समकितना
**अइआरे**—अतिचारोने आश्रीने जे में पापकर्म बांध्युं होय ते
**देसिअं**—दिवस संबंधी
**सव्वं**—सर्व पापने
**पडिक्कमे**—हु प्रतिक्रमुं छुं

**भावार्थ—**वीतरागना वचन पर देशथी अथवा सर्वथा शंका करवी ते शंका नामनो अतिचार १, अन्य मतनी वांछा करवी ते कांक्षा-

तिचार २, धर्मक्रिया करी पछी तेना फळने विषे संदेह करवो के मने आ धर्मनुं फळ मळशे के नहीं ? ते विचिकित्सातिचार. अथवा साधु साध्वीना मलिन शरीर अने वस्त्रादिक देखी तेनी निंदा करवी ते जुगुप्सातिचार ३, मिथ्यात्वीओनी तथा तेनी धर्मक्रिया विगेरेनी श्लाघा करवी ते प्रशंसातिचार ४, अने मिथ्यादर्शनीओनो परिचय करवो ते कुलिंगीसंस्तवातिचार ५. आ पांच अतिचारोने आश्री में जे अशुभकर्म बांध्युं होय तेनुं प्रतिक्रमण करुं छुं. ६.

## हवे चारित्राचारमां प्रथम सामान्यथी आरंभना दोषने आलोवे छे—

**मू०—छकायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।**
**अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥**

**शब्दार्थः—**

**छकाय**—पृथ्वीआदिक छ कायना
**समारंभे**—समारंभने विषे
**पयणे**—पोते रांधतां
**पयावणे**—बीजापासे रंधावतां
**अ**—अने
**जे**—जे
**दोसा**—दोष मने लाग्या होय
**अत्तट्ठा**—पोताने माटे
**परट्ठा**—बीजाने माटे
**उभयट्ठा**—स्वपर बन्नेने माटे
**चेव**—निरर्थक ज
**तं**—तेने
**निंदे**—निंदुं छुं

**भावार्थः—**पोताने माटे, परने माटे, स्वपर बन्नेने माटे अथवा निरर्थक द्वेषादिकने लीधे पोते पचन करतां, बीजा पासे पचावतां अथवा

पचननी अनुमोदना आपतां पृथ्वीआदिक छकायना समारंभने विषे मने जे दोष* लाग्या होय तेने हुं निंदुं छुं, ( अहीं समारंभ एकज लख्यो छे तो पण संरंभ अने समारंभ अने आरंभ ए त्रणे जाणवा. तेमां प्राणीना वधादिकनो जे संकल्प करवो ते संरंभ १, तेमने परिताप उपजाववो ते समारंभ २ अने तेमना प्राणोनो वियोग करवो ते आरंभ ३ कहेवाय छे.)७.

## हवे सामान्य रीते चारित्र ( बारव्रत ) ना अतिचारने प्रतिक्रमे छे—

**मू०—पंचण्हमणुव्वयाणं गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे ।**
**सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ८ ॥**

### शब्दार्थः—

**पंचण्हं**—पांच
**अणुवयाणं**—अणुव्रतोना
**च**—अने
**गुणव्वयाणं**—गुणव्रतोना
**च**—तथा
**तिण्हं**—त्रण
**गुणव्वयाणं**—गुणव्रतोना,
**चउण्हं**—चार

* अहीं दोषनी निंदा करी छे, पण अतिचारनी निंदा करी नथी. कारण के श्रावकने छकायना आरंभनो त्याग होतो नथी. तेथी तेने अतिचार कहेवाय नही. तेथी करीनेज अहीं निंदा मात्र ज करी छे. पण तेनुं प्रतिक्रमण कर्युं नथी. वळी '**दुविहे परिग्गहम्मि**' ए त्रीजी गाथामां सावद्य अने घणा प्रकारना आरंभनुं प्रतिक्रमण कर्युं छे तेथी त्यां अतिचार आलोव्या छे एम जाणवुं.

**सिक्खाणं**—शिक्षाव्रतोना
**अइआरे**—अतिचारोने आश्रीने जे कांइ
**देसिअं**—दिवस संबंधी दोष लाग्यो होय ते
**सव्वं**—सर्वने
**पडिक्कमे**—हुं प्रतिक्रमुं छुं

**भावार्थः**—समकितनी प्राप्ति थया पछी आ व्रतो प्राप्त थाय छे माटे ते अनुव्रत कहेवाय छे अथवा महाव्रतनी अपेक्षाए आ व्रतो नानां छे तेथी ते अणुव्रत पण कहेवाय छे, ते पांच छे, तथा आ पांच व्रतोने जे गुणकारक होय ते गुणव्रत कहेवाय छे, ते त्रण छे, तथा शिष्यने विद्याग्रहणनी जेम वारंवार जे सेवन करवा योग्य होय ते शिक्षाव्रत कहेवाय छे, ते चार छे. तेमां अणुव्रत अने गुणव्रत ए आठ प्राये यावत्कथिक एटले यावज्जीवनां छे अने चार शिक्षाव्रतो इत्वरकाळनां एटले अमुक अमुक काळे ज आचरवानां छे. परंतु ते वारंवार अभ्यास करवा योग्य छे. आ बार व्रतोना अतिचारने आश्री दिवस संबंधी जे कांइ अशुभ कर्म में बांध्युं होय ते सर्वने हुं प्रतिक्रमुं छुं. ८

## हवे पहेला अणुव्रतना अतिचार प्रतिक्रमे छे

**मू०—पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपाणाइवायविरईओ ।**
**आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ, पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥**

### शब्दार्थः—

**पढमे**—पहेला
**अणुव्वयम्मि**—अणुव्रतने विषे
**थूलगपाणाइवायविरईओ**—स्थूल प्राणातिपातनी विरतिने आश्री

आयरिअं—जे कांइ अतिचार कर्यो होय
*इत्थ—अहीं
×अप्पसत्थे—क्रोधादिकअप्रशस्त
पमायप्पसंगेणं—प्रमादना प्रसंगे करीने

**भावार्थ**—अहीं ज पहेला अणुव्रतने विषे प्रमादने लीधे क्रोधादिक अप्रशस्त भावमां वर्तता थका में स्थूळ प्राणातिपातविरतिने आश्रीने जे कांइ अतिचार कर्यो होय एटले वध बंधादिकविरुद्ध आचरण कर्युं होय. ९

## शुं विरुद्ध आचरण कर्युं होय ? ते देखाडे छे.

**मू०—वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ।
पढमवयस्सइआरे, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥ १० ॥**

---

*मृषावादादिकने लीधे पण आ पहेला व्रतना अतिचार संभवे छे. जेमके स्नेहनी परीक्षा करवाना इरादाथी कोइ देवे राम मरी गया एम लक्ष्मणने कह्युं के तरत ज लक्ष्मण पण मरी गया. कुमारपाल राजाए कौतुकथी नाणुं लइ लेतां ज उंदरनुं मरण थयुं. तो आवा मृषावादना अतिचार छतां पण तेने पहेला व्रतमां ज आलोववाना छे. एम जणाववा माटे 'इत्थ' शब्द मूक्यो छे.

×भूतादिक दोष अने मांदगी विगेरेने दूर करवा माटे वध, बंधादिकनुं आचरण थाय अथवा देशविरतिमांथी सर्वविरतिमां जवुं ए पण अतिचार थयो, पण ते सर्व प्रशस्त होवाथी तेनुं प्रतिक्रमण होतुं नथी एवुं जणाववा माटे 'अप्पसत्थे' शब्द लख्यो छे.

## शब्दार्थः—

वह—वध

बंध—बंध

छविच्छेए—अवयवनो छेद

अइभारे—अत्यंत भार तथा

भत्तपाणवुच्छेए—खावा पीवानो विच्छेद, ए पांच

पढमवयस्स—पहेला अणुव्रतना

अइआरे—अतिचारोने आश्री जे कांइ अशुभ बंध थयो होय ते

पडिक्कमे—हुं प्रतिक्रमुं छुं

देसिअं—दिवससंबंधी

सव्वं—सर्व दोषने

**भावार्थः**—वध एटले चतुष्पदादिकने निर्दयताथी ताडन करवुं ते १, बंध एटले दोरडा आदिथी दृढ बांधवुं ते २, छवि एटले शरीर अथवा चामडी तेनो छेद अर्थात् कान नाक, पुच्छ, गलकंबल विगेरे कापवा, वींधवा ते ३, अतिभार एटले शक्ति उपरांत भार भरवो ते ४, अने भक्तपानविच्छेद एटले समय प्रमाणे खावा पीवा न आपवुं ते ५, आ सर्व प्रबळ क्रोधादिकथी कर्या होय तो ते अतिचार थाय छे, अन्यथा अतिचार थता नथी. आ अतिचारोने आश्री में जे कांइ अशुभ कर्म बांध्युं होय तेनुं हुं प्रतिक्रमण करुं छुं, एम पूर्ववत् जाणवुं.

अहीं कोइ शंका करे के—वधबंधादिक उपर लखेला पांचे करवाथी प्राणीनी हिंसा थती नथी अने श्रावके तो प्राणीनी हिंसानुं प्रत्याख्यान कर्युं छे, तो ते वधबंधादिक अतिचार शी रीते कही शकाय? तेनो जवाब ए छे जे—प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान करनार श्रावके वास्त-

विक रीते जोइए तो अपेक्षारहित ( निरर्थक ) एवा वध बंधादिकनुं पण प्रत्याख्यान करेलुं ज छे, केमके ते वधबंधादिक प्राणातिपातनुं कारण छे.

प्रश्न—जो एम छे तो वधादिक करवाथी व्रतनो भंग ज थयो कहेवो जोइए. तेने अतिचार शी रीते कहेवा? केमके व्रतनुं पालन थयुं नथी.

उत्तर—दरेक व्रत बे प्रकारनां होय छे—आभ्यंतर १ अने बाह्य २. तेमां व्रतनी अपेक्षा राख्या विना क्रोधादिकथी वधबंधादिक करवा कोइ प्रवर्त्यो. ते वखते ते जीव मरण नथी पाम्यो, तेथी बाह्यवृत्तिए तेनुं व्रत रह्युं छे, परंतु दयारहित क्रोधथी प्रवर्त्यो माटे आभ्यंतरवृत्तिए तेनुं व्रत भांग्युं छे. तेथी एक देशनो भंग अने एक देशनुं पालन ए ज अतिचार कहेवाय छे. अथवा तो अनाभोगादिके करीने अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार अने अनाचारे करीने सर्वत्र अतिचारपणुं जाणवुं. एटले के आभ्यंतरवृत्तिए भंग न थाय अने बाह्य वृत्तिए भंग थाय तो ते पण अतिचार कहेवाय छे.

अहीं प्रसंगने लीधे साधुनी वीश वसा दया अने श्रावकनी सवा वसा दया केवी रीते थाय छे? ते कहेवाय छे.—सूक्ष्म अने स्थूळ ए बे प्रकारना जीवो होय छे, तेमनी नीचे कहेला सर्व प्रकारे हिंसानी निवृत्ति साधुने होय छे तेथी तेने वीश वसा जीवदया होय छे. श्रावकने पोताना धंधामां सूक्ष्म जीवोनी हिंसा थाय छे तेथी ते मात्र स्थूळप्राणा-

तिपातनी ज विरति करे छे. तेथी श्रावकने दश वसा दया रही. स्थूळ जीवोमां पण चोरादिक अपराधी जीवोनी हिंसानो त्याग करी शकातो नथी, तेथी तेने निरपराधी त्रस जीवोनी हिंसानो निषेध होय छे, माटे पांच वसा दया रही. निरपराधी जीवोनी हिंसा पण संकल्पथी अने आरंभथी एम बे प्रकारनी होय छे, तेमां आरंभथी हिंसा तो खेती आदिक धंधामां थइ जाय छे, माटे अमुक कार्यने माटे हुं आ जीवनी हिंसा करुं छुं एवा संकल्पथी तेने हिंसानी विरति होय छे, तेथी अढी वसा दया रही. संकल्पथी हिंसा पण सापेक्ष अने निरपेक्ष एम बे प्रकारनी होय छे, तेमां पुत्र, भृत्य, बळद, अश्व विगेरेने शीखववानी खातर अपेक्षाथी कांइक हिंसा करवी पडे छे, माटे तेने निरपेक्षथी हिंसानी विरति होय छे, तेथी सवा वसा दया श्रावकने होइ शके छे. अर्थात् निरपेक्षपणे संकल्पथी निरपराधी त्रस जीवोनी हुं हिंसा नहीं करुं एवुं व्रत श्रावकने होय छे.

## हवे बीजा व्रतना अतिचार आलोवे छे—

**मू०—बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलियवयणविरईओ ।**
**आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥**

### शब्दार्थः—

**बीए**—बीजा
**अणुव्वयम्मि**—अणुव्रतमां
**परि**—अतिशय
**थूलग**—मोटा
**अलिय**—जुट्ठा
**वयण**—वचन

**भावार्थ**—अहीं बीजुं अणुव्रत स्थूळ मृषावाद विरमण नामनुं छे. ते स्थूळ मृषावाद पांच प्रकारे छे.—तेमां द्वेषादिकवडे अविषकन्याने विषकन्या कहेवी के विष कन्याने अविषकन्या कहेवी, सुशीलने दुःशील अने दुःशीलने सुशील कहेवी ते कन्यालीक कहेवाय छे. १. थोडा दूधवाळी गायविगेरेने घणा दूधवाळी कहेवी अने घणा दूधवाळीने थोडा दूधवाळी इत्यादिक कहेवुं ते गवालीक. २. पोतानी भूमिने परनी कहेवी, के परनी भूमिने पोतानी कहेवी तथा उखर भूमिने सारी कहेवी के सारीने उखर कहेवी इत्यादिक भूम्यलीक. ३. धनादिक कोइनी थापणने असत्य बोली ओळववी ते न्यासापहार. ४. तथा कोइनी खोटी साक्षी पूरवी ते कूटसाक्षित्व कहेवाय छे. ५. आ पांच प्रकारना अलीकविरमण व्रतने विषे प्रमादथी अप्रशस्तभावमां वर्तता थका में जे कांइ विरुद्ध-आचरण कर्युं होय. ११.

**मू०—सहसारहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।**
**बीयवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १२ ॥**

**शब्दार्थः—**

**सहसा**—वगर विचार्ये

**रहस्स**—एकांतमां

**दारे**—स्त्रीए कहेली

**मोस**—जुठो

**उवएसे**—उपदेश करवो

**कूडलेहे अ** — जुठा दस्तावेज लखवा

**भावार्थ**—आ गाथावडे बीजा व्रतना पांच अतिचारोनुं प्रतिक्रमण कर्युं छे. ते पांच अतिचारो आ प्रमाणे छे.—विचार कर्या विना साहसपणे कोइने चोर के पारदारिक विगेरेनो आरोप आपवो ते सहसाभ्याख्यान कहेवाय छे. १. एकांतमां बेसीने केटलाक माणसो कांइ विचार करता होय, तेमना आकार, इंगित ( चेष्टा ) विगेरे उपरथी अनुमान करीने आ लोको अमुक अमुक राजविरुद्धादिकनो विचार करे छे इत्यादिक आळ देवुं ते रहोभ्याख्यान कहेवाय छे; अथवा तो कोइ प्रीतिवाळा मित्रादिकने एकबीजाना दोष कही बन्ने वच्चेनी प्रीतिनो नाश करे के चाडी खाय ते पण रहोभ्याख्यान कहेवाय छे. २. पोतानी स्त्रीए विश्वासथी कांइ गुप्त वात करी होय ते बीजा पासे प्रगट करवी, अथवा उपलक्षणथी पुरुषनी वात स्त्रीए प्रगट करवी अथवा मित्रनी वात प्रगट करवी ते स्वदारमंत्रभेद नामनो त्रीजो अतिचार छे.× ३. कोइ बे जणना विवादमां एक जणने वंचननो उपाय शीखववो, अथवा पोते बराबर जाण्या विना ज मंत्र, औषध विगेरेनो उपदेश आपवो, अथवा मायावी शास्त्रो भणाववा ए विगेरे मृषोपदेश कहेवाय छे. ४. तथा अन्य माणसनी मुद्रा करीने के तेनी जेवा अक्षर लखीने खोटो लेख

---

× अहीं रहोभ्याख्यान अने स्वदारमंत्रभेद ए बन्ने ठेकाणे सत्य वचन ज बोलवानुं होय छे, तो तेमां अतिचार शी रीते लागे ? एवो प्रश्न सहज उठी शके छे. तेनो उत्तर ए छे जे—गुप्त विचार प्रगट करवाथी लज्जादिक उत्पन्न थवाने लीधे कदाच तेनुं मरण पण उत्पन्न थाय छे, तेथी वास्तविक रीते पण असत्य ज कही शकाय.

लखवो ते कूटलेख नामनो पांचमो अतिचार कहेवाय छे.+ ५. १२.

## हवे त्रीजुं व्रत कहे छे—

**मू०—तइए अणुव्वयम्मि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥**

### शब्दार्थ—

**तइए**—त्रीजा
**अणुव्वयंमि**—अणुव्रतने विषे
**थूलग**—मोटा
**परदव्व**—पारका धनना
**हरण**—हरणनी
**विरइओ**—विरतिथी

**भावार्थ**—त्रीजुं व्रत अदत्तादान नामनु छे. तेमां स्वामी अदत्त १, जीव अदत्त २, तीर्थंकर अदत्त ३ अने गुरु अदत्त ४ एम चार प्रकारे अदत्त कहेवाय छे. तेमां जे सुवर्णादिक वस्तु तेना स्वामीए आपी न होय ते स्वामी अदत्त कहेवाय छे १, जे पोतानी मालीकीनी फळ विगेरे सचित्त वस्तु भांगवी के खावी ते जीव अदत्त कहेवाय छे

---

+ अहीं कोइ शंका करे के—कूटलेख तो स्थूळ—मोटुं असत्य छे, माटे ते करवाथी तो भंग ज थवो जोइए. अतिचार न होवो जोइए. आनो उत्तर ए छे जे—आ शंका सत्य छे, अमुक अपेक्षाए भंग करी शकाय छे. परंतु कोइ व्रती एम धारे के में तो असत्य वचन बोलवानुं प्रत्याख्यान कर्युं छे, अने आ तो बोलवानुं नथी, लखवानुं छे, आवी अपेक्षाथी ते मुग्ध बुद्धिवाळाने अतिचार लागे छे.

केमके ते फलादिकना जीवे पोताना प्राण तेने अर्पण कर्या नथी २, गृहस्थे आपेली आधाकर्मादिक दोषवाळी वस्तुने जो साधु ग्रहण करे तो ते तीर्थंकरनी आज्ञा नहीं होवाथी तीर्थंकर अदत्त कहेवाय छे ३, तथा सर्व दोष रहित पण ग्रहण करेली वस्तु गुरुनी आज्ञा विना वापरे तो ते गुरु अदत्त कहेवाय छे. ४. तेमां अहीं स्वामी अदत्तनो अधिकार छे. ते अदत्त स्थूळ अने सूक्ष्म एम बे प्रकारनुं छे. तेमां क्षेत्र, खळादिकमां रहेलुं धान्यादिक तेना स्वामिनी रजा विना जरा पण लेवुं ते स्थूळ अदत्त कहेवाय छे, एटले के जे कांइ वस्तु लेवाथी लोकमां चोरनो व्यपदेश थतो होय ते स्थूळ अदत्त कहेवाय छे, स्वामीनी अनुज्ञा विना पण तृण, कांकरा जेवी निःसार वस्तु लेवाथी तेने कोइ चोर कहेतुं नथी, एवी वस्तु सूक्ष्म अदत्त कहेवाय छे. आमां श्रावकने स्थूळ अदत्तनी विरति होय छे. सूक्ष्म अदत्तनो त्याग श्रावकथी बनी शकतो नथी. आवा अदत्तनुं आदान एटले ग्रहण ते अदत्तादान कहेवाय छे, तेनी विरतिने आश्री जे में विरुद्ध आचर्युं होय. १३

## त्रीजा व्रतना पांच अतिचार–

मू०—तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ ।
कूडतुलकूडमाने, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥ १४ ॥

### शब्दार्थः—

तेन–चोरवडे
आहड–चोरेली
प्पओगे–उत्तेजन आपवुं
तप्पडिरूवे–खोटी वस्तुने खरी

| | |
|---|---|
| जेवी करी वेचवी | **कूडतुल**—खोटा तोल राखवा |
| **विरुद्ध**—राज्य विरुद्ध | **कूडमाणे**—खोटा माप राखवा |
| **गमणे अ**—आचरण करवुं | |

**भावार्थ**—त्रीजा व्रतना पांच अतिचारोनुं आ गाथामां प्रतिक्रमण कर्युं छे. ते पांच अतिचार आ प्रमाणे छे.—स्तेनाहृत एटले चोरे कोइ ठेकाणेथी चोरीने कांइ केसर विगेरे महामूल्यवाळी वस्तु आणी होय, ते वस्तु थोडा मूल्यथी लइ लेवी ते. १. स्तेनप्रयोग एटले "आज काल तमे केम कांइ काम करता नथी? तमारी लावेली वस्तु कोइ खरीद करनार नहीं होय तो हुं खरीदी लइश." इत्यादिक वचनोथी चोरने उत्साहित करवो, तथा तेने कोश विगेरे चोरीना उपकरणो आपवा ते. २. तत्प्रतिरूप एटले घी विगेरेमां तेल के चरबी विगेरे मिश्र करी घी विगेरे जेवी ज वस्तु बनावी वेचवी, अथवा केसर विगेरे बनावटी वस्तु करी तेने वेचवी, अथवा चोरे आणेला बळद विगेरे पशुना शींगडा विगेरे अवयवोने होय तेथी विपरीत करी तेनो स्वामी ओळखी न शके तेवा करी वेचवा ते. ३. विरुद्ध गमन एटले पोताना राजानी आज्ञा विना तेना वैरीना देशमां व्यापारादिकने माटे जवुं, अथवा उपलक्षणथी राजाए निषेध करेला दांत, विष, लोह विगेरे वस्तु ग्रहण करवी ते. ४. कूटतुलाकूटमान एटले लेतां देतां मोटा नाना शेर विगेरे तोला करवा अने पाली, पळी के गज विगेरे मानने पण मोटा नाना करी ग्राहकने ठगवुं ते.*

---

* आ पांचे अतिचारो सेवती वखते श्रावक पोताना मनमां एवो विचार करे के—"आतो हुं वेपारनी कळावडे ज लाभ उपार्जन करुं छुं;

५. आ अतिचारो सेवतां मने जे दोष लाग्यो होय तेनुं हुं प्रतिक्रमण करुं छुं. १४.

## चोथा व्रतना अतिचार—

मू०—चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥

### शब्दार्थः—

**चउत्थे**–चोथा
**अणुव्वयंमि**–अणुव्रतने विषे
**निच्चं**–हंमेशां
**परदार**–पारकी स्त्री साथे
**गमण**–गमन करवानी
**विरईओ**–विरतिने विषे

**भावार्थः**—मैथुन बे प्रकारनुं छे–सूक्ष्म अने स्थूळ. तेमां कामना उदयथी इन्द्रियोनो कांइक विकार थाय ते सूक्ष्म अने मन, वचन, कायाए करीने औदारिक के वैक्रिय स्त्रीनी साथे जे मैथुन सेववुं ते

---

पण कोइने घरे खातर विगेरे पाडीने लावतो नथी. तेमज लोकमां पण हुं चोर कहेवातो नथी." आ प्रमाणे अपेक्षाए आवा दोषो सेवे छे तेथी ते अतिचार कहेवाय छे. अथवा तो ते पांचे दोषो सेवनार माणस राजानो गुन्हेगार थाय छे, अने तेने माथे स्पष्ट रीते चोरीनो ज गुन्हो मूकवामां आवे छे. तेथी तेने अनाचारमां ज गणवा; परंतु मात्र अनाभोगादिकथी तेनुं सेवन करवुं कर्युं होय तो ज ते अतिचार गणाय छे; एम जाणवुं.

स्थूळ कहेवाय छे. अथवा मैथुननी विरतिरूप जे ब्रह्मचर्य व्रत, ते बे प्रकारनुं छे--सर्वथी अने देशथी. तेमां सर्वथा प्रकारे मन, वचन, कायाए करीने सर्व स्त्रीओना संगनो जे त्याग ते सर्वथी ब्रह्मचर्य कहेवाय छे, तथा सर्वथा सर्व स्त्रीओनो त्याग न करवो ते देशथी ब्रह्मचर्य कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे,--श्रावक गृहस्थी सर्व प्रकारे मैथुननो त्याग करी शकतो नथी, तेथी ते देशथी व्रतो ग्रहण करे छे, ते व्रत 'परदारगमन-विरति' कहेवाय छे. तेमां 'परनी' एटले पोताथी रहित एवा मनुष्य, देव अने तिर्यंचनी जे 'दारा' एटले परणेली अथवा संगृहीत--स्वीकार करेली स्त्रीओ, तेमना सेवननी विरति,× ए नामना चोथा अणुव्रतने विषे प्रमादना प्रसंगथी अप्रशस्त भावमां वर्तता में जे कांइ अतिचार कर्यो होय एटले विरुद्ध आचरण कर्युं होय. १५.

**मू०—अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे ।**
**चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १६ ॥**

---

× जो के केटलीक अपरिगृहीत देवीओ अने तिर्यंचीओने कोइ स्वीकार करनार के परणनार नहीं होवाथी तेओ वेश्या जेवी ज छे. तो पण प्राये परजातिने भोगववा लायक होवाथी तेओ परदारा ज कहेवाय छे. माटे ते वर्जवा लायक ज छे. वळी स्वदारसंतोष व्रतवाळाने तो पोतानी परणेली स्त्री सिवाय बीजी सर्व स्त्रीओ परदारा ज छे. तेथी वर्ज्य ज छे. अहीं दार शब्दना उपलक्षणथी स्त्रीए पोताना पति सिवाय सर्व पुरुषोने वर्जवाना छे एम जाणवुं.

## शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **अपरिग्गहिआ**–कुंवारी | **तिव्व**–तीव्र ( घणीज ) |
| **इत्तर**–बीजी | **अणुरागे**–अभिलाषा |
| **अणंग**–अनंग क्रीडा | **चउत्थ**–चोथा |
| **वीवाह**–लग्न संबंध | **वयस्स**–व्रतना |

**भावार्थः**—आ चोथा व्रतना पांच अतिचारोने आश्री जे कांइ अशुभ कर्मनो बंध थयो होय तेने हुं प्रतिक्रमुं छुं. ते पांच अतिचार आ प्रमाणे छे:—विधवा के कन्या विगेरेने आ कोइनी स्त्री नथी एम धारी तेना प्रत्ये गमन करवुं ते अपरिगृहीतागमन नामनो पहेलो अतिचार छे. १. कोइ पुरुषे थोडा काळने माटे कोइ वेश्याने धन आपी पोतानी करी होय, तेने सर्व साधारण स्त्री जाणी तेना प्रत्ये गमन करवुं, ते इत्वरपरिगृहीतागमन नामनो बीजो अतिचार छे. २. परस्त्रीनी साथे चुंबन, आलिंगन, कुचमर्दन विगेरे मैथुन सिवाय बीजी कोइ पण कामचेष्टा करवी, अथवा पोतानी स्त्री साथे पण कामशास्त्रमां कहेला चोराशी आसन विगेरेनुं सेवन करी कामने अधिक जागृत करवो, अथवा अतृप्तपणे पुरुष, नपुंसक विगेरेनुं सेवन के हस्तक्रियादिकनुं करवुं, अथवा काष्ठ, फळ, माटी, चर्म विगेरेनां करेलां कामनां उपगरणो साथे क्रीडा करवी, ते सर्व अनंगक्रीडा नामनो त्रीजो अतिचार छे. ३. पोताना पुत्र पुत्री सिवाय बीजाना पुत्र पुत्रीना विवाह करवा,* अथवा पोतानी स्त्री

---

* आ चोथुं अणुव्रत स्वदारसंतोष नामे लीधुं होय तो पोतानी स्त्री सिवाय बीजी सर्व स्त्रीओ वर्जवानी छे, अने परदारविरति नामे व्रत

सारी छतां असंतोषने लीधे पोते बीजी स्त्री परणवी, ते परविवाहकरण नामनो चोथो अतिचार छे. ४. तथा शब्दादिक कामभोगने विषे तीव्र अध्यवसाय करवो ते तीव्रानुराग नामनो पांचमो अतिचार छे. ५.

अहीं परदार विरतिवाळाने आ पांचे अतिचारो छे, परंतु स्वदार-संतोषीने तो छेल्ला त्रण ज अतिचार छे, अने पहेला बे तो भंग ज छे. केमके अपरिगृहीता अने इत्वर परिगृहीता ए बन्ने जातनी स्त्रीओ स्वस्त्री नथी. तथा स्त्रीए स्वपति संतोष व्रत लीधेलुं होय छे, तेथी तेने पण ए ज रीते छेल्ला त्रण अतिचारो छे अने पहेला बे भंग ज छे. अथवा व्रत-वाळी स्त्रीने पांचे अतिचार थइ शके छे. तेमां अनाभोगादिकथी परपुरुष पासे गमन करतां अथवा ते वखते ब्रह्मचर्य व्रतवाळा पोताना पति पासे पण गमन करतां पहेलो अतिचार लागे छे, तथा पोताना पतिने वाराना क्रमथी जो सपत्नीए ग्रहण कर्यो होय तो सपत्नीना वारानो लोप करी

---

लीधुं होय तो पोतानी स्त्री[redacted] सिवाय बीजी स्त्रीओ वर्जवानी छे. तेथी करीने स्वदार [redacted] सिवाय अन्यत्र हुं मैथुन करुं नहीं, ते साथे करावुं नहीं एवी रीते जो व्रत ग्रहण कर्युं होय तो अन्यना विवाह करवामां अर्थात्‌थी मैथुन कराव्युं कहेवाय तेथी व्रतनो भंग थयो गणाय, परंतु हुं तो मात्र विवाह ज करुं छुं मैथुन करावतो नथी एवी अपेक्षाथी अन्यविवाह करे तो ते अपेक्षाए भंग नथी. तेथी भंग अने अभंगरूप अतिचार गणाय छे. पोताना पुत्र पुत्रीने विषे पण बीजो कोइ चिंता करनार होय तो विवाहनो नियम करवो अथवा तेनी संख्यानो नियम करवो, ते श्रावकने उचित छे.

पोते ते पति साथे भोग भोगवे त्यारे बीजो अतिचार लागे छे, एज रीते स्वदार संतोषी व्रतवाळा पुरुषने अनाभोगादिकवडे अपरिगृहीता स्त्री प्रत्ये गमन करवाथी पहेलो अतिचार लागे छे, अने इत्वर परिगृहीता वेश्या प्रत्ये पोतानी स्त्री धारी गमन करतां बीजो पण अतिचार लागे छे. ए रीते सर्वने पांच पांच अतिचार पण संभवे छे. इत्यादि जाणवुं. १६.

## पांचमा व्रतना अतिचार.

**मू०—इत्तो अणुव्वए पं-चमम्मि आयरिअमप्पसत्थम्मि।**
**परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥**

### शब्दार्थ—

**इत्तो**—ए पछी
**अणुव्वए**—अणुव्रतने विषे
**पंचमंमि**—पांचमामां
**आयरिअं**—आचर्युं होय
**अप्पसत्थंमि**—माठा भाव वडे
**परिमाण**—परिग्रहना नियमनुं
**परिच्छेए**—उल्लंघन करवाथी

**भावार्थ**—परिग्रह बे प्रकारनो छे—बाह्य अने आभ्यंतर तेमां धन धान्यादिकनो संग्रह ए बाह्य परिग्रह छे अने रागद्वेषादिक आभ्यंतर परिग्रह छे. आ बन्नेनो सर्वथा त्याग साधुओने होय छे गृहस्थी श्रावक आभ्यंतर परिग्रहनो त्याग करी शकतो नथी. तेम ज बाह्य परिग्रहनो पण सर्वथा त्याग करी शकतो नथी. तेथी पोतानी इच्छानुसार अमुक प्रमाणमां धन धान्यादिक संग्रह करवानो जे नियम ग्रहण करवो ते आ व्रतनो हेतु छे. माटे तेमां प्रमादथी लोभादिकने वश थइ कांइ विरुद्ध

आचरण थयुं होय एटले अतिचार लाग्या होय तेनुं अहीं प्रतिक्रमण करवानुं छे. १७.

## ते अतिचारो आ प्रमाणे.

**मू०—धणधन्न खित्तवत्थू, रूप्पसुवन्ने अ कुविअपरिमाणे ।**
**दुपए चउप्पयम्मि य, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥ १८ ॥**

### शब्दार्थ—

**धण**—धन
**धन्न**—धान्य
**खित्त**—खेतर
**वत्थु**—वास्तु
**रूप्प**—रुपुं
**सुवन्ने**—सोनुं
**कुविअ**—हलकी धातुओ
**परिमाणे**—नियमने विषे
**दुप्पए**—बे पगवाळा
**चउप्पयंमि**—चार पगवाळा

**भावार्थ**—×धन अने धान्यना परिग्रहनुं जेटलुं प्रमाण राख्युं होय तेनो अतिक्रम करवो एटले आगळ पर मोंघुं थशे एम धारी कोईनी साथे साटुं करी राखवुं, अथवा पोतानी पासे रहेलानुं वेचाण थइ जाय त्यां सुधी कोइना कबजामां पोताथकी रखाववुं अथवा नाना मूढाने मोटा

---

× धन चार प्रकारनुं छे—सोपारी, नाळीयेर विगेरे गणी शकाय ते गणिम १, केसर, गोळ विगेरे तोळाय ते धरिम २, घी, लवण विगेरे मापावडे अपाय ते मेय ३, अने रत्न, वस्त्र विगेरे गजवडे भरीने अथवा परीक्षावडे अपाय ते परिच्छेद्य ४.

करवा ते धनधान्य प्रमाणातिक्रम नामनो पहेलो अतिचार छे. १. क्षेत्र एटले धान्य पाकवानुं खेतर तथा वास्तु एटले घर, हाट विगेरे, तेनी जेटली संख्यानो स्वीकार कर्यो होय, तेथी वधारे थाय तो संख्यानो नियम भंग न थवा देवा माटे वचमांथी वाड काढी नांखी बे क्षेत्रनुं एक क्षेत्र करवुं अने वचमांथी भींत विगेरे काढी नांखी बे घरनुं एक घर करवुं ते *क्षेत्रवास्तु प्रमाणातिक्रम नामनो बीजो अतिचार छे. २. रूप्य एटले रूपुं अने सुवर्ण एटले सोनुं, तेनुं प्रमाणथी अधिकपणुं थाय त्यारे स्त्री के पुत्रने आपी देवुं, ते रूप्यसुवर्ण प्रमाणातिक्रम नामनो त्रीजो अतिचार छे. ३. कुप्य एटले सोना रूपा सिवायनी बीजी कांस्य, लोह, तांबु, पीतळ, सीसुं विगेरे धातु, तेना प्रमाणथी अधिकनो संभव थाय त्यारे नानां वासणोनां मोटां वासणो करी संख्यानुं प्रमाण वधवा न देवुं, ते कुप्य प्रमाणातिक्रम नामनो चोथो अतिचार छे. ४. तथा द्विपद एटले पत्नी, चाकर, दासी विगेरे, तथा हंस, मयूर, कुकडा, पोपट विगेरे अने चतुष्पद एटले गाय, भेंश विगेरे, तेनी संख्याना प्रमाणमां गर्भने बहार देखातो न होवाथी गणतरीमां न लेवो ते द्विपदचतुष्पदप्रमाणा-

---

* सेतु, केतु अने उभय एम त्रण प्रकारनुं क्षेत्र छे. तेमां कूवा विगेरेना जळथी अनाज पाके ते सेतु १, वरसादना जळथी पाके ते केतु २, अने बन्ने प्रकारे पाके ते उभय ३, कहेवाय छे. तथा खात १, उच्छ्रित २, अने खातोच्छ्रित ३ ए त्रण प्रकारे गृह कहेवाय छे. तेमां भोंयरा विगेरे खात १, उपरा उपरी माळ करवा ते उच्छ्रित २; अने जेमां बन्ने होय ते खातोच्छ्रित ३.

तिक्रम नामनो पांचमो अतिचार छे. ५. अथवा धन धान्यनी जेम क्षेत्र वास्तु विगेरे सर्व पदार्थो नियमनो काळ समाप्त थया पछी लेवानी शर्ते अन्यनी पासे रहेवा देवाथी पण अतिचार लगे छे. १८.

## छट्ठा व्रतना अतिचारनी निंदा.

**मू०—गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च।**
**वुड्ढी सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥**

### शब्दार्थ—

**गमणस्स**—जवाना
**परिमाणे**—नियमने विषे
**दिसासु**—दिशाओमां
**उड्ढं**—उंचे
**अहे अ**—नीचे
**तिरिअं**—तिरछी दिशामां
**वुड्ढि**—वधारो करवाथी
**सइअंतरद्धा**—यादी जती रहेवाथी
**पढमंमि**—पहेला
**गुणव्वए**-गुणव्रतने विषे

**भावार्थ**—साधुओ केवळ निर्जराने माटे विचरता होवाथी हरकोइ जग्याए संयमना लाभने निमित्ते लब्धि आदिकनो उपयोग करीने पण जइ शके छे तेवी ज रीते तीर्थयात्रादिक धर्मने निमित्ते श्रावक पण दिग्विरति व्रत लीधुं होय तो पग प्रमाणनुं उल्लंघन करी शके छे. तेमां तेने कांइ पण दोष लागतो नथी. परंतु लोभादिकथी व्यापारादिक आ लोक संबंधी कार्यने माटे गमन करतां आरंभादिकमां प्रवर्तता जीवहिंसा-

दिक अनेक दोषो लागे छे, तेथी छूटा राखेला क्षेत्र सिवाय बाकीना चौद राजलोकमां रहेला सर्व जीवोनी रक्षारूप गुणने माटे आ दिग्-विरतिरूप व्रत लेवामां आवे छे तेथी ते गुणव्रत कहेवाय छे. तेमां सर्व दिशाओमां गमन करवानो अमुक योजन सुधीनो नियम करवो तेनुं नाम दिग्विरति कहेवाय छे. तेना पांच अतिचारो आ प्रमाणे छे--ऊर्ध्व दिशाए बे आदि अमुक योजन सुधी जवानो नियम कर्यो होय, तेनाथी वधारे उंचे वृक्ष के पर्वतना शिखर पर कोइ वानर के पक्षी वस्त्र, अलंकार विगेरे लइने चडी जाय, तो त्यां ते वस्तु लेवा माटे जाते जवुं नहीं, अने ' न कारयामि ' एवो नियम पण लीधो होय तो ते लेवा माटे बीजाने मोकलवो पण नहीं. परंतु जो ते वस्तु त्यांथी नीचे पडी गइ होय अथवा बीजो प्रेरणा कर्या विना लावी आपे तो ते लेवामां दोष नथी. परंतु अनाभोगादिकने लीधे पोते प्रमाणथी अधिक गमन करे अथवा बीजाने मोकले तो उर्ध्वदिक् प्रमाणातिक्रम नामनो पहलो अतिचार लागे छे. एज रीते भोंयरुं, रसकूप विगेरे अधोदिशामां उल्लंघन करवाथी अधोदिक् प्रमाणातिक्रम नामनो बीजो २ अने चारे दिशा तथा चारे विदिशामां उल्लंघन करवाथी तिर्यक् दिक् प्रमाणाति-क्रम नामनो त्रीजो अतिचार पण कहेवो. ३. सर्व दिशाओमां सो सो आदिक योजन सुधी जवानो नियम कर्यो होय, तेमां एकदा पूर्वादिक कोइ एक दिशामां कांइ कार्यने लीधे प्रमाण करेला योजनथी पांच, दश योजन वधारे जवानो वखत आव्यो, ते वखते बीजी सामेनी पश्चिमादिक दिशामां तेटला न्यून योजननो नियम राखी इच्छित दिशामां तेटला

योजन वधारी तेटलुं गमन करे तो क्षेत्रवृद्धि नामनो चोथो *अतिचार लागे छे. ४. पूर्वादिक दिशामां सो आदिक योजन सुधी जवानो नियम राख्यो होय, तेने एकदा कार्यनी व्याकुळताने लीधे के प्रमादने लीधे के बुद्धि गुम थवाने लीधे के एवा कोइ कारणने लीधे जतां विचार थयो के 'मारे पचास योजननो नियम छे ? के सो योजननो नियम छे ?' आ रीते संदेह थाय तो पचास योजनथी वधारे गमन करवुं नहीं, करे तो अतिचार लागे अने सो योजनथी अधिक गमन करे तो व्रतनो भंग ज थाय. आ ×स्मृत्यंतर्धा नामनो पांचमो अतिचार छे. ५. आ अतिचारोनुं अहीं प्रतिक्रमण छे. १९.

## सातमा व्रतना अतिचार

**मू०—मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ।
उवभोगपरीभोगे, बीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥**

### शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **मज्जंमि अ**—मदिरा | **पुप्फे अ**—फूल |
| **मंसंमि अ**—मांस | **फले अ**—फळ |

---

* इच्छित दिशामां प्रमाण करेला योजनथी वधारे गमन थयुं माटे भंग थयो अने सामसामी बन्ने दिशाना योजनने आश्री संख्यामां वधारो न थवाथी भंग थयो नहीं तेथी आ अतिचार कहेवाय छे.

× आ अतिचार सर्व व्रतोमां संभवे छे. परंतु अहीं पांचनी संख्याने पूर्ण करवा माटे अहीं लख्यो छे.

| | |
|---|---|
| **गंध**–सुगंधी पदार्थ | **परिभोगे**–परिभोगने विषे |
| **मल्ले अ**–फूलनी माळा | **बीअंमि**–बीजा |
| **उवभोगे**–उपभोगने विषे | **गुणव्वए**–गुणव्रतने विषे |

**भावार्थ**—आ बीजुं गुणव्रत एटले सातमुं व्रत भोगोपभोग नामनुं छे, तेने उपभोगपरिभोग नामे पण कहेवामां आवे छे. आ व्रत भोगथी अने कर्मथी एम बे प्रकारे छे. तेमां पण भोगना बे भेद छे– उपभोग अने परिभोग. तेमां आहारादिक के जे वारंवार भोगवाय छे, अथवा पुष्पादिक के जे एकज वार भोगवाय छे ते *उपभोग कहेवाय छे. १. तथा वारंवार अथवा बहारथी जे घर, स्त्री विगेरे भोगवाय छे, ते +परिभोग कहेवाय छे. २. प्रथम तो श्रावके उत्सर्ग मार्गे प्रासुक अने एषणीय आहार ज ग्रहण करवो योग्य छे, तेम न बनी शके तो सचित्त वस्तुनो त्याग करवो, ते पण न बनी शके तो अति सावद्य पापवाळा मद्य, मांस, अनंतकाय विगेरेनो अवश्य त्याग करी प्रत्येक, मिश्र अने सचित्तादिकनुं प्रमाण–परिमाण करवुं. तेम ज उत्सवादिक विशेष कारण विना कीमती वस्त्रो, नूपुरादिक शब्द करता अलंकारो, छोगावाळी पाघडी फेंटो विगेरे चित्तनी गृद्धि अने उन्माद उत्पन्न करनार तथा लोकमां पण अपवादादिक उत्पन्न करनार उद्भट वेषनो श्रावके त्याग करवो जोइए.

---

* अहीं 'उप'नो अर्थ अंदर अथवा एकवार थाय छे.

+अहीं 'परि'नो अर्थ वारंवार अथवा बहार एवो थाय छे.

कर्मथी पण श्रावके मुख्यत्वे करीने निरवद्य कर्ममां ज प्रवृत्ति करवी योग्य छे. तेम न बनी शके तो अत्यंत सावद्य अने विवेकी जनो निंदा करे तेवां मद्य वेचवुं विगेरे कार्यो अवश्य वर्जवां, अने बीजां कर्मोनुं पण परिमाण करवुं. आ रीते बे प्रकारनुं भोगोपभोग अथवा उपभोग-परिभोग नामनुं बीजुं गुणव्रत छे. तेमां अनाभोगादिकथी जे कांइ दोष लाग्यो होय, तेथी आ गाथामां निंदा करवानी छे. २०.

आ सातमा व्रतमां वीश अतिचार छे. तेमां भोगथी पांच अतिचार छे; अने कर्मथी पंदर अतिचार छे. तेमां प्रथम भोगने आश्री पांच अतिचारो बतावी तेनुं प्रतिक्रमण करे छे.—

**मू०—सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं(ए)च आहारे ।**
**तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२१॥**

## शब्दार्थः—

**सच्चित्ते**—सचित्त
**पडिबद्धे**—सचित्तने वळगेली
**अपोलि**—तद्दन काची
**दुप्पोलिअं**—अडधी काची—पाकी
**आहारे**—वापरवाथी
**तुच्छोसहि**—तुच्छ वनस्पति
**भक्खणया**—खावाथी

**भावार्थ**—सचित्तना त्यागवाळो श्रावक जो अनाभोगादिकवडे सचित्त वस्तुने मुखमां नाखे अथवा जेणे सचित्त वस्तुनुं परिमाण कर्युं होय ते जो अनाभोगादिकवडे परिमाणथी अधिक सचित्त वस्तुने मुखमां नाखे तो तेने सचित्ताहार नामनो पहेलो अतिचार लागे छे. १. सचित्तथी-

मिश्रित थयेली वस्तु जेवी के वृक्ष परथी गुंदर लइने तरत ज मुखमां नांखवी अथवा अंदर सचित्त बीजवाळा रायण विगेरे पाका फळने "आ पाकां छे, तेनी छाल अने गर्भ अचित्त होवाथी हुं खाइश अने बीज–ठळीयो सचित्त होवाथी तजी दइश" एम विचारी ठळीया सहित मुखमां नांखे तो तेने सचित्तप्रतिबद्धाहार नामनो बीजो अतिचार लागे छे. २. परिणाम नहीं पामेला आटाने अग्निथी संस्कार कर्या विना ज 'आ तो ×अचित्त छे' एम धारीने खाय अथवा सचित्त एवा तलथी मिश्रित एवो आहार अने यव धानादिक सचित्तमिश्र एवो आहार करे, तो तेने अपक्वौषध्याहार नामनो त्रीजो अतिचार लागे छे. ३. अर्धा पाकेला वाल, चोळा, चणा, चोखा, जाडी रोटली, रोटला विगेरे जो खावामां आवे, तो तेने दुष्पक्वौषध्याहार नामनो चोथो अतिचार लागे छे. आवा आहारथी आ भवमां पण अजीर्णादिक दोष थाय छे, अने जेटला अंशे ते वस्तु सचित्त रही होय तेटले अंशे परलोक संबंधी पण दोष लागे छे. ४. लीली अने कुणी मगफळी, चोळाफळी विगेरे खावाथी तथाप्रकारनी तृप्ति थइ शकती नथी, तेथी तेवी तुच्छ औषधि खावाथी *तुच्छौषधिभक्षणता नामनो पांचमो अतिचार लागे छे. ५.

---

×आटो चाळ्या पछी बे घडीए अचित्त थाय छे, चाळ्या विनानो मिश्र छे. केमके तेमां धान्यना नखीया विगेरे होय छे ते अचित्त थता नथी.

* अहीं कोइ प्रश्न करे के–आ तुच्छौषधि जो सचित्त होय तो ते पहेला अतिचारमां आवी जाय छे, अने अचित्त होय तो ते खावाथी

आ पांचे अतिचारो सचित्त परिहारवाळाने आश्री कह्या छे. ते ज रीते रात्रिभोजनपरिहार, मद्यमांसादिपरिहार अने वस्त्रादिक उपभोगना परिमाणना नियमने आश्रीने पण अनाभोग अने अतिक्रमादिकवडे आ अतिचारो लागे छे, ते पोतानी मेळे जाणी लेवा. २१.

आ व्रतमां कर्मथी भोगोपभोगने उत्पन्न करनारां घणां पापवाळां अंगार कर्म विगेरे पंदर कर्मादानो तीव्र कर्मबंधननां कारण छे ते श्रावके वर्जवानां छे, तेमां अनाभोगादिकवडे कांइ आचरण थयुं होय तेना प्रतिक्रमणने माटे बे गाथा कहे छे.—

**मू०—इंगालीवणसाडी—भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं ।**
**वाणिज्जं चेव य दंत—लक्खरसकेसविसविसयं ॥२२॥**

**मू०—एवं खु जंतपिल्लण—कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ।**
**सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥**

---

अतिचार ज नथी. आनो उत्तर ए छे जे—आ प्रश्न सत्य छे, परंतु जे श्रावक अत्यंत भीरुपणाए करीने सचित्तनुं प्रत्याख्यान करे छे, तेणे आ ओषधि अचित्त होय तो पण लोलुपतानुं कारण होवाथी खावा योग्य नथी. कारण के ते घणी खावाथी पण तथाप्रकारनी तृप्ति थती नथी, अने विराधना मोटी थाय छे. तेथी करीने ज बावीश अभक्ष्यमां पण आनो समावेश कर्यो छे.

## शब्दार्थः—

इंगाली–अंगार कर्म
वण–वनकर्म
साडी–शकट कर्म
भाडी–भाटक कर्म
फोडी–स्फोटक कर्म
–सुवज्जए–सारी रीते छोडी देवा
कम्मं–कर्म

वाणिज्जं–वेपार
चेव–वळी निश्चे
दंत–दांतनो वेपार
लक्ख–लाखनो वेपार
रस–घी–तेल विगेरेनो वेपार
केस–वाळनो वेपार
विस–झेरी पदार्थोनो वेपार
विसयं–शस्त्रादिकनो वेपार

## शब्दार्थः—

एवं–ए प्रमाणे
खु–निश्चये
जंतपिल्लण–यंत्र पिलण
कम्मं–कर्म
निल्लंछणं–निर्लांछन कर्म
दवदाणं–दवदान कर्म
सर–सरोवर

दह–द्रह, धरो (झरणुं)
तलाय–तलाव
सोसं–सूकावी नाखवां
असई–असती स्त्रीनुं (दुराचारी)
पोसं–पोषण करवुं
वज्जिज्जा–छोडी देवा

**भावार्थ**—आ बे गाथामां पंदर कर्मादान बताव्या छे, ते वर्जवाना छे. ते आ प्रमाणे–अंगार कर्म–लाकडा बाळीने नवा अंगारा–

कोलसा पाडवा ते, अथवा इंटो विगेरे पकाववानी भट्ठीनुं काम करवुं तथा लुहारनुं अने सोनी विगेरेनुं काम करवुं ते. १. वनकर्म—कापेला के नहीं कापेला वनवृक्ष, पत्र, पुष्प, कंद मूळ, घास विगेरे लेवा तथा वेचवा ते. २. शकटकर्म—गाडां, गाडी, तेनां पैडां विगेरे अवयवो घडवा, वेचवा, हांकवा विगेरे. ३. भाटककर्म—गाडां, गाडी, वृषभ, उंट, खच्चर विगेरे वडे भार वहन करी भाडुं लेवुं, तथा भार वहेवा माटे बीजाने भाडे आपवा ते. ४. स्फोटककर्म—जव, चणा, घउं विगेरे भरडवा, दळवा, दाळ करवी ते, तथा खाण सरोवर, कूवा विगेरे खोदवा, खोदाववा विगेरे, तथा पृथ्वी खोदवी, हळ खेडवुं, पथ्थर घडवा विगेरे. अहीं धान्य दळवा विगेरनुं कर्म वनकर्म कहेवाय छे एम योगशास्त्रमां कह्युं छे. ५. दंतवाणिज्य—हाथीदांत, हंस मयूरादिकना पींछां, घुवड विगेरेना नख, कस्तूरि, शंख, छीप, कोडी विगेरे त्रस जीवना अंगोपांग ग्रहण करवा तथा तेनो व्यापार करवो ते. ६. लाक्षा-वाणिज्य—लाख, धातकी, मणशीळ, हडताळ, टंकणखार, साबुखार विगेरेनो वेपार करवो ते. ७. रसवाणिज्य—मध, मदिरा, माखण, मांस, दूध, घी, तेल, विगेरेनो वेपार. ८. केशवाणिज्य—दास, दासी, गाय भेंस विगेरेनो वेपार. ९. विषवाणिज्य—विष, शस्त्र, कोश, कोदाळो विगेरे तथा लोढानुं हळ विगेरे वस्तुनो वेपार. १०. यंत्र पीडन—शिला, खारणीयो, घंटी, रेंट, विगेरेनो *वेपार अथवा उपयोग करवो, तथा तल, शेरडी, सरसव, एरंडी विगेरे—पीलवा, तथा कोश, रेंट विगेरे जळयंत्रो

---

*घंटी विगेरेनो वेपार विषवाणिज्यमां गणाय छे एम योगशास्त्रमां कह्युं छे.

हांकवा ए विगेरे. ११. निर्लांछन कर्म गाय विगेरे पशुओना गलकंबल, शींगडा, पुच्छ विगेरे छेदवा तथा नाक वींधवुं, आंक काढवो, खांसी करवी, उंटनी पीठ गाळवी; ए विगेरे. १२. दवदान—वनादिक झाडी बाळवाथी भिल्लादिक सुखे करीने चाली फरी शके, अथवा जूनुं घास बाळवाथी नवुं घास सारुं उगे अने तेथी गायोने चारो सारो थाय, अथवा क्षेत्र बाळवाथी तेमां धान्य सारुं पाके, इत्यादिक *पुण्यनी बुद्धिथी अथवा कौतुकथी वनादिक बाळवां ते. शोषकर्म—धान्यादिक नीपजाववा माटे नीक करीने जळाशयोमांथी पाणी लइ ते जळाशयो सुकवी देवा ते. १४. तथा असतीपोषण—धनादिकने माटे कुशीळवाळी दासी के नपुंसक विगेरेनुं खान पानथी पोषण करवुं अथवा पोपट, मेना, मयूर, कूकडा, कूतरा, वानर विगेरेनो वेपार करवा माटे तेमने पाळवा पोषवा ते. १५. आ पंदर कर्मादान अत्यंत पापनुं कारण होवाथी तजवा योग्य छे. २२—२३.

## आठमा व्रत विषे—

मू०—सत्थग्गिमुसलजंतग—तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे ।
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २४ ॥

---

*मरण समये भिल्लादिक पोताना स्वजनोने पोतानी पाछळ पुण्यने माटे केटलाक दावानळ सळगाववानुं कहे छे. एवी ते लोकोमां रूढि छे.

## शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| सत्थ—शस्त्र | मंत—मंत्र |
| अग्गि—अग्नि | मूल—जडी—बुट्टी |
| मुसल—सांबेलुं | भेसज्जे—औषध |
| जंतग—यंत्र | दिन्ने—आपवाथी |
| तण—घास | दवाविए—अपाववाथी |
| कट्ठे—काष्ट | वा—अथवा |

**भावार्थः**—त्रीजुं गुणव्रत अनर्थदंड नामनुं छे. तेमां अनर्थ एटले क्षेत्र, घर, धन धान्य, शरीर अने स्वजन परिजन विगेरेना प्रयोजन विना पोताना आत्माने जे दंड लागे एटले विना प्रयोजने पोतानो आत्मा पापकर्मथी लेपाय ते अनर्थदंड कहेवाय छे. ते चार प्रकारे थइ शके छे.—अपध्यान १, पापोपदेश २, हिंस्रप्रदान ३, अने प्रमादाचरित ४. तेमां आर्त अने रौद्रध्यान अपध्यान कहेवाय छे. १. खेतर खेड, बळदने दम, अश्वने खांसी कर, शत्रुने हण, रेंट यंत्रने चलाव, शस्त्रने सज्ज कर विगेरे पापोपदेश कहेवाय छे, तेमज वर्षाऋतु नजीक आवी छे माटे हळ विगेरे तैयार कर, वावणीनो वखत वीती जाय छे, शीघ्र वावणी करो, क्यारा पाणीथी भरो, तमारी कन्या मोटी थइ छे माटे शीघ्र विवाह करो, वहाण चालवाना दिवसो नजीक आव्या छे माटे वहाण तैयार करो, इत्यादि सर्व पापोपदेश कहेवाय छे. २. हवे हिंस्रप्रदान अने प्रमादाचरित ए बे भेदने माटे मूळमां ज बे गाथा आपी छे, तेमां पहेली गाथामां हिंस्रप्रदान

कह्युं छे. ते आ प्रमाणे.—शस्त्र, अग्नि, मूशळ, गाडा–घंटी विगेरे यंत्र, दोरडुं करवा माटे घास, भारवट विगेरे माटे काष्ठ, वशीकरणादिकनो मंत्र, ज्वरादिकनी शांति माटे मूळीयां अथवा गर्भपातादिक मूळकर्म अने उच्चाटन विगेरे करनारुं औषध, आ सर्व वस्तु अनेक प्राणीओना वधनो हेतु होवाथी दाक्षिण्यतादिक विना बीजाने आपवा के अपाववामां जे दोष लाग्यो होय, तेने हुं प्रतिक्रमुं छुं २४.

## हवे प्रमादाचरण माटे बीजी गाथा कहे छे–

**मू०—ण्हाणुवट्टणवन्नग—विलेवणे सद्दरूवरसगंधे ।**
**वत्थासणआभरणे, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥ २५ ॥**

## शब्दार्थः—

**ण्हाण**–न्हावुं
**उवट्टण**–पीठी चोळवी
**वन्नग**–रंग करवो
**विलेवणे**–विलेपन करवुं
**सद्द**–शब्द
**रूव**–रूप
**रस**–रस–स्वाद
**गंधे**–गंध
**वत्थ**–वस्त्र
**आसण**–आसन
**आभरणे**–घरेणां

**भावार्थ**—अयतनाए स्नान करवामां एटले त्रसजीववाळी भूमिपर अथवा संपातिम एटले उडी उडीने आवी पडता जीवोवाळी भूमिपर अथवा जळने सारी रीते वस्त्रथी गळ्या विना जे अभ्यंग पूर्वक स्नान कर्युं होय,

तथा उद्वर्तन एटले त्रसजीवसहित चूर्णादिक चोळी मेल उतार्यो होय अथवा उतारेला मेल अने चोळेला चूर्णादिकने राखमां *परठव्या न होय, तथा वर्णक एटले कस्तूरी विगेरेवडे कपोल आदिक अवयवो यतनाविना शोभावतां संपातिम प्राणीओनी विराधना थइ होय, तथा विलेपन एटले ए ज रीते यतना विना चंदन, केसर विगेरेनुं विलेपन करतां संपातिम प्राणीओनी विराधना थइ होय, तथा शब्द—कौतुकथी वेणु वीणादिकनो शब्द सांभळ्यो होय अथवा रात्रिने समये मोटो शब्द करवाथी दुष्ट जीवो जागृत थइ आरंभादिकमां प्रवृत्ति करे, तेथी जीवोनी विराधना थाय छे, तथा स्त्री विगेरेनां रूप नाटकादिकमां जोइ बीजा पासे वर्णन करवा, मिष्टान्नादिक संबंधी रसनुं बीजा पासे वर्णन करवुं, तथा गंध, वस्त्र, आसन, अने आभूषणनुं अन्य पासे वर्णन करवुं. आ रूपादिकना वर्णन करवाथी सांभळनारनी बुद्धि वधे छे. आटलुं कहेवाथी सर्व प्रकारना प्रमादनो त्याग करवो एम कह्युं तथा आलस्यादिकथी तेल, जळ विगेरेनां पात्रो खुल्लां राखवां, सारो मार्ग छतां हरित काय उपर चालवुं अथवा वस्त्रादिक मूकवुं, कुंथवादिकवाळी भूमिमां जळादिक परठववुं, यतना विना कमाड दांकवा के उघाडवा, प्रयोजन विना पत्र पुष्पादिक तोडवां, विगेरे घणी घणी बाबतोनो आ प्रमादाचरणमां समावेश थाय छे. ते सर्वनुं अहीं प्रतिक्रमण करवानुं छे. २५.

---

*परठव्या न होय तो तेमां जीवनी उत्पत्ति थाय छे अने तेने कूतरा विगेरे भक्षण करे अथवा पगवडे मर्दन करे तेथी विराधना थाय छे.

## हवे आ त्रीजा गुणव्रतना पांच अतिचारो आलोवे छे—

**मू०—कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते ॥**
**दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥**

### शब्दार्थः—

**कंदप्पे**—काम भोगनी कथा करवी
**कुक्कुइए**—चाळा करवा
**मोहरि**—नकामुं बबडवुं
**अहिगरण**—शस्त्र तैयार करवां
**भोग**—भोगववानी वस्तुओ
**अइरित्ते**—वधारे राखवी
**दंडम्मि अणट्ठाए**—अनर्थ दंड विरमण नामना
**तइअंमि**—त्रीजा
**गुणव्वए**—गुणव्रतने विषे

**भावार्थ**—अनर्थदंड नामना त्रीजा गुणव्रतने विषे पांच अतिचार आ प्रमाणे छे.—कामादिक विकारने उत्पन्न करनारा हास्यादिक वचन बोलवा के तेवी कथा करवी ते कंदर्प नामनो पहेलो अतिचार छे. १. भृकुटि, नेत्र, हाथ, पग विगेरेवडे विट पुरुषनी जेवी हास्य जनक के कामोद्दीपक चेष्टा करवी ते कौकुच्य नामनो बीजो अतिचार छे. आ बे प्रमादाचरित रूप अनर्थदंडना अतिचार छे. २. असभ्य अने संबंध रहित घणुं बोलवुं ते मौखर्य नामनो त्रीजो अतिचार छे. वाचाळपणाथी कदाच पापोपदेश पण संभवे छे तेथी ते अतिचार कहेवाय छे. ३. शस्त्रादिक सज्ज करीने राखवा, अथवा खांडणीओ अने सांबेलुं, हळ अने फळुं, धनुष अने बाण, गाडुं अने धुंसरी विगेरे अधिकरणनी चीजो साथे साथे राखवी, ते अधिकरणता नामनो चोथो अतिचार छे. चीजो तैयार राखवाथी अन्य जन तेनो तरत उपयोग करे छे अने तैयार न होय तो कोइ

उपयोग करी शके नहीं. ए ज रीते बीजा गृहोमां अग्नि सळगावेलो होय त्यार पछी पोते सळगाववो. तथा गायने चरवा मोकलवी, गाडां विगेरे जोडवां—हांकवां, दुकाने के परगाम जवुं ए विगेर क्रियाओ पण श्रावके प्रथम करवी नहीं. प्रथम करवाथी अधिकरण प्रवर्तन विगेरेनो दोष लागे छे. ४. भोगोपभोगनी वस्तु जेटली पोताने जरूरीयात होय तेथी वधारे राखवी ते भोगातिरिक्तता नामनो पांचमो अतिचार छे. स्नान, भोजन, पहेरवुं विगेरे कार्यमां वधारे चीजो राखवाथी ते दोषनो हेतुरूप थाय छे. जेमके तेल, आंवळां विगेरे स्नाननी वस्तु अधिक लइने जळाशये स्नान करता जोइने अन्य जन पण तेनी याचना करी उपयोग करे. तेम करवाथी अनर्थदंड लागे छे. ५. आ पांच अतिचार संबंधी कांइ दोष लाग्यो होय तेने हुं निंदु छुं. २६.

## हवे नवमा व्रतना अतिचारो निंदे छे.—

**मू०—तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे ।**
**सामाइय वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥**

### शब्दार्थः—

**तिविहे**—त्रण प्रकारना
**दुप्पणिहाणे**—दुष्प्रणिधान
**अणवट्ठाणे**—अविनयपणे
**तहा**—तथा
**सइविहूणे**—यादि न रहेवाथी
**सामाइय**—सामाइक
**वितहकए**—खोटी रीते करतां
**पढमे**—पहेला
**सिक्खावए**—शिक्षा व्रतने विषे

**भावार्थ**—सावद्य व्यापारनो तथा दुर्ध्याननो त्याग करी रागद्वेषनुं निमित्त होय तो पण समभाव राखी मन, वचन, कायानी एकाग्रता राखवी ए सामायिक नामनुं पहेलुं शिक्षाव्रत एटले नवमुं व्रत छे. तेना पांच अतिचार आ प्रमाणे छे.—मनमां घर, दुकान विगेरेना कार्य संबंधी सावद्य व्यापारनुं चिंतवन करवुं ते मनोदुष्प्रणिधान नामनो पहेलो अतिचार छे. १. कर्कश आदि सावद्य वचन बोलवुं ते वाग् दुष्प्रणिधान नामनो बीजो अतिचार छे. २. प्रमार्जन अने पडिलेहण नहीं करेली भूमिपर बेसवुं अथवा पादादिक अवयवो लांबा, टुंका विगेरे करवा ते कायदुष्प्रणिधान नामनो त्रीजो अतिचार छे. ३. बे घडीनो समय पूर्ण थया पहेलां सामायिक पारवुं, अथवा जेम तेम (वेठनी जेम) सामायिक करवुं, अथवा अवकाश छतां सामायिक न करवुं ते अनवस्थान नामनो चोथो अतिचार छे. ४. तथा निद्रादिकनी प्रबळताने लीधे अथवा गृहादिकना व्यापारनी चिंताने लीधे शून्य मन थवाथी "में सामायिक कर्युं के नहीं ? आ सामायिकनो समय छे के नहीं ? " इत्यादि स्मरणमां न आवे तो ते स्मृतिविहीन नामनो पांचमो अतिचार छे. ५. आ पांचे अतिचारो जीवोने प्रमादनी बहोळताने लीधे अनाभोगादिकथी थाय छे. आ पांचमांथी कोइ पण अतिचार लाग्यो होय तेनी अहीं निंदा करेली छे.

अहीं कोइ शंका करे के—द्विविध त्रिविधे सामायिकनुं प्रत्याख्यान करवामां आवे छे एटले ग्रहण करवामां आवे छे. तेमां मन रोकी शकातुं नथी, तेथी मनवडे दुष्प्रणिधाननो एटले मनना अशुभव्यापारनो संभव होवाथी सामायिक व्रतनो अभाव ज थाय छे. अने व्रतभंग

थवाथी तेनुं प्रायश्चित्त प्राप्त थाय छे. माटे सामायिक करवा करतां न करवुं ए ज श्रेष्ठ छे. आ शंकानो उत्तर आ प्रमाणे छे.—सामायिकमां छ नियम होय छे.—मनवडे सावद्य व्यापार न करुं १, न करावुं २, वाणीवडे न करुं ३, न करावुं ४, कायावडे न करुं ५, न करावुं ६, आ छमांथी अनाभोगादिकने लीधे कोइ एकनो भंग थाय तो पण बाकीना बीजानो भंग थतो नथी तेथी सर्वथा प्रकारे सामायिकनो अभाव थतो नथी. वळी मननो अशुभ व्यापार थयो होय तो तेनी मिथ्यादुष्कृत देवाथी ज शुद्धि कहेली छे, तेथी 'सामायिक न करवुं सारुं छे' एम कहेवुं ते मोटुं अज्ञान छे. अन्यथा सर्वविरति पण ग्रहण न करवी एवुं प्राप्त थशे. २७.

## दशमा व्रतना अतिचारोने निंदे छे.

**मू०—आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।**
**देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥**

### शब्दार्थः—

**आणवणे**—मंगाववामां
**पेसवणे**—मोकलवामां
**सद्दे**—शब्द करवो
**रूवे**—रूप देखाडवुं
**अ**—अने
**पुग्गलक्खेवे**—पदार्थ नाखी जणाववुं
**देसावगासिअम्मि**—देशावगासिकने विषे
**बीए**—बीजा
**सिक्खावए**—शिक्षा व्रतने विषे

**भावार्थ**—छट्ठुं दिग्विरति व्रत जावजीव पर्यंत सो आदिक योजन

प्रमाण ग्रहण कर्युं होय, ते व्रतनो अमुक दिवसे के अमुक वखते संक्षेप करी घर, शय्या के अमुक स्थानथी आगळ जवानो निषेध करवो अथवा सर्व व्रतोनो मुहूर्त आदि अमुक मुदत सुधी संक्षेप करवो ते ×देशावकाशिक व्रत कहेवाय छे. दिग्विरति व्रत जावजीवनुं होय छे, अथवा वरस के चातुर्मासनुं होय छे, परंतु आ देशावकाशिक व्रत तो दिवस, प्रहर के मुहूर्त आदिकना परिमाणवाळुं होय छे.* आटलो आ व्रतमां तथा छट्ठा व्रतमां तफावत छे. ए ज रीते सर्व व्रतनो संक्षेप पण अमुक काळ सुधी करवामां आवे छे. आ व्रतना पांच अतिचारो आ प्रमाणे छे.—नियम करेली हदनी बहारथी कांई वस्तु जोइती होय ते व्रतभंगना भयने लीधे पोते न जतां कोइ पासे मंगाववी ते आनयन नामनो पहेलो अतिचार छे. १. ए ज रीते नियमित हदनी बहार कोइ द्वारा कांइ वस्तु मोकलवी ते प्रेषण नामनो बीजो अतिचार छे. २. नियमित हदनी बहार रहेला

---

×देशमां एटले आरंभना एक भागमां अवकाश—रहेवुं, ते देशावकाश कहेवाय छे, ते देशावकाशथी बनेलुं जे व्रत ते देशावकाशिक कहेवाय छे. जेम कोइ मांत्रिक आखा शरीरमां व्यापेला विषने मंत्रशक्तिथी डंखमां लावे छे, तेम धर्मिष्ठ पुरुष बहु सावद्य व्यापारनो संक्षेप करे छे, तेना संक्षेपथी कर्मनो संक्षेप थाय छे, अने तेना संक्षेपथी अनुक्रमे मोक्ष प्राप्त थाय छे.

*हालनी प्रवृत्ति प्रमाणे उपवास के एकाशनादिक करी आठ सामायिक अने बे प्रतिक्रमण करवानो रीवाज छे.

कोइ माणसने पोताना कार्य माटे साक्षात् बोलावी न शकाय तेथी खांसी आदिक मोटो शब्द करी तेने पोतानुं स्वरूप—कार्य जणाववुं ते शब्दानुपात नामनो त्रीजो अतिचार छे. ३. ए ज रीते पोतानुं रूप देखाडवुं अथवा नीसरणी विगेरे उपर चडी बीजानां रूप जोवां ते रूपानुपात नामनो चोथो अतिचार छे. ४. नियमित हदनी बहार कांकरो, काष्ठ, ढेफुं विगेरे फेंकी पोतानुं कार्य जणाववुं ते पुद्गलक्षेप नामनो पांचमो अतिचार छे. ५. आ देशावकाशिक व्रत गमनादिक व्यापारथी उत्पन्न थता प्राणीवधादिक न थवा देवा माटे ग्रहण करवामां आवे छे, ते तो पोते करवाथी के बीजा पासे करावबाथी तुल्य ज छे. उलटुं पोते गमनादिक करवाथी ईर्यापथनी शुद्धि विगेरे गुणोनो संभव छे. बीजा भृत्यादिक पासे करावबाथी ईर्यासमिति विगेरेना असंभवने लीधे अधिक दोष संभवे छे. माटे आवा आनयनादिक अतिचारो करवा योग्य नथी परंतु 'हुं पोते गमनादिक करीश तो व्रतभंग थशे' एम व्रतनी अपेक्षाए अथवा अनाभोगादिकवडे प्रवृत्ति करवाथी अतिचार लागे छे.

अहीं कोइने शंका थाय के——सर्व व्रतोनो संक्षेप करवो ते पण देशावकाशिक कहेवाय छे, एम कह्युं. परंतु अतिचारो तो दिग्विरतिव्रतना संक्षेपने लागु पडे तेवा ज कह्या छे. बीजा व्रतना संक्षेपने लागु पडे तेवा कह्या नथी, तो ते पण कहेवा जोइए. तेनो जवाब ए छे जे—प्राणातिपातविरमण आदिक सर्व व्रतना संक्षेप करवामां जे वधबंधादिक अतिचारो कह्या छे तेज लेवाना छे, अने दिग्व्रतना संक्षेप करवामां तो क्षेत्रनो संक्षेप होवाथी आनयनप्रयोगादिक जूदा पण संभवी शके छे, तेथी ते जूदा लख्या छे. २८.

## अग्यारमा व्रतना अतिचार—

**मू०—संथारुच्चारविही–पमाय तह चेव *भोअणाभोए।**
**पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥**

**संथार**—संथारा संबंधी
**उच्चारविही**—लघुनोति तथा वडीनीति संबंधी
**पमाय**—प्रमाद ( आळस )
**तह**—तेम
**चेव**—वळी
**भोयण**—भोजन संबंधी
**आभोए**—चिंता करवी
**पोसहविहि**—पौषध विधि
**विवरीए**—विपरीत करवाथी
**तइए**—त्रीजा
**सिक्खावए**—शिक्षाव्रतने विषे

**भावार्थः**—श्रावकनुं अग्यारमुं व्रत पोषधोपवास नामनुं त्रीजुं शिक्षाव्रत छे. तेमां पोषं–धर्मनी पुष्टिने धत्ते–जे धारण करे ते पोषध कहेवाय छे एटले अष्टमी अने चतुर्दशी आदि पर्वतिथिए अवश्य करवा लायक व्रत विशेष, तेणे करीने उपवसनं–रहेवुं, ते पोषधोपवास कहेवाय छे. अथवा पौषध एटले अष्टमी आदिक पर्व तिथि, तेने विषे जे उपवास करवो ते पण पौषधोपवास कहेवाय छे. आ प्रमाणे शब्दार्थ छे, तो पण प्रवृत्ति एवी छे के आ व्रतमां आहार, शरीरसत्कार, मैथुन अने सावद्यव्यापार ए चार वर्जवाना छे. तेमां पण चालती आचार्य परंपराए करीने अने विशेष सामाचारीए करीने हालमां आहार पौषध सर्वथी अने देशथी थइ शके छे एटले के उपवास के एकासणुं आदिक करी शकाय

---

*भोइ णाभोए–( भक्त्यनाभोगः ) इति पाठान्तरम्.

छे, परंतु शरीरसत्कार, मैथुन अने व्यापारनो तो सर्वथा त्याग करवामां आवे छे. तेना पांच अतिचारो आ प्रमाणे छे. संथारो अने वसति आदिक चक्षुथी नहीं जोये छते अथवा बराबर सारी रीते नहीं जोये सते अप्रतिलेखितदुष्प्रतिलेखितशय्यासंस्तारक नामनो पहेलो अतिचार थाय छे. १. ए ज रीते संथारो, वसति आदिकने रजोहरणादिके करीने प्रमार्जन नहीं करे छते अथवा बराबर प्रमार्जन नही करे सते अप्रमार्जितदुष्प्रमार्जितशय्यासंस्तारक नामनो बीजो अतिचार थाय छे. २. एज रीते उच्चार प्रस्रवण–वडीनीति लघुनीति परठववानी भूमिने चक्षुथी नहीं जोये छते अथवा बराबर नहीं जोये छते अप्रतिलेखितदुष्प्रतिलेखितउच्चारप्रश्रवणभूमिक नामनो त्रीजो अतिचार थाय छे. ३. ए ज रीते ते भूमिने रजोहरणादिकवडे प्रमार्जन नहीं करे सते अथवा बराबर प्रमार्जन नहीं करे छते अप्रमार्जितदुष्प्रमार्जितउच्चार-प्रस्रवणभूमिक नामनो चोथो अतिचार थाय छे. ४. तथा भोजनने विषे अने उपलक्षणथी शरीरसत्कार विगेरे विषे चिंता थाय के क्यारे पौषध पूर्ण थाय अने क्यारे स्वेच्छाथी भोजनादिक करुं इत्यादिक विचार करवाथी पौषधोपवासनुं सम्यक्अननुपालन नामनो पांचमो अतिचार थाय छे. ५. अहीं 'भोअणाभोए' ने बदले 'भोइऽणाभोए' एवुं पाठांतर पण छे, ते लइए तो उपरना पहेला चार अतिचारो 'अनाभोग एटले अनुपयोगपणुं सते थाय छे' एवो अर्थ करवो अने तेने बदले पौषधविधिनुं विपरीतपणुं एटले पौषध व्रत लीधा पछी क्षुधा, ताप विगेरेना दुःखथी 'हुं पौषध पूर्ण थये स्वेच्छाथी आहारादिक करीश.' इत्यादिक विचारी सम्यक् प्रकारे पौषध विधिनुं पालन करे नहीं ए पांचमो अतिचार

जाणवो. एने अतिचार न लइए तो आवो अर्थ करवो.—आ रीते पौषध विधिनुं विपरीतपणुं सते त्रीजा शिक्षाव्रतने विषे जे दोष लाग्यो होय तेने हुं निंदु छुं. २९.

## बारमा व्रतना अतिचार—

**मू०—सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ।**
**कालाइक्कमदाणे, चउत्थ(थे) सिक्खावए निंदे ॥३०॥**

### शब्दार्थः—

**सच्चित्ते**—सचित्त वस्तु
**निक्खिवणे**—मूकवाथी
**पिहिणे**—ढांकवाथी
**ववएस**—फारफेर बोलवाथी
**मच्छरे**—गर्व
**चेव**—निश्चये
**कालाइक्कमदाणे**—वखत ओळंगीने तेडवा जवाथी
**चउत्थे**—चोथा
**सिक्खावए**—शिक्षा व्रतने विषे

**भावार्थ**—श्रावकने बारमुं व्रत एटले चोथुं शिक्षाव्रत अतिथि-संविभाग नामनुं छे. तेमां तिथि, पर्व विगेरे सर्व लौकिक व्यवहारनो त्याग करी भोजन समये भिक्षाने माटे जे आवे ते अतिथि कहेवाय छे, ते श्रावकने साधु ज अतिथिरूपे होय छे. ते अतिथिने सं—संगत एटले आधाकर्मादिक बेंतालीश दोष रहित, वि—विशेष प्रकारनो एटले पश्चात्कर्मादिक दोषने दूर करवा माटे सावशेष अन्नदानरूप भाग—भाग आपवो, ते अतिथिसंविभाग कहेवाय छे. अर्थात् न्यायोपार्जित, प्रासुक, एषणीय

अने कल्पनीय, अन्न, पान, अने वस्त्रादिकनुं देश, काळ, श्रद्धा, सत्कार अने क्रम पूर्वक उत्कृष्ट भक्तिवडे पोताना आत्माना अनुग्रहनी बुद्धिथी साधुने दान आपवुं. तेनो नियम लेवो ते अतिथिसंविभाग व्रत कहेवाय छे. आ व्रत पौषधने पारणे अवश्य लेवानुं छे एटले के ते दिवसे साधुने दान आप्या पछी ज पोते भोजन करवानुं छे. जो कदाच साधुनो योग न होय तो भोजन समये द्वार सामुं जोइ शुद्ध भावथी विचारवुं के— "जो साधु महाराज होत तो मने आज घणो लाभ थात. मारो निस्तार थात." इत्यादि विचारी भोजन करवुं. पौषधना पारणा सिवायना दिवसोमां साधुने दान आपीने जमवुं अथवा जमीने पछी दान आपवुं ? तेनो कांइ नियम नथी. आ व्रतना पांच अतिचार आ प्रमाणे छे.— साधुने आपवा लायक अन्न पानादिक वस्तुने नहीं आपवानी बुद्धिथी अथवा अनाभोग के सहसाकारादिकथी माटी विगेरे सचित्त पदार्थ उपर मूकवी ते सचित्तनिक्षेपणता नामनो पहेलो अतिचार छे. १. ए ज प्रमाणे सचित्त पदार्थवडे देय वस्तुने ढांकवी ते सचित्त पिधानता नामनो बीजो अतिचार छे. २. ए ज रीते अदान बुद्ध्यादिकथी पोतानी वस्तुने पारकी कहेवी अथवा देवानी बुद्धिथी पारकी वस्तुने पोतानी कहेवी ते, अथवा साधुए मागेली वस्तु पोताने घेर होय छतां "आ वस्तु अमुक माणसनी छे, तेनी पासे जइने मागो." एम कहेवुं ते, अथवा अवज्ञाथी बीजा पासे दान अपावे ते अथवा मरेला के जीवता पोताना पितादिकने आ दाननुं पुण्य थाओ एम परना उपदेशथी आपे ते सर्व परव्यपदेश नामनो त्रीजो अतिचार छे. ३. साधु कांइक वस्तु मांगे त्यारे पोते कोप करे, अथवा छती वस्तु माग्या छतां आपे नहीं, ते

मत्सर कहेवाय छे. अथवा कोइ निर्धने आपेलुं दान जोइ ' शुं तेनाथी पण हुं हीन छुं ?' एम मत्सर भावथी दान आपवुं ते मत्सरता नामनो चोथो अतिचार छे. ४. भिक्षानो समय वीत्या पछी ' हवे आ मुनि दान लेशे नहीं, तेने खप हशे नहीं.' एम विचारी साधुने निमंत्रण करवुं, ते कालातिक्रम कहेवाय छे, तेने विषे जे दान आपवुं ते कालातिक्रमदान नामनो पांचमो अतिचार छे. ५. आमांथी कोइ पण दोष लाग्यो होय तेने हुं निंदु छुं, ३०.

## आ बारमा व्रतमां संभवता बीजा अतिचारोनी पण निंदा करे छे.—

**मू०—सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ।**
**रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥**

**शब्दार्थः—**

**सुहिएसु**—सुखीया उपर
**दुहिएसु**—दुःखीया उपर
**अस्संजएसु**—गुरुनी आज्ञा प्रमाणे विचरनारने विषे
**अणुकंपा**—दया
**रागेण**— रागे करी
**व**—अथवा
**दोसेण**—द्वेषे करी
**तं निंदे**—तेने हुं निंदुं छुं
**गरिहामि**— गर्हुं छुं

**भावार्थ**—जेने ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण सारी रीते हितकार छे एटले जेओ ज्ञानादिकमां रक्त छे अथवा जे वस्त्र पात्रादिक उपाधिवाळा छे ते सुहित—सुखी कहेवाय छे, तेवा साधुओने विषे, तथा जेओ रोग के तपवडे ग्लानि पामेला होय के वस्त्र पात्रादिक उपधिने

अभावे दुःखी होय तेवा साधुने विषे, तथा जेओ पोतानी स्वेच्छाए विचरता न होय एटले गुरुनी निश्राए विचरता होय एवा साधुने विषे अथवा पासत्थादिक के अन्य मतना कुलिंगी एवा असंयत साधुने विषे में राग के द्वेषवडे जे अनुकंपा करी होय एटले के चारित्रना गुणनी बुद्धि विना ज मात्र स्वजन अने मित्रादिकना प्रेमवडे के साधुनी निंदा-रूप द्वेषवडे एटले " आ साधु धन धान्यादिक रहित छे, ज्ञातिजनोए त्याग करेला छे, क्षुधाथी पीडित छे, तेमने कांई पण निर्वाहनुं साधन नथी. तेथी तेमने कांइक आपवुं योग्य छे." इत्यादिक निंदा पूर्वक जे अन्न, पाणी, वस्त्र, पात्र विगेरे आपवारूप अनुकंपा करी होय तेनी निंदा अने गर्हा अहीं करवानी छे. २१.

## हवे साधुने आश्री जे करवा लायक कर्युं न होय तेनुं प्रतिक्रमण करे छे.—

**मू०—साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु ।**
**संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥**

### शब्दार्थः—

**साहूसु**—साधुओने
**संविभागो**—वहोरावबुं ते
**न कओ**—न कर्युं ते
**तव**—तप
**चरण**—चरण सित्तरी
**करण**—करण सित्तरी
**जुत्तेसु**—सहित एवा
**संते**—होवा छतां
**फासु**—निर्दोष ( पवित्र )
**अदाणे**—दान न आप्युं होय

**भावार्थ**—निर्दोष अन्न पाणी विगेरे छतां पण तथा बार प्रकारनो तप, सीतेर प्रकारनुं चरण अने सीतेर प्रकारनुं करण ए सर्ववडे युक्त एवा साधुनो योग छतां पण में प्रमादादिकना वशथी तेमने दान आप्युं न होय, तेनी निंदा अने गर्हा अहीं करी छे. ३२.

## आ रीते बारे व्रतना अतिचारो कह्या. हवे संलेखनाना अतिचारो कहे छे.—

**मू०—इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे।**
**पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥**

### शब्दार्थः—

**इहलोए**—आ लोकने विषे
**परलोए**—परलोकने विषे
**जीविअ**—जीववानी
**मरणे**—मरवानी
**अ**—कामभोगनी
**आसंस**—इच्छा
**पओगे**—प्रयोग
**पंचविहो**—पांच प्रकारनो
**अइआरो**—अतिचार
**मा**—न
**मज्झं**—मने
**हुज्ज**—होजो
**मरणंते**—मरणांत सुधी

**भावार्थ**—प्रतिक्रमण करनारनी अपेक्षाए आ लोक एटले मनुष्य लोक, तेने विषे अभिलाषनो प्रयोग एटले "हुं अहींथी मरीने राजा के

शेठ विगेरे थाउं " इत्यादि सुखनी वांछा करवी ते इहलोकाशंसाप्रयोग नामनो पहेलो अतिचार छे. १. एज प्रमाणे परलोकमां " हुं देव के इंद्र थाउं " इत्यादि सुखनी वांछा करवी ते परलोकाशंसाप्रयोग नामनो बीजो अतिचार छे. २. अनशन कर्या पछी भक्त जनोए करेला महोत्सवो जोवाथी, मनोहर गीत नृत्यादिक जोवाथी, वीणा, वेणुना मनोहर ध्वनि सांभळवाथी, अत्यंत वस्त्र माल्यादिकनो सत्कार, सन्मान अने वंदनादिक जोवाथी, गीतार्थ मुनिओ पण पासे बेसी सिद्धांतवाचनादिक करे ए विगेरे जोवाथी तथा धार्मिक जनोए करेला पोताना गुणोनी प्रशंसा श्रवण करवाथी वधारे वखत जीववानुं इच्छवुं ते जीविताशंसाप्रयोग नामनो त्रीजो अतिचार छे. ३. कठिन स्थळे अनशन करवाथी, उपर प्रमाणे बहुमान सत्कारादिक न थवाथी अथवा क्षुधादिकनी पीडाथी जे जलदी मरवानी इच्छा करवी ते मरणाशंसाप्रयोग नामनो चोथो अतिचार छे. ४. तथा काम एटले शब्द अने रूप, तथा भोग एटले गंध, रस अने स्पर्श, ए पांचे विषयोनो अभिलाष करवो एटले के "हुं अहींथी मरीने आ तपना प्रभावथी रूप—सौभाग्यादिकवाळो थाउं" इत्यादिक इच्छवुं ते कामभोगाशंसाप्रयोग नामनो पांचमो अतिचार छे. ५. आ पांच प्रकारना अतिचार मारे मरणांते एटले छेल्ला श्वासोश्वास सुधी न थाओ. एवी अहीं प्रार्थना करवानी छे. आ उपलक्षणथी सर्व प्रकारना धर्मानुष्ठानमां आलोक अने परलोक संबंधी सर्व प्रकारनी आशंसा वर्जवानी छे. केमके आशंसा करवाथी उत्कृष्टने बदले हीन फळने पामे छे. ३३.

**सर्वे अतिचारो मन, वचन अने कायावडे थाय छे, तेथी तेमने ते वडे ज प्रतिक्रमण करवानुं कहे छे.**

**मू०—काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।**
**मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥**

**शब्दार्थः—**

**काएण**—काययोगथी
**काइअस्स**—काया वडे करायेलाने
**वाइअस्स**—वचनवडे बोलायेलाने
**वायाए**—वचन योगथी
**मणसा**—मन योगथी
**माणसिअस्स**—मनवडे लागेला
**सव्वस्स**—सर्व
**वय**—व्रतना
**अइआरस्स**—अतिचार

**भावार्थः**—वध बंधादिक अशुभ काययोगथी थयेला अतिचारने गुरुए आपेला तप अने कायोत्सर्गादिरूप शुभ काययोगवडे *प्रतिक्रमुं छुं. सहसा अभ्याख्यान विगेरे देवारूप अशुभ वचनयोगथी थयेला अतिचारने मिथ्यादुष्कृतादि आपवारूप शुभ वचनयोगवडे ×प्रतिक्रमुं छुं, तथा शंकादिकथी थयेला मानसिक अतिचारने 'में आ खोटुं चिंतव्युं' एम विचारी आत्मनिंदा करवारूप शुभ मनवडे +प्रतिक्रमुं छुं. ए रीते सर्व व्रतोना अतिचारनुं प्रतिक्रमण करवुं. ३४.

---

* छमास सुधी कायोत्सर्गे रहेला दृढप्रहारीनी जेम.

× आनंद श्रावकने श्री गौतम स्वामीए मिथ्यादुष्कृत आप्युं हतुं तेम.

+ मनवडे ज युद्ध करी सातमी नरकने योग्य कर्म बांधता अने

## सामान्यपणे त्रणे योगनुं प्रतिक्रमण कर्युं. हवे विशेषथी ते ज कहे छे.

मू०—वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्नाकसायदंडेसु ।
गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइयारो अ तं निंदे ॥३५॥

### शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **वंदण**—बे प्रकारना वंदन | **दंडेसु**—त्रण दंडने विषे |
| **वय**—बार प्रकारना व्रत | **गुत्तीसु**—त्रण गुप्तिने विषे |
| **सिक्खा**—बे प्रकारनी शिक्षा | **समिईसु अ**—पांच समितिने विषे |
| **गारवेसु**—त्रण गारव | **जो अइयारो**—जे अतिचार |
| **सन्ना**—चार संज्ञा | **तं निंदे**—तेने निंदुं छुं |
| **कसाय**—चार कषाय | |

**भावार्थ**—आ गाथामां वंदनादिक करतां जे अतिचार लाग्या होय तेनुं निंदापूर्वक प्रतिक्रमण कर्युं छे. तेमां वंदन एटले चैत्यवंदन अने गुरुवंदन व्रत एटले अणुव्रतादिक श्रावकनां बार व्रत, शिक्षा एटले ग्रहणा अने आसेवना ए बे प्रकारनी शिक्षा तेमां ग्रहणाशिक्षा एटले श्रावक जघन्यथी अष्टप्रवचन माता अने उत्कृष्टथी दशवैकालिकना 'छज्जीवणीय' अध्ययन सुधी अर्थ सहित भणे ते, तथा आसेवना शिक्षा

---

अने पछी तरत आत्मनिंदादिक करी केवळ ज्ञान उपार्जन करनार प्रसन्न-चंद्र राजर्षिनी जेम.

एटले नमस्कारवडे जाणवुं विगेरे दिनकृत्यमां कह्युं छे ते प्रमाणे करवुं ते. गौरव एटले ऋद्धिगौरव, रसगौरव अने सातागौरव, अथवा जात्यादिक आठ मेद. संज्ञा एटले चार, दश के पंदर प्रकारनी कही छे ते. कषाय एटले क्रोध, मान, माया अने लोभ, ए चार प्रकारे कह्या छे ते. दंड

---

१ जाति, कुळ, रूप, बळ, श्रुत, तप, लाभ, अने ऐश्वर्यनो मद करवो ते.

२ आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रहसंज्ञा.

३ आहार, भय, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, लोक अने ओघसंज्ञा.

४ आहार, भय, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, ओघ, सुख, दुःख, मोह, विचिकित्सा, शोक अने धर्म. आमां लोकसंज्ञा मेळवीए तो सोळपण थाय छे.

५ आ क्रोधादिक दरेक चार चार प्रकारना छे.—अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण अने संज्वलन. तेथी तेना सोळ भेद थाय छे. ए दरेकना चार चार प्रतिभेदो होवाथी कुल चोसठ प्रकार थाय छे. जेम अनंतानुबंधी क्रोध अनंतानुबंधी क्रोध सदृश अतितीव्र होय छे. अनंतानुबंधी क्रोध अप्रत्याख्यानावरण क्रोध सदृश कांइक मंद होय छे, अनंतानुबंधी क्रोध प्रत्याख्यानावरण क्रोध सदृश कांइक वधारे मंद होय छे अने अनंतानुबंधी क्रोध संज्वलन क्रोध सदृश अत्यंत मंद होय छे. एज प्रमाणे अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, प्रत्याख्यानावरण क्रोध अने संज्वलन क्रोधना चार चार प्रकार करवा. एज रीते मान, माया अने लोभना पण सोळ सोळ प्रकार करवा.

त्रण प्रकारे कह्या छे ते. मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्ति तथा इर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदाननिक्षेपसमिति, अने पारिष्ठापनिका समिति ए पांच प्रकारनी समिति. आ सर्वना अतिचारनी अहीं निंदा करवानी छे. ३५.

## समकितनुं महात्म्य—

मू०—सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि।
अप्पो सि होइ बंधो, जेणं न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥

### शब्दार्थः—

सम्मदिट्ठी—सम्यग्दृष्टि
जीवो—जीव
जइवि—जो के
हु—पण
पावं—पाप
समायरे—करे
किंचि—थोडुं
अप्पो—थोडो
सि—तेने
होइ—होय
बंधो—बंध
न—नहिं
जेणं—कारण के
निद्धंधसं—निर्दयपणे
कुणइ—करे

**भावार्थः**—जो के सम्यग्दृष्टि गृहस्थ श्रावक पोतानो निर्वाह

---

१ मनदंड, वचनदंड अने कायदंड. अथवा मायाशल्य, निदानशल्य अने मिथ्यादर्शनशल्य ए पण दंड कहेवाय छे. प्राणी जे वडे धर्मरूपी धननो नाश—अपहार करी दंडाय ते दंड कहेवाय छे.

बीजी रीते नहीं चालवाथी खेती विगेरे कांइक पापकारी आरंभ करे छे-तेने तेवो आरंभ करवो पडे छे, तो पण तेने प्रथमना त्रण गुणस्थानकनी अपेक्षाए ज्ञानावरणीयादिक कर्मोनो अल्प बंध थाय छे. कारण के ते श्रावक तेवो आरंभ पण अति निष्ठुरपणे करतो नथी. ३६.

**मू०—तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।**
**खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥**

**शब्दार्थ—**

**तंपि**—तेने पण
**हु**—निश्चये
**सप्पडिक्कमणं**—प्रतिक्रमण वडे
**सप्परिआवं**—पश्चाताप वडे
**सउत्तरगुणं**—गुरुए आपेला प्रायश्चित वडे
**खिप्पं**—जल्दी
**उवसामेई**—शांत करे
**वाहि**—व्याधिने
**व्व**—जेम
**सुसिक्खिओ**—सारो शीखेलो
**विज्जो**—वैद्य

**भावार्थ—**जेम सारो अनुभवी विद्वान वैद्य व्याधिने शीघ्रपणे दूर करे छे, तेम समकितधारी सुश्रावक पण ते अल्प कर्मबंधने पण प्रतिक्रमण द्वारा, पश्चात्ताप द्वारा अने प्रायश्चित्तरूप उत्तरगुण द्वारा दूर करे छे. ३७.

**ए अ बाबतमां बीजुं दृष्टांत आपे छे—**

**मू०—जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया ।**
**विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥**

## शब्दार्थ.

जहा—जेम
विसं—झेर
कुट्ठगयं—शरीरमां व्यापेलुं
मंतमूल—मंत्र अने जडीबूट्टीना
विसारया—जाणनारा
विज्जा—वैद्यो
हणंति—हणे छे
मंतेहिं—मंत्रो वडे
तो—तेथी
हवइ—थाय छे
निव्विसं—झेर रहित

**भावार्थ**—जेम गारुडिक मंत्र अने जडीबुट्टी विगेरे मूळने जाणनारा हुंशियार वैद्यो शरीरमां व्यापेला स्थावर के जंगम विषने मंत्रादिक वडे दूर करे छे, अने ते वख्ते तेनुं शरीर विष रहित थाय छे. ३८.

## दार्ष्टांतिक कहे छे—

**मू०—एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं ।**
**आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥**

## शब्दार्थः—

एवं—एवी रीते
अट्ठविहं—आठ प्रकारना
कम्मं—कर्मने
रागदोष—राग अने द्वेषथी
समज्जिअं—बांधेला
आलोअंतो—आलोवतो
निंदंतो—निंदतो
खिप्पं—जल्दीथी
हणइ—हणे छे
सुसावओ—सारो श्रावक

**भावार्थ—**ए ज प्रमाणे राग द्वेषथी बांधेला ज्ञानावरणीयादिक आठ प्रकारना कर्मने सुश्रावक गुरुनी पासे आलोचना करतो अने आत्म साक्षीए तेनी निंदा करतो छतो शीघ्रपणे खपावे छे—नाश करे छे. ३९.

## ए ज अर्थने विशेषथी कहे छे—

**मू०—कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे ।
होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥**

**कयपावो वि**—पापनो करनार पण
**मणुस्सो**—मनुष्य
**आलोइय**—आलोचीने
**निंदिअ**—निंदीने
**गुरुसगासे**—गुरुनी पासे
**होइ**—थाय छे
**अइरेग**—घणो
**लहुओ**—हळवो
**ओहरिअ**—उतारीने
**भरुव्व**—भारने (जेम)
**भारवहो**—भार उपाडनार

**भावार्थः—**जेनो भार उतार्यो होय एवो भार वहन करनार मजुर हळवो थाय छे, तेम पाप करनारो—पापना भारवाळो मनुष्य पण गुरु पासे आलोचना लइ तथा आत्म साक्षीए ते पापनी निंदा करी कर्मनो भार ओछो थवाथी हळवो थाय छे. ४०.

## प्रतिक्रमण करवानुं फळ—

**मू०—आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **आवस्सएण**—आवश्यक क्रिया-वडे | **बहुरओ**—घणां पापोवाळो |
| **एएण**—आ | **दुक्खाणं**—दुःखोनो |
| **सावओ**—श्रावक | **अंतकिरिअं**—नाश |
| **जइवि**—जो के | **काही**—करशे |
| **होइ**—होय | **अचिरेण**—थोडा |
| | **कालेण**—काळमां |

**भावार्थ**—जोके श्रावक घणी बंधाली कर्मरूपी रजवाळो होय छे अथवा बहुरत—सावद्य आरंभमां बहु रक्त—आसक्त होय छे, तो पण आ सामायिक १, चतुर्विंशतिस्तव २, वंदनक ३, प्रतिक्रमण ४, कायोत्सर्ग ५, अने प्रत्याख्यान ६ ए छ आवश्यक करवाथी थोडा वखतमां ज दुःखनो अंत करशे—मोक्ष पामशे. ४१.

इंद्रियोनी चपळताने लीधे अने जीवो अत्यंत प्रमादी होवाने लीधे थोडाएकज अपराध स्मरणमां आवी शके छे, अने आलोचना तो सर्वनी करवी जोइए. माटे विस्मरण थयेला अतिचारोनुं सामान्य रीते प्रतिक्रमण कहे छे.—

**मू०—आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले ।**
**मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥**

**शब्दार्थ—**

| | |
|---|---|
| **आलोअणा**—आलोचना | **न य संभरिआ**—न संभारी होय |
| **बहुविहा**—घणा प्रकारनी | **पडिक्कमण**—प्रतिक्रमण |

| | |
|---|---|
| काले—वखते | उत्तरगुणे—उत्तर गुण |
| मूलगुण—मूळगुण | गरिहामि—गर्हुं छुं |

**भावार्थ**—आलोचना एटले गुरुनी पासे पोताना दुश्चरित्र—अपराधो कहेवा ते, अने उपचारथी तेना कारणभूत प्रमादवाळी क्रिया पण आलोचना कहेवाय छे एटले के क्रियामां जे जे प्रमाद थया होय ते पण आलोचना कहेवाय छे, ते आलोचनाओ पांच अणुव्रतरूप मूळगुण अने सात गुणव्रतरूप उत्तरगुणने विषे घणा प्रकारनी होय छे, तेथी ते आलोचनानी निंदा गर्हा करवाने अवसरे जे आलोचना विस्मरण थइ होय तेनी आ गाथाथी निंदा गर्हा करवामां आवी छे. ४२.

## भावजिनने वंदना.—

**मू०—तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स,**
**अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए।**
**तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥**

## शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| तस्स—ते | विरओमि—अटक्यो छुं |
| धम्मस्स—श्रावक धर्मनी | विराहणाए—विराधनाथी |
| केवलि—केवळी भगवंते | तिविहेण—त्रण प्रकारे |
| पन्नत्तस्स—कहेला | पडिक्कंतो—प्रतिक्रमण करतो |
| अब्भुट्ठिओमि—हुं उठ्यो छुं | जिणे—जिनेश्वरने |
| आराहणाए—आराधनाने माटे | चउव्वीसं—चोवीशे |

**भावार्थ**—केवळीए प्ररूपेलो श्रावकधर्म के जे में गुरुनी पासे अंगीकार कर्यो छे, तेनी आराधना करवा माटे हुं सावधान थयो छुं, अने तेनी विराधनाथी निवृत्त थयो छुं, तथा मन, वचन अने काया ए त्रण प्रकारे अतिचार थकी निवृत्त थइने हुं ऋषभादिक चोवीश तीर्थंकरोने अने उपलक्षणथी पांच भरत, पांच ऐरवत अने पांच महाविदेह क्षेत्रना सर्व भाव तीर्थंकरोने हुं वांदुं छुं. ४३.

**॥ इति वंदित्ता सूत्र २२ ॥**

( पछी बे वांदणा दइने गुरुजीने खामणा देवा )

---

## ॥ २३ अथ अब्भुट्ठिओ (गुरुखामणा) सूत्र. ॥

**मू०—इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओ मि अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं ॥**

**शब्दार्थः—**

**इच्छाकारेण**—इच्छाए करी
**संदिसह**—आज्ञा आपो
**भगवन्**—हे भगवंत
**अब्भुट्ठिओ**—उठ्यो छुं
**अब्भिंतर**—अंदर
**देवसिअं**—दिवसना अपराधने
**खामेउं**—खमाववाने

**भावार्थ—**हे भगवान्! हुं दिवसमां उत्पन्न थयेला अतिचारने खमाववा तत्पर थयो छुं, तेथी आप इच्छा प्रमाणे मने आज्ञा आपो. त्यारे गुरु 'खामेह'—खमावो एम कहे. पछी शिष्य आ प्रमाणे बोले.—

**मू०—इच्छं, खामेमि देवसिअं।**

**इच्छं**–इच्छुं छुं
**खामेमि**–खमावुं छुं
**देवसिअं**–दिवस संबंधी अतिचारने

**भावार्थ**—हुं आपनी आज्ञा प्रमाणे करवा इच्छुं छुं, तेथी आपनी आज्ञानुसार दिवस संबंधी अतिचारने खमावुं छुं.

( पछी पंचांग प्रणाम करी मुखवस्त्रिकावडे मुख ढांकी आ प्रमाणे बोले. )

**मू०—जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा, बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न याणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥**

**शब्दार्थः—**

**जं किंचि**–जे कांइ
**अपत्तिअं**–अप्रीतिभाव
**परपत्तिअं**–विशेष अप्रीतिभाव
**भत्ते**–भोजनने विषे
**पाणे**–पाणीने विषे
**विणए**–विनयने विषे
**वेआवच्चे**–वैयावच्चने विषे
**आलावे**–एकवार बोलवामां
**संलावे**–वारंवार बोलवामां
**उच्चासणे**–उंचे आसने बेसवाथी
**समासणे**–सरखा आसने
**अंतरभासाए**–वच्चे बोलवाथी
**उवरिभासाए**–गुरुए कह्या पछी ते वातने विशेषपणे कहेतां.

जं किंचि—जे कांइ
मज्झ—मारे
विणय—विनय
परिहीणं—रहितपणुं
सुहुमं—सूक्ष्म
बायरं—बादर
तुब्भे जाणह—तमे जाणो छो
अहं—हुं
न याणामि—हुं जाणतो नथी
तस्स—ते
मिच्छामि-दुक्कडं—मारुं पाप नाश थाओ

भावार्थः—हे गुरु महाराज ! माराथी जे कांइ आपनी सामान्य के विशेष अप्रीति उत्पन्न थई होय, कया कया विषयमां ? ते कहे छे.— आहारमां, पाणीमां, आपनो अभ्युत्थानादिक विनय करवामां, औषध अने पथ्यादिक वैयावच्च करवामां, एकवार बोलवामां, परस्पर कथा करवारूप वारंवार बोलवामां, आपनाथी उंचा के समान आसनपर बेसवामां, आप बोलता हो तेनी वच्चे बोलवामां तथा आपना बोली रह्या पछी तरत ज ते विषय उपर विस्तारथी बोलवामां में जे कांइ विनय-रहितपणे सूक्ष्म एटले अल्प प्रायश्चित्तथी शुद्ध थाय तेवो के बादर एटले मोटा प्रायश्चित्तथी शुद्ध थाय तेवो अपराध कर्यो होय, के जे अपराध ज्ञानने लीधे आप जाणता हो, अने हुं अज्ञानने लीधे जाणतो न होउं, ते सर्व अतिचारनुं मारे मिथ्यादुष्कृत हो. ते पापनुं हुं मिथ्यादुष्कृत आपुं छुं.

गुरु १५, लघु १११, सर्व वर्ण १२६.

(आ रीते खामणा दइने, "आवस्सई" कहीने अवग्रहनी बहार आवीने "आयरिअ उवज्झाए" कहे )

## ॥ २४ अथ आयरिय उवज्झाए सूत्र ॥*

मू०—आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **आयरिय**–आचार्य | **जे मे**–जे मारे जीवे |
| **उवज्झाए**–उपाध्यायने | **केइ**–कोइ पण प्रकारनो |
| **सीसे**–शिष्योने | **कसाया**–कषाय |
| **साहम्मिए**–साधर्मिकने | **सव्वे**–सर्वने |
| **कुल**–एक आचार्यनो परिवार | **तिविहेण**–त्रण प्रकारे करी |
| **गणे अ**–घणां आचार्यनो परिवार | **खामेमि**–खमावुं छुं |

**भावार्थ**—आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साधर्मिक, कुळ अने गण एमांथी कोइना उपर में कांइपण कषाय कर्या होय, तो ते सर्वनी पासे हुं मन, वचन अने कायाए करीने क्षमा मागुं छुं. अहीं एक आचार्यनी आज्ञामां रहेनार साधुओनो समूह गच्छ कहेवाय छे, एवा घणा गच्छो भेळा गणीए तो एक कुळ थाय छे, अने घणा कुळ मळीने एक गण थाय छे.

मू०—सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ २ ॥

---

*आ सूत्रमां आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साधर्मिक, कुळ, गण, श्रमणसंघ, सर्वजीवो विगेरेनी एकी साथे क्षमा मागी छे, माटे सूत्र बोलती वखते बराबर उपयोग राखवामां आवे तो घणी कर्मनिर्जरा थाय छे.

## शब्दार्थ—

| | |
|---|---|
| **सव्वस्स**—सर्वना | **सव्वं**—सर्व अपराधने |
| **समणसंघस्स**—श्रमण संघरूप | **खमावइत्ता**—खमावीने |
| **भगवओ**—भगवंतना | **खमामि**—खमुं छुं |
| **अंजलिं करिअ**—बे हाथ जोडीने | **सव्वस्स**—सर्वना |
| **सीसे**—मस्तक उपर | **अहयं पि**—हुं पण |

**भावार्थ**—मस्तकपर बे हाथ जोडीने पूज्य एवा सर्व साधुसमुदायनो में जे कांइ अपराध कर्यो होय, ते सर्व अपराधनी क्षमा मागीने हुं पण तेमणे करेला सर्व अपराधने माफ करुं छुं. २.

**मू०—सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो।**
**सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥**

## शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **सव्वस्स**—सर्व | **नियचित्तो**—पोतानुं चित्त |
| **जीवरासिस्स**—जीवसमूहना | **सव्वं**—सर्व अपराधने |
| **भावओ**—भावथी | **खमावइत्ता**—खमावीने |
| **धम्म**—धर्मने विषे | **खमामि**—खमुं छुं |
| **निहिअ**—स्थाप्युं छे | **अहयंपि**—हुं पण |

**भावार्थ**—सर्व जीवराशिमांथी कोइनो में कांइ पण अपराध कर्यो होय, ते सर्व प्रत्ये मारा सर्व अपराधने हुं खमावुं छुं, अने भावथी धर्मने विषे चित्त राखीने हुं पण तेमणे करेला सर्व अपराधने माफ करुं छुं. ३.

गाथा ३, पद १२, गुरु १९, लघु ९१, सर्व वर्ण ११०,

(पछी नवकार, करेमिभंते, इच्छामिठामि काउस्सग्गं, तस्स उत्तरी, अन्नथ्थ ऊससिएणं, कहीने चारित्राचारनी विशुद्धि माटे बे लोगस्स या चार नवकारनो काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा सुधी करवो पछी प्रगट लोगस्स बोलवो. पछी)

## ॥ २९ अथ सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं ॥×

मू०—सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं, ॥ १ ॥ वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तियाए, सम्माणवत्तियाए, बोहिलाभवत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए, ॥२॥ सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं. ॥ ३ ॥

### शब्दार्थ—

**अरिहंत**—अरिहंतनी
**चेइयाणं**—प्रतिमाने
**करेमि**—करुं छुं
**काउस्सग्गं**—काउस्सग्ग
**वंदणवत्तियाए**—वांदवाने निमित्ते
**पूअण**—पूजन करवाथ
**सक्कार**—सत्कार करवाथी
**सम्माण**—सन्मान करवाथी
**बोहिलाभ**—बोधी बीजनो लाभ
**निरुवसग्ग**—मोक्ष पामवा माटे
**सद्धाए**—श्रद्धाथी
**मेहाए**—निर्मळ बुद्धिथी
**धिइए**—चित्तनी स्थिरताथी
**धारणाए**—धारणापूर्वक
**अणुप्पेहाए**—वारंवार विचारीने
**वड्ढमाणीए**—वधती—वृद्धि पामती

**भावार्थ**—अरिहंतनी प्रतिमाने वंदना करवा माटे हुं कायोत्सर्ग करुं छुं. एटले के प्रभुने वंदना करवाथी जे फल प्राप्त थाय, ते मने कायोत्सर्ग करवाथी थाय. तथा जिनेश्वर भगवाननी पूजा करवाथी जे फळ थाय तेने माटे, तथा जिनप्रतिमाने आभूषणादिकवडे सत्कार करवाथी

× आ सूत्रमां स्थापना जिननी स्तुति छे.

जे फळ थाय तेने माटे, तथा प्रभु पासे भक्तिपूर्वक गीत, गान, स्तुति विगेरेरूप सन्मान करवाथी जे फळ थाय तेने माटे, तथा बोधिनी प्राप्तिने माटे एटले परभवमां जिनधर्मनी प्राप्ति थवा माटे, तथा उपसर्ग-रहित एवा मोक्षस्थानने मेळववा माटे हुं कायोत्सर्ग करुं छुं. वळी हुं वृद्धि पामती शुद्ध श्रद्धावडे, निर्मळ बुद्धिवडे, धीरजवडे एटले शांत चित्तवडे, धारणावडे एटले जिनेश्वरना गुणोने हृदयमां धारण करवावडे, तथा तेमना गुणोनो वारंवार विचार करवावडे, हुं कायोत्सर्ग करुं छुं.

संपदा ३. पद १५. गुरु १७. लघु ७६. सर्ववर्ण ९४.

( अन्नथ्य ऊससिएणं कहीने, दर्शनाचार विशुद्धि माटे एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा सुधी करी. पारी " पुक्खरवरदीवड्ढे " कहेवुं)

## ।। २६ अथ पुक्खरवरदीवड्ढे वा श्रुतस्तव *सूत्रम् ।।

(आर्यागीति)

**मू०—पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ।**
**भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।। १ ।।**

**शब्दार्थ—**

**पुक्खरवर**—पुष्करवर नामना
**दीवड्ढे**—अडधा द्वीपमां
**धायइसंडेअ**—धातकी खंडमां
**जंबुदीवे**—जंबुद्वीपमां
**भरह**—भरत
**एरवय**—ऐरवत
**विदेहे**—महाविदेह क्षेत्रमां
**धम्माइगरे**—धर्मनी शरुआत करनारने
**नमंसामि**—नमस्कार करुं छुं.

* आमां श्रुतिनी स्तुति होवाथी आ श्रुतस्तव कहेवाय छे.

**भावार्थ**—अर्ध पुष्करवर द्वीपमां, घातकीखंडमां अने जंबुद्वीपमां कुल पांच भरत, पांच ऐरवत अने पांच महाविदेह क्षेत्र छे, तेमां रहेला सर्व तीर्थंकरोने हुं नमस्कार करुं छुं. १.

**आ रीते प्रथम अरिहंतनी स्तुति करी, हवे त्रण गाथावडे श्रुतनी स्तुति करे छे.**

**मू०—तमतिमिरपडलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स ।**
**सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥**

**शब्दार्थः—**

**तम**—अज्ञानरूपी
**तिमिर**—अंधकारना
**पडल**—समूहनो
**विद्धंसणस्स**—नाश करनारने
**सुरगण**—देवताओनो समूह
**नरिंद**—चक्रवर्तिवडे
**महियस्स**—पूजायेल
**सीमा**—मर्यादामां
**धरस्स**—राखनार
**वंदे**—वांदुं छुं
**पप्फोडिअ**—तोडी नांखी छे
**मोह**—मोहरूपी
**जालस्स**—जाळने

**भावार्थ**—अज्ञानरूपी अंधकारना समूहनो नाश करनार, देवेंद्रो अने नरेंद्रोए पूजेला, सर्वने मर्यादामां राखनार अने मोहरूप जाळने तोडी नांखनार एवा श्रुतने हुं वांदुं छुं. २.

## ( वसन्ततिलकावृत्तम् । )

मू०—जाईजरामरणसोगपणासणस्स,
कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स ।
को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स,
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥

शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **जाइ**—जन्म | **को**—कोण |
| **जरा**—घडपण | **देव**—देवता |
| **मरण**—मरण | **दाणव**—दानव |
| **सोग**—शोकनो | **नरिंद**—चक्रवर्तिना |
| **पणासणस्स**—नाश करनार | **गण**—समूह |
| **कल्लाण**—कल्याणकारी | **अच्चिअस्स**—पूजायेल |
| **पुक्खल**—संपूर्ण | **धम्मस्स**—श्रुत धर्मना |
| **विसाल**—विशाळ | **सारं**—तत्त्वने |
| **सुह**—मोक्ष सुखने | **उवलब्भ**—पामीने |
| **आवहस्स**—आपनार | **करे पमायं**—प्रमाद करे ? |

**भावार्थ**—जन्म, जरा—वृद्धावस्था, मृत्यु अने शोकने नाश करनार, कल्याणकारक अने अत्यंत विसाळ सुख, जे मोक्ष, तेने आप-नार तथा देवेंद्रो, असुरेंद्रो अने नरेंद्रोए पूजेला एवा श्रुतधर्मना सारने—

रहस्यने पामीने कोण बुद्धिमान प्राणी प्रमाद करे ? कोइ पण प्रमाद न करे. ३.

( शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् । )

मू०—सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे,
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए ।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं,
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥

शब्दार्थः—

**सिद्धे**—सिद्ध एवा
**भो**—हे ज्ञानवंत लोको
**पयओ**—आदर सहित
**णमो**—हुं नमस्कार करुं छुं
**जिणमए**—जिनमतने
**नंदी**—वृद्धि थाओ
**सया**—हंमेशां
**संजमे**—चारित्र धर्मने विषे
**देवं**—वैमानिक देव
**नाग**—भवनपति देव
**सुवन्न**—ज्योतिषी देव
**किन्नर**—व्यंतर देवना
**गण**—समूहथी
**सब्भूअभाव**—सत्य भाव वडे
***अच्चिए**—पूजाएला
**लोगो**—त्रण काळनुं ज्ञान
**जत्थ**—जेमां
**पइट्ठिओ**—रहेल छे
**जगमिणं**—आ जगतनुं
**तेलुक्क**—त्रण लोकरूप

*चतुर्थी विभक्ति लइए तो जिनमतनुं विशेषण पण थइ शके छे.

| | |
|---|---|
| **मच्च**—मनुष्य लोक | **विजयओ**—विजयवंत |
| **असुरं**—देव लोक | **धम्म**—धर्म |
| **धम्मो**—श्रुत धर्म | **उत्तरं**—विशेष अने विशेष |
| **वड्ढउ**—वृद्धि पामो | **वड्ढउ**—वृद्धि पामो |
| **सासओ**—शाश्वतो | |

**भावार्थ**—हे ज्ञानवंत भव्यजनो ! हुं आदरवाळो थइने एटले आदर पूर्वक सर्व नय प्रमाणथी सिद्ध एवा जिनमतने—जिनसिद्धांतने नमस्कार करुं छुं. कारण के जिनमतथी ज देवो, नागकुमारो, सुवर्ण-कुमारो अने किन्नरो विगेरे सर्व देवोए पण शुद्ध भावथी पूजेला एवा चारित्रधर्मनी पण निरंतर वृद्धि थाय छे. वळी जे जिनमतने विषे त्रण-काळनुं ज्ञान तथा मनुष्य, असुर अने उपलक्षणथी सर्व देवो तिर्यंचो अने नारकीओए त्रण लोकरूप आ समग्र जगत प्रतिष्ठित छे एटले के ते सर्वनुं ज्ञान जिनागमने विषे ज रहेलुं छे, आवो शाश्वत जिनमत विजय पामवाथी वृद्धि पामो अने तेनी वृद्धिवडे चारित्रधर्म पण वृद्धि पामो. ४.

**मू०—सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए०॥**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **सुअस्स**—श्रुत धर्म | **करेमि**—करुं छुं |
| **भगवओ**—पवित्र | **काउस्सग्गं**—काउस्सग्गं |

**भावार्थ**—श्रीजिनभाषित श्रुत–आगम सर्वथा प्रकारे पवित्र अने पूज्य छे, तेनां वंदनादिकने निमित्ते हुं कायोत्सर्ग करुं छुं.

पद १६. संपदा १६. गाथा ४. गुरु ३४. लघु १८२. सर्ववर्ण २१६.

वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, कहीने (अन्नथ्थ ऊससिएणं कहेवुं, ज्ञानाचारनी विशुद्धि माटे ) एक लोगस्स (अथवा चार नवकार)नो चंदेसु निम्मलयरा सुधी काउस्सग्ग करवो, पछी काउस्सग्ग पारवो, पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कहेवुं.

## २७ ×सिद्धाणं, बुद्धाणं वा सिद्धस्तव सूत्र.

**मू०—सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरागयाणं ।**
**लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥**

### शब्दार्थः—

**सिद्धाणं**–सिद्धोने
**बुद्धाणं**–बुद्धोने
**पारगयाणं**–संसार समुद्रना पार पामेलाने
**परंपरगयाणं**–अनुक्रमे मोक्षे पहोंचेलाने
**लोअग्गं**-लोकना अग्र भागने
**उवगयाणं**–पामेलाने
**नमो**–नमस्कार थाओ
**सया**–हंमेशां
**सव्व**–बधां
**सिद्धाणं**–सिद्धोने

---

×आ सूत्र वडे सिद्धोनी स्तुति करी छे तेथी ते सिद्धस्तव कहेवाय छे. आमांनी पहेली गाथा वडे समग्र सिद्धोनी स्तुति करी छे. बीजी अने त्रीजी गाथामां वर्त्तमान तीर्थना अधिपति श्रीवर्धमानस्वामीनी स्तुति करी छे, चोथी गाथामां गिरनारपर रहेला श्रीनेमिनाथनी स्तुति करी छे. अने पांचमी गाथामां अष्टापद पर्वतपर रहेला चोवीशे तीर्थंकरोनी स्तुति करी

**भावार्थः**—जेणे सर्व कार्य सिद्ध कर्यां छे, जेणे सर्व भावो जाण्या छे, जे संसारसमुद्रना पारने पामेला छे, जे गुणस्थानना क्रमे मोक्ष सुधी चडेला छे अने जे लोकना अग्रभागमां जइ रहेला छे, ते सर्व सिद्धना जीवोने मारो निरंतर नमस्कार छे. १.

**मू०—जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।**
**तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥**

## शब्दार्थः—

**जो**—जे
**देवाण वि**—देवोना पण
**देवो**—देव छे
**जं**—जेमने
**देवा**—देवताओ
**पंजली**—बे हाथ जोडीने
**नमंसंति**—नमस्कार करे छे
**तं**—ते
**देवदेव**—देवना देव (इंद्र) वडे
**महिअं**—पूजाएला
**सिरसा**—मस्तक वडे
**वंदे**—वांदुं छुं

**भावार्थ**—जे देवोना पण देव छे अने जेने देवो हाथ जोडीने नमस्कार करे छे. वळी देवोना पण देव जे इंद्रादिक तेमणे पण जे पूजेला छे, ते श्रीमहावीरने हुं मस्तक नमावीने वांदुं छुं.

---

छे. तथा ए गाथा वडे जूदी जूदी वंदना पण करेली छे ते जाणवानी इच्छावाळाए चैत्यवंदन भाष्य जोवुं.

मू०—इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥

## शब्दार्थ—

इक्को वि–एक पण
नमुक्कारो–नमस्कार
जिणवर–जिनवरोमां
वसहस्स–श्रेष्ठ एवा
वद्धमाणस्स–वर्धमान स्वामीने

संसार–संसार रूप
सागराओ–समुद्रथी
तारेइ–तारे छे
नरं व–पुरुषने अथवा
नारिं वा–अथवा स्त्रीने

**भावार्थ**—श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी विगेरे जिनोने मध्ये वर एटले प्रधान अर्थात् केवळज्ञानी, तेमने विषे पण वृषभ समान–श्रेष्ठ एटले तीर्थंकर पदवीने पामेला एवा श्रीवर्धमानस्वामीने एक ज वार जो नमस्कार कर्यो होय, तो ते नमस्कार करनार पुरुष के स्त्रीने (तथा कृत्रिम नपुंसकने पण ) संसाररूपी समुद्रथी तारे छे. ३.*

मू०—उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥

---

*आ त्रण गाथाओ श्रीगणधर रचित छे, तेथी ते अवश्य कहेवानी छे. त्यार पछीनी बे गाथाओ चूर्णिमांनी छे, ते पण गुरु परंपरागत होवाथी कहेवानी छे.

### शब्दार्थ—

| | |
|---|---|
| **उज्जिंत**—गिरनार | **जस्स**—जेमना |
| **सेल**—पर्वतना | **तं**—ते |
| **सिहरे**—शिखर उपर | **धम्म**—धर्मना |
| **दिक्खा**—दिक्षा कल्याणक | **चक्कवट्टिं**—चक्रवर्ति एवा |
| **नाणं**—केवळज्ञान कल्याणक | **अरिट्ठनेमिं**—श्री नेमनाथने |
| **निसीहिआ**—मोक्ष कल्याणक | **नमंसामि**—नमस्कार करुं छुं |

**भावार्थ**—श्रीगिरनार पर्वत पर जे प्रभुनां दीक्षा, केवळज्ञान अने निर्वाण ए त्रण कल्याणक थयां छे, ते धर्मचक्रने प्रवर्तावनार श्रीअरिष्टनेमि प्रभुने हुं नमस्कार करुं छुं. ४.

**मू०—चत्तारि अट्ठ दस दो, अ वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं ।**
**परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥**

### शब्दार्थ—

| | |
|---|---|
| **चत्तारि**—चार | **परमट्ठ**—परमार्थ वडे |
| **अट्ठ**—आठ | **निट्ठि**—सिद्ध थया छे |
| **दस**—दश | **अट्ठा**—अर्थ जेमना |
| **दो**—बे | **सिद्धा**—सिद्ध थयेला |
| **अ**—अने | **सिद्धिं**—मोक्ष |
| **वंदिआ**—वंदायेल | **मम**—मने |
| **जिणवरा**—जिनेश्वरो | **दिसंतु**—आपो |
| **चउव्वीसं**—चोवीस | |

**भावार्थ**—चार, आठ, दश अने बे ए सर्व मळीने चोवीश तीर्थंकरो अष्टापद पर्वतपर रहेला छे, तेमने में वांद्या छे, तेमने परमार्थथी कांइ पण कार्य करवानुं बाकी रह्युं नथी, तथा तेओ सिद्धिपदने पामेला छे. तेओ मने मोक्ष आपनारा थाओ. ५.

पद २०. संपदा २०. गाथा ५. गुरु २५. लघु १५१. सर्ववर्ण १७६

पछी छट्ठा आवश्यकनी दृष्टि पडिलेहणा करी मुहपत्ति पडिलेही बे वांदणा देवा, पछी "सामायिक, चउविसत्थो, वांदणां, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण कर्युं छे जी." पछी "आवस्सइ" कही अवग्रहनी बहार नीकळीने बोलवुं. **इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं** कही.

अमे गुरु आज्ञाने इच्छीए छीए, क्षमाश्रमणोने नमस्कार थाओ.

## ॥ पछी नमस्कार बोलवो ॥

## ( अनुष्टुप् छंद )

**मू०—नमो दुर्वाररागादि–वैरिवारनिवारिणे ।**
**अर्हते योगिनाथाय, महावीराय तायिने ॥ १ ॥**

**शब्दार्थः—**

**नमो**—नमस्कार थाओ,
**दुर्वार**—दुःखथी अटकावाय,
**रागादि**—राग आदि
**वैरि**—शत्रुओना
**वार**—समूहने
**निवारिणे**—दूर करनार
**अर्हते**—अरिहंतने
**योगिनाथाय**—योगीओना स्वामिने
**महावीराय**—महावीरने
**तायिने**—छ-कायना जीवने रक्षण करनारा

**भावार्थः**—महान् दुःखथी अटकावी शकाय एवा राग--द्वेष--मोह आदि महान् शत्रुओना समुदायने रोकवावाळा, तथा पृथ्वी आदि छ काय जीवोना रक्षण करवावाळा, अने योगीओना स्वामी एवा अरिहंत भगवंत परम तीर्थंकर, श्री महावीर स्वामीने नमस्कार थाओ. १.

## ( आर्या छंद )

**मू०—मंदिरगिरिवरधीरः, प्राप्तभवापारनीरनिधितीरः ।**
**निर्ज्जितमन्मथवीरः, श्रियेऽस्तु स श्रीमहावीरः ॥ २ ॥**

### शब्दार्थः—

**मंदिर**—मंदराचळ पर्वत (मेरु)
**गिरि**—पहाड
**वर**—श्रेष्ठ
**धीरः**—धीरजवाळा
**प्राप्त**—पामेला,
**भव**—संसार
**अपार**—कांठो नथी जेनो
**नीर**—पाणी
**निधि**—भंडार
**तीरः**—कांठो
**निर्ज्जित**—जीत्यो छे
**मन्मथ**—कामदेव
**वीरः**—वीर
**श्रिये**—कल्याण माटे
**अस्तु**—हो
**स**—ते
**श्रीमहावीर**—वीर भगवान

**भावार्थः**—मेरु पर्वत जेवा धीर अने महा मुश्केलीए पण पार न पमाय तेवा संसाररूप समुद्रने तरी गयेला तथा कामदेव रूप वीरने जीतनार एवा श्री महावीर स्वामी अमने कल्याण करो २.

## ( उपजातिवृत्तम् )

मू०—सर्व्वे जिनास्तुल्यगुणैर्नमस्याः, समत्वभावेन जगत्प्रशस्याः।
तथापि वीरं निकटोपकारं, तीर्थेश्वरं नौमि सदा मुदारं ॥३॥

### शब्दार्थ—

सर्व्वे—बधां
जिनाः—जिनेश्वरो
तुल्य—समान
गुणैः—गुणोवडे
नमस्याः—नमस्कार करवा योग्य
समत्व—सरखापणाना
भावेन—भाववडे
जगत्—लोकमां
प्रशस्याः—वखाणवा लायक
तथापि—छतां पण
वीरं—वीरने
निकट—नजीकना
उपकारं—उपकारीने
तीर्थेश्वरं—तीर्थना स्वामिने
नौमि—नमस्कार करुं छुं
सदा—हंमेशां
मुदारं—हर्षथी

**भावार्थ**—बधां जिनेश्वरो पोत-पोतानां गुणोवडे नमस्कार करवां योग्य छे अने समभावथी आखा जगत्ना मनुष्योथी वखाणवा योग्य छे, छतां पण नजीकना उपकारी तथा शासनना नायक श्री महावीर स्वामीने हंमेशां अत्यंत आनंदथी नमस्कार करुं छुं. ३.

( ए ज प्रमाणे नमस्कार करी, पछी "नमुथ्थुणं" तथा बे खमासमणा दइ स्तवन संदिसाएमि, स्तवन भणेमि कहीने नवकार मंत्र गणीने स्तवन कहेवुं.

## ॥ अथ श्री शांतिनाथजीनुं स्तवन ॥

१अहिपुरमंडन सोलमो, जिनवर कंचन कांति रे। निरखिये मूरति स्वामिनी, २हियडले लागी३ छे खांति रे॥ १॥ शान्तिजिन सांभलो विनति, माहरी परमदयाल रे । तुम्ह विणु कोइ बीजो नहि, सेवकजन प्रतिपाल रे ॥ शां० ॥ २ ॥ दुल्लहो माणुस भव लह्यो, आरजक्षेत्र अवतार रे ॥ जनम श्रावक कुले मुज थयो, सांभल्यो धर्म आचार रे ॥ शां० ॥ ३ ॥ पंचमा कालने४ दुषणे, बहु मत ५जिनमत ठाण रे ॥ तिणे भ्रमे भूलो ए प्राणियो, नविलहे ६प्रवचन वाण रे ॥ शां० ॥ ४ ॥ ७अविरति देवदेवी नमे, ८सुगुरु ९कुगुरु १०समतोल रे ॥ धर्म ११सावद्य १२भाषे सदा, १३रंजए कुगुरु १४कुबोल रे ॥ शां० ॥ ५ ॥ १५जिनमती जिनमती नवि मिले, निंदए मांहोमांही रे ॥ १६छंडी समता ममता धरे, १७पाडए लोक प्रवाह रे ॥ शां० ॥ ६ ॥ मोहराजा १८परीवारस्युं, राग ने द्वेष वलि

---

१ नागोर शहेर, २ हृदयमां, ३ लागणी, ४ हुंडा अवसर्पिणीकाल विगेरे दोषो, ५ जैनशासनमां, ६ सिद्धांतनी वाणी, ७ देशविरति अथवा सर्वविरति चारित्रथी रहित एटले त्याग नियम विनाना, ८ आरंभ परिग्रहादिकना त्यागी. ९ आरंभादिकने सेवन करनार, १० सरखा, ११ पापकारी, १२ कहे, १३ खुशी करे, १४ असत्य वाणीथी—कुयुक्तिओथी, १५ जिन प्रणित सिद्धांतने स्वीकारनार पुरुषोनो विचार मांहोमांहे मले नहि, १६ त्याग करी--छोडी, १७ पोते लोकप्रवाहमां पडेलो "साचुं जुठुं जोया विना बहु मनुष्य जे आचरे" तेने लोकप्रवाह कहिये, ते लोकप्रवाहमां बीजाने पण नाखे छे, १८ त्याग करशुं,

काम रे ॥ पूठे लागा भमे १अहनिसे, २शुद्ध छंडावए ठाम रे ॥शां० ॥७॥ ३विषय ४कषाय ने ५काठिया, ६वंचए पंच ७प्रमाद रे ॥ एहतणो भय तो टले, जो तुमे करो ८प्रसाद रे ॥ शां० ॥८॥ हवे तुम्ह ९शरण ले आविओ, १०वज्रपिंजर सम जाण रे ॥ आगे ११पारेवडो राखिओ, १२आपणा प्राणने प्राण रे ॥ शां० ॥ ९ ॥ हुं सदा सेवक तुम तणो, तुम्हे प्रभु १३जगतआधार रे ॥ तुम्ह सम त्रिभुवन को नही, जीवने अभय दातार रे ॥ शां० ॥ १० ॥ ( कलश ) इम नागपुरवर भविय-मनहर शांतिजिनवर सामिय ॥ बहु दिवस केरो हर्ष पहुतो तुम्ह दरिसण पामीय तुम्ह सरण आव्यो १४द्रव्य भावत सहु अ वैरीभय टल्या ॥ पार्श्वचंद्रसूरि १५पभणे १६हर्ष विगुणे मन १७मनोरह सवि फल्या ॥ ११ ॥

---

अथवा परिवारथी युक्त, १ दररोज, २ सुधीना ( शुद्ध ) स्थानने छोडावे छे, ३ पांच इंद्रियना विषय, विषय--प्राणी जेथी फसाय, पोतानो भान भुले, ४ कषाय सोळ छे, संसारनी वृद्धि करावे तेनु नाम कषाय, ५ काठिया धर्म करवामां अडचण करावनारा ते काठिया, ६ ठगनारा-आत्मधर्म धन लूंटनारा, ७ जीवने कुगति आपे, संसारमां रखडावे ते प्रमाद, तेना भेद ५-मद, विषय, कषाय, निन्दा, अने विकथा, ८ महेरबानी, ९ आधार, १० वज्रना पांजरा सरखो जाणीने, ११ कबूतर, १२ पोताना प्राणथी पण प्रीय गणी तेनी रक्षा करी-बचाव्यो. १३ मुख्य स्वामी जगतना एक आप छो, १४ बाह्य अभ्यंतर शत्रुओनो भय मट्यो, १५ कहे, १६ हर्षथी वृद्धि पामेल छे आत्मगुणो ते जेना, १७ मनोरथ-इच्छित, सर्व फलीभूत थया.

## २८ अथ जय वीयराय सूत्र.×

आर्या छन्द.

मू०—जय वीयराय! जगगुरु! होउ मम तुह पभावओ भयवं।
भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥

### शब्दार्थ—

| | |
|---|---|
| **जय**—जय पामो | **भयवं**—हे भगवन् |
| **वीयराय**—हे वीतराग! | **भव**—भवनुं |
| **जगगुरु**—हे जगतना गुरु! | **निव्वेओ**—उदासीनपणुं |
| **होउ**—होजो | **मग्गाणुसारिआ**—मार्गानुसारीपणुं |
| **मम**—मने | **इट्ठफल**—वांछित फलनी |
| **तुह**—तमारा | **सिद्धी**—प्राप्ति |
| **पभावओ**—प्रभावथी | |

**भावार्थ**—हे वीतराग! एटले रागद्वेषरहित जगद्‌गुरु! तमे जय पामो तथा हे भगवान! तमारा प्रभावथी मने संसारपर वैराग्य थाओ, मार्गानुसारीपणु प्राप्त थाओ अने वांछित फळ (शुद्ध आत्मधर्म) नी सिद्धि थाओ. १.

मू०—लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च।
सुहगुरुजोगो तव्वय-णसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

---

× आ सूत्र प्रार्थनास्वरूप छे. पाछळनी त्रण गाथा क्षेपक छे.

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **लोगविरुद्ध**—लोक विरुद्धनो | **सुहगुरु**—सारा गुरुनो |
| **च्चाओ**—त्याग | **जोगो**—मेळाप |
| **गुरुजण**—वडिल जननी | **तव्वयण**—तेमना वचननी |
| **पूआ**—पूजा | **सेवणा**—सेवा |
| **परत्थकरणं**—परोपकार करवो | **आभवं**—जीवनपर्यंत सुधी |
| **च**—अने | **अखंडा**—अखंडितपणे |

**भावार्थः**—तथा हे प्रभु ! आपना प्रभावथी मारे लोकमां जे कार्य विरुद्ध कहेवातुं होय तेनो त्याग होजो, माता, पिता विगेरे गुरुजननी पूजा-सेवा होजो, परोपकार करी शकुं एवी शक्ति होजो, सद्गुरुनो संयोग-समागम होजो, तथा ते सद्गुरुना वचननुं सेवन एटले पालन होजो, आ सर्व मने भवपर्यंत एटले ज्यां सुधी मारे भव करवा पडे, त्यां सुधी अर्थात् मुक्ति पामुं त्यां सुधी अखंडपणे होजो—अस्खलितपणे होजो.२.

**मू०—वारिज्जइ जइवि नियाण-बंधणं वीयराय ! तुह समए ।**
**तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **वारिज्जइ**—ना पाडी छे | **बंधणं**—बांधवानी |
| **जइवि**—जो के | **वीयराय**—हे वीतराग ! |
| **नियाण**—नियाणुं | **तुह**—तमारा |

**समए**—शास्त्रमां
**तहवि**—तो पण
**मम**—मने
**हुज्ज**—होजो
**सेवा**—सेवा
**भवे भवे**—भवोभवने विषे
**तुम्ह**—तमारा
**चलणाणं**—चरणनी

**भावार्थ**—हे वीतराग प्रभु ! जो के तमारा शासनमां नियाणुं करवानी ना कही छे एटले के कांई पण शुभ अनुष्ठान कर्युं होय ते बदल अमुक फळ मागवुं तेनुं नाम नियाणुं कहेवाय छे. तेनो शास्त्रमां निषेध कर्यो छे, तोपण हुं तो याचना करुं छुं के—मारे भवभवने विषे एटले दरेक जन्ममां तमारा चरणनी सेवा होजो. ३.

**वळी बीजी योजनाओ आ प्रमाणे करे छे—**

**मू०—दुक्खखओ कम्मखओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो य।**
**संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणामकरणेणं ॥ ४ ॥**

**शब्दार्थः—**

**दुक्खखओ**—दुःखनो
**कम्मखओ**—कर्मनो क्षय
**समाहि**—समाधि
**मरणं**—मरण
**बोहि**—समकितनो
**लाभो य**—लाभ
**संपज्जउ**—प्राप्त थाओ
**मह**—मने
**एअं**—ए
**तुह**—तमने
**नाह**—हे नाथ !
**पणाम**—प्रणाम
**करणेणं**—करवाथी

**भावार्थः**—वळी हे नाथ ! मारा मन अने शरीरसंबंधी दुःखनो क्षय थाओ, कर्मनो क्षय थाओ, समाधिमरण एटले पंडित मरण थाओ अने बोधिनो एटले समकित धर्मनी प्राप्तिनो लाभ थाओ. आ सर्व तमने प्रणाम करवाथी ज मने प्राप्त थाओ. ४.

**मू०—सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।**
**प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥**

शब्दार्थः—

**सर्वमंगल**—सर्व मंगळिकोमां
**मांगल्यं**—मंगळरूप
**सर्वकल्याण**—सर्व कल्याणनुं
**कारणं**—कारण
**प्रधानं**—प्रधान एवुं
**सर्वधर्माणां**—सर्व धर्मोमां
**जैनं**—जैन
**जयति**—जय पामे छे
**शासनं**—शासन

**भावार्थः**—जिनेश्वरनुं शासन जयवंत वर्ते छे एटले शाश्वतुं छे केमके ते लौकिक अने लोकोत्तर, सर्व मंगळोनुं पण मंगळरूप छे, स्वर्ग-मोक्षादिक सर्व कल्याणोनुं मूळ कारण छे, अने दुनियाना सर्व धर्मोने मध्ये आ जिनधर्म सर्वोत्कृष्ट छे.

संपदा २०. गाथा ५. पद २०. गुरु १९. लघु १७२.
सर्ववर्ण १९१.

१ इच्छामि० इच्छाकारेण० श्रीआचार्य वांदुजी. २ इच्छामि० इच्छाकारेण० श्री उपाध्याय वांदुजी. ३ इच्छामि० इच्छाकारेण० सर्व साधुजीने त्रिकाल वंदना होज्योजी. ४ इच्छामि० इच्छाकारेण० देवसिअ प्रायश्चित्त विशोधनार्थं काउस्सग्गं करेमि ॥ इच्छं ॥ देवसिअ प्रायश्चित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नथ्थऊससिएणंनो पाठ कही, चार लोगस्स अथवा १६ नवकारनो काउस्सग्ग करवो, काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही.

१ इच्छामि० इच्छाकारेण० बेसणे संदिसाएमि. २ इच्छामि० इच्छाकारेण० बेसणे ठाएमि. ३ इच्छामि० इच्छाकारेण० सज्झायं संदिसाएमि. ४ इच्छामि० इच्छाकारेण० सज्झायं करेमि ॥ इच्छं ॥

( एम कही नवकार गणी बेठा सज्झाय भणिये गुणिये. )

## ॥ अथ विनयनी सज्झाय ॥

" भोलिडा हंसारे विषय न राचिये "—ए देशी.

॥ श्रीगुरु गौतम गुण हियडे धरी, कहिसुं विनय विचार ॥ स्वामी सोहमगणधर दाखवे, उत्तराध्ययन मझार ॥१॥ विनय करीजे रे भवियण भावसुं, जेहथी लहिए रे [1]नाण ॥ अनुक्रमे समकित चारित्र गुण ग्रही, पामीजे [2]निर्वाण ॥२॥ वि० ॥

१ ज्ञान, २ मोक्ष.

गुरुनी पासे रे रहिये सर्वदा, [3]वहिए गुरुनी रे [4]सीख ॥ काज करीजेरे वंछीत गुरुतणुं, तो हुवे [5]सफली [6]दीख ॥३॥ वि० [7]कुहिए काने रे जेवी कूतरी, काढे घरथी रे, [8]लोय ॥ तिम अविनीतने काढे [9]गच्छथकी, जस [10]सौभाग्य न होय ॥४॥ वि०॥ सूअर छंडी रे [11]कुंडु [12]कणतणुं, [13]राचे [14]विष्टा रे पूर ॥ [15]अविनय राचे रे तिम [16]अविनीत जे, परिहरे संयम दूर ॥ ॥ ५ ॥ ए संभारी रे अविनय [17]भावना, विनय करे गुण जाण ॥ तेहने श्रीगुरु सूत्र अरथ कहे, ए जिनवरनी वाण ॥६॥ वि० ॥ मूल विनय छे रे जिनधर्म [18]तरुतणुं, [19]ज्ञानादिक तसु [20]डाल ॥ कीरति [21]कुसुम अमर सुख मुगतीना, फल पामे सुविशाल ॥ वि० ७ ॥ [22]परिमल रूडी रे सहजे मालती, शीतल सुगंध कपूर ॥ तिम सुविनीत रे सहजे सुंदरु, पामे गुण अंकूर ॥ वि० ८ ॥ [23]सफला [24]तरुवर फल भारे नमे,

---

३ मस्तक उपर धरिये, अंगिकार करीये, ४ शीखामण, ५ सफल—फलवाळी, ६ दीक्षा, ७ कान जेना सडी गयां छे एवी कुतरी, ८ लोक, मनुष्यो, ९ समुदाय थकी, १० यश—कीर्ति, शोभा, सुंदरपणुं जगतमां पामे नहिं अथवा जस एटले जेनुं. ११ एक जातनो माटीनो भाजन—वासण, १२ धान्य—दाणांनो, १३ लोभी थाय, आशक्त थाय, १४ विष्टाना समूहमां, १५ उद्धताइ, १६ उद्धत, १७ विचारणा, १८ वृक्ष, १९ ज्ञान, दर्शन, चारित्र विगेरे, २० डालियो, २१ फूल, २२ मनोहर खुशबोथी स्वभाविक मालती सुंदर छे, २३ फलवाळा, २४ सारा वृक्ष.

[२५]मेह नमे जलभार ॥ [२६]सालिभरी जिम दीसे [२७]ढलकती, सुपुरुष विनय विचार ॥ वि० ९ ॥ जुवो नरनारी रे जगमां देवता, [२८]गज [२९]वृषभ अने [३०]तुरंग ॥ पगपग दुःख सहे अविनीत जे, विनये सुख लहे चंग ॥ वि० १० ॥ जेय प्रकाशे रे अवगुण गुरुतणा, छिद्रनिहाले आप ॥ [३१]शीख देयंतारे रीस जिको करें, तेहने बहुला रे पाप ॥ ११ ॥ वि० ॥ गुण वखाणे रे गुरुस्वामि तणा, ढांके अवगुण जाण ॥ सीख देयंता रे प्रीत जिको करें, ते गुण पामे [३२]प्राण ॥ १२ वि० ॥ गौतम सुनखत साधुतणीपरे, पामे जग जसवाद ॥ परभव सुरसुख अने मुगती लहे, जिहां नही दुःखविवाद ॥ १३ ॥ वि० ॥ विनयतणां फल जाणी [३३]रुअडां, ते करज्यो गुणवंत ॥ तसुपय लागे रे ब्रह्मो वलिवली, मागे सुख अनंत ॥१४॥ वि०

इच्छामि० इच्छकार० भगवन् दुःक्खक्खय कम्मक्खय कर्मनिर्जरानिमित्तं; काउस्सग्गं करेमि, इच्छं, दुक्खक्खय, कम्मक्खय, कर्मनिर्जरानिमित्त करेमि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं कही–( चार लोगस्स के साल नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहेवो. )

---

२५ मेघ–वर्षाद, २६ साली बीजें भरेल एटले जेनी अंदर बीज आवेला छे. २७ मनोहर, नम्र, २८, हाथी, २९ बलदियो, ३० घोडो, ३१ शिखामण, ३२ प्राणी–जीव, ३३ सारा मनोहर.

सामाइक, चोवीसत्थो, वांदणा, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण, ए षडावश्यकने विषे जे कोइ जाणतां अजाणतां दूषण लागो हुवे, ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं.

॥ इति दैवसिकप्रतिक्रमण विधिः ॥

---

## ॥ हवे सामायिक पारवानी विधि लखीए छीए. ॥

इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायिक पारवा इरियावहि पडिक्कमुंजी; इच्छं.

( इरियावहि--तस्स उत्तरी--अन्नत्थऊससिएणं कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहेवो, )

इच्छामि० इच्छाकारेण० चैत्यवंदन करुंजी, इच्छं.

### २९ अथ चउक्कसाय सूत्र*

मू०--चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरण, ×दुज्जयमयणबाणमुसुमूरण ।
सरसपियंगुवन्न गयगामी, जयउ पास भुवणत्तयसामी ॥१॥

---

*रात्रे संथारापोरसीमां आ सूत्र चैत्यवंदन तरीके बोलवामां आवे छे. दरेक श्रावक संथारा पोरसीभणावी शके नहीं तेथी देवसिप्रतिक्रमणने अंते सामायिक पारती वखते लोगस्स० कह्या पछी कहेवानी विधि श्रावकने माटे छे.

×उच्छेदकः, ताडनो वा.

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **चउकसाय**—चारकषायरूप | **पियंगु**—रायणना जेवा |
| **पडिमल्ल**—शत्रुने | **वन्न**—रंगवाळा |
| **उल्लूरण**—नाश करनार | **गय**—हाथीना जेवी |
| **दुज्जय**—दुःखे जीताय | **गामी**—गतिवाळा |
| **मयण**—कामदेवना | **जयउ**—जयवंता वर्तो |
| **बाण**—बाणोने | **पास**—श्री पार्श्वनाथ |
| **मुसुमूरण**—भांगनार | **भुवणत्तय**—त्रण भुवनना |
| **सरस**—रसवाळो | **सामी**—स्वामी |

**भावार्थः**—चार कषायरूप शत्रुओनो नाश करनार, दुःखे करीने जिती शकाय एवा कामदेवना बाणोने तोडी नांखनार, नवा प्रियंगु (रायण) वृक्षनी जेवा नील वर्णवाळा, हस्ती जेवी मंद अने मनोहर गतिवाळा तथा त्रण भुवनना स्वामी एवा श्रीपार्श्वनाथ स्वामी जय पामो. १.

**मू०—जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्धो, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धो। नुन्नवजलहर तडिल्लयलंछिय, सो जिण पास पयच्छउ वंछिय ॥ २ ॥**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **जसुतणु**—जेना शरीरनी | **कडप्प**—समूह |
| **कंति**—कान्तिनो | **सिणिद्धो**—स्निग्ध |

| | |
|---|---|
| **सोहइ**–शोभे छे | **जलहर**–मेघ |
| **फणि**–सापनी फेणनुं | **तडित्**–विजळीनी |
| **मणि**–मणिरत्न | **लय**–लताए करी |
| **किरण**–किरणो वडे | **लंछिय**–सहित |
| **आलिद्धो**–सहित | **सो जिण पास**–ते श्री पार्श्वजिन |
| **नु**–निश्चे | **पयच्छउ**–आपो |
| **न्नव**–नवो | **वंछिय**–वांछितने |

**भावार्थ**—जे श्रीपार्श्वनाथना शरीरनी कांतिनो समूह स्निग्ध एटले चकचकित चीकाशवाळो छे अने तेमां सर्पना फणा मणिना किरणो व्याप्त थया छे, तेथी भगवाननुं शरीर जाणे वीजळी सहित मेघ होय तेवुं शोभे छे, ते श्रीपार्श्वनाथ प्रभु वांछित आपो. भगवाननुं शरीर मेघनी जेवुं स्निग्ध अने नीलवर्णवाळुं छे. तेमां वीजळीनी जेम मणिना किरणो रहेला छे. तेथी आ उत्प्रेक्षा करी छे. २.

( पछी नमुथ्थुणं बोलवुं )

## ३० अथ जावंति चेइआइं.

### हवे सर्व चैत्योने नमस्कार करे छे,—

**मू०—जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ ।**
**सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **जावंति**—जेटलां | **ताइं**—ते |
| **चेइआइं**—चैत्यो | **वंदे**—वंदना करुं छुं |
| **उड्ढे अ**—स्वर्गमां | **इह संतो**—अहिं रह्यो छतो |
| **अहे अ**—पाताळमां | **तत्थ**—त्यां |
| **तिरिअलोए अ**—मनुष्यलोकमां | **संताइं**—रहेलांने |
| **सव्वाइं**—सर्वने | |

**भावार्थ**—ऊर्ध्वलोकने विषे एटले ज्योतिष तथा स्वर्गने विषे, अधोलोकने विषे एटले कुबडी विजय तथा भवनपतिनां स्थानोने विषे, अने तिर्छालोकने विषे एटले आ मध्य लोकने विषे, जेटलां चैत्यो एटले जिनप्रतिमाओ छे, ते सर्व त्यां रहेलां चैत्योने, हुं अहीं रह्यो थको वांदुं छुं.

संपदा ४. गाथा १. पद. ४ गुरु ३. लघु ३२. सर्ववर्ण ३५.

## ३१ अथ जावंत केविसाहू.

हवे सर्व साधुओने नमस्कार करे छे.—

**मू०—जावंत केविसाहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ।**
**सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१॥**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **जावंत**—जेटला | **साहू**—साधुओ |
| **केवि**—कोइ पण | **भरह**—भरतक्षेत्रमां |

**एरवय**–ऐरवतक्षेत्रमां
**महाविदेहे**--महाविदेह क्षेत्रमां
**अ**–अने
**सव्वेसिं**–सर्वने
**तेसिं**–तेओने
**पणओ**–नम्यो छुं

**तिविहेण**–त्रण करणे करीने करवुं, करावबुं ने अनुमोदना रूप
**तिदंड**–त्रण दंडथी
**विरयाणं**–विराम पामेलाने

**भावार्थ**—पांच भरत, पांच ऐरवत अने पांच महाविदेह क्षेत्रने विषे जे कोइ साधुओ रहेला छे, ते सर्वे करवुं, करावबुं अने अनुमोदवुं ए त्रण करणे करीने मन, वचन अने कायाना, ए त्रण दंडथी विराम पामेलासाधुओने हुं नमन करुं छुं.

पद ४. संपदा ४. गाथा १. गुरु १. लघु ३७. सर्ववर्ण ३८.

( सर्व अनंता सिद्धने मारो नमस्कार होजो. )

**इच्छामि० इच्छाकारेण० स्तवनं संदिसाएमि !**
**" " " भणेमि ?**

(इच्छं कही नीचे मुजब उवसग्गहरं, स्तवन कहेवुं.)

## ३२ उवसग्गहरं स्तोत्र*

आर्या छन्द

**मू०—उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।**
**विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥**

---

* आ स्तोत्र चौद पूर्वधर **श्रीभद्रबाहुस्वामीए** रचेलुं छे. रचवानुं

## शब्दार्थः—

| | |
|---|---|
| **उवसग्ग**–विघ्नोने | **मुक्कं**–मूकायेला |
| **हरं**–हरनार | **विसहर**–सापना |
| **पासं**–पार्श्व नामनो यक्ष छे जेमने एवा | **विस**–झेरनो |
| **पासं**–पार्श्वनाथने | **निन्नासं**–नाश करनार |
| **वंदामि**–हुं वांदुं छुं | **मंगल**–मंगल |
| **कम्मघण**–कर्मना समूहथी | **कल्लाण**–कल्याणना |
| | **आवासं**–घरसमान |

---

कारण आ प्रमाणे छे.—श्री भद्रबाहुस्वामीने **वराहमिहर** नामनो भाइ हतो. तेणे चिरकाळ सुधी चारित्र पाळी शास्त्रनो अभ्यास कर्यो हतो. त्यार पछी कोइ कारणथी चारित्रनो त्याग करी ते जैनधर्मनो द्वेषी थयो. अने ज्योतिष शास्त्रथी ते पोतानो निर्वाह करवा लाग्यो. तेमां ते घणी प्रतिष्ठा पाम्यो. ते गर्वथी जैन साधुओनी निरंतर निंदा करतो हतो. एकदा राजसभामां श्रीभद्रबाहुस्वामीए तेना ज्योतिषना ज्ञानमां स्खलना—अपूर्णता बतावी. तेथी वराहमिहर वधारे धर्मद्वेषी थयो. अंते मरण पामी ते व्यंतर थयो. तेणे पूर्वनुं वैर संभारी संघमां मरकीनो उपद्रव कर्यो. तेनी शांतिने माटे श्री संघनी विज्ञप्तिथी श्री भद्रबाहुस्वामीए सात गाथानुं आ **उपसर्गहर** स्तोत्र बनाव्युं ते भणवा, गणवा अने सांभळवाथी मरकी शांत थइ गइ. तेथी लोको निरंतर आ स्तोत्र गणवा लाग्या तेना प्रभाववथी धरणेंद्रने प्रत्यक्ष आववुं पडतुं हतुं. तेथी धरणेंद्रनी विनंतिथी गुरु महाराजे छेल्ली बे गाथा भंडारी मूकी अने हालमां जे पांच गाथा उप-

**भावार्थः**—उपसर्गने हरण करनार पार्श्व नामनो यक्ष जेमनो सेवक छे, जे कर्मना समूहथी मुक्त थयेला छे, जेमना स्मरणथी सर्पना विषनो नाश थाय छे, तथा जे मंगळ अने कल्याणनुं स्थान एटले आधार छे, ते पार्श्वनाथ स्वामीने हुं वांदुं छुं. १.

**मू०—विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।**
**तस्स गहरोगमारी-दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥**

**शब्दार्थः—**

**विसहर**—विषधर
**फुलिंग**—स्फुलिंग नामना
**मंतं**—मंत्रने×
**कंठे**—कंठमां
**धारेइ**—धारण करे
**जो**—जे
**सया**—हंमेशां
**मणुओ**—मनुष्य
**तस्स**—तेना
**गह**—ग्रह
**रोग**—रोग
**मारी**—मरकी
**दुट्ठ**—खराब
**जरा**—ताव
**जंति**—पामे छे
**उवसामं**—शांतिने

---

लब्ध-प्रसिद्ध छे तेज राखी. आ स्तोत्रमां श्री पार्श्वनाथस्वामी तथा तेमना यक्ष पार्श्व, पद्मावती देवी अने धरणेंद्रनी द्विअर्थी स्तुति छे. ते जाणवानी इच्छावाळाए मोटी टीका जोवी.

× ॐ नमिऊण पास विसहर वसह जिणफुलिंग.

**भावार्थः**—जे मनुष्य श्रीपार्श्वनाथना नामवाळा विषधरस्फुलिंग नामना मंत्रने निरंतर कंठमां धारण करे छे एटले मुखपाठ करे छे, तेना दुष्ट ग्रह, रोग, मरकी अने ज्वर विगेरे सर्व उपद्रवो शांत थाय छे—नाश पामे छे. २.

**मू०—चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।**
**नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥**

**शब्दार्थः—**

**चिट्ठउ**–रहो
**दूरे**–दूर
**मंतो**–मंत्र
**तुज्झ**–तमने
**पणामो वि**–करेलो नमस्कार पण
**बहुफलो**–घणा फळवाळो
**होइ**–थाय छे
**नर**–मनुष्य
**तिरिएसु**–तिर्यंचना
**वि**–पण
**जीवा**–जीवो
**पावंति**–पामे छे
**न**–नहीं
**दुक्ख**–दुःख
**दोगच्चं**–दारिद्र्य

**भावार्थः**—हे भगवान ! विषधरस्फुलिंग नामनो मंत्र तो दूर रहो, परंतु जो तमने मात्र प्रणाम ज कर्यो होय तो पण ते घणा फळने आपनारो थाय छे, कारण के तमने प्रणाम करनारा जीवो पण मनुष्य अने तिर्यंच गतिने विषे दुःख तथा दरिद्रताने पामता नथी. ३.

मू०—तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

शब्दार्थः—

तुह—तमारुं
सम्मते—समकित दर्शन
लद्धे—पामे छते
चिंतामणि—चिंतामणि रत्न
कप्पपायवब्भहिए—कल्पवृक्षथी अधिक
पावंति—पामे छे
अविग्घेणं-विघ्नविना
जीवा—जीवो
अयरामरं—मोक्ष
ठाणं—स्थानने

**भावार्थः**—हे भगवान ! चिंतामणि रत्न अने कल्पवृक्षथी पण अधिक महिमावाळुं तमारुं समकित पामवाथी जीवो कांइ पण विघ्न विना ज अजरामर स्थानने एटले मोक्षपदने पामे छे. ४.

मू०—इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ! ५

शब्दार्थः—

इअ—ए प्रकारे
संथुओ—स्तुति करी
महायस—मोटा यशवाळा
भत्तिब्भर—भक्तिना समूहथी
निब्भरेण—पूर्ण भरेलो
हिअएण—हृदये करी
ता—ते कारण माटे
देव—देव !
दिज्ज—आपो
बोहिं—सम्यक्त्व
भवे भवे—भवोभवने विषे
पास जिणचंद—हे पार्श्वजिनचंद्र

**भावार्थः**—हे महायशस्वी प्रभु ! आ प्रमाणे भक्तिना समूहथी भरपूर एवा हृदयवडे में आपनी स्तुति करी छे, तेथी हे पार्श्वनाथ जिनचंद्र देव ! मने दरेक भवमां बोधि एटले समकित आपजो. एटलुं ज हुं मागुं छुं.

गुरु २९. लघु १५६. सर्ववर्ण १८५. गाथा ५.

( पछी जयवीयराय कहेवुं ) इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायिक पाळवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? एम कही मुहपत्ति पडीलेही. इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायिक पारुं ? ( गुरु कहे, पुणोवि कायव्वं ) श्रावक कहे यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायक पारुं ? (गुरु कहे आयारो न मोतव्वो) श्रावक कहे तहत्ति.

( पछी कटासणा उपर जमणो हाथ मूकी ) एक नवकार गणवो. अने नीचे प्रमाणे बोलवुं. )

---

## ॥ ३२ अथ सामाइय वयजुत्तो ॥

**मू०—सामाइयवयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो ।**
**छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिआ वारा ॥ १ ॥**

| | |
|---|---|
| **सामाइय**—सामायिक | **नियम**—नियम वडे |
| **वय**—व्रत | **संजुत्तो**—सहित |
| **जुत्तो**—सहित | **छिन्नइ**—छेदे |
| **जाव**—ज्यां सुधी | **असुहं**—अशुभ |
| **मणे**—मन | **कम्मं**—कर्म |
| **होइ**—होय | **जत्तिआवारा**—जेटलीवार |

**भावार्थः**—कोइ पण प्राणी ज्यांसुधी सामायिक व्रत ग्रहण करी मनमां नियम सहित एटले स्थिर चित्ते रहे त्यां सुधी तथा जेटली वार सामायिक करे तेटली वार अशुभ कर्मनो नाश करे छे अर्थात् सामायिकथी ज अशुभ कर्मनो नाश थइ शके छे. ते विषे कह्युं छे के—

**मू०—सामाइअम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा।**
**एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥**

**शब्दार्थः—**

**सामाइअंमि**–सामायिक
**उ**–वळी
**कए**–करती वखते
**समणो इव**–साधु जेवो
**सावओ**–श्रावक
**हवइ**–होय छे
**जम्हा**–जेथी
**एएण**–ए
**कारणेणं**–कारणथी
**बहुसो**–घणीवार
**कुज्जा**–करवुं जोइए

**भावार्थः**—जेथी करीने श्रावक सामायिक व्रत करे त्यारे साधु जेवो होय छे, तेथी करीने घणीवार सामायिक करवुं योग्य छे. २.

**सामायिक विधिए लीधुं, विधिए पार्युं, विधि करतां जे कोइ अविधि आशातना हुइ होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. दश मनना, दश वचनना, बार कायाना, एवं कारे बत्रीश दूषणमां जे कोइ दूषण लाग्युं होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥**

**भावार्थः**—मैं सामायिक विधिथी लीधुं छे, विधिथी पार्युं छे, तोपण विधि करतां जे कोइ अविधि थइ गयो होय एटले के [1]मनना दश, [2]वचनना दश अने [3]कायना बार, ए बत्रीश दोषमांथी जे कोइ दोष लाग्यो होय, ते सर्वने हुं, मन, वचन अने कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं आपुं छुं.

गाथा २, गुरु ७, लघु ६७, सर्व वर्ण ७४.

(पछी त्रण नवकार गणवा)

## ॥ इति सामायक पारवानी विधि ॥

—×———×—

१ मनना दश दोष आ प्रमाणे.—शत्रुने जोइ तेनापर द्वेष करवो १, अविवेक चिंतवबो २, अर्थनो विचार न करवो ३, मननां उद्वेग धारण करे ४, यशनी इच्छा करे ५, विनय न करे ६, भय चिंतवे, व्यापार चिंतवे ८, फळनो संदेह करे ९, तथा निदान--नियाणुं करे एटले फळनी इच्छा राखी धर्मक्रिया करे १०.

२ वचनना दश दोष आ प्रमाणे—खराब वचन बोले १, हुंकारा करे २, पापकर्मनो आदेश आपे ३, लवारो करे ४, कलह करे ५, क्षेमकुशळ पूछी आगत स्वागत करे ६, गाळ दे ७, बाळकने रमाडे ८, विकथा करे ९, तथा हांसी करे १०.

३ कायाना बार दोष आ प्रमाणे—आसन चपळ--अस्थिर करे १, चोतरफ जोया करे २, सावद्य कर्म करे ३, आळस मरडे ४,

## ॥ अथ राइप्रतिक्रमणनी विधि ॥

प्रथम इरियावही पडिक्कमि सामायिक लेवुं पछी उभा थइ खमासमण दइ कहेवुं.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् कुसुमिण दुसुमिण राइ प्रायश्चित्त विशोधनार्थं काउस्सग्ग करुं, गुरु कहे करेह. इच्छं. करेमि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ कही चार लोगस्स अथवा सोळ नवकारनो काउस्सग्ग करी, खमासमण दइ कहेवुं.

**" इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं । "**

---

## ३४ *श्री जगचिंतामणि चैत्यवंदन.

( आ चैत्यवंदनमां चोवीसे तीर्थंकरोनी स्तुति करे छे.— )

---

अविनये बेसे ५, भींत विगेरेने ओठुं दइ बेसे ६, शरीर परनो मेल उतारे ७, खरज खणे ८, पग उपर पग चडावे ९, अंग उघाडां करे १०, जंतुओना उपद्रवथी डरीने चोतरफथी शरीरने ढांके ११, तथा निद्रा ले १२.

* गौतमस्वामी ज्यारे अष्टापदपर्वत पर जात्रा करवा गया त्यारे तेमणे आ चैत्यवंदन कर्युं छे.

मू०—जगचिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण । जगबंधव जगसत्थवाह जगभावविअक्खण ॥ अट्ठावयसंठविअरूव कम्मट्ठविणासण । चउवीसं पि जिणवर जयंतु अप्पडि-हयसासण ॥ १ ॥

## शब्दार्थः—

**जग**—जगतना जीवोने
**चिंतामणि**—चिंतामणि रत्न समान
**नाह**—नाथ
**गुरु**—गुरु
**रक्खण**—रक्षक
**बंधव**—भाइ
**सत्थवाह**—सार्थवाह
**भाव**—जगतना भाव जाणवामां
**विअक्खण**—समर्थ (विचक्षण)
**अट्ठावय**—अष्टापद पर्वत उपर
**संठविय**—स्थापन कर्या छे
**रूव**—बिंब (प्रतिमा)
**कम्मट्ठ**—आठ कर्मनो
**विणासण**—नाश करनार
**चउवीसं पि**—चोवीशे पण
**जिणवर**—तीर्थंकरो
**जयंतु**—जय पामो
**अप्पडिहय**—कोइथी हणायुं नथी
**सासण**—शासन

**भावार्थ**—जे तीर्थंकरो जगतमां चिंतामणि समान छे एटले भव्य प्राणीओने वांछित अर्थ आपनारा छे, जे आ त्रण जगतना नाथ छे, जेओ समस्त जगतना जीवोने हितोपदेश आपवाथी तेमना गुरु छे, जेओ जगतना सर्व प्राणीओनुं रक्षण करनारा छे, जेओ जगतना हितेच्छु

होवाथी बंधुरूप छे, जेओ जगतना भव्य जीवोने मोक्षमां लइ जनार होवाथी सार्थवाह छे, जेओ जगतना सर्व पदार्थोने जाणवामां तथा तेनी प्ररूपणा करवामां विचक्षण एटले निपुण छे, तेमनी प्रतिमाओ *अष्टापद पर्वतपर स्थापन करेली छे, जेओ आठ कर्मोनो नाश करनारा छे, तथा जेओनुं शासन एटले उपदेश सर्वत्र अप्रतिहत एटले कोइथी बाधा-खंडन न कराय तेवुं छे एवा चोवीशे तीर्थंकरो जय पामो. १.

हवे तीर्थंकरोनो, केवलज्ञानोओनी अने सामान्य साधुओनी स्तुति करे छे.

**मू०—कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि, उक्कोसय ×सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ। नवकोडी केवलिण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ॥ संपइ जिण· वर वीस, मुणि बिहुं कोडी वरनाणि। समणह कोडि-सहसदुअ थुणिज्जइ निच्च विहाणि॥ २॥**

---

* अष्टापद उपर श्री ऋषभदेवना पुत्र भरतचक्रीए चोवीशे तीर्थंकरनी प्रतिमा मणिमय स्थापन करेल छे, ते दरेक तीर्थंकरोनी पोतपोतानी कायाना मापे प्रतिमा छे; सौनी नासिका सरखी लाइनमां छे, बेठकनी पाटली नीचा उंची छे.

× पांच भरत, पांच ऐरवत अने पांच महाविदेहनी कुल एक सो ने साठ विजय, ते सर्वमां एक एक तीर्थंकर होय त्यारे उत्कृष्टा १७० तीर्थंकरो पमाय छे. ते प्रमाणे श्री अजितनाथने वारे हता.

## शब्दार्थः—

**कम्मभूमिहिं**—ज्यां कर्म वर्ते छे
**कम्मभूमिहिं**—कर्मभूमिमां
**पढम**—पहेला
**संघयणि**—संघयणवाळा
**उक्कोसय**—उत्कृष्टपणे
**सत्तरिसय**—एकसो सीत्तेर
**जिणवराण**—तीर्थंकरो
**विहरंत**—विचरता
**लब्भइ**—पमाय छे
**नवकोडी**—नव क्रोड
**केवलिण**—केवळज्ञानी
**कोडि**—क्रोड
**सहस्सनव**—नव हजार
**साहु**—साधुओ
**गम्मइ**—जाणीए
**संपइ**—वर्तमान काळे
**जिणवर**—तीर्थंकरो
**वीस**—वीस
**मुणि**—मुनिओ
**बिहुं कोडी**—बे क्रोड
**वरनाणि**—केवळ ज्ञानवाळा
**समणह**—साधु
**कोडी**—क्रोड
**सहसदुअ**—बे हजार
**थुणिज्जइ**—स्तुति करीए
**निच्च**—हंमेशा
**विहाणि**—प्रभातमां

**भावार्थ**—सर्व कर्मभूमिओमां एटले असि, मषी अने कृषिरूप कर्म जेमां वर्तै छे एवा पांच भरत, पांच ऐरवत अने पांच महाविदेह क्षेत्रमां के ज्यां दरेकमां बत्रीश बत्रीश विजय होवाथी कुल १६० विजयो छे, तेमां पांच भरत अने पांच ऐरवत नांखवाथी १७० कर्म-भूमिओने विषे प्रथम संघयणवाळा उत्कृष्टकाळे विचरता १७० तीर्थंकरो

पमाय छे, केवळज्ञानी नव करोड अने सामान्य साधुओ नव हजार करोड पमाय छे. तथा वर्तमान काळमां सर्वनी संख्या जघन्य छे. एटले के सीमंधर स्वामी विगेरे ×वीश तीर्थंकरो विचरता छे, केवळज्ञानीओ बे करोड छे अने सामान्य साधुओ बे हजार करोड छे. तेमनी निरंतर प्रातःकाळे स्तवना करवी. २.

हवे अमुक तीर्थस्थानोमां रहेली जिनप्रतिमाओने तथा जिनेश्वरोने वंदना करे छे.—

**मू०—जयउ सामी, जयउ सामी, रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जिंते पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण ॥ भरुअच्छे मुणिसुव्वय मुहरिपास । दुहदुरिअखंडण अवरविदेहे तित्थयरा । चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि तीआणागायसंपइअ वंदू जिण सव्वे वि ॥ ३ ॥**

**शब्दार्थ—**

**जयउ**—जय पामो

**सामी**—स्वामी

**रिसह**—हे ऋषभदेव प्रभु !

**सत्तुंजि**—शत्रुंजय उपर

---

× जघन्य काळे वीश तीर्थंकरो होय, ते आ प्रमाणे.—हालमां महाविदेहनी ८—९—२४—२५ ए चार विजयमां एक एक तीर्थंकर छे तेथी जंबूद्वीपमां चार छे. धातकीखंडना बे महाविदेहमां थइने आठ तथा पुष्करार्धना बे महाविदेहमां थइने आठ मळी कुल वीश छे, दरेक वखते तीर्थंकरोना विचरवानी अपेक्षाए विजयो बदलाय छे.

उज्जिंते—गिरनार उपर

पहु—प्रभु

नेमिजिण—हे नेमिनाथ !

वीर—महावीर भगवान !

सच्चउरि—सत्यपुरी (साचोर)

मंडण—शोभावनार

भरुअच्छे—भरुच नगरमां

मुणिसुव्वय—मुनिसुव्रत

मुहरि—मुहरि (टींटोई) गाममां

पास—पार्श्वनाथ

दुह—दुःख

दुरिअ—पाप

खंडण—नाश करनार

अवर—बीजा

विदेहे—महाविदेहमां रहेला

तित्थयरा—तीर्थंकरो

चिहुं दिसि—चार दिशाओमां

विदिसि—विदिशाओमां

जिं केवि—जे कोइ

तीअ—भूतकाळ

अणागय—भविष्यकाळ

संपइअ—वर्तमान काळ

वंदू—वांदु छुं

जिण—जिनेश्वर

सव्वे वि—सर्व पण

**भावार्थ**—शत्रुंजय पर्वतपर रहेला हे ऋषभदेव प्रभु ! तमे जय पामो. श्री गिरनार पर्वतपर रहेला हे श्रीनेमिनाथ प्रभु ! तमे जय पामो. सत्यपुरी नगरी एटले साचोरनगरना आभूषणरूप हे श्रीमहावीर स्वामी ! तमे जय पामो. भरुचमां रहेला हे श्रीमुनिसुव्रत स्वामी ! तमे जय पामो.

तथा टीटोई गाममां रहेला हे श्री *मुहरिपार्श्वनाथ ! तमे जय पामो. आ पांचे जिनेश्वरो दुःख अने पापनो नाश करनार छे. तथा पांचे महाविदेहने विषे रहेला जे तीर्थंकरो छे, तथा चार दिशा अने चार विदिशामां जे कोइ अतीतकाळ, अनागतकाळ, अने वर्तमानकाळ संबंधी तीर्थंकरो छे, ते सर्वने पण हुं वंदना करुं छुं. ते सर्वे दुःख अने पापनो नाश करनार छे ३.

## हवे त्रण लोकमां रहेला चैत्योने वांदे छे.—

**मू०—सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ।**
**बत्तिसय बासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥**

### शब्दार्थ—

**सत्ताणवइ**—सत्ताणु
**सहस्सा**—हजार
**लक्खा छप्पन्न**—छप्पन लाख
**अट्ठकोडिओ**—आठ करोड
**बत्तीसय**—बत्रीस सो
**बासिआइं**—ब्याशी
**तिअलोए**—त्रण लोकने विषे
**चेइए**—चैत्योने
**वंदे**—वांदुं छुं.

**भावार्थः**—स्वर्गलोक, तिरछो लोक अने पाताळलोक ए त्रणे लोकमां कुल आठ करोड छप्पन लाख सत्ताणुं हजार बत्रीश सो अने ब्याशी ( ८५७००२८२ ) चैत्यो छे, तेमने हुं वांदुं छुं. ४.

---

* ते गामनो राजा एक मुहरि एटले एक महोर लइने दर्शन करवा देतो तेनुं नाम मुहरिपार्श्वनाथ कहेवाय छे.

## हवे शाश्वती प्रतिमाओने वांदे छे.

मू०—पनरस कोडिसयाइं, कोडी बायाल लक्ख अडवन्ना।
छत्तीस सहस असिइं, सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥

### शब्दार्थ—

| | |
|---|---|
| **परनस**—पंदर | **छत्तीस**—छत्रीस |
| **कोडि**—करोड | **सहस**—हजार |
| **सयाइं**—सो | **असिइं**—एंसी |
| **बायाल**—बेंतालीस | **सासय**—शाश्वती |
| **लक्ख**—लाख | **बिंबाइं**—प्रतिमाओने |
| **अडवन्ना**—अठावन | **पणमामि**—हुं प्रणाम करुं छुं. |

**भावार्थ**—(उपर कहेलां सर्व चैत्योमां थइने) कुल पंदर सो करोड, बेंताळीश करोड, अठावन लाख, छत्रीश हजार ने एंशी (१५४२५८३६०८०) एटली शाश्वती प्रतिमाओ छे तेमने हुं प्रणाम करुं छुं—वांदुं छुं. ५.

---

पछी जंकिंचि० नमुथ्थुणं० जावंति चेइआइं० जावंत के वि साहू० कही, अनन्ता सिद्धोने मारो नमस्कार होजो. खमासमण बे पूर्वक "स्तवनं संदिसाएमि, स्तवनं भणेमि" पछी नवकार, उवसग्गहरं, जयवीराय० कहेवुं. त्यार पछी खमासमण देइ "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे संदिसाएमि"

बीजे खमासमणे "बेसणे ठाएमि" त्रीजे खमासमणे "सज्झायं संदिसाएमि" चोथे खमासमणे "सज्झायं भणेमि" पछी नवकार एक गणी भरहेसरबाहुबलिनी सज्झाय कहेवी.

## ३८ अथ भरहेसरनी सज्झाय.×

मू०—भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो।
सिरिओ अणिआपुत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥

अर्थ—* भरतेश्वर—भरतचक्री, बाहुबळी, अभयकुमार, ढंढणकुमार, श्रीयक, अर्णिकापुत्र अतिमुक्त अने नागदत्त. १.

मू०—मेअज्ज थूलिभद्दो, वयररिसी नंदिसेण सिंहगिरी।
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥ २ ॥

अर्थ—मेतार्य मुनि, स्थूलभद्र, वज्रऋषि, नंदिषेण, सिंहगिरि (श्रीवज्र स्वामीना गुरु) कृतपुण्य कुमार, सुकोशल मुनि, पुंडरीक (कंडरिकना भाइ) राजर्षि, केशी कुमार, करकंडू प्रत्येक बुद्ध. २.

मू०—हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ।
भद्दो दसण्णभद्दो, पसण्णचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥

अर्थ—हल्ल अने विहल्ल श्रेणिकना पुत्रो, सुदर्शन शेठ, साल

---

× आ सज्झायमां शीलव्रतने दृढ रीते पाळनारा उत्तम नरो अने सतीओनुं नामोच्चार पूर्वक स्मरण करेलुं छे.

* आ सर्व गाथाओ सरळ होवाथी मात्र अर्थज लख्यो छे.

अने महासाल मुनि, शालिभद्र, भद्रबाहु स्वामी, दशार्णभद्र, प्रसन्नचंद्र राजर्षि अने यशोभद्र सूरि. ३.

**मू०—जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ।**
**धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो सुबाहुमुणी ॥ ४ ॥**

**अर्थ**—जंबूस्वामी, वंकचूळ राजकुमार, गजसुकुमाळ, अवंतिसुकुमाळ, धन्ना शेठ, इलाचीपुत्र, चिलातिपुत्र अने सुबाहु मुनि. ४.

**मू०—अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो।**
**कालियसूरी संबो, पज्जुण्णो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥**

**अर्थ**—आर्यमहागिरि, आर्यरक्षित सूरि, आर्यसुहस्ती सूरि, उदायी राजा, मनक पुत्र, कालकाचार्य, सांब कुमार, प्रद्युम्न कुमार अने मूळदेवराजा. ५.

**मू०—पभवो विण्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढप्पहारी य ।**
**सिर्यंस कूरगडु ओ, सिज्जंभव मेहकुमारो य ॥ ६ ॥**

**अर्थ**—प्रभव स्वामी, विष्णुकुमार, आर्द्रकुमार, दढप्रहारी चोर, श्रेयांस कुमार, कूरगड्डु, साधु, स्वयंभव स्वामी अने मेघकुमार. ६.

**मू०—एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ।**
**जेसिं नामग्गहणे पावपबंधा विलिज्जंति ॥ ७ ॥**

**शब्दार्थः—**

**एमाइ**—ए आदिक
**महासत्ता**—मोटा सत्ववाळा
**गुणगणेहिं**—गुणना समूहवडे
**संजुत्ता**—युक्त एवा सर्वे
**सुहं**—अमने सुख
**दिंतु**—आपो,

| | |
|---|---|
| **जेसिं**-जेमनां | **पावपबंधा**-पापना बंधो |
| **नामग्गहणे**-नाम ग्रहण करवाथी ज | **विलिज्जंति**-विलयने पामे छे--नाश पामे छे |

**भावार्थ**—ए आदिक मोटा सत्त्ववाळा अने गुणना समूहवडे युक्त एवा सर्वे अमने सुख आपो, के जेमनां नाम ग्रहण करवाथी ज पापना बंधो विलयने पामे छे—नाश पामे छे.७.

**मू०—सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।**
**नमयासुंदरी सीया, नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥**

**अर्थ**—सुलसा, चंदनबाळा, मनोरमा, मदनरेखा, दमयंती, नर्मदा सुंदरी, सीता, नंदा, भद्रा शेठाणी अने सुभद्रा. ८.

**मू०—राइ (य) मई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरीदेवी ।**
**जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावइ, पभावई चिल्लणादेवी ॥ ९ ॥**

**अर्थ**—राजीमती, ऋषिदत्ता, पद्मावती, अंजनासुन्दरी, श्रीदेवी, ज्येष्ठा, सुज्येष्ठा, मृगावती, प्रभावती अने चेलणा राणी. ९.

**मू०—बंभि सुंदरि रुप्पिणी, रेवइ कुंती सिवा य जयवंती ।**
**देवइ दोवइ धारणी, कलावइ पुप्फचूला य ॥ १० ॥**

**अर्थ**—ब्राह्मी, सुन्दरी, रुक्मिणी, रेवती, कुंती, शिवा, जयंती, देवकी, द्रौपदी, धारणी, कळावती अने पुष्पचूला. १०.

**मू०—पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ।**
**जंबूवइ सच्चभामा, रुप्पिणि कण्हट्ठ महिसीओ ॥११॥**

**अर्थ**—पद्मावती, गौरी, गांधारी, लक्ष्मणा, सुसीमा, जंबूवती, सत्यभामा अने रुक्मिणी ए आठ श्री कृष्णनी पट्टराणीओ. ११.

**मू०—जक्खा य जक्खदिन्ना भूआ तह चेव भूअदिन्ना अ।**
**सेणा वेणा रेणा, भइणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥**

**अर्थ**—यक्षा, यक्षदत्ता, भूता तथा वळी भूतदत्ता, सेणा, वेणा अने रेणा ए सात स्थूलभद्रनी बहेनो छे. १२.

**मू०—इच्चाइ महासइओ, जयंति अकलंकसीलकलिआओ ।**
**अज्ज वि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले ।१३।**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **इच्चाइ**—ए विगेरे | **जासिं**—जेमनो |
| **अकलंक**—निर्मळ | **जसपडहो**—यशरूपी पडह |
| **सील**—शियळथी | **सयले**—समग्र |
| **कलिआओ**—सहित | **तिहुअणे**—त्रण भुवनने विषे |
| **महासइओ**—महासतीओ | **अज्जवि**—आज सुधी |
| **जयंति**—जय पामे छे | **वज्जइ**—वाग्या करे छे. |

**भावार्थ**—इत्यादिक एटले ए विगेरे अकलंकित—निर्मळ एवा शीळव्रते करीने सहित एवी महा सतीओ जय पामे छे, के जेमनो यश-रूपी पडह समग्र त्रणे भुवनने विषे आज सुधी वाग्या करे छे. १३.

पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् आचार्यवांदुजी, एक खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपाध्यायवांदुजी, एक खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् साधु वांदुजी,इच्छकारसुहरा० चउत्थो खमासमण देइ कहेवुं **"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइपडिक्कमणं ठाएमि."** ( गुरु कहे ठाएह ) पछी नमो अरिहंताणं० करेमिभंते० इच्छामिठामि काउस्सग्गं तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कही, पछी **"सव्वलोए अरिहंत चेइआणं०"** दर्शनाचारविशुद्धि माटे एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी पारी **"पुक्खरवरदीवड्ढे०"** कही **"सुयस्स भगवओ०"** कहीने काउस्सग्ग करवो तेमां अतिचारनी आठ गाथा चिंतववी. काउस्सग्ग पारी **"सिद्धाणं बुद्धाणं०"** कही मुहपत्ति पडिलेहिने बे वांदणा देवा. ( वांदणाना पाठमां ज्यां **" दिवसो वइक्कंतो "** एवो पाठ छे त्यां **"राइ वइक्कंता"** एम कहेवुं **"देवसिअं"** ने ठेकाणे **"राइअं"** ने **"देवसिआए"** ने ठेकाणे **"राइआए"** एम कहेवुं. )

पछी **"आवस्सइ"** अवग्रह बाहेर नीकळी कहेवुं **"इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, राइयं आलोएमि."** (गुरु कहे आलोएह **"इच्छं आलोएमि, जो मे राइओ अइआरो कओ०"** सात लाख० अढार पापस्थान चार विकथा० आलोवी सव्वसविराइय० कही वीरासने बेसी नमो अरिहंताणं० करेमि भंते० चत्तारिमंगलं कही इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइआरो० कही, इरियावही पडिक्कमि० **" वंदित्तु "** कहेवुं ( वंदित्तासूत्रमां **" पडिक्कमे देसिअं सव्वं "** ने बदले **"पडिक्कमे राइअं सव्वं "** एम बोलवुं. )

पछी वांदणा देइ "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइयं खामेउं. इच्छं खामेमि" ॥ ए रीते खामणा करी आवस्सही भणी अवग्रह बाहेर नीकळी ॥ "आयरिय उवज्झाए" कही नवकार, करेमि भंते, इच्छामि ठामि काउस्सग्ग० तस्स उत्तरी करणेणं० अन्नत्थ ऊससिएणं० कही काउस्सग्ग करवो. ए काउस्सग्गमां नीचे लखेली "छम्मासी तप चिंतवणा करवी. ते न आवडे तो चार लोगस्स के सोल नवकार गणवा. पछी आंबिल, नीवी, एकासणुं, बिआसणुं, पुरिमढ, साढपोरसि, पोरसि, जे पच्चक्खाण करवा वांच्छे त्यांलगी चिंतवी काउस्सग्ग पारे ॥ पछी लोगस्स कही दृष्टिपडिलेहणा करी वांदणा दइ उभा थइ तीर्थमाला कहेवी.

## ॥ ३६ छमासी तप चिंतवणा ॥

॥ श्रमणभगवंत श्रीमहावीरदेवे छम्मासी तप कीधो ॥ अरे जीव तुं छम्मासी तप करी शके ? न शकुं ॥ एक दिवस ऊणो करी शके ? न शकुं ॥ बिहु दिवस उणो करी शके ? न शकुं ॥ त्रिहुं दिवसे ऊणो करी शके ? न शकुं ॥ चिहुं दिवसे ऊणो करी शके ? न शकुं ॥ पांच दिवसे ऊणो करी शके ? न शकुं ॥ ६-७-८-९-१० दिवसे ऊणो करी शके ? न शकुं ॥ ११-१२-१३-१४-१५ दिवसे ऊणो करी शके ? न शकुं ॥ १६-१७-१८-१९-२० दिवसे ऊणो० ? न शकुं ॥ २१-२२-२३-२४-२५ दिवसे० ? न शकुं ॥ २६ दिवसे० ? न० २७ दिव० ? न० ॥ २८ दि० ? न० २९ दिवसे ऊणो छम्मासी तप करी शके ? न शकुं ॥ इणिपरे पंचमासी,

चउमासी, त्रिमासी, बिमासी चींतववो ॥ पछे अरे जीव एकमासी तप करी शके ? न शकुं ॥ एक दिन ऊणो करी शके ? न शकुं ॥ बे दिवसे ऊणो करी शके ? न शकुं ॥ त्रण दिवसे ऊणो ? न शकुं ॥ चार दि० ? न शकुं ॥ पांच दिवसे० ? न शकुं ॥ एवं ६-७-८-९-१० दिवसे ऊणो० ? न शकुं ॥ ११-१२-१३ दिवसे ऊणो० ? न शकुं ॥ चोत्रीसम करी शके ? न शकुं ॥ एवं बत्रीसम, त्रीसम, अठावीसं, छवीसम, चऊवीसम, बावीसम, वीसम, अठारसम, सोलसम, चउदसम, दुवालसम, दसम, अठम, छठ, चउत्थ, करी शके ? न शकुं ॥ इम जु जुआ कहेवा. जेटलो तप कीधो होय तिहां इम न कहिये; करी न शकुं ॥ किंतु, हिवडां न थाय इम कहिये.

## ॥ ३७ अथ तीर्थमाला ॥

॥ श्री सकलतीर्थाय नमः ॥ श्री शत्रुंजयाय नमः ॥

**अर्थ**—श्री सकल तीर्थोप्रत्ये नमस्कार हो, अने श्रीमान् शत्रुंजय नामे तीर्थने नमस्कार हो.

आबु, अष्टापद, समेतशिखर, विपुलगिरि,
वैभारगिरि, स्वर्णगिरि, रत्नगिरि,

**अर्थ**—आबु नामे तीर्थ, अष्टापद नामे तीर्थ, अने समेतशिखर अने विपुलगिरि अने स्वर्णगिरि अने रत्नगिरि ए सर्व तीर्थो छे.

जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

**अर्थ**—जे जे ठेकाणे जिन बिंबो छे ते ते ठेकाणे ते जिन बिंबोने हुं वंदना करुं छुं.

**पछी चोवीस तीर्थंकरोना नाम लइ नीचेनो पाठ कहेवो.**

**अनंत चउवीसी जिन नमुं, सिद्ध अनंती कोड ॥**
**केवलज्ञानी थविर सवि, वंदुं बे कर जोड ॥ १ ॥**

**अर्थ**—अनंत एवी जे चोविशी तेना जिनेश्वरोने नमुं छुं, अने सिद्धना अनंत क्रोडोने, अने केवलज्ञानीओने, अने सर्व स्थविरोने बे हाथ जोडी नमुं छुं ॥ १ ॥

**दो कोडी केवल धरा, विहरमाण जिणवीस ॥**
**सहस जुगल कोटी नमुं, साधु सवे निसदीस ॥ २ ॥**

**अर्थ**—बे क्रोड केवलज्ञानने धारण करनारा केवलीओने अने वर्तमानकाळमां विचरता एवा वीश विहरमानने अने बे हजार क्रोड सर्व साधुओने रात्रि दिवस नमुं छुं. ॥ २ ॥

**प्रतिमा पनरह कोडिसय, वलि बेतालीस कोड ॥**
**लाख अठावन तीस छह, सहस असि अधिक जोड ॥ ३ ॥**

**अर्थ**—पनरसें क्रोड अने वळी बेंतालीसक्रोड अने अठावनलाख अने छत्रीस हजार एंशी एटली जिनप्रतिमा जाणवी ॥ ३ ॥

**ए छे प्रतिमा जिनतणी, उड्ढ अहो तिरि लोय ॥**
**अरिहंत भाव जुहारतां, जिणसरिसो फल होय ॥ ४ ॥**

**अर्थ**—ए सर्व जिननी प्रतिमाओ उपर–उर्द्ध्वलोकमां विमानोनी अंदर अने नीचे अधोलोकमां भवनपतिना भवनमां अने तिर्छालोकमां छे अरिहंतना भावे जुहारतां (वांदतां) थकां, जिनेश्वर समान फळ थाय छे. ॥ ४ ॥

**ऋषभ चंद्रानन जाणिये, वारिषेण वर्द्धमान ॥**
**चार नाम ए सासतां, प्रणमुं मन धरी ध्यान ॥ ५ ॥**

**अर्थ**—१ ऋषभानन, २ चंद्रानन, ३ वारिषेण, ४ वर्द्धमान ए चार नाम हमेशां शाश्वतां छे. मननी अंदर तेमनुं ध्यान करीने प्रणाम—नमस्कार करुं छुं. ॥ ५ ॥

**इणे नामे नहु को हुवा, न हुवे न हुस्ये कोइ ।**
**जइ एहनी प्रतिमा भणुं, ते सासती न होइ ॥ ६ ॥**

**अर्थ**—आ नामवाला एटले ऋषभानन, चंद्रानन वारीषेण, अने वर्द्धमान, आ चार तीर्थंकरो भूतकाळ एटले गया कालमां थया नथी, वर्तमान कालमां थाय नहि अने भविष्य-आवता कालमां थवाना नथी, तेमनी प्रतिमाओ जे छे ते शास्वती छे, एम जाणवुं, पण ते नामे कोइ तीर्थंकर थया होय अने तेमनी प्रतिमा भरावबामां आवेल होय, तो ते प्रतिमा अशास्वती जाणवी, शास्वती प्रतिमाओ तो अनादिकालथी छे छे ने छे, अने अनंतकाळ सुधी रहेवानी छे माटे तेओने शास्वती कहेवामां आवे छे.

**आदि अंत जेहनो नहि, ते सासती कहाय ॥**
**तास पटंतर जिणपडिमा, मणुअलोक इह थाय ॥ ७ ॥**

**अर्थ**—जेनो आदि नथी अने अंत नथी ते शाश्वती प्रतिमा गणाय अने ते प्रतिमाओना आधारथी आ मनुष्यलोक–अढी द्वीपनी अंदर प्रतिमाओ थाय छे. ॥ ७ ॥

**नर नरपति जे कारवी, असासती ते जाण ॥**
**जे हुवा जे हुवे जे हुस्ये, जिणवर गुणमणि खाण ॥ ८ ॥**

**अर्थ**—अने जे मनुष्योए अथवा मनुष्योना राजाओए, जे प्रतिमाओने अहीं करावी छे, ते अशाश्वती प्रतिमाओ छे. जे आगळ थइ गया ने वर्तमानमां छे; अने भविष्यमां थशे तेओनी ते प्रतिमाओ, गुणरूप रत्नना खाणरूप, एवा तीर्थंकरोनी छे. ॥ ८ ॥

**अष्टापद समेतशिखर, शत्रुंजय गिरिनार ॥**
**अर्बुद गामागर नगर, जिह जिह जिनह विहार ॥ ९ ॥**

**अर्थ**—हवे अशाश्वती प्रतिमा क्यां छे तेना तीर्थोना स्थळो बतावे छे. १. अष्टापद, २. समेतशिखर, ३. शत्रुंजय, ४. गिरिनार, ५. आबुजी, ए पर्वतो उपर अने गामने विषे अने आकर (खाण) ने विषे अने नगरने विषे वळी ज्यां ज्यां जिनेश्वर महाराजाना मंदिरो–देरासरो छे तेमने मारो नमस्कार हो. ॥ ९ ॥

**जिह मुनिवर अणसण करी, मुक्ति गया जिणठाम ॥**
**सिद्धक्षेत्र तसु दंसणे, शुभफल शुभपरिणाम ॥ १० ॥**

**अर्थ**—अने मुनीश्वरोए ज्यां अणसण करीने मुक्तिमां गया ते स्थानको पण सिद्धक्षेत्र गणाय अने तेओना दर्शनथी ते भूमि स्पर्शथी शुभ फळ थाय अने शुभ परिणाम वधे ॥ १० ॥

**भरतेसर नरवइ पमुह, करावी मनभाव ॥**
**ते जिन प्रतिमा वंदतां, दुरे दुरित पलाय ॥ ११ ॥**

**अर्थ**--भरत महाराजा विगेरेओए मनना भावे जे जिन प्रतिमाओ करावी छे, ते प्रतिमाओने वंदन करता थका दूर थकी पापो नाश पामे छे. ॥ ११ ॥

---

**मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः ॥**
**मंगलं स्थूलिभद्राद्या-जनो धर्मोऽस्तु मंगलम् ॥ १ ॥**

**अर्थ**—वीरभगवान मंगलकारी छे अने गौतमस्वामी ( गणधर ) पण मंगलकारी छे, अने स्थुलिभद्र विगेरे महात्माओ थइ गया, ते पण मंगलकारी छे अने जैनधर्म छे, ते पण मंगलकारी छे, ते सर्व मने मंगल करनारा थाओ. ॥ १ ॥

**सर्वारिष्टप्रणासाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने ॥**
**सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ २ ॥**

**अर्थ**—सर्व पापने नाश करनारा एवा अने सर्व इच्छित अर्थने आपनारा अने सर्व लब्धि (सिद्धि) ना भंडार एवा गौतमस्वामीने नमस्कार हो ॥ २ ॥

**अंगुठे अमृत वसे, लब्धितणो भंडार ॥**
**जो गुरु गौतम समरिये, मनवंछित दातार ॥ ३ ॥**

**अर्थ**--जेना अंगुठाने विषे अमृत वसे छे अने जे लब्धिओना भंडाररूप छे; अने मनोवांछितने आपनार एवा गौतमस्वामीने जो समरीये, तो मनवांछित पूरण थाय छे. ॥ ३ ॥

**गामतणे पइसारणे, गुरु गौतम समरंत ॥**
**इच्छाभोजन घर कुशल, लच्छी लील करंत ॥ ४ ॥**

**अर्थ**––अने गामनी अंदर पेसती वखते जो गौतमस्वामी (गुरु) नुं नाम संभारीये तो इच्छा प्रमाणे भोजननी प्राप्ति थाय, वळी घरनी अंदर क्षेमकुशळता वाधे अने लक्ष्मी तेना घरने विषे लील करे. ॥ ४ ॥

**पुंडरिक गौतम पमुह, गणधर गुण संपन्न ॥**
**प्रह उठी नित प्रणमिये, चउदहसय बावन्न ॥ ५ ॥**

**अर्थ**––प्रथम पुंडरिक नामना गणधर अने छेल्ला गौतम गणधर ए आदि चउदसें बावन गणधरो छे. ते गुण संपन्न छे. तेमने प्रभातमां उठीने नित्य समरीये. ॥ ५ ॥

**सुरगो–तरू–मणि संपजे, जेहने लीधे नाम ॥**
**एहीज अक्षर समरतां, सीझे वंछीत काम ॥ ६ ॥**

**अर्थ**––जेमनुं नाम लेवाथी कामधेनु अने कल्पवृक्ष अने मणि तेमनी प्राप्ति थाय, एज अक्षरने संभारतां थका तमाम मनवांछित कार्य सिद्ध थाय. ॥ ६ ॥

पछी उभा थइ पच्चख्खाण करवुं (सामाइक, चोवीसत्थो, वांदणां, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग, पच्चखाण कर्युं छेजी.) पछी बेसी **"इच्छा-मोऽणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं"** कहीने चैत्यवंदन करवुं ॥

## ॥ ३८ अथ विशाललोचनदलं चैत्यवंदन× ॥

---

× प्रभात समये राइप्रतिक्रमणना छ आवश्यक पछी आ स्तुति बोलाय छे, माटे प्राभातिक वीरस्तुति पण कहेवाय छे.

**मू०—विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दन्तांशुकेसरम् ।**
**प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **विशाल**—विशाळ | **प्रातः**—प्रभात समये |
| **लोचन**—नेत्ररूपी | **वीर**—महावीर |
| **दलं**—पत्र | **जिनेंद्रस्य**—जिनेश्वरनुं |
| **प्रोद्यद्**—प्रकाशमान | **मुखपद्मं**—मुखरूपी कमळ |
| **दंत**—दांतना | **पुनातु**—पवित्र करो |
| **अंशु**—किरणो रूपी | **वः**—तमोने |
| **केसरं**—केसरा | |

**भावार्थ—**श्री महावीर स्वामीनुं मुख कमळ जेवुं छे, तेमां विशाळ नेत्ररूपी पांडदां छे अने देदीप्यमान दांतना किरणोरूपी केसरा रहेला छे, एवुं ते मुखकमळ तमोने पवित्र करो. १.

**मू०—येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात्सुखं सुरेन्द्राः ।**
**तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः**

**शब्दार्थः—**

| | |
|---|---|
| **येषां**—जे जिनेश्वरोनुं | **सुखं**—सुखने |
| **अभिषेककर्म**—स्नानकर्म | **सुरेंद्राः**—देवताना इन्द्रो |
| **कृत्वा**—करीने | **तृणमपि**—तरणा तुल्य पण |
| **मत्ताः**—उन्मत्त थयेला | **गणयंति**—गणता |
| **हर्षभरात्**—हर्षना समूहथी | **नैव**—नथी |

**नाकं**–स्वर्गने
**प्रातः**–प्रभात समये
**संतु**–थाओ
**शिवाय**–मोक्षने माटे
**ते**–ते
**जिनेन्द्राः**–जिनेंद्रो

**भावार्थ**—जे जिनेश्वरोना जन्माभिषेकादिक कार्य करवाथी अत्यंत हर्षने लीधे मदोन्मत्त थयेला इन्द्रो पोताना स्वर्गना सुखने तृणसमान पण मानता नथी, ते जिनेश्वरो प्रातःकाळे कल्याणने माटे हो. २.

**मू०**—कलङ्कनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम्।
अपूर्वचन्द्रं जिनचन्द्रभाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम् ॥ ३ ॥

**शब्दार्थः**—

**कलंक**–कलंकथी
**निर्मुक्तं**–रहित
**अमुक्त**–नथी मूकाणी
**पूर्णतं**–पूर्णता
**कुतर्क**–कुतर्कवाद
**राहु**–राहुने
**ग्रसनं**–भक्षण करनार
**उदयं**–उदय पामेला
**सदा**–हंमेशां
**अपूर्वचन्द्रं**–अपूर्व चन्द्ररूप
**जिनचन्द्र**–जिनचन्द्रना
**भाषितं**–आगमने
**दिनागमे**–प्रभात समये
**नौमि**–हुं नमस्कार करुं छुं
**बुधैः**–पंडितो वडे
**नमस्कृतं**–नमस्कार करायेला

**भावार्थ**—पंडितोए नमस्कार करेलुं, जिनचंद्रे प्ररूपेलुं, आगम अपूर्व एटले अलौकिक चंद्र समान छे, केमके लौकिक चंद्र के जे

आकाशमां देखाय छे ते कलंकसहित छे, अने आ आगमरूपी चंद्र तेथी रहित छे, लौकिक चंद्र पूर्णतारहित छे अने आ आगमरूपी चंद्र पूर्णतासहित छे, लौकिक चन्द्रनो राहु ग्रास करे छे पण आ आगमरूपी चन्द्रने कुतर्करूपी राहु ग्रास करी शकतो नथी, तथा लौकिक चन्द्र हंमेशां उदय पामतो नथी अने आ आगमरूपी चन्द्र तो निरंतर उदय पामेलोज छे, आवा अलौकिक आगमचन्द्रनी हुं प्रातःकाळे स्तुति करुं छुं. ३.

**पछी उभा थइ वर्तमानजिन स्तुति करवी.**

---

## ॥ श्री वर्त्तमान जिनस्तुति ॥

**स्वामी वंदु विहरमाण, जिनवर सीमंधर,**
**सीमनाम मर्याद, धर्मनी तास धुरंधर;**
**युगमंधर आधार, त्रिजगे नमुं भवसिंधुर,**
**बाहु सुबाहु जिणिंद, नमुं महिमागुणसुंदर ॥ १ ॥**

**अर्थ**—विचरता एवा श्री सीमंधरस्वामी जिनवर ते प्रते हुं वंदन करुं छुं. धर्मनी जे मर्यादा--हद तेमां धुरंधर अग्रेसर एवा सार्थक नाम-वाला युगमंधर नामे भगवान, संसाररूप जे समुद्र तेमां पडता त्रणे जगतना (प्राणीओने) आधार रूप तेने नमुं छुं. महिमा अने गुणो ए करी सुंदर एवा बाहु अने सुबाहुनामना जिनेन्द्रने हुं नमुं छुं. १.

**जंबुदीवि चत्तारि जिण, विजयवंत विहरंत;**
**क्षेत्रविदेहे तमतिमिर, दिनयर जेम हरंत ॥ २ ॥**

**अर्थ**—जंबुनामनां द्वीपमां ए चारे जिनो विजयवंत विद्यमान थया थका विचरे छे. महा विदेह नामना क्षेत्रने विषे रहेला जे जीवो तेओना (जेम अंधाराने सूर्य नाश करे छे तेम) अज्ञान रूप अंधकारने नाश करवामां सूर्य समान छे. २.

**धायइषंडे अठजाणि, सुजात स्वयंप्रभ;**
**रुषभानन जिन अनंतवीर्य, प्रणमुं सूरप्रभ;**
**श्री विशाल गुणगणविशाल टाले भवफेरा,**
**वज्रधर धर ऊद्धरि करे आनंद घणेरा. ॥ ३ ॥**

**अर्थ**—धातकी खंडनाम द्वीपने विषे आठ जिनेश्वरो जाणवा. प्रथम सुजात नामा स्वामी, बीजा स्वयं प्रभनामा स्वामी, त्रीजा ऋषभानन जिन अने चोथा अनंतवीर्य जिन अने पांचमा सूरप्रभनामा जिनने हुं प्रणाम करुं छुं. गुणना (गणे करीने) समूहथी विशाल विस्तार पामेला एवा छट्ठा श्री विशाल जिन ते विस्तारवाला जे भवना फेरा तेमने टालनारा छे, सातमा वज्रधरनामा जिन पृथ्वीनो उद्धार करीने घणा आनंदनो वधारो करे छे. ३

**चंद्रानन जिन अठमो, दुठकठ नीवार;**
**अट्ठकम्म निठविअ पे ठवस्ये भवनो पार. ॥ ४ ॥**

**अर्थ**—आठमा चंद्रानन जिन ते दुष्ट एवा जे कष्टो तेने अटकावनारा छे, आठ कर्मोने नाश करी भवना पारने पामशे.

**पुक्खरिद्धि जिण चंद्रबाहु, जिनराज विराजे,**
**चतुरिमचंग भुजंग, वाणिगुण गण जिम गाजे;**

**ईश्वर जगदीश्वर नमेवि, गुणगावे सुर नर,**
**नेमिप्रभ प्रभु वीरसेन, महाभद्र सुहंकर ॥ ५ ॥**

**अर्थ**—पुष्करार्द्ध द्वीपने विषे नवमा जिन राजा एवा चंद्रबाहु जिन विराजे छे. चतुर पुरुषोमां उत्तम एवा दशमा भुजंग नामा जिनराज ते वाणिना गुणे करीने मेघनी परे गाजे छे. जगतना इश्वर एवा श्री इश्वर जिनने नमीने देवो अने नरो सदागुण गाइ रह्या छे. नेमिप्रभजिन अने वीरसेन नामाजिन अने महाभद्रनामा जिन प्रभु सुखने करनारा छे. ५.

**नमिये ते श्रीदेवयश, जगि जस पसरे जास;**
**अजितवीर्य अष्टम करे, दिन दिन ज्ञानप्रकाश ॥ ६ ॥**

**अर्थ**—जगतमां जेमनुं यश पसरी रहेल छे एवा ते श्री देवयश नामा जिनने नमिये छीए. अजितवीर्य ( अष्टम ) नामा आठमां जिनराज दिवस दिवसने विषे ज्ञान गुणनो प्रकाश छे. ६.

**मणुयखित्त पणयाल लक्ख जोयण जाणीजे,**
**तिहछे पंच विदेह, गुरु ओपम तसु दीजे;**
**उसप्पिणी अवसप्पिणिकाल तिह, नहिय निरंतर,**
**स्वामी रिसहजिणिंद कालसरिसो नहु अंतर ॥ ७ ॥**

**अर्थ**—मनुष्य क्षेत्र पीस्तालीश लाख योजननो जाणवो. मनुष्य क्षेत्रमां पांच महाविदेह नामे मोटां क्षेत्रो छे, ने ते मोटी उपमावाला छे ( तेने मोटी उपमा आपवी जोइए केमके ज्यां तीर्थंकर जाते विचरे छे )

उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीकाल ते महाविदेह क्षेत्रने विषे क्यारे पण थतो नथी, स्वामी ऋषभदेव जिनेन्द्रना समयना सरखो समय छे तेमां क्यारे पण आंतरो पडतो नथी.

**सत्तरिसय उक्कोसपदि, जघनपदे जिन वीस;**
**विहरमान संपइ पयड, त्रिजगि नमुं निसदीस ॥ ८ ॥**

**अर्थ**—उत्कृष्ट पदने विषे एकसो सित्तर जिन ए क्षेत्रोमां होय, अने जघन्य पदने विषे तो वीश जिन होय; प्रकट रीते त्रण जगत्‌ने विषे हाल विचरतां एवा जिनोने दररोज हुं नमुं छुं.

**चउरासीलख पुव्वआयु, ए वीस जिणेसर,**
**पणसय धणुअ पमाणदेह, दाने अलवेसर;**
**प्रभु अतिशय चौत्रीस, सहस अठोत्तर लक्षण,**
**वाणी गुणपेंतीसभणी, रंजीय विचक्षण ॥ ९ ॥**

**अर्थ**—चोराशी लाख पूर्वनो आउखो ए वीश जिनेश्वरोनो छे. वळी पांचसो धनुष्यना प्रमाणना शरीरवाळा छे अने दानमां अतिशय मोटा अग्रेसरो छे. ए सर्व जिनो चोत्रीस अतिशयवाळा छे अने एक हजारने आठ उत्तम लक्षणो छे जेमां एवा छे. वाणीना जे पांत्रीश गुणो ते जेमनामां विद्यमान होवाथी राजी कर्या छे विचक्षण डाह्या पंडितोने जेमणे एवा छे.

**पालिराज महव्वयधरी, पामी केवलनाण;**
**पार्श्वचंद्रसूरि नित प्रहसमे, प्रणमे सुखनो ठाण ॥ १० ॥**

**अर्थ**—पोत पोताना राज्यने पाळी अने महाव्रतोने धारण करीने केवळ ज्ञानने जेओ पाम्या छे. श्री पार्श्वचंद्र सूरि हंमेशां संसारमां

जिनेश्वरोने प्रणाम करे छे. सुखना एकज स्थानरूप एवा स्वामियोने नमस्कार थाओ.

॥ पछी जंकिंचि० नमोऽत्थुणं० कही खमासमण आपी इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स्तवनं संदिसाएमि, बीजे खमासमणे स्तवनं भणेमि, नवकार गणी स्तवन कहेवुं ॥

## ॥ श्री समेतशिखरजिनुं स्तवन ॥

सिखरि समेत [1]जुहारयारे, धन आज [2]दिहारा; [3]संत-मनोरथनीपरेउंचा, [4]देखत [5]मोहनगारा ॥ सत्तरमकुंथुजिणेसर भेटया, सत्तर असंजम [6]वारारे ॥ ध० ॥ १ ॥ ते पासे श्री-पनरम जिनवर, धर्म धर्मना [7]दारा ॥ पंच सुमतिना [8]दायक पंचम, सुमति नाम [9]रसारारे ॥ ध० २ ॥ सोलकषाय [10]निवारक सोलमा, शांति शांतिदातारा[11] ॥ साते [12]भयनाजीपक सत्तम, नाथसुपारस सारारे ॥ ध० ३ ॥ तेरम जिणवर किरिया [13]चायक, विमल [14]विमलमतिकारा ॥ बंधनदोय निवारक तारक, अजितजिनंदअतिसारारे ॥ ध० ॥ ४ ॥ तिहांथी चलत चलत बहु [15]तुंगा, तेवीसमजिन [16]धारा ॥ पारस [17]पारसथी अधिकेरा ॥ जीवनकुं सुखकारारे ॥ ध० ॥

---

१ वांदा. २ दिवस. ३ सज्जन पुरुषनी वांच्छानी माफक मोटा उंच्चा. ४ जोतां. ५ मनोहर छे आकार जेमनुं. ६ दूर करनारा, ७ दरवाजा—बारणा. ८ आपनारा. ९ आत्माने गमता. १० दूर करनारा. ११ आपनारा. १२ जीतनार—भयने दूर करनार. १३ त्याग करनारा. १४ निर्मल बुद्धिने करनार. १५ उंच्चा. १६ निश्चय कर्या. १७ पारस-

॥ ५ ॥ पछिमदिसिमे आठ शिखरवर, वंद्या ऊच्छत्रकारा ॥
त्यांथी फरिने यात्राकरीने, पूर्वदिसे चित्तधारारे ॥ ध० ॥६॥
एकवीसे [18]सबलनिवारक, नमिनामे चित्तधारा; [19]नवदुकुशील
निवारक जिनपति, अर जगजीवउधारारे[20] ॥ ध० ॥ ७ ॥
उगणीसम मल्लिप्रभु भेटया, त्रिभुवन [21]रूपउदारा ॥ [22]एका-
दशप्रतिमानाप्ररूपक, श्री श्रेयांस [23]निहारारे ॥ ध० ॥ ८ ॥
[24]नवविध ब्रह्मगुप्तिना पालक, सुविधि देव [25]दयारा ॥
छलेश्याने छंडि अलेसी, पद्मप्रभ [26]निरहंकारारे ॥ ध० ॥
॥९॥ मुनिसुव्रत वीसम जिन [27]छेदी, [28]असमाधि जंजीरा ॥
त्यांथीनीचा अतिबहुउंचा, अष्टमडुंकसंभारारे ॥ध०॥ १० ॥
[29]मद जीपीने चरण धरीने, करमकर्या सवदुरा ॥ चंद्रप्रभ
जिणवर त्यां सिद्धा, अक्षय सुख लह्या पुरारे ॥ ध० ॥ ११ ॥

---

मगिथी मोहोटी महीमावाला. १८ आत्म गुणने मलीन करनार दोषो तेना त्याग करनारा. १९ अढार प्रकारना अब्रह्मचर्य दोषने दूर करनार. २० जगत् जीवोना उद्धार करनारा तारनारा. २१ त्रण जगत्मां सर्वथी अधिक रूप गुणवाला. २२ अगिआर अभिग्रह विशेष जे प्रतिमा तेना उपदेश करनारा. २३ दर्शन कर्या. २४ नव प्रकारे ब्रह्मचर्य रक्षण करवानी वाडने आदरनारा, २५ दयावाळा, २६ अहंकार विनाना. २७ छेदन करनारा २८ असमाधिस्थान रूप बेडीने. २९ आठ मदना त्याग पूर्वक दीक्षा स्वीकारी—अथवा सम्मेत शिखरगिरिने पोताना चरण—पादथी फरसी मतलब के त्यां आवि आठे कर्मने अत्यंत दूर कर्या नाश कर्या.

चउदह जीवरासना पालक, अनंतनाथ जिनसूरा ॥ [३०]श्रमण-धरम दस विधना धारक, सीतल [३१]सहज सनूरारे ॥ध० १२॥ [३२]दंडगुप्ति त्रिय वारी पारी, संभव भवकुं निवारा ॥ [३३]मेघा-डंबर चिहुंगत छेदक, अभिनंदन लह्या पारारे ॥ ध० १३ ॥ वीस जिणेसर वीसे टूंके, कर्म कर्या सहु चूरा, ए जिनचरण जे भावे वंदे, सुख लहे ते जग भूरारे ॥ ध० १४ ॥ [३४]वरस अढार तेणवे पोसे, उज्जल सातम झारा ॥ तलहटिमंदिर ते सवि वंद्या, हर्षचंद्रसूरि सारारे ॥ ध० १५ ॥

पछी जयवीयराय कही खमासमण देइ कहिये श्री आचार्य० बीजे उपाध्याय० अने त्रीजे सर्व साधु वांदीए, पछी खमासमण देइ श्रावक सामायक पारे ॥

## ॥ इति राइप्रतिक्रमण विधि ॥

---

३० मुनियोना दश प्रकारना धर्मने धारण करनारा, ३१ स्वाभाविक तेज प्रतापने धारण करनारा होवाथी बहु कांतिवाला, ३२ त्रण दंडने निवारण करनारा अने त्रण गुप्तियोने पालन करनारा एवा शंभवनाथ स्वामिये संसारना भय जे जन्म, मरण तेने दूर कर्या. ३३ मेघाडंबर नामना छत्रने धारण करनारा संसारना त्रिविध तापथी तपेला प्राणियोने पोतानी वाणी रूप अमृत गुणोथी शीतलता करनारा, वली चार गतियोने नाश करनारा अभिनंदननाथ पांचमी गति मोक्षने पाम्या. ३४ संवत् १८९३ ना पोष शुद ७ में दर्शन करी वांद्या.

## ॥ अथ साधुजीने चौद प्रकारना दाननी निमंत्रणा ॥

पच्चक्खाण कर्या पछी बे ढीचण अने मस्तक भूमिये लगाडी डावा हाथे मुखे उत्तरासण देइ जमणो हाथ गुरुने पगे लगाडी आवी रीते कहे,—

॥ [1]इच्छाकारी भगवन् पसाय करी. फासुअं एसणिज्जेणं, असणं पाणं खाइमेणं साइमेणं वच्छ, पडिग्गह, कंबल पायपुच्छणेणं, पडिहारिअ, पीढ, फलग, सिज्जा संथारएणं ओसह भेसज्जेणं भयवं अणुग्गहो कायव्वो ॥ इति निमंत्रणा ॥

### श्री सरस्वती–श्रुतदेवी स्तुतिः

श्वेतपद्मासना देवी, श्वेतपद्मोपशोभिता ।
श्वेताम्बरधरा देवी, श्वेतगन्धानुलेपना ।
अर्चिता मुनिभिः सर्वै-र्ऋषिभिस्स्तूयते सदा ।
एवं ध्यात्वा सदा देवीं वांछितं लभते नरः ॥

---

१ हुं इच्छुं छुं हे भगवन् कृपा करी आपने जे कांइ फासु निर्दोष आहार, पाणी, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कांबलो, रजोहरण, पाट, पाटियो बाजोट, शय्या, संथारो—आशनिउं, औषध—भेषज विगेरे जे कांइ वस्तुनी इच्छा होय तो हे भगवन् ! मारा उपर अनुग्रह—महेरबानी करी लाभ आपसोजी.

## ॥ अथ श्री पाक्षिकादि-प्रतिक्रमण-प्रारम्भः ॥

### ॥ चतुर्विंशति-जिन-स्तवनम् ॥

मूः—अर्हन्तं जगदीश्वरं गुणनिधिं, वस्विन्दुदोषोज्झितं,
जन्तूनां हितकारकं प्रणमतां, भावेन भव्यात्मनाम्।
कल्याणावलि-कन्द-कन्दलनताप्राघृट्पयोदोपमं,
वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीआदिनाथं मुदा ॥ १ ॥

### शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| **अर्हन्तं**-अरिहंत | **जगदीश्वरं**-जगतना इश्वर | **गुणनिधिं**-गुणना भंडार |
| **वस्विन्दु**-वसु, चंद्र, | **दोषोज्झितं**-दोष १८ रहित | **जन्तूनां**-जीवोना |
| | **हितकारकं**-हित करनार | **प्रणमतां**-नमनारना |
| **भावेन**-भावथी | **भव्यात्मनाम्**-मोक्षयोग्य, | **कल्याण**-कल्याणनी |
| **आवलि**-पंक्ति रूप | **कन्द**-कन्दने | **कन्दलनता**-अंकुरित करवामां |
| | **प्रावृट्**-वर्षाऋतुना | |
| **पयोदोपमं**-मेघ समान | **वन्दे**-वांदुं छुं | **अहं**-हुं |
| | **सततं**-निरंतर | **सुर**-देव |
| **असुर**-दानव | **नतं**-नमाएलां | **श्रीआदिनाथं**- ऋषभदेवने |
| **मुदा**-हर्षथी | | |

**टी. अर्हन्तमिति**-जगताम् ईश्वरः-स्वामी-जगदीश्वरः, तं, गुणानां-ज्ञान-दर्शनादीनां निधिः-सागरः-गुणनिधिः, तं, वसवश्च अष्टौ इन्दुश्च एकः

वस्विन्दवः, अष्टादश ते च ते दोषाश्च वस्विन्दुदोषाः तैः उज्झितस्त्यक्तः वस्विन्दुदोषोज्झितः, तम् अष्टादशदोषरहितं, (अज्ञानं १, क्रोधः २, मदः (अष्टौ मदाः) ३, अहंकारः-मानः ४, लोभः ५, माया ६, रतिः ७, अरतिः ८, निद्रा ९, शोकः १०, अलीकवचनं ११, चौर्यं १२, मत्सरः १३, भयं १४, प्राणिवधः १५, प्रेमक्रीडा १६, प्रसङ्गः १७, हास्यम् १८,) इत्येतेऽष्टादश दोषाः ॥ जातिमदः १, कुलमदः २, बलमदः ३, ऐश्वर्यमदः ४, लाभमदः ५, रूपमदः ६, तपोमदः ७, श्रुतमदः ८, इत्यष्टौ मदाः । जन्तूनां-प्राणिनां, करोतीति कारकः, हितस्य कारकः—हितकारकः, तं, भावेन-उपयोगेन, प्रकर्षेण नमन्तीति प्रणमन्तः, तेषां भव्यो—मोक्षार्हः आत्मा येषां ते भव्यात्मानः, तेषां, कल्याणानां—सत्कार्याणाम् आवलिः-पङ्क्तिः कल्याणावलिः,सैव कन्दः,तस्य कन्दलनस्य भावः कन्दलनता, कल्याणावलिकन्दकन्दलनता तस्यां, प्रावृषः पयो ददातीति पयोदो—मेघः उपमा यस्य सः कल्याणावलिकन्दकन्दलनता-प्रावृट्पयोदोपमः, तं, सुराश्च देवाः-असुराश्च दानवाः-सुरासुराः, तैर्नतम्, अर्हतीति अर्हन्, तं, श्रीश्चतुस्त्रिंशदतिशयाः, तया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ आदिनाथश्च-श्रीआदिनाथः, तं प्रथमम् ऋषभं जिनेश्वरं सततं-निरन्तरं मुदा-हर्षेणाहं श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिः वन्दे-वन्दनं करोमीत्यर्थः ॥१॥

**भावार्थ**—त्रण जगतना ईश्वर, गुणना भंडार, अढार दोष रहित, भावथी नमस्कार करनार भव्य जीवोनुं हित करनार, भव्य जीवोना कल्याणनी पंक्तिरूप कंदने अंकुरित करवामां वर्षाऋतुना मेघ समान अने देव-दानवोए जेने नमस्कार करेल छे; एवा प्रथम जिनेश्वर श्रीआदिनाथने हुं (पार्श्वचन्द्रसूरि) वांदुं छुं-स्तवुं छुं. १

मू०—मोहाद्यैररिभिः कषायगुरुभिर्गाढं च सन्तापितः,
तिर्यङ्-नारक-देव-मानव-कुगत्योघासुखं प्रापितः।
तज्जेतारममुष्य वारणकृते, कृत्वोद्यमं साम्प्रतं,
वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीवीतरागाजितम् ॥ २ ॥

शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| **मोहाद्यैः**—मोह विगेरे, | **अरिभिः**—शत्रुओथी, | **कषायगुरुभिः**—कषायवडे पुष्ट |
| **गाढं**—अत्यन्त | **च**—अने | |
| **सन्तापितः**—सन्ताप पामेल | **तिर्यङ्**—तिर्यंच | **नारक**—नारकी |
| | **देव**—देव | **मानव**—मनुष्य |
| **कुगति**—कुगतिनो | **ओघ**—समूह | **असुखं**—दुःख |
| **प्रापितः**—पमाडेल | **तज्जेतारं**—तेने जीतनार | **अमुष्य**—आने |
| **वारणकृते**—दूर करवा माटे, | **कृत्वा**—करीने | **उद्यमं**—उद्यम |
| | **साम्प्रतं**—हमणां | **वन्दे**—वांदुं छुं |
| **अहं**—हुं | **श्रीवीतराग**—अतिशयवान वीतराग | **अजितं**—अजितनाथने |

**टी. मोहाद्यैरिति**-कषायाः-क्रोधादयश्चत्वारः, ते च अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानिप्रत्याख्यानिसंज्वलनभेदैः षोडश ( अनन्तानुबन्धिनः क्रोध-मान-माया-लोभाः १, अप्रत्याख्यानिनः क्रोध-मान-माया-लोभाः २, प्रत्याख्यानिनः क्रोध—मान—माया-लोभाः ३, संज्वलनाः क्रोध—मान—माया—लोभाः ४ ), तैः गुरवः-पुष्टाः-कषायगुरवः, तैः, आदौ भवः आद्यः, मोह आद्यो—मुख्यो येषां ते मोहाद्याः, तैः अरिभिः—शत्रुभिः—अन्तरङ्ग-

वैरिभिरित्यर्थः, गाढम् अतिशयेन सम्यक्तापितः सन्तापितः, तिर्यञ्चश्च नारकाश्च देवाश्च मानवाश्च तिर्यङ्-नारक-देव-मानवाः तेषां कुत्सिताः गतयः तिर्यङ्-नारक-देव-मानव-कुगतयः,तासाम् ओघाः-समूहाः तिर्यङ्-नारक-देव-मानव-कुगत्योघाः, तेषाम् असुखं-दुःखं प्रापितः-नीतः तिर्यङ्-नारक-देव-मानव-कुगत्योघासुखंप्रापितः, एतादृशोऽहं साम्प्रतम् अधुना उद्यमं-प्रयत्नं कृत्वा अमुष्य दुःखस्य वारणकृते-निवारणाय, तेषां --मोहादिरिपूणां जेता तज्जेता-तज्जयकारकः, तं सुरासुरनतं, श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ विशेषेण इतः-गतः रागो यस्मात् स श्रीवीतरागः स चासौ अजितश्च श्रीवीतरागाजितः, तं द्वितीयम् अजितं जिनं सततं वन्दे-वन्दनं करोमि ॥ २ ॥

**भावार्थ**—क्रोधादि कषायोथी पुष्ट थयेल, मोहादि शत्रुथी अत्यंत संताप पामेल, तिर्यंच-नारकी-देव तथा मनुष्योनी कुगतिओना समूहथी दुःख पामेल, एवो हुं हमणां उद्यम करीने, ए दुःखने निवारण करवा माटे, ते मोहादि तथा रागादि शत्रुओने तथा तिर्यंचादि गतिओने जीतनार, अने देव-दानवोए जेने नमस्कार करेल छे, एवा श्री वीतराग अजितनाथस्वामिने हुं निरंतर वन्दना करुं छुं. २

**मू०**—**सावित्रीयुवतीरतः कमलभूर्विष्णू रमासंगतः**
**कण्ठेकाल उमायुतस्त्रय इमे, देवाः सरागा भुवि।**
**मोत्तीर्णाः, स्वयमन्यतारणविधौ, नालं विदित्वा ततो,**
**वन्दे संभवमुत्तमं सुरनतं, श्रीवीतरागं मुदा ॥ ३ ॥**

## शब्दार्थः—

सावित्री—सावित्री, युवतीरतः—स्त्रीमां रागी कमलभूः—ब्रह्मा
विष्णुः—कृष्ण रमासंगतः—लक्ष्मी-सहित कण्ठेकालः—महादेव
उमायुतः—पार्वती सहित त्रयः—त्रण
इमे—आ देवाः—देवो
सरागाः—रागी भुवि—पृथ्वीमां नोत्तीर्णाः—तर्या नथी
स्वयम्—पोते अन्य—बीजाने तारणविधौ—तारवामां
न—अलं—समर्थ नथी विदित्वा—जाणीने ततो—तेथी

**टी. सावित्रीति**—कमलाद् भवतीति कमलभूः—ब्रह्मा, सावित्री एव युवती—सावित्रीयुवती तस्यां रतः—सक्तः, सावित्रीयुवतीरतः, सावित्री-नाम्न्यां स्त्रियां रागयस्ति, वेवेष्टि—व्याप्नोतीति विष्णुः, रमया—लक्ष्म्या सङ्गतः—संयुक्तः रमासङ्गतः, रमासंयुक्तोऽस्ति, कण्ठे कालो यस्य सः कण्ठेकालः—महादेवः, उमया—पार्वत्या युतः—सहितः उमायुतः—उमा-सहितोऽस्ति, भुवि—पृथ्व्याम् इमे त्रयो देवाः सरागाः, रागेण सह वर्तन्ते इति सरागाः—रागवन्तः सन्ति, ततः सरागत्वात् स्वयं न उत्तीर्णाः—न पारंगताः, अन्येषां तारणस्य विधिः तारण—विधिः, तस्मिन् तारणविधौ नालं—न समर्थाः, इति विदित्वा—ज्ञात्वा सुरैः—देवैः नतः सुरनतः, तं श्रीवीतरागम् उत्तमं संभवनामानं तृतीयं जिनं मुदा—हर्षेण वन्दे—वन्दनं करोमि ॥ ३ ॥

**भावार्थ**—ब्रह्मा सावित्रीमां रागी छे, विष्णु रमा (लक्ष्मी) साथे जोडायेल छे, अने महादेव पार्वती युक्त छे. पृथ्वी उपर आ त्रण देवो

सरागी छे, तेथीज पोते तरेला नथी अने बीजाने तारवा समर्थ नथी, एम जाणीने देवोए नमेला एवा वीतराग-उत्तम श्री संभवनाथने हुं हर्षथी वन्दना करुं छुं. ३

मू०—ख्यातो यः किल सर्वतीर्थिकगणैस्तथ्योपदेशोत्तम-
चञ्चत्-केवलकेवलैकनिलयो, योऽनन्तभानूपमः ।
सन्तं तं कृतमस्तकाञ्जलिपुटो, भक्तिप्रशस्ताशयो,
वन्देऽहं सततामिनन्दनजिनं, श्रीवीतरागं मुदा ॥ ४ ॥

शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| **ख्यातः**—कहेल | **किल**—निश्चय | **सर्व**—सर्व |
| **तीर्थिक**—दर्शनना-आचार्य | **गणैः**—समूहोए | **तथ्य**—सत्य |
| | **उपदेश**—उपदेश देवामां | **उत्तमः**—उत्तम |
| **चञ्चत्**—देदीप्यमान | **केवल**—केवळ | **केवलैक**—ज्ञान मात्र |
| **निलयो**—स्थान | **अनन्त**—अनन्त | **भानु**—सूर्य |
| **उपमः**—समान | **सन्तं**—विद्यमान | **कृत**—करेली |
| **मस्तक**—माथे | **अञ्जलि**—हाथ जोडी | **पुट**—जोड |
| **भक्ति**—सेवाथी | **प्रशस्त**—शुभ | **आशयः**—भाववाळो |
| **अभिनन्दन**—अभिनंदन | | |

**टी. ख्यातइति**—तीर्थम् अस्ति एषामिति तीर्थिकाः, सर्वे च ते तीर्थिकाश्च सर्वतीर्थिकाः, तेषां गणाः—समूहाः, तैः, यो जिनः, तथ्यः—सत्यः, स चासौ उपदेशश्च तथ्योपदेशः, तस्मिन् उत्तमः—श्रेष्ठः, तथ्योपदे-

शोत्तमः, ख्यातः—कथितोऽस्ति, किल—निश्चयेन, यः प्रभुः, चश्वत् च तत् केवलं च चश्वत्केवलं, केवलनाम केवलज्ञानं तस्य, केवलश्चासौ एक-निलयश्च चश्वत्केवलकेवलैकनिलयः, केवलज्ञानमात्राश्रयी इत्यर्थः, न विद्यते अन्तो येषां तेऽनन्ताः,ते च ते भानवश्च अनन्तभानवः,तेषाम् उपमा यस्य सोऽनन्तभानूपमः, यो जिनोऽस्ति तं पूर्वोक्तं सन्तं त्रिकालाबाधितं भूत—भविष्य—वर्तमान—कालत्रये विद्यमानमित्यर्थः, श्रीवीतरागम् अभिनन्दयति भव्यगणानिति अभिनन्दनः स चासौ जिनश्च अभिनन्दनजिनः, तं चतुर्थं जिनं, कृतः मस्तके—शिरसि अञ्जलिपुटो येन सः कृतमस्तकाञ्जलिपुटः भक्त्या प्रशस्तः—शुद्ध आशयो यस्य स भक्तिप्रशस्ताशयः, एतादृशोऽहं सततं निरन्तंर मुदा—हर्षेण वन्दे—वन्दनं करोमि ॥ ४ ॥

**भावार्थः**—सर्व दर्शनना आचार्योए जे प्रभुने सत्य उपदेश आपवामां उत्तम कहेल छे अने जे प्रभु देदीप्यमान अनन्त सूर्य समान केवळज्ञाननुं स्थान छे, एवा भूत—भविष्य अने वर्त्तमान त्रणे काळमां विद्यमान वीतराग श्रीअभिनंदन जिनेश्वरने, भक्तिथी उत्तम भाववाळो थइ मस्तके हाथ जोडीने हुं निरन्तर हर्षथी वांदुं छुं. ४

**मू०—यं जन्मावसरे सुरेन्द्रनिवहाः स्वर्णाद्रिशृङ्गोत्तमे,**
**तुङ्गे स्म स्नपयन्ति निर्मलजलैः, स्नुत्वा स्म चोपासते;**
**जिग्युर्नो परतीर्थिकाः श्रुतबलैर्यं, मोघवाचो हि तं,**
**वन्देऽहं सुमतिं सुरासुरनतं, श्रीवीतरागं मुदा ॥ ५ ॥**

**शब्दार्थः—**

**यं**—जेने **जन्मावसरे**—जन्म समये **सुरेन्द्र**—इन्द्रोना

**निवहाः**-समूह **स्वर्णाद्रि**-मेरु पर्वतना **शृङ्गोत्तमे**-उत्तम शिखर
**तुङ्गे**-उंचा, **स्म स्नपयति**-स्नान- **निर्मल**-निर्मळ
**जलैः**-पाणिथी कराव्युं, **स्तुत्वा**-स्तुति करीने
**उपासते**-उपासना- **जिग्युः**-जीत्या **न**-नहीं
करी **परतीर्थिकाः**-अन्य- **श्रुतबलैः**-श्रुतबळथी
**मोघवाचो**-निष्फळ- दर्शनीओ **हि**-निश्चय
वाणीवाळा **तं**-तेने **सुमतिं**-सुमतिनाथने

**टी॰यम् इति**-जन्मनः अवसरः-समयः-जन्मावसरः, तस्मिन्, सुराणां-देवानाम् इन्द्राः चतुःषष्टिः तेषां निवहाः-समूहाः-सुरेन्द्रनिवहाः, तुङ्गे-उन्नते, स्वर्णस्य अद्रिः-पर्वतः-स्वर्णाद्रिः-मेरुः तस्य शृङ्गाणि-शिखराणि स्वर्णाद्रिशृङ्गाणि, तेषु उत्तमं, तस्मिन्, निर्गतो मलो येभ्यस्तानि निर्मलानि तानि च तानि जलानि च निर्मलजलानि तैः यं प्रभुं स्नपयन्ति स्म स्नानं कारयामासुः, च स्तुत्वोपासते-सेवां कुर्वते, मोघाः-निष्फला वाचो येषां ते मोघवाचः, एतादृशः परे च ते तीर्थिकाश्च परतीर्थिकाः, श्रुतानां शास्त्राणां बलानि श्रुतबलानि तैर्यं प्रभुं नो जिग्युः-न जितवन्तः, तं पूर्वोक्तं सुरासुरनतं श्रीवीतरागं सुष्टु मतिर्यस्य स सुमतिः, तं सुमतिनामधेयं पञ्चमं जिनम् अहं मुदा-हर्षेण वन्दे-वन्दनं करोमि ॥ ५ ॥

**भावार्थ**--जन्म समये (चोसठ) इंद्रोना समूहे, उन्नत मेरुपर्वतना उत्तम शिखर उपर, निर्मळ जळ वडे, जे प्रभुने स्नान कराव्युं अने स्तुति करीने सेवा करी, वळी निष्फळ वाणीवाळा अन्य दर्शनीओ, शास्त्रना बळथी, जे प्रभुने खरेखर न जीती शक्या, ते देव-दानवोए नमेल एवा श्रीवीतराग सुमतिनाथने हुं आनन्दथी वन्दन करुं छुं. ५

मू०—येनाजेयबलः स्मरस्त्रिभुवने, युद्धे जितो लीलया,
येनाज्ञानतमो विनेयहृदयस्थानस्थितं हेलया।
दूरोत्सारितमेव सत्यवचनैराकृष्य तं बोधिदं,
वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, रक्ताभपद्मप्रभम् ॥ ६ ॥

**शब्दार्थः—**

**येन**—जेथी **अजेयबलः**—नहि जीताय एवा बळवाळा **स्मरः**—कामदेव **त्रिभुवने**—त्रिभुवनमां **युद्धे**—युद्धने विषे **जितः**—जीत्या **लीलया**—लीला मात्रथीज **अज्ञानतमः**—अज्ञानरूप अन्धकार **विनेय**—शिष्यना **हृदयस्थान**—हृदयरूप-स्थानमां **स्थितं**—रहेला **हेलया**—लीलावडे **दूरोत्सारितं**—दूर-फेंकी दीधुं **एव**—जरूर **सत्यवचनैः**—सत्य-वचनोथी **आकृष्य**—खेंचीने **तं**—तेने **बोधिदं**—समकित आपनार **रक्ताभ**—राती कान्ति-वाळा **पद्मप्रभम्**—पद्मप्रभुने

टी॰ **येनाजेयबलः**—इति—येन प्रभुणा त्रयाणां भुवनानां समहारस्त्रिभुवनं तस्मिन्, जेतुं योग्यं जेयं, न जेयम् अजेयम्, बलं यस्य सोऽजेयबलः, स्मरः—कामः, युद्धे लीलया—क्रीडामात्रेण जितोऽस्ति, येन स्वामिना, विनेयानां—शिष्याणां हृदयानि विनेयहृदयानि, तान्येव स्थानानि विनेयहृदयस्थानानि, तेषु स्थितम् अज्ञानम् एव तमोऽन्धकारः, सत्यानि च तानि वचनानि च सत्यवचनानि, तैः, हेलया—क्रीडया आकृष्य दूरमुत्सारितं दूरोत्सारितं-दूरीकृतं तं पूर्वोक्तं बोधि—सम्य-

क्त्वरत्नं ददातीति बोधिदः तं, सुरासुरनतं, रक्ता आभा यस्य स रक्ताभः, स चासौ पद्मप्रभश्च रक्ताभपद्मप्रभः, तं षष्ठं जिनम् अहं सततं वन्दे—वन्दनं करोमि. ६

**भावार्थ**—जेणे त्रण जगतमां कोइथी न जीताय, एवा बळवाळा कामदेवने, युद्धने विषे लीलामात्रथीज जीती लीधो अने जेणे शिष्योना हृदयोरूप स्थानमां रहेल, अज्ञानरूप अन्धकारने सत्यवचनोवडे लीला मात्रथीज खेंचीने दूर फेंकी दीधुं, ते समकित आपनार अने देवदानवोए नमेला एवा रक्त कान्तिवाळा श्रीपद्मप्रभु स्वामीने हुं निरंतर वन्दन करुं छुं. ६

**मू०—यस्मै सत्तपसे विशालयशसे, दत्त्वा विशुद्धं त्रिधाऽऽ-**
**हारं पारणके चतुर्विधमिह, भापुर्मनोवाञ्छितम् ।**
**भव्याः प्रेत्यसुजन्म तुच्छभवतां, चेत्यद्भुतार्थं हि तं,**
**वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीमत्सुपार्श्वं मुदा ॥ ७ ॥**

**शब्दार्थः—**

**यस्मै**—जेने **सत्तपसे**—श्रेष्ठ तपस्वी **विशालयशसे**—विशाळयशवाळा
**दत्त्वा**—आपीने **विशुद्धं**—शुद्ध
**त्रिधा**—त्रण प्रकारे **आहारं**—आहार **पारणके**—पारणामां
**चतुर्विधं**—चार-प्रकारनो **इह**—आ लोकमां **भापुः**—पाम्या
**मनोवाञ्छितं**—मनइच्छित **भव्याः**—हे भव्यो
**प्रेत्य**—परलोकमां **सुजन्म**—सारो जन्म

**तुच्छभवतां**–अल्प- संसार **इति**–ए प्रमाणे **श्रीमत्सुपार्श्वं**–श्रीमान् सुपार्श्वनाथने **अद्भुतार्थं**–अद्भूत-अर्थवाळा

**टी. यस्मा इति** विशालं यशो यस्य सो विशालयशास्तस्मै विशालयशसे–भूरिकीर्तये, सत्तपो यस्य सः सत्तपाः, तस्मै सत्तपसे, यस्मै स्वामिने पारणके व्रतान्तभोजने त्रिभिः–मनोवचनकायैः प्रकारैः त्रिधा, विशेषेण शुद्धः विशुद्धः, तं सर्वदोषरहितमित्यर्थः, चतस्रः विधाः-प्रकाराः अशन-पान-खादिम-स्वादिमाः यस्य स चतुर्विधः तम् आहारं दत्त्वा भव्याः इहास्मिँल्लोके मनसः वाञ्छितं मनोवाञ्छितं, तत् प्रापुः प्राप्नुवन्तः, च प्रेत्य–परलोके, शोभनं जन्म सुजन्म, तत् सुगतिमित्यर्थः प्रापुः, तथा तुच्छः–अल्पः स चासौ भवश्च तुच्छभवः, तस्य भावः तुच्छभवता, ताम् अल्पसंसारित्वं स्तोकभवैर्मोक्ष-गामित्वमित्यर्थः, प्रापुर्हि निश्चयेन तम् अद्भुतः–आश्चर्यकारकोऽर्थो यस्य सोऽद्भुतार्थः, तं ज्ञानादिगुणयुक्तं, सुरासुरनतं, श्रीः अस्ति अस्येति श्रीमान् स चासौ सुपार्श्वश्च श्रीमत्सुपार्श्वः, तं सप्तमं जिनं मुदा हर्षेणाहं वन्दे. ७

**भावार्थ**—विशाल यशवाळा अने श्रेष्ठ तपस्वी, एवा जे प्रभुने, भव्य प्राणिओए पारणामां मन, वचन अने कायाथी शुद्ध (नवकोटिथी शुद्ध) चार प्रकारनो आहार आपीने तेओ आ लोकमां मनोवांछित फळ पाम्या अने परलोकमां सद्गति पामीने अल्प संसार कर्यो, ए माटे निश्चे ते अद्-भूत अर्थवाळा, देवदानवोए नमेला, सातमा श्रीमान् सुपार्श्वजिनने, निरंतर आनंदथी हुं वन्दन करुं छुं. ७

मू०—यस्माज्जैनमतं मतोत्तममिदं, प्रावर्त्तत प्रीतिदं,
सम्यक् प्राणिदयोपदेशपरमं, मिथ्यात्वविध्वंसनम्।
निर्दोषं शिवयानयानसदृशं, पापप्रणाशाय तं,
वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, चन्द्रप्रभाख्यं जिनम् ॥८॥

**शब्दार्थः—**

**यस्मात्**—जेनाथी **जैनमतं**—जिनमत **मतोत्तमं**—सर्वमतोमां
**इदं**—आ **प्रावर्त्तत**—प्रवर्त्यो **प्रीतिदं**—प्रीति आपनार
**सम्यक्**—श्रेष्ठ **प्राणि**—जीवोनी **दयोपदेशपरमं**—दयानो-उपदेश आपनार
**मिथ्यात्व**—मिथ्यात्वने **विध्वंसनम्**—नाश-करनार
**निर्दोषं**—दोषरहित **शिवयान**—मोक्षमार्गमां
**यानसदृशं**—रथ-समान **पापप्रणाशाय**—पापनो नाश करवाने माटे **चन्द्रप्रभाख्यं**—चन्द्रप्रभु-नाम
**जिनम्**—जिनने

**टी. यस्माद् इति**—प्रभोः, मतेषु उत्तमं मतोत्तमं, प्रीतिं ददातीति प्रीतिदं, जिनानामिदं जैनं, तत् च तत् मतं च जैनमतं, प्रावर्त्तत—प्राचलत्, सम्यक्, प्राणाः सन्ति एषामितिप्राणिनः, तेषां दया प्राणिदया, तस्या उपदेशः प्राणिदयोपदेशः, तस्मिन् परमः—उत्कृष्टः प्राणिदयोपदेशपरमः, तं मिथ्यात्वम् असद्वस्तुनि सद्वस्तुकल्पनं तस्य विध्वंसनः—विनाशकः, तं, निर्गताः दोषाः रागादयो यस्मात् स निर्दोषः, तं, यानेन—रथेन सदृशः यानसदृशः, शिवस्य—मोक्षस्य यानं—मार्गः शिवयानं, तस्मिन् यानसदृशः शिवयानसदृशः, तं सुरासुरनतं तं चन्द्राद् अधिका चन्द्राधिका, सा प्रभा

यस्य स चन्द्रप्रभाख्यः, तम् अष्टमं जिनं ( मम ) पापानां प्रकर्षेण नाशः पापप्रणाशः, तस्मै सततम् अहं वन्दे—वन्दनं करोमि. ८

**भावार्थः**—जे प्रभुथी सर्व मतोमां श्रेष्ठ, प्रीति आपनार आ जैनमत प्रवर्त्यो अने प्राणिओनी सम्यक् दयाना उपदेशमां अति श्रेष्ठ, मिथ्यात्वनो नाश करनार, सर्वदोषरहित अने मुक्ति मार्गमां महान रथ समान एवा, देव—दानवोए नमेला, श्री चन्द्रप्रभु नामे आठमा जिनेश्वरने मारा पापोना नाश माटे, हुं निरंतर वन्दन करुं छुं. ८

**मू०**—यस्यास्यादुपनिर्गता मधुरगीरार्याननार्यानपि ।
प्रीणातीषुगुणप्रमाणगुणवत्यायोजनं संस्थितान् ॥
संशीतेरपनोदिनी सुरनृणामाल्हादिनी तं प्रभुं ।
वन्देऽहं सुविधिं सुरासुरनतं, श्रीवीतरागं मुदा ॥९॥

**शब्दार्थः**—

**यस्य**—जेना **आस्यात्**—मोढाथी **उपनिर्गता**—नीकळेली
**मधुरगीः**—मधुरवाणी **आर्यान्**—आर्योने **अनार्यान्**—अनार्योने
**अपि**—पण **प्रीणाति**—खुशी करे छे **इषु**—बाण ५
**गुण**—गुण ३ **प्रमाण**—गुणतां **गुणवती**—गुणवाळी
**आयोजनं**—जेटला-योजन सुधी **संस्थितान्**—रहेलाओनुं **संशीतेः**—संशयने
**अपनोदिनी**—दूर-करनारी **सुरनृणाम्**—देव-मनुष्योने
**आल्हादिनी**—हर्ष करनारी **प्रभुं**—प्रभुने
**सुविधिं**—सुविधिनाथने

**टी. यस्येति** यस्य प्रभोः आस्यात्–मुखात् उपनिर्गता, इषवश्च पञ्च गुणाश्च त्रयः इषुगुणाः, ते प्रमाणं येषां ते इषुगुणप्रमाणाः, ते च ते गुणाश्च, इषुगुणप्रमाणगुणाः, ते सन्ति अस्या इति इषुगुणप्रमाणगुणवती, पञ्चत्रिंशद्गुणवती, संशीतेः–संशयस्य अपनोदिनी, संशयविदारिणी, सुराश्च नरश्च सुरनराः, तेषाम् आल्हादयतीति आल्हादिनी–आनन्ददायिनी, मधुरा–मनोहरा चासौ गीश्च मधुरगीः, आयोजनं योजनपर्यन्तं सम्यक् स्थिताः संस्थिताः, तान् आर्यान् उत्तमान्, न आर्याः अनार्याः, तान् अपि प्रीणाति सन्तोषं ददाति सुरासुरनतं श्रीवीतरागं तं नवमं सुविधिनामानं जिनम् अहं मुदा–हर्षेण वन्दे–वन्दनं करोमि. ९

**भावार्थ**—जे प्रभुना मुखथी नीकळेली पांत्रीश गुणयुक्त, संशयने नाश करनारी मनोहरवाणी, एक योजन सुधी रहेला उत्तम आर्य तथा अनार्योने पण खुशी करे छे, एवा ते देव–दानवोए नमेला, वीतराग श्री सुविधिनाथने, हुं हर्षथी वन्दन करु छुं. ९

**मू०**—**यस्मिन् श्रीधृतिकीर्तिकान्तिबलधीमुख्या अनेके गुणा।**
**यस्मिन् दोषलवोऽपि नैव भवति, स्फीतं यशो निर्मलं ॥**
**तद् गृह्णाति गुणान्न दोषनिचयं, यस्तं सतामुत्तमं।**
**वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीशीतलस्वामिनम् ॥१०॥**

**शब्दार्थः**—

| | | |
|---|---|---|
| **यस्मिन्**–जेमां | **श्री**–शोभा | **धृति**–धीरज |
| **कीर्ति**–कीर्ति–यश | **कान्ति**–कान्ति | **बल**–बळ |

| | | |
|---|---|---|
| **धी**–बुद्धि | **मुख्याः**–आदि | **अनेके**–घणा |
| **गुणाः**–गुणो | **दोषलवः**–दोषनो अंश | **स्फीतं**–वृद्धि पामेल |
| **यशः**–यश | **निर्मलं**–निर्मळ | **तद्**–ते |
| **गृह्णाति**–ग्रहण करे छे | **गुणान्**–गुणोने | **दोषनिचयं**–दोषोनो-समूह |
| **सतां**–सत्पुरुषोमां | **उत्तमं**–उत्तम | |
| **शीतलस्वामिनम्**–श्री शीतलनाथ स्वामीने | | |

**टी. यस्मिन्निति** यस्मिन् स्वामिनि, श्रीश्च शोभा, धृतिश्च धैर्यं, कीर्तिश्च यशः, कान्तिश्च तेजः, बलं च शारीरिकं,धीश्च बुद्धिः, श्रीधृतिकीर्तिकान्तिबलधियः, ता मुख्या येषां ते, न एके अनेके, अनन्ताः गुणाः सन्ति च, यस्मिन् स्वामिनि, दोषस्य–कषायादेः लवोऽशः दोषलवः, सोऽपि नैव भवति नास्त्येव, च स्फीतं वृद्धिगतं, निर्गतः मलो यस्मात् तत् निर्मलं–निष्कलङ्कं, यशोऽस्ति तद् तस्माद्धेतोः (सर्वतः), यः प्रभुः, गुणान् गृह्णाति, सतां–सज्जनानां मध्ये उत्तमं–श्रेष्ठं, सुरासुरनतं तं, श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ शीतलइति नाम्ना स्वामी श्रीशीतलस्वामी, तं दशमं जिनं, सततम् अहं वन्दे–वन्दनं करोमि ॥ १० ॥

**भावार्थ**—जे प्रभुमां श्री–धृति–कीर्ति–कांति–बल–बुद्धि–विगेरे अनेक गुणो छे, जेमां दोषनो अंश पण नथी, अने (चारे तरफथी) जे प्रभु गुणो ग्रहण करे छे, पण दोषोनो समूह ग्रहण करता नथी, एवा सज्जनोमां उत्तम अने वृद्धि पामेल निर्मळ यशवाळा देव दानवोए नमेला, श्री शीतलनाथस्वामीने, हुं निरंतर वन्दन करुं छुं. १०

मू०—कांस्यामत्रमिवोज्झितोदकमलं, नीरञ्जनं शङ्खवत्,
निर्लेपं च पयोजवद् गगनवन्नित्यं निरालम्बनम्।
केनाऽप्यप्रतिहन्यमानगतिता,सञ्चारिणं जीववत्,
वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रेयांसनाथं मुदा॥ ११॥

शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| **कांस्य**—कांसाना | **अमत्रं**—पात्रनी | **इव**—पेठे |
| **उज्झित**—रहित | **उदकमलं**—जळनो मेल | **नीरञ्जनं**—मायारहित |
| **शङ्खवत्**—शंखनी जेम | **निर्लेपं**—आसक्ति रहित | **पयोजवद्**—कमळनी-पेठे |
| **गगनवत्**—आकाशनी-पेठे | **नित्यं**—हंमेशां | |
| | **निरालम्बनम्**—आधार रहित | **केन**—कोइथी |
| **अप्रतिहन्यमानगतिता**—नही हणाय एवी गतिवाळा | | **संचारिणं**—गमन करनार |
| | **जीववत्**—जीवनी पेठे | |
| | **श्रेयांसनाथं**—श्रेयांसनाथने | |

**टी. कांस्यामत्रमिति** उज्झितस्त्यक्तः उदकस्य—जलस्य मलो येन तत् उज्झितोदकमलं,कांस्यस्य अमत्रं—पात्रं कांस्यामत्रं तदिव तत्सदृशं (यथा कांस्यपात्रे जलस्पर्शो न लगति तथा प्रभौ जिनेश्वरेऽपि मलस्पर्शो न लगति) शङ्खेन तुल्यं शङ्खवत्-शङ्खसदृशं, निर्गतम् रञ्जनं यस्मात् तं नीरञ्जनं—मायिकदोषरहितं, पयसि जातं पयोजं—कमलं,तेन तुल्यं पयोजवत्—कमलसदृशं, निर्गतः लेप आसक्तिर्यस्मात् तं निर्लेपं सङ्गदोषमुक्तं—निस्सङ्गमित्यर्थः, गगनम्—आकाशं तेन तुल्यं गगनवत्—गगनसदृशं, नित्यं—शाश्वतं, निर्गतम् आलम्बनं यस्मात् तं निरालम्बनं—निराधारं, जीवेन तुल्यं जीववत्—जीव-

सदृशां, केनाऽपि प्रतिहन्यते इतिप्रतिहन्यमाना, न प्रतिहन्यमाना अप्रतिहन्यमाना, सा चासौ गतिश्च अप्रतिहन्यमानगतिः, तस्याः भावः अप्रतिहन्यमानगतिता, तया संचरतीत्येवंशीलः अप्रतिहन्यमानगतितासंचारी, तम् अर्थात् आत्मवत् सर्वगामिनं सुरासुरनतं अतिशयेन श्रेष्ठः-श्रेयान् तं श्रेयांसनामानम् एकादशं जिनं मुदा सततम् अहं वन्दे-वन्दनं करोमि. ११

**भावार्थ**—कांसाना पात्रनी पेठे कर्मरूप, जळना मेलरहित शङ्खनी पेठे नीरञ्जन, कमळनी पेठे निर्लेप, आकाशनी पेठे हंमेशां आलम्बन रहित अने जीवनी पेठे कोइथी पण अटकावी न शकाय एवी गतिवडे विचरनार, एवा देव-दानवोए नमेला, श्रेयांसनाथने हुं निरंतर हर्षथी वन्दन करुं छुं. ११

**मू०—एकं खड्गिविषाणवद्विरहितं, द्वेषेण रागेण वै,**
**कम्पाकाप्रतिबद्धमभ्रगमिव, श्रीकुक्षिपाथेयकम् ।**
**राकाचन्द्रमिवेह सौम्यगुणतायुक्तं प्रभाभास्करं,**
**वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीवासुपूज्यं मुदा ॥ १२॥**

शब्दार्थः—

**एकं**-एक
**खड्गि**-गेंडाना
**विषाणवत्**-शींगडानी-जेम
**विरहितं**-रहित
**द्वेषेण**-द्वेषवडे
**रागेण**-रागवडे
**वै**-निश्चय
**कम्पाक**-वायुनी जेम
**अप्रतिबद्धम्**-अप्रतिबद्ध
**अभ्रगम्**-पक्षीनी
**श्रीकुक्षिपाथेयकं**-कुक्षिपाथेय वाळा
**राका**-पूर्णिमाना

| | | |
|---|---|---|
| **चन्द्र**–चन्द्रनी | **सौम्य**–सौम्य | **गुणतायुक्तं**–गुणयुक्त |
| **प्रभा**–कान्तिथी | **भास्करं**–सूर्य समान | **श्रीवासुपूज्यं**–श्रीवासुपूज्यने |

**टी. एकमिति** खड्गेः विषाणं–शृङ्गं खड्गिविषाणं, तेन तुल्यं खड्गिविषाणवत्, वै निश्चये रागेण च द्वेषेण च विरहितम् एकं कम्पाको वायुः तद्वद् अप्रतिबद्धः–बन्धरहितः, तम् अभ्रं गच्छतीत्यभ्रगः, तं पक्षिणमिव पथि साधु पाथेयं, पाथेयमेव पाथेयकं, श्रीकुक्षौ पाथेयकं यस्य स श्रीकुक्षिपाथेयकः, तम् इहास्मिँल्लोके राकायाः–पूर्णिमायाश्चन्द्रः राकाचन्द्रः, तम् इव सौम्यमेव गुणः सौम्यगुणः, तस्य भावः सौम्यगुणता, तया युक्तः सहितः सौम्यगुणतायुक्तः, तं प्रभया–स्वशरीरकान्त्या भास्करः–सूर्यः तं सुरासुरनतं श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ वासुना विशेषेन पूज्यश्च श्रीवासुपूज्यः, तं द्वादशमं जिनं सततं मुदा आनन्देनाहं वन्दे. १२

**भावार्थः**—गेंडाना शिंगडानी पेठे एक, राग–द्वेष रहित, वायुनी पेठे अस्खलित, पक्षिनी माफक कुक्षिपाथेय, आ लोकमां पूर्णिमाना चन्द्रनी पेठे शांत गुणवाळा, (पोतानी शरीरनी) कान्तिथी सूर्य समान, एवा देव–दानवोए नमेला, श्रीवासुपूज्यस्वामिने निरंतर प्रेमथी हुं वन्दन करुं छुं. १२

**मू०**—ध्वान्तारातिमिव प्रदीप्तमहसं, सत्केवलज्ञानिनं,
शीलाङ्गानसि धुर्यमुक्षतरवद्, गाढं दृढे दुर्द्धरे;
शौण्डीरं करिराजवद् बलगतिस्थैर्यादिभिः सद्गुणै–
र्वन्देऽहं विमलं सुरासुरनतं, श्रीवीतरागं मुदा ॥ १३ ॥

## शब्दार्थ.

ध्वान्ताराति–सूर्यनी सत्केवलज्ञानिनं–उत्तमकेवळ ज्ञानवाळा गाढं–अत्यन्त शौण्डीरं–निपुण बलगति–बळगति सद्गुणैः–सद्गुणोवडे प्रदीप्तं–देदीप्यमान शीलाङ्गानसि–शीलाङ्गरथमां दृढे–मजबूत करिराजवद्–ऐरावत-हस्तीनी पेठे विमलं–विमलनाथने अहसं–तेजवाळा धुर्यम्–धोरी उक्षतरवद्–बळदनी. दुर्द्धरे–दुःखथी धारी-शकाय एवा स्थैर्यादिभिः–स्थिरता-आदि

टी. ध्वान्तेति ध्वान्तः–अन्धकारः तस्यारातिः–शत्रुः–ध्वान्ताराति:–सूर्यः, तमिव प्रदीप्तं–देदीप्यमानं महस्तेजो यस्य स प्रदीप्तमहाः, तं कान्तिमन्तं केवलं च तद् ज्ञानं च केवलज्ञानं, सच्च तत् केवलज्ञानं च सत्केवलज्ञानं, तद्विद्यतेऽस्येति सत्केवलज्ञानी, तं गाढम् अत्यन्तं दृढे, दुःखेन ध्रियते इति दुर्द्धरं तस्मिन्, शीलस्याङ्गानि शीलाङ्गानि, तान्येव अनः रथः शीलाङ्गानः, तस्मिन् अष्टादशसहस्रशीलाङ्गरथेषु उक्षतरेण तुल्यम् उक्षतरवत्–महावृषभतुल्यं, धुरं वहतीति धुर्यः, तं बलं च शारीरिकं, गतिश्च–गमनं, स्थैर्यं च बलगतिस्थैर्याणि तानि आदिर्येषां ते बलगतिस्थैर्यादयः, तैः सन्तश्च ते गुणाश्च सद्गुणाः, तैः करः शुण्डः सोऽस्ति एषामिति करिणः, तेषां राजा करिराजः, तेन तुल्यं करिराजवत्, ऐरावततुल्यं शौण्डीरं–निपुणं, सुरासुरनतं, श्रीवीतरागं, विगतो मलो यस्मात् तं विमलं त्रयोदशमं जिनं मुदा हर्षेणाहं वन्दे––वन्दनं करोमि, १३

भावार्थ––सूर्यनी माफक देदीप्यमान तेजवाळा, श्रेष्ठ केवलज्ञान-

वाला, अने अत्यन्त मजबूत, महाप्रयासथी धारण थइ शके एवा अढार हजार शीलाङ्गरथने विषे धोरी—मुख्य बळदनी माफक वहन करनार, बळ—गति—अने स्थिरता आदि सद्गुणोवडे ऐरावत हाथीनी माफक निपुण, एवा देवदानवोए नमेला, वीतराग श्री विमलनाथ स्वामिने, हुं प्रेमथी वन्दन करुं छुं. १३

मू०—आटव्यैः पशुभिः कुतीर्थिकगणैर्दुर्धृष्यमैभारिवत्,
पारावारगभीरिणं धरणिवत्, सर्वंसहं स्वामिनम्।
स्वच्छस्वान्तमिवाम्बु शारदतमं, कालुष्यदोषोज्झितं,
वन्देऽनन्तमहं सुरासुरनतं, श्रीवीतरागं मुदा ॥ १४ ॥

शब्दार्थः—

आटव्यैः—जंगलना पशुभिः—पशुओ वडे कुतीर्थिकगणैः—अन्य-दर्शनीना समूहथी दुर्धृष्यं—नहीं जीताय तेवा ऐभारिवत्—सिंह जेवा पारावारगभीरिणं—समुद्रनी पेठे गंभीर धरणिवत्—पृथ्वीनी पेठे सर्वंसहं—सर्व सहन-करतां स्वामिनम्—स्वामी स्वच्छस्वान्तम्—निर्मळ हृदय पेठे अम्बु—पाणी शारदतमं—शरदऋतुना कालुष्य—मलीनता दोष—दुर्गुण उज्झितं—रहित अनन्तं—अनन्तनाथने

टी. आटव्यैरिति अटव्यां भवाः आटव्याः तैः पशुभिः, इभानां समूह ऐभं—हस्तिसमूहः, तस्यारिः—शत्रुः ऐभारिः—सिंहः, तेन तुल्यं

ऐभारिवत्, कुत्सितं—निन्दनीयं तीर्थं—कुतीर्थं, तद्विद्यते एषामिति कुतीर्थिकाः, तेषां गणाः, तैः दुःखेन धृष्यते इति दुर्धृष्यः, तं दुःखेन पराभवं कर्तुमशक्यं, पारावारः—समुद्रः तद्वत् गभीरिणं गाम्भीर्यगुणयुक्तं, धरण्याः—पृथ्व्याः तुल्यं धरणिवत्, सर्वंसहते इति सर्वंसहः, तं, कलुषस्य भावः कालुष्यं, तदेव दोषः कालुष्यदोषः, तेन उज्झितं—त्यक्तं तत् शरदि भवं शारदं, अतिशयेन शारदम् इति शारदतमं, शरत्कालोत्पन्नम् अम्बु—जलमिव स्वच्छं—शुद्धं—स्वान्तं—हृदयं यस्य तं, सुरासुरनतं, श्रीवीतरागं, नास्ति अन्तो यस्य तम् अनन्तं—अनन्तनामानं, चतुर्दशमं जिनं मुदा हर्षेणाहं वन्दे—वन्दनं करोमि. १४

**भावार्थ**—जंगलना पशुओ वडे सिंहनी पेठे, अन्य दर्शनीना समूह वडे अजेय, समुद्रनी पेठे गम्भीर, पृथ्वीनी जेम सर्व सहन करनार, शरद ऋतुना जळनी जेम निर्मळ अन्तःकरणवाळा, एवा देव—दानवोथी नमाएला, वीतराग श्री अनन्तनाथ स्वामिने, हुं हर्षथी वांदु छुं. १४

**मू०**—स्वाहाभुग्नगराजधीरमनघं, मन्दारवत् प्राणिना—
मिष्टप्राप्तिकरं सुधासमगिरं, सन्तापचिन्ताहरं।
रूपन्यक्कृतमन्मथं शिवरमाशृङ्गारहारं वरं,
वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीधर्मनाथं मुदा ॥ १५ ॥

## शब्दार्थ—

**स्वाहाभुग्**—देवताओ **नगराजधीरं**—मेरुनी- **अनघं**—पापरहित
**मन्दारवत्**—कल्पवृक्ष• जेम धीर **प्राणिनाम्**—प्राणिओनी

नी जेम | इष्टप्राप्तिकरं—इष्टप्राप्ति-करनार | सुधासमगिरं—अमृत-समान वाणीवाळा
सन्ताप—दुःख
चिन्ताहरं—चिन्ताने-हरनार | रूपन्यत्कृत—रूपथी-तिरस्कार करनार | मन्मथं—कामदेव
शिवरमा—मोक्षलक्ष्मी
शृङ्गारहारं—शृंगारना हार, वरं—श्रेष्ठ | श्रीधर्मनाथं—श्रीधर्म-नाथने

**टी.स्वाहेति** स्वाहां भुञ्जन्ते इति स्वाहाभुजः—देवाः, तेषां, न गच्छन्तीति नगाः—पर्वताः,तेषां राजा नगराजः-मेरुः, स इव धीरः स्वाहानगराजधीरः, तं, न विद्यतेऽघं दुःखं यस्य तम् अनघं—निष्पापं, मन्दारः—कल्पवृक्षः तेन तुल्यं मन्दारवत्, प्राणाः सन्ति एषामिति प्राणिनः, तेषाम्, इष्टस्य मनोवाञ्छितस्य प्राप्तिः इष्टप्राप्तिः, तां कर्तुं शीलमस्येति इष्टप्राप्तिकरः, तं, मनोऽभीष्टदं, सुधया—अमृतेन समा सुधासमा, सा गीर्यस्य स सुधासमगीः, तं सन्तापश्च चिन्ता च सन्तापचिन्ते,ते हर्तुं शीलमस्येति सन्तापचिन्ताहरः, तं, रूपेण स्वशरीरकान्त्या न्यत्कृतः—तिरस्कृतः रूपन्यत्कृतः मन्मथः—कामो येन तं रूपन्यत्कृतमन्मथं शिवं मुक्तिः सैव रमा लक्ष्मीः, तस्याः शृङ्गारस्य हारः शिवरमाशृङ्गारहारः, तं, सुरासुरनतं धर्मस्य नाथः, धर्मनाथः, श्रिया युक्तः, स चासौ धर्मनाथश्च श्रीधर्मनाथः, तं पञ्चदशमं जिनं सततं मुदा हर्षेणाहं वन्दे—वन्दनं करोमि. १५

**भावार्थः**—सुरगिरि समान धीर, पापरहित, कल्पवृक्षनी जेम प्राणिओने इष्ट प्राप्त करावनार, अमृत जेवी वाणीवाळा, सन्ताप अने चिन्ताने हरनार, रूपथी कामदेवनो तिरस्कार करनार अने मोक्ष लक्ष्मीना

श्रेष्ठ शृङ्गार हार, एवा देव–दानवोथी नमाएलां, श्री धर्मनाथने हुं निरन्तर हर्षथी वांदुं छुं. १५

**मू० — सच्चित्तेतरमिश्रवस्तुनिवहेऽनन्तात्मके द्रव्यतो,**
**ग्रामादौ समयावलीप्रभृतिके, तु क्षेत्रतः कालतः**
**मावादप्रतिभावकं तु मद–भी–हास्यक्रुधादौ समं,**
**वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीशान्तिनाथं मुदा ॥ १६ ॥**

**शब्दार्थः—**

| | | |
|---|---|---|
| **सच्चित्तेतर**—सचित्त–अचित्त | **मिश्र**—मिश्र | **वस्तु**—वस्तु |
| | **निवहे**—समूहमां | **अनन्तात्मके**—अनन्त स्वरूप |
| **द्रव्यतः**—द्रव्यथी | **ग्रामादौ**—ग्रामादिमां | |
| **समयावली**—समयआवळी | **प्रभृतिके**—विगेरे | **तु**—अने |
| | **क्षेत्रतः**—क्षेत्रथी | **कालतः**—काळथी |
| **मावात्**—भावथी | **अप्रतिभावकं**—अप्रतिबद्ध | **मद**—मद |
| **भी**—बीक | | **हास्य**—हास्य |
| **क्रुधादौ**—क्रोधादिमां | **समं**—समानवृत्तिवाळा | **श्रीशान्तिनाथं**—श्रीशांतिनाथने |

**टी. सच्चित्तेति** द्रव्याद् इति द्रव्यतः, अनन्तः आत्मा स्वरूपं यस्य स अनन्तात्मकः, तस्मिन् सच्चित्तं च सचेतनम् इतरं च अचेतनं मिश्रं च सच्चित्तेतरोभयरूपं सच्चित्तेतरमिश्राणि तानि च तानि वस्तूनि च सच्चित्तेतरमिश्रवस्तूनि, तेषां निवहः—समूहः, तस्मिन्, प्रतिभावयतीति

प्रतिभावकः, न प्रतिभावकः अप्रतिभावकः, तं नाम अप्रतिबद्धं, क्षेत्राद् इति क्षेत्र तः, ग्रामः आदिर्यस्मिन् तस्मिन् ग्रामनगरादौ, अप्रतिभावकं, कालाद् इति कालतः, समयश्च आवली च समयावल्यौ, ते प्रभृतिर्यस्मिन् स समयावलीप्रभृतिकः, तस्मिन् अप्रतिभावकम्—अप्रतिबद्धं, समं रागद्वेष—रहितम्--उदासीनमित्यर्थः, सुरासुरनतं, मदश्च अष्टविधः, भीश्च भयं, हास्यं च हसनं, क्रुधं च क्रोधः, मद--भी—हास्य—क्रुधः ते आदिर्यस्मिन् स मद—भी—हास्य—क्रुधादिः तस्मिन्, अप्रतिभावकं—अप्रतिबद्धं समं राग-द्वेष-रहितं-उदासीनमित्यर्थः, सुरासुरनतं श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ शान्तिनाथश्च श्रीशान्तिनाथः, तं षोडशमं जिनं सततं मुदा हर्षेणाहं वन्दे-वन्दनं करोमि १६

**भावार्थ**—द्रव्य थकी अनन्त रूपवाळा सचित्त, अचित्त अने मिश्र वस्तुना समूहने विषे प्रतिबन्ध रहित, क्षेत्र थकी ग्रामनगर आदिने विषे प्रतिबन्ध रहित; काल थकी समय आवळी मुहूर्त्त विषे प्रतिबन्ध रहित अने भाव थकी आठ मद, भय हास्य अने क्रोध आदिने विषे प्रतिबन्ध रहित, एवा समान वृत्तिवाळा देवदानवोए नमेला, सोळमा श्रीशान्तिनाथस्वामिने, निरन्तर प्रेमथी हुं वन्दन करुं छुं. १६

**मू०—आद्यं संहननं तनोः सुरुचिरं, संस्थानमाद्यं तथा,**
**यस्याष्टाधिकसत्सहस्रगणनायुक्तं लसल्लक्षणम्;**
**मानोन्मानमथप्रमाणमुदितं, शास्त्रे स्थितं तं सदा,**
**वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीकुन्थुनाथं मुदा ॥१७॥**

## शब्दार्थ—

| | | |
|---|---|---|
| **आद्यं**—प्रथम | **संहननं**—संघयण | **तनोः**—शरीरनुं |
| **सुरुचिरं**—सुंदर | **संस्थानम्**—आकार | **तथा**—तेवी रीते |
| **यस्य**—जेना | **अष्टाधिक**—आठ अधीरे | **सत्सहस्र**—एक हजार |
| **गणना**—संख्या | **युक्तं**—युक्त | **लसत्**—देदीप्यमान |
| **लक्षणम्**—लक्षणवाळा | **मानोन्मानमथ-** | **उदितं**—कह्युं छे |
| **शास्त्रे**—शास्त्रमां | **प्रमाणं**—प्रमाणोपेत | **स्थितं**—रहेलुं |
| **सदा**—हंमेशां | **श्रीकुन्थुनाथं**—श्रीकुन्थुनाथने | |

**टी०आद्यमिति**—शास्त्रे आगमे यस्य प्रभोः तनोः—कायस्य, आदौ भवमाद्यं,प्रथमं संहननं—सङ्घातः उदितं (दृढसन्धियुक्तशरीरमित्यर्थः) तथा शोभनं रुचिरं, मनोहरं सुरुचिरम्, आद्यं—प्रथमं संस्थानम् उदितं कथितं, अष्टाभिः अधिकम् अष्टाधिकं, तत् च तत् सत्सहस्रं च अष्टाधिकसत्सहस्रं, तस्य गणना अष्टाधिकसत्सहस्रगणना, तया युक्तं लसति—शोभते इति लसत लसत् च तत् लक्षणं च लसल्लक्षणम् उदितं कथितं तथा यस्य प्रभोः शरीरस्य प्रमाणं मानं च उन्मानं च एतयोः समाहारः मानोन्मानं, शास्त्रे स्थितं, सुरासुरनतं तं श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ कुन्थुनाथश्च श्रीकुन्थुनाथः तं सप्तदशमं जिनं सततं नैरन्तर्येण मुदा-प्रेम्णाऽहं वन्दे—वन्दनं करोमि १७

**भावार्थ**—जेमनुं शरीर प्रथम संघयण अने सुंदर प्रथम संस्थान (आकृति) वाळुं, तेमज देदीप्यमान एक हजार ने आठ गुणयुक्त,

मानोन्मान प्रमाणवाळुं शास्त्रमां कह्युं छे, ते देव–दानवोथी नमेला, श्री कुन्थुनाथने, हुं हम्मेशां हर्षथी वन्दन करुं छुं. १७

**मू०—अर्थस्तावदभूदनन्तगमयुक्, सूत्रं ततो जायते,**
**स्मानन्तार्थसुसंग्रहिण्युपचितं, निर्युक्तियुक्तं वृतम् ।**
**पाश्चाङ्गं जिनतो यतः किमपरं, त्रैलोक्यसारं च तं,**
**वन्दे श्रीअरनाथमुत्तममहं, श्रीवीतरागं मुदा ॥ १८ ॥**

## शब्दार्थ—

| | | |
|---|---|---|
| **अर्थः**—अर्थ | **तावत्**—तेटलो | **अभूत्**—थयो |
| **अनन्त**—घणा | **आगमयुक्**—आलावा-सहित | **सूत्रं**—सूत्र |
| **ततः**—ते पछी | | **जायते**—थयुं |
| **अनन्तार्थसुसङ्ग्रहिणी**—भाष्य | **उपचितं**—युक्त | **निर्युक्ति**—निर्युक्ति |
| | **वृत्तम्**—वृत्ति | **पाञ्चाङ्गं**—पाञ्चअङ्ग |
| **जिनतः**—जिनथी | **यतः**—जेथी | **किम्**—शुं |
| **अपरं**—बीजुं | **त्रैलोक्य**—त्रणलोकमां | **सारं**—सार |
| **अरनाथं**—अरनाथने | | |

**टी० अर्थइति**—तावत् आदौ अर्थोऽभूत्-जातः, ततः तदनन्तरं न विद्यतेऽन्तो येषां तेऽनन्ताः, ते च ते गमाश्च अनन्तगमाः, तैर्युज्यते इति अनन्तगमयुक्, अनन्तश्चासौ अर्थश्च अनन्तार्थः, अनन्तार्थश्च सुसङ्ग्रहिणी च भाष्यम् अनन्तार्थसुसङ्ग्रहिण्यौ, ताभ्याम् उपचितं युक्तं अनन्तार्थसुसंग्रहिण्युपचितं ( अर्थभाष्यसहितं ), निर्युक्त्या युक्तं निर्युक्तियुक्तं, निर्युक्ति-

सहितं वृतं वृत्तिसहितं पञ्च अङ्गानि यस्य तत् पञ्चाङ्गम्, एतादृक् सूत्रं जिनात् इति जिनतः, जायते स्म समपद्यत यतो यस्मात् पञ्चाङ्गसूत्रात् किमपरम् अन्यत् ,त्रयोऽवयवा यस्य स त्र्यवयवः,सचासौ लोक श्च, त्रिलोकः स एव त्रैलोक्यं तस्मिन् सारं—श्रेष्ठं किमस्ति, अर्थात् किमपि नास्ति, तं श्रीवीतरागम्, उत्तमं श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ अरनाथश्च श्रीअरनाथः, तम् अष्टादशमं, जिनं मुदा-हर्षेणाहं वन्दे—वन्दनं करोमि. १८

**भावार्थ**—प्रथम अर्थ पछी अनन्तआलावाए सहित, अनंत अर्थ संग्राही भाष्य युक्त वृत्ति थइ. ए प्रमाणे पञ्चाङ्गी सूत्र जीनेश्वरथी थयुं; जे *पञ्चाङ्गी सूत्रथी अधिक त्रण लोकमां शुं छे ? अर्थात् कांइ नथी, एवा ते उत्तम वीतराग श्री अरनाथ जिनने, प्रेमथी हुं वन्दन करुं छुं. १८

**मू०—खाष्टैकप्रमिता विधाश्च विविधाः, सन्ति क्रियावादिना-**
**मज्ञानां मुनिषट्प्रमाश्च जलनिध्यष्टाऽक्रियावादिनाम् ।**
**द्वात्रिंशद्विनयश्रितामनुपमं, दृष्ट्वैषु सम्यग्दृशं,**
**वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीमल्लिनाथं मुदा ॥ १९ ॥**

## शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| **ख**—आकाश १ | **अष्ट**—आठ | **प्रमिता**—माप |
| **विधाः**—प्रकार | **विविधाः**—जातजात | **क्रियावादिनां**—क्रियावादीओना |
| **सन्ति**—छे | **अज्ञानां**—अज्ञान | |

---

* सूत्र, वृत्ति, भाष्य, निर्युक्ति अने चूर्णि.

| | | |
|---|---|---|
| **मुनि**—ऋषि सप्त | | **षट्**—छ |
| **जलनिधि**—समुद्र ४ | **अक्रियावादिनां**— | **द्वात्रिंशत्**—बत्रीश |
| **विनयश्रिता**—विनया-श्रितना | क्रियाने नहीं माननारा | **अनुपमं**—अनुपम |
| | **दृष्ट्वा**—जोइने | **सम्यग्दृशं**-सम्यग्दृष्टि-वाळा |
| **श्रीमल्लिनाथं**—श्री मल्लिनाथने | | |

**टी० खाष्टेति**—क्रियाः—कर्माणि वदन्तीति क्रियावादिनः, तेषां, खं चाकाशम् अष्टौ च एकश्च खाष्टैकाः, तैः प्रकर्षेण मिताः खाष्टैकप्रमिताः, अङ्कानां वामतो गतिः, इति न्यायेन अशित्यधिकशतं (१८०), विविधाः—अनेकशः, विधाः—प्रकाराः, सन्ति न जानन्तीति अज्ञाः, तेषाम् अज्ञानवादिनां, मुनयश्च—सप्त, षट् च मुनिषट्, ते प्रमा—प्रमाणं यासां ताः सप्तषष्ठिः (६७) विधाः—प्रकाराः सन्ति, न क्रियाः अक्रियाः—अकर्माणि, ताः वदन्तीति अक्रियावादिनः—शून्यवादिनः, तेषां, जलानां निधयः जलनिधयः जलनिधयश्च अष्टौ च जलनिध्यष्टौ, चतुरशीतिः (८४) विधाः—प्रकाराः सन्ति, विनयं श्रयन्ति इति विनयश्रितः, तेषां विनयवादिनां, द्वौच त्रिंशच्च द्वात्रिंशत् (३२), विधाः प्रकाराः सन्ति, एषु प्रकारेषु, न विद्यते उपमा यस्य सोऽनुपमः, तं सम्यग्—समिचीना दृक्—दृष्टिर्यस्य, तं दृष्ट्वा सुरासुरनतं श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः स चासौ मल्लिनाथश्च श्रीमल्लिनाथः, तम् एकोनविंशतितमं जिनं सततं मुदा हर्षेणाऽहं वन्दे—वन्दनं करोमि. १९

**भावार्थ**—क्रियावादीनां जुदा जुदा एकसो चोरासी १८४ भेदो, अज्ञानवादिओनां सडसठ (६७), अक्रियावादीओनां चोराशी

८४, अने विनयवादीओनां बत्रीस ( ३२ ) मतो छे. ए सर्व मतोमां अनुपम सम्यक् दृष्टिवाळा प्रभुने जोइ देव-दानवोए नमेला, श्रीमल्लिनाथ स्वामिने, निरन्तर प्रेमथी हुं वन्दन करुं छुं. १९

**मू०—धन्यास्ते नरजन्म तैः सफलितं, तेषां च हस्तागता,**
**सिद्धिश्रीर्विपुलामला भगवतः, पादारविन्दद्वये ।**
**भक्त्या यैर्भ्रमरायितं तदनुमन्तात्मीयभक्तौ रतो-**
**वन्देऽहं मुनिसुव्रतं सुरनतं, श्रीवीतरागं मुदा ॥ २० ॥**

**शब्दार्थः—**

| | | |
|---|---|---|
| **धन्याः**—धन्यवाद योग्य | **ते**—तेओ | **नर**—मनुष्यनो |
| | **जन्म**—जन्म | **तैः**—तेओथी |
| **सफलितं**—सफळ-थयो | **तेषां**—तेमना | **हस्त**—हाथमां |
| | **आगता**—आवी छे | **सिद्धिश्रीः**—मोक्षलक्ष्मी |
| **विपुला**—विशाळ | **अमला**—निर्मळ | **भगवतः**—भगवानना |
| **पाद**—चरण | **अरविन्द**—कमळ | **द्वये**—बे |
| **भक्त्या**—भक्तिथी | **यैः**—जेओथी | **भ्रमर**—भ्रमरनी |
| **आयितं**—जेम | **अनुमन्ता**—अनुसरनार | **आत्मीय**—पोतानी |
| **भक्तौ**—भक्तिमां | **रतः**—आसक्त | **मुनिसुव्रतं**—मुनिसुव्रत-स्वामीने |

**टी०धन्याइति**—यैः पुरुषैर्भक्त्या (भ्रमरायितं भ्रमरवदाचरितं), भगमैश्वर्यं विद्यतेऽस्येति भगवान्, तस्य पादौ एव अरविन्दे—कमले पादारविन्दे -चरणकमले, तयोर्द्वयं पादारविन्दद्वयं, तस्मिन् भ्रमरायितं—भ्रमर-

चदाचरितं, ते पुरुषा धन्याः सन्ति, तैः पुरुषैः, नरस्य जन्म सफलितं—सफलीकृतं च तेषां पुरुषाणां, विपुला—विशाला, अमला—निर्मला, सिद्धेः—मोक्षस्य श्रीः-लक्ष्मीः, हस्तमागता हस्तागता—हस्तप्राप्ताऽस्ति, तस्य जिनस्यानुमन्ता तदनुमन्ता—तदाज्ञानुसारी, आत्मन इयम् आत्मीया सा चासौ भक्तिश्च आत्मीयभक्तिः, तस्यां रतः--सक्तः—अहं सुरनतं, श्रीवीतरागं, शोभनं व्रतं यस्य स सुव्रतः, मुनिषु सुव्रतः—मुनिसुव्रतः तं विंशतितमं जिनं मुदा हर्षेण वन्दे—वन्दनं करोमि. २०

**भावार्थः**—जे पुरुषोए भक्तिवडे भगवन्तना चरणकमलना युगलमां, भ्रमरनी माफक आचरण कर्युं छे, ते पुरुषोने धन्य छे; तेज पुरुषोए मनुष्य जन्म सफल करेल छे, अने तेज पुरुषोनां हस्तमां विशाळ अने निर्मळ मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त थइ छे, एवा ते परमात्मानी आज्ञाने अनुसरनार, आत्म संबंधी भक्तिमां प्रीतिवालो हुं, देवोए नमेला, वीतराग श्री मुनिसुव्रत स्वामिने, हर्षथी वन्दन करुं छुं. २०

**मू०—विश्वं को दरिधर्त्ति लोकविदितो, मित्रं सुहृत् स्वागतं,**
**संलापोत्तरकालमालपति किं?, भीतः कुतश्चित् कथं।**
**अन्तर्वेश्मसु तिष्ठतीति विनयोपेतः प्रभुं तादृशं,**
**वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीवीतरागं नमिम् ॥२१॥**

**शब्दार्थ—**

| | | |
|---|---|---|
| **विश्व**—जगत् | **दरिधर्त्ति**—धारण-करे छे | **लोक**—लोक |
| **विदित**-प्रसिद्ध | | **मित्रं**-मित्रने |

| | | |
|---|---|---|
| **सुहृत्**-मित्र | **स्वागतं**-स्वागतः | **संलाप**-वातचित |
| **उत्तरकालं**-पछीनो-समय | **आलपति**-कहे छे | **भीतः**-डरेलो |
| | **कुतश्चित्**-कोइ वखत | **कथं**-केम |
| **अन्तर्**-हृदयमां | **वेश्मसु**-घरमां | **तिष्ठति**-रहे छे |
| **इति**-आ प्रमाणे | **विनय**-विनय | **उपेतः**-सहित |
| **प्रभुं**-प्रभु | **तादृशं**-तेवा | **नमिम्**-नमिनाथने |

**टी० विश्वमिति**—लोकेषु विदितः-प्रसिद्धः लोकविदितः, को विश्वं-जगत् दरिधर्त्ति इति प्रश्नः (उत्तरः न) सुष्टु—शोभनं हृदयं यस्य स सुहृत्—सखा, सुष्ठु आगतं स्वागतं, तत् मित्रं, संलापस्य—मिथोभाषणस्य उत्तरः संलापोत्तरः, तस्य कालः संलापोत्तरकालः, तं किमालपति इति प्रश्नः (उत्तरः मित्रं स्वागतं, कुतश्चित् निमित्तात् कारणात् भीतः--भयं प्राप्तः पुरुषः कथं ब्रूते इति प्रश्नः ( उत्तरः हे नाथ ) स नमिनाथः अन्तः हृदयं, तदेव वेश्म अन्तर्वेश्म, तत्र तिष्ठति इति हेतोः विनयेन उपेतः युक्तः-विनयोपेतोऽहं सुरासुरनतं श्री वीतरागं तादृशं नमिं नमिनामानं एकविंशतितमं जिनं सततं नैरन्तर्येण वन्दे—वन्दनं करोमि. २१

**भावार्थः**—जगत् प्रसिद्ध कोण आ लोकने वारंवार धारण करे छे ? ( न. कोइ नहि. ) मित्र आवेला मित्रने वातचीत थया पछी शुं कहे छे ? ( मित्र भले आव्या ) भय पामेलो माणस शुं बोले छे ? ( नाथ ) आ प्रश्नोना उत्तरभूत नमिनाथ, हृदयरूप गृहमां रहेल छे; तेथी विनययुक्त हुं देव—दानवोए नमस्कार करायेलां, वीतराग श्री नमिनाथने, निरन्तर वन्दन करुं छुं. २१

मू०—स्यादेकाक्षरिणा पदेन धरणी, शम्भुस्तथैवाग्रतः
ताद्दक् किं सविसर्जनीय इह नोत्तारं सतारं कथं;
इत्यभ्यर्थनया फलेग्रहिवचो, विज्ञप्तिकापूर्वकं,
वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं, श्रीनेमिनाथं मुदा ॥२२॥

**शब्दार्थः—**

| | | |
|---|---|---|
| **स्यात्**–होय | **एक**–एक | **अक्षरिणा**–अक्षरवाळा |
| **पदेन**–पदवडे | **धरणी**–पृथ्वी | **शम्भु**–शीव |
| **तथा**–तेवी | **एव**–ज | **अग्रतः**–आगळ |
| **ताद्दक्**–तेवुं | **किं**–शुं | **सविर्सजनीय**–विसर्ग-सहित |
| **इह**–आ लोकमां | **ना**–मनुष्यने | |
| **उत्तारं**–तारनार | **सतारं**–तारनार अत्यंत-श्रेष्ठ | **अभ्यर्थनया**–प्रार्थना-वडे |
| **फलेग्रहि**–फळ ग्रहण-करनार | **वचः**–वचनथी | **विज्ञप्तिका**–विनंति |
| **पूर्वकं**-पूर्वक | **श्रीनेमिनाथं**–श्री नेमिनाथने | |

**टी० स्यादिति**—एकं च तद् अक्षरं च एकाक्षरं तदस्ति अस्येति एकाक्षरि तेनासंयुक्तवर्णेन, धरणी–पृथ्वी स्यात् तत्पदं किमस्ति इति प्रश्नः ( उत्तरः नेमिः ), तथैव अग्रतः शम्भुः स्यात् तत् पदं किमस्ति इति प्रश्नः ( उत्तरः नाथ ! ) विसर्जनीयेन सह वर्तते इति सविसर्जनीयः ताद्दक् किं (नेमिनाथः), इहास्मिँल्लोके न उत्तारयति इति नोत्तारस्तम्, नोतारं सतारं कथम् इति विरोधः, परिहारस्तु नः गणपतिः तस्य उत्तारम् नोत्तारम् अभ्यर्थनया–प्रार्थनया, फलानि गृह्णतीति फलेग्रहीणि तानि च

तानि वचांसि च फलेग्रहिवचांसि, तैः,विज्ञप्तिः एव विज्ञप्तिका–स्तुतिः फलेग्रहिवचोविज्ञप्तिका, सा पूर्वं यस्मिन् कर्मणि यथास्यात् तथा, सुरासुरनतं श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः स चासौ नेमेः नाथः श्रीनेमिनाथः, तं द्वाविंशतितमं जिनं सततम्-अनारतं मुदा-आनन्देन अहं वन्दे--वन्दनं करोमि.२२

**भावार्थः**—जोडाक्षर सिवायना पदथी जेनो अर्थ पृथ्वी थाय छे ( नेमि ) अने ते पछीना पदनो अर्थ शंभु थाय छे ( नाथ ). अहीं तेवुं विसर्गयुक्त शुं छे ? ( नेमिनाथः ). जे तारनार नहिं ते तारनार शी रीते ? आ विरोध आव्यो तेनो परिहार न एटले गण नायक तेने तारनार आ प्रमाणे प्रार्थना वडे सफळ वचननी विनंति पूर्वक, निरन्तर देव–दानवोथी नमेला श्रीनेमिनाथने हर्षथी हुं नमस्कार करुं छुं. २२

**मू०**—कार्येषु प्रसृता सती च न भवेद्भृत्यक्रिया कीदृशी,
नृणां के जनयन्ति दुःखमतुलं ते वा विसर्गा यथा;
इत्यभ्यर्थनया फलेग्रहि वचो विज्ञप्तिका पूर्वकं,
वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं श्रीपार्श्वनाथं मुदा ॥ २३ ॥

**शब्दार्थ**—

**कार्येषु**–कार्योमां  **प्रसृता**–प्रसरेली  **सती**–छती
**भवेत्**–थाय  **भृत्य**–नोकरोनुं  **क्रिया**–काम
**कीदृशी**–केवुं  **नृणां**–मनुष्योने  **के**–कोण
**जनयन्ति**–उत्पन्न करे छे  **दुःखं**–दुःखने  **अतुलं**–अति
**ते**–तेओ  **वा**–अथवा
**विसर्गाः**–विसर्ग  **यथा**–जेम  **श्रीपार्श्वनाथं**–श्रीपार्श्वनाथने

टी० कार्येष्विति–कार्येषु–व्यापारेषु प्रसृता–प्रवर्तमाना सती, कीदृशी भृत्यस्य-किङ्करस्य क्रिया–कार्यं भृत्यक्रिया, न भवेत् ? (पार्श्ववर्तिनी) भृत्यक्रिया न भवेत् अस्मात् (पार्श्व) इतिपदं निर्गच्छति, यथा विसर्गाः नृणाम् उच्चारणसमये. न विद्यते तुला यस्य तत् अतुलं, तत् अनुपमं दुःखं जनयन्ति तथा नृणामतुलं दुखं के जनयन्ति ? ( नाथाः ) स्वामिनः, सेवकजनानामतुलमपरिमितं दुःखं जनयन्ति अस्मात् (नाथाः) इति पदं निर्गच्छति अस्य नाथा इति पदस्य पूर्वेण पार्श्वपदेन सह संयोगे कृते ( पार्श्वनाथाः ) इत्याकारकं नाम संजायते इत्यभ्यर्थनया प्रार्थनया फलेग्रहिवचो विज्ञप्तिका पूर्वकं सुरासुरनतं श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ पार्श्वनाथश्च श्रीपार्श्वनाथः, तं त्रयोविंशतितमं जिनं सततं -निरन्तरं मुदा-हर्षेणाहं वन्दे-वन्दनं करोमि. २३

**भावार्थ**—कार्यमां गुंथाएल सेवकनी केवी क्रिया नथी थती ? ( पार्श्ववर्तिनी ) मनुष्यने विसर्गनी पेठे अत्यन्त दुःख कोण उपजावे छे ? ( नाथ–शेठ ) आ प्रमाणेनी प्रार्थना वडे ( पार्श्वनाथ ) एवा सफळ वचननी विनंतिपूर्वक देव–दानवोए वन्दन करेला श्रीपार्श्वनाथने हुं निरन्तर आनंदथी नमस्कार करुं छुं. २३

**मू०**—निस्सङ्गं नितरां निरीहमतुलं निर्द्वेषदोषाङ्कुरं,
नीरागं किल नीरिरंसरुचिरं निःपन्थिकं निर्भयम्।
विज्ञैः श्रीगुरुसाधुरत्नपदवीमारूढमाप्तोत्तमं,
वन्देऽहं सततं सुरासुरनतं श्रीवर्द्धमानं मुदा ॥ २४ ॥

**शब्दार्थः**—

निस्सङ्ग–संगरहित  नितरां–अत्यन्त  निरीह–इच्छारहित

**अतुलं**—तुलना न थाय तेवुं
**किल**—खरेखर
**निःपन्थिकं**—शत्रुरहित
**पदवीं**—पदवी
**आप्त**—प्रमाणिकोमां
**निर्द्वेष**—द्वेष वगर
**अङ्कुरं**—अंकुरो—फणगो
**नीरिरंस**—क्रीडारहित
**निर्भयम्**—भयवगर
**श्रीगुरु**—पूज्यगुरु
**आरूढ**—चडेला
**उत्तमं**—श्रेष्ठ
**दोष**—दोष
**नीरागं**—रागरहित
**रुचिरं**—मनोहर
**विज्ञः**—बुद्धिशाळी
**साधुरत्न**—साधुमां रत्न
**श्रीवर्द्धमानं**—श्री महावीरस्वामीने

**टी०—निस्सङ्गमिति**—निर्गतः संगो यस्मात् स निस्संगः, तं, सर्वत्र संगरहितं, निलरां-निरन्तरं, निर्गता ईहा यस्मात् स निरीहः, तम् इच्छारहितं, न विद्यते तुला-उपमा यस्य सोऽतुलः, तं जगत्रयेऽपि यस्य कापि उपमा नास्ति, द्वेष एव दोषः द्वेषदोषः, तस्याङ्कुरः, द्वेषदोषाङ्कुरः, निर्गतः द्वेषदोषाङ्कुरो यस्मात् स निर्द्वेषदोषाङ्कुरः, तं, निर्गतो रागो यस्मात् स नीरागः, तं रागरहितं, किल सत्ये, रन्तुमिच्छा रिरंसा, निर्गता रिरंसा यस्मात् स नीरिरंसः स चासौ रुचिरश्च—मनोहरः, तं क्रीडारहितत्वात् सुन्दरं, निर्गताः पन्थिकाः—शत्रवो यस्मात् स निःपन्थिकः, तं, मोक्षपथे शत्रुरहितं, निर्गतं भयं यस्मात् स निर्भयः, तं संसारादिसप्तभयरहितं, श्रिया युक्ताः श्रीयुक्ताः ते च ते गुरवश्च श्रीगुरवः, ते च ते साधवश्च श्रीगुरुसाधवः, तेषु रत्नस्य पदवी श्रीगुरुसाधुरत्नपदवी, तामारूढः, तम् आप्तेषु उत्तमः सं सुरासुरनतं, सर्वैः प्रकारैः वर्धते इति वर्द्धमानः, श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ वर्द्धमानश्च श्रीवर्द्धमानः, तं चतुर्विंशतितमं जिनं सततं मुदा—प्रेम्णा विशेषेण जानातीति विज्ञः (अथवा अज्ञोऽहं) वन्दे—वन्दनं करोमि...

अस्मिन् श्लोके तृतीयपादे कर्ता श्रीगुरुसाधुरत्न इति शब्दनिर्देशेन स्वगुरोः नामधेयं दर्शितम्

**भावार्थ**—संग रहित, अत्यन्त इच्छा विनाना निरुपम, द्वेष-रूप दोषाङ्कुरथी रहित, राग रहित, क्रीडानी इच्छा विनाना होवाथी सुंदर, कोइथी नहि रोकनार, निर्भय, श्री गुरु, साधुमां रत्नपद पामेला, आसोमां श्रेष्ठ एवा देव-दानवोए नमस्कार करेला श्री वर्द्धमान स्वामिने हुं निरन्तर हर्षथी वन्दन करुं छुं. २४

**कः पानवाची किल धातुवर्णो,विभाति भूती स किमम्बरेण।**
**इत्थं तदाह्वेन जिनः स्तुतोऽयं, ददातु सिद्धिं लघुसाधुभक्त्या ॥**

**शब्दार्थः—**

| | | |
|---|---|---|
| **कः**—कोण | **पानवाची**—पीवावाचक | **धातुवर्णः**—धातुनो अक्षर |
| **विभाति**—शोभे छे | **भूती**—शंकर | |
| **सः**—ते | **किं**—शुं | **अम्बरेण**—वस्त्रथी |
| **इत्थं**—आ प्रमाणे | **तदाह्वेन**—ते नामथी | **जिनः**—जिन |
| **स्तुतः**—स्तवेल | **अयं**—आ | **ददातु**—आपो |
| **सिद्धिं**—मोक्षने | **लघु**—जल्दी शीघ्र | **भक्त्या**—भक्तिथी |

**टी०**—**क इति** किल सत्ये, पीयते इति पानं, तद्वक्तीति पानवाची, कः धातोर्वर्णः धातुवर्णोऽस्ति ? इति प्रश्नः, उत्तरः पा पाने इति, कुत्सित-मम्बरं किमम्बरं, तेन कौपीनेन, भूती—महादेवः स कथंभूतः विभाति-शोभते ? इति प्रश्नः, उत्तरः सचन्द्रः इत्थं प्रश्नद्वयोत्तरनिर्गतेन तच्च तत् आह्वं च तदाह्वं तेन पासचन्द्र इति नाम्ना मया, साधुः उत्तमा सा चासौ

भक्तिश्च साधुभक्तिः, तया स्तुतोऽयं जिनः, लघु शीघ्रं सिद्धिं मोक्षं ददातु —यच्छतु. २५

**भावार्थः**—पीवुं, एवो अर्थ कहेनार धातुनो अक्षर क्यो ? ( पा ) कौपीनवडे ( लंगोटवडे ) राख चोळीने शोभे छे ते कोण ? ( सचन्द्र—महादेव ) एवा नामवाळो अने श्री साधुरत्न गुरुश्रीने विषे भक्तिमान हुं ( पार्श्वचन्द्र ) तेने ते स्तुति करेल जिन जल्दीथी मोक्ष आपो. २५

॥ इति चतुर्विंशति-जिनस्तवनम् ॥

( एवा देवाधिदेवनी गुणस्तुति भणुं; एम कहीने नीचेनी स्तुति कहेवी. )

## ॥ अथ श्री महावीरस्वामिनी स्तुति ॥

**मू०**—स्वर्भूमेर्मातृगर्भेऽगमदुदयमहो यः सुरैर्मेरुशैलो-
त्सिक्तस्तातालयेऽगादुपचयमनिशं छाययाक्रान्तविश्वः।
पादोपान्तावनम्रत्रिभुवनजनता स्वीकृतोच्चैःफलर्द्धिः,
श्रीवीरो वोऽस्तु चिन्ताधिकतरवरदः, कल्पशाखी नवीनः १

**शब्दार्थः**—

| | | |
|---|---|---|
| **स्वर्**—स्वर्ग | **भूमेः**—भूमिथी | **मातृ**—माताना |
| **गर्भे**—गर्भमां | **अगमत्**—गयो | **उदयं**—उदय |
| **अहो**—अहो | **यः**—जे | **सुरैः**—देवोथी |
| **मेरुशैल**—मेरु पर्वत | **उत्सिक्तः**—अभिषेक | **तातालये**—पिताना |

| | | |
|---|---|---|
| **अगात्**–गयो | **उपचयं**–वृद्धि | घरमां |
| **अनिशं**–हंमेशां | **छायया**–कान्तिथी | **आक्रान्त**–दबायेल |
| **विश्वः**–जगत् | **पाद**–चरण | **उपान्त**–नजीक |
| **अवनम्र**–नमेल | **त्रिभुवन**–त्रण भुवन | **जनता**–जनसमूह |
| **स्वीकृत**–स्वीकार करी | **उच्चैः**–उच्च | **फलर्द्धिः**–फळनी ऋद्धि |
| | **श्रीवीरः**–श्रीवीर | **वः**–तमने |
| **अस्तु**–थाओ | **चिन्ता**–चिन्तव्याथी | **अधिकतर**–वधारे |
| **वरदः**–वरदान आपनार | **कल्पशाखी**–कल्पवृक्ष समान | **नवीनः**–नवीन |

**टी०—स्वरिति**–अहो इत्याश्चर्ये यो भगवान् स्वः–स्वर्गस्तस्य भूमिः, तस्याः स्वर्भूमेः, सकाशात्, मातुस्त्रिशलायाः गर्भो मातृगर्भस्तस्मिन् मातृगर्भे, उदयं–जन्म, अगमत्–प्राप्तवान्, किं च सुरैः–देवैः मेरुरिति शैलः तस्मिन् उत्सिक्तः–अभिषिक्तो यः प्रभुः, छायया–स्वशरीरकान्त्या आक्रान्तम्–आक्रमितं विश्वं–जगत् येन स छाययाक्रान्तविश्वः, सन् तातस्य–सिद्धार्थराज्ञः आलयं–गृहं तातालयं, तस्मिन्, अनिशं–सततम्, उपचयं–वृद्धिमगात्–प्राप्तवान्, पादोपान्तावनम्रत्रिभुवनजनतास्वीकृतोच्चैः-फलर्द्धिः पादयोश्चरणयोः उपान्तः पादोपान्तस्तस्मिन् अवनम्रा पादोपान्तावनम्रा, त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनं, जनानां समूहः जनता, त्रिभुवनस्य जनता त्रिभुवनजनता, पादोपान्तावनम्रा चासौ त्रिभुवनजनता च पादोपान्तावनम्रत्रिभुवनजनता, तया स्वीकृता, उच्चैः फलानां ऋद्धिर्यस्मात् स, नवीनः-नूतनः, कल्पशाखी–कल्पवृक्षरूपः, श्रिया युक्तः श्रीयुक्तः, स चासौ वीरश्च श्रीवीरः, वो–युष्माकम्, अतिशयेन–अधिकाः-अधि-

कतराः, चिन्तायाश्चिन्तनात् अधिकतराः चिन्ताधिकतराः, ते च ते वराश्च चिन्ताधिकवराः, तान् ददातीति चिन्ताधिकतरवरदोऽस्तु—भवतु ॥ १ ॥

**भावार्थः**—अहो ! जे भगवान स्वर्गभूमिथी (त्रिशला) माताना गर्भमां आव्या, देवोए मेरु पर्वत उपर जेमनो अभिषेक कर्यो, जे प्रभु (सिद्धार्थ) पिताने गृहे वृद्धि पाम्या, अने जेमणे शरीरनी कांतिथी विश्वने दबाव्युं छे, एवा प्रभुना चरणोनी समीपे, नमनार त्रण जगतना जीवोना समूहे उंचा प्रकारना फळोनी समृद्धि जेमनी पासेथी मेळवी छे, एवा नवीन कल्पवृक्षरूप श्री वीरप्रभु तमने चिंतव्याथी अत्यंत अधिक वरदान आपनारा थाओ.

**मू०**—**जेतव्यं पवनं स कौशिकफणी दंशच्छलेनापिबत्,**
**तद्दुःखेन किल व्यलीयत मनो नाभून्मनोभूस्ततः ।**
**छाद्मस्थ्येऽप्यमनस्कता सुरवधूसन्धानुबन्धोऽथ स,**
**व्यर्थोऽभूत् सुखमेव यस्य स महावीरोऽस्तु नः श्रेयसे २**

**शब्दार्थः**—

**जेतव्यं**—जीतवा योग्य **पवनं**—हवा **सः**—ते
**कौशिक**—कौशिक **फणी**—सर्प **दंश**—डंसने
**छलेन**—बहाने **अपिबत्**—पीतो हतो **तद्दुःखेन**—ते दंशना
**व्यलीयत**—दुःखी थयुं **मनः**—मन **न**—नहीं
**अभूत्**—थयुं **मनोभूः**—काम **ततः**—तेथी
**छाद्मस्थ्ये**—अज्ञानपणामां **अपि**—पण **अमनस्कता**—ग्लानि रहित
**सुरवधु**—देवांगनाओनी **सन्धा**—प्रतिज्ञानो
**अनुबन्धः**—आग्रह **व्यर्थः**—निष्फळ **अभूत्**—थयो

| | | |
|---|---|---|
| सुखं–सुखने | एव–ज | यस्य–जेने |
| महावीरः–महावीर | नः–अमारा | श्रेयसे–कल्याण माटे |

**टी०–जेतव्यमिति** सप्रसिद्धः, फणा अस्यास्तीतिफणी, कौशिकश्चासौ फणी च कौशिकफणी, कौशिक इति नामधेयो भुजङ्गः, जेतुं योग्यः जेतव्यः-जयनीयः, तं पवनं दंशस्यच्छलं–व्याजः दंशच्छलस्तेन अपिबत्–पीतवान् तस्य दंशस्य दुःखं पीडा तद्दुःखं, तेन मनः किल व्यलीयत दुःखितमभूत्, ततस्तस्मात्, व्यथितत्वात्, हेतोः मनसः भवतीति मनोभूः-कामः, नाभूत्–न जातः, यस्य प्रभोः छद्मनि तिष्ठतीति छद्मस्थः, तस्य भावः छाद्मस्थ्यम्, अज्ञानावस्था, तस्मिन्नपि अमनस्कता–अग्लानिरभूत्, अथ स प्रसिद्धः सुराणां वध्वः सुरवध्वः, तासां सन्धा–प्रतिज्ञा सुरवधूसन्धा, तस्या अनुबन्धः–आग्रहः, व्यर्थो–निष्फलोऽभूत्, यस्य प्रभोः सुखमेवासीत्, स महाँश्चासौ वीरश्च महावीरः, नोऽस्माकं श्रेयसे–कल्याणायाऽस्तु-भवतु ॥ २ ॥

**भावार्थ**—ते कौशिक सर्प जीतवायोग्य पवनने डंश आपवाना बहाने पीतो हतो, ते डंशना दुःखथी मन दुःखी थयुं, अने तेथी कामोद्भव न थयो, छद्मस्थपणामां ( अज्ञान अवस्थामां ) पण जेमने ग्लानि न हती अने देवांगनाओनी प्रतिज्ञानो आग्रह जेमनी पासे व्यर्थ थयो, जे हम्मेशां सुखी ज छे एवा ते महावीर देव अमारा कल्याण माटे थाओ

**द्यां द्युत्योदद्योत्य मुधद्द्युसदधिपमता विद्युदुद्द्योतजेत्र्या**
**विद्यानद्यासद्योद्यनय उपदधते सद्यमोद्यानमोदम् ।**
**दुर्भेद्यावद्यमुद्यद्द्युमणिमिव समाच्छाद्य वन्द्याभिवन्द्याः,**
**सद्यो यत्पादकन्दा दधतु स जिनपतिर्वोऽतिनिन्द्याभविद्याम् ३**

## शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| **द्यां**—स्वर्गने | **द्युत्या**—कान्तिथी | **उद्योत्य**—प्रकाशीने |
| **मुद्यत्**—हर्ष पामता | **द्युसत्**—देवताना | **अधिप**—स्वामीथी |
| **मताः**—पूजायेला | **विद्युत्**—विजळी | **उद्द्योत**—प्रकाशने |
| **जेत्र्या**—जीतनार | **विद्या**—ज्ञानरूप | **नदी**—नदीना |
| **आद्य**—प्रथम | **सद्योनयः**—उत्पत्तिस्थान | **उपदधते**—करे छे |
| **सत्**—सत् | **यम**—यम | **उद्यान**—उद्यान |
| **मोदम्**—पुष्टि | **दुर्भेद्य**—दुःखे भेदाय | **अवद्यं**—पापने |
| **उद्यत्**—उदय पामता | **द्युमणि**—सूर्य | **समाच्छाद्य**—ढांकी दइने |
| **वन्द्या**—वंदन करवा योग्यने पण | **अभिवन्द्याः**—वंदन करवा योग्य | **सद्यः**—एकदम |
| **यत्पाद**—जेना चरण | **कन्दाः**—मेघो | **द्यतु**—नाश करो |
| **जिनपतिः**—तीर्थङ्कर | **वः**—तमारी | **अति**—घणी |
| **निन्द्यां**—निन्दवा योग्य | **अविद्याम्**—अज्ञानने | |

**टी० द्यामिति**—मुद्यद्द्युसदधिपमताः—मुदं—हर्षम् एति—प्राप्नोतीति मुद्यन्, दिवि-स्वर्गे सीदन्तीति द्युसदः—देवास्तेषाम् अधिपः—स्वामी इन्द्रः, मुद्यंश्चासौ द्युसदधिपश्च मुद्यद्द्युसदधिपः—देवेन्द्रस्तेन मताः—पूजिताः मुद्यद्-द्युसदधिपमताः, विद्या एव नदी विद्यानदी, तस्याः आद्याश्च ता सद्योनयश्च शोभनानि उत्पत्तिस्थानानि, अभिवन्दितुं योग्याः अभिवन्द्याः, वन्द्यैः चक्रवर्तिभिः अभिवन्द्याः—पूज्याः वन्द्याभिवन्द्याः, यस्य प्रभोः पादाः यत्पादाः, यत्पादा एव कं—जलं ददातीति यत्पादकन्दाः, यत्पादमेघाः,

विद्युतः उद्योतः विद्युदुद्योतः, तस्य जेत्री–जयनशीला विद्युदुद्योतजेत्री, तया द्युत्या–कान्त्या, द्यां–दिवम् उद्योत्य–प्रकाशयित्वा, दिवः मणिः द्युमणिः, उद्यंश्चासौ द्युमणिश्च उद्यद्द्युमणिः, तम् उदीयमानं सूर्यं, दुर्भेद्यं च तत् अवद्यं च पापं दुर्भेद्यावद्यं सद्यमोद्यानं, तस्य मोदः–पुष्टिः, तमुपदधते–कुर्वते, स पूर्वोक्तः, जिनानां–सामान्यकेवलीनां पतिः–स्वामी जिनपतिः, वः–युष्माकम्, अतिनिन्दितुं योग्या अतिनिन्द्या, ताम् अविद्याम्–अज्ञानं सद्यः–शीघ्रं बतु–नाशंकरोतु ॥ ३ ॥

**भावार्थः**—आनंद पामेला देवेन्द्रोए पूजेला, विद्यारूप नदीना मूल उत्पत्तिस्थान, चक्रवर्तिओने पण वांदवा योग्य, एवा प्रभुना चरण कमळरूप मेघो, विजळीना प्रकाशने जीतनार, पोतानी कांतिथी स्वर्गने प्रकाश करीने उगता सूर्यनी पेठे दुःखथी भेदी शकाय एवा अज्ञानरूप अंधकारने ढांकी दइने सारा यमरूप उद्यानने पुष्टि करे छे, ते जिनपति तमारी अति निन्दवा लायक अविद्यानो नाश करो. ३.

**मू०—कृत्वा हाटककोटिभिर्जगदसद्दारिद्र्यमुद्राकथं,**
**हत्वा गर्भशयानपि स्फुरदरीन् मोहादिवंशोद्भवान्।**
**तप्त्वा दुस्तपमस्पृहेण मनसा कैवल्यहेतुं तप–**
**स्त्रेधा वीरयशो दधद्विजयतां वीरस्त्रिलोकीगुरुः ॥ ४ ॥**

**शब्दार्थः**—

| | | |
|---|---|---|
| **कृत्वा**—करीने | **हाटक**—सुवर्ण | **कोटिभिः**—क्रोडोवडे |
| **जगत्**—जगत् | **असत्**—नथी | **दारिद्र्य**—दारिद्र |
| **मुद्रा**—छाप–मुद्रा | **कथं**—कथा-वार्ता | **हत्वा**—हणीने |

| | | |
|---|---|---|
| **गर्भ**—गर्भमां | **शयान्**—रहेलाने | **अपि**—पण |
| **स्फुरत्**—स्फुरायमान | **अरीन्**—शत्रुओने | **मोहादि**- मोहादिना |
| **वंश**—वंशमां | **उद्भवान्**—थयेलाने | **तप्त्वा**—तपीने |
| **दुस्तपं**—दुष्करतप | **अस्पृहेण**—स्पृहाविना | **मनसा**—मनथी |
| **कैवल्य**—केवळज्ञानना | **हेतुं**—हेतुभूत | **तपः**—तपने |
| **त्रेधा**—त्रण प्रकारे | **वीर**—वीरनो | **यशः**—यश **गुरुः**—गुरु |
| **दधत्**—धारणकरता | **विजयतां**—विजयपामु | **त्रिलोकी**—त्रण लोकना |

**टी॰ कृत्वेति**—हाटकानां—सुवर्णानां कोटयः हाटककोटयः, ताभिः जगत्, न सती असती, दरिद्रस्य भावः दारिद्र्यं, तस्य मुद्रा दारिद्र्यमुद्रा, तस्याः कथा दारिद्र्यमुद्राकथा, असती—अविद्यमाना दारिद्र्यमुद्रा कथा यस्मिन् तत् असद्दारिद्र्यमुद्राकथं, कृत्वा—विधाय च मोह आदिर्येषां ते मोहादयः, तेषां वंशः मोहादिवंशः, तस्मिन्नुद्भवः उत्पत्तिर्येषां ते मोहादिवंशोद्भवाः, तान्, गर्भे शेरते इति गर्भशयाः, तान् अपि गर्भशयानपि स्फुरन्तीति स्फुरन्तः, ते च ते अरयश्च स्फुरदरयः, तान् प्रबलशत्रून् हत्वा च, न विद्यते स्पृहा यस्मिन् तत् अस्पृहं, तेन मनसा, दुःखेन तप्यते इति दुस्तपं, तत्, कैवल्यस्य—मोक्षस्य हेतुं कारणं तत्, तपस्तप्त्वा, त्रेधा—त्रिभिः प्रकारैः, वीरस्य यशः—कीर्त्तिः वीरयशः, तत् दधातीति दधत्, त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी, तस्याः गुरुः त्रिलोकीगुरुः, वीरः—महावीरप्रभुः, विजयताम् सर्वोत्कर्षेण वर्तताम् ॥ ४ ॥

**भावार्थ**—क्रोडो सुवर्णथी जगतने दारिद्र रहित करीने, मोहादिना वंशमां उत्पन्न थयेला ( काम—क्रोधादि ) शत्रुओने हणीने, दुःखे

तपी शकाय एवा मोक्षनां कारणभूत तप तपी, (ए) त्रण प्रकारे शूरवीरना यशने धारण करनार त्रण लोकना गुरु श्रीमहावीरदेव जय पामो. ॥४॥

---

( ए स्तुति कह्या पछी जंकिंचि० नमुथ्थुणं० कही आचार्य० उपाध्याय वांदी. देवसि प्रतिक्रमणठाइ नवकार० करेमिभंते. इच्छामिठामि० तस्स उत्तरी. अन्नत्थ. कही अतिचारनी ८ गाथानो काउस्सग्ग करी.लोगस्स बोली मुहपत्तिपडीलेही. देवसिय वांदणा दइ. देवसियं आलोउं इच्छं आलोएमि. जो मे देवसिय अइआरो कही सातलाख, अढारपा. चार विकथा० सव्वसवि. कही नीचे बेसी नवकार. करेमिभंते. चत्तारि मंगलं, इच्छामि पडिक्कमिउं०जो मे देवसिओ० इच्छामि पडिक्कमिउं. इर्यावहीआए कही अढार लाख चोवीस हजार एकसो वीस भेदे जे कोइ दोष इर्यावहीमां लाग्यो होय तेनो मिच्छामि दुक्कडं दइ. देवसिवंदित्तु संपूर्ण कही, पछी इच्छामिख० इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, देवसियं आलोइत्ता पडिक्कमित्ता पक्खियं पडिक्कमणं ठाएमि ? एम गुरु पासे आदेशमागी, इच्छं कही, नवकार० करेमिभंते० इच्छामि ठामि काउसग्गं जोमे पक्खिओ० तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कही आठ अतिचारनी गाथानुं चिंतवन काउस्सग्गमां करी, पारतां नमो अरिहंताणं कहेवुं. पछी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी मुहपत्तिनो पडिलेहण करी, वांदणा दइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पक्खियं आलोएमि ? एम आदेश मागी, इच्छं आलोएमि, कही, जोमे पक्खिओ संपूर्ण कही, पक्खि अतिचार आलोउं, एम कही, मुखे मुहपत्ति राखी अतिचार आलोववा. )

## ॥ अथ श्रावक पाक्षिकादि अतिचार ॥

( चउपई )

नाणे दंसण चरणे जाण, समकितसुं व्रत बार वखाण; संलेहण तव विरियायार, तिहना आलोइशुं अतिचार ॥ १ ॥ नाणे दंसण चरण प्रत्येक, आठ आठ अतिचार विवेक; समकितमूल बार व्रततणा, अतिचार अस्सी तिह भण्या ॥२॥ संलेहण तव विरियायार, तेहना जाणो वीस अतिचार, सर्व मली एकसो चउवीस, गुरुसाखे गरहुं निशदीस ॥ ३ ॥

### ज्ञानाचारना अतिचार

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अने सम्यक्त्वमूळ बार अतिचार तथा तप तथा संलेखना तथा वीर्या–चार विगेरेना अतिचार आलोवीश. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना आठ आठ मळी चोवीस तथा समकितमूळ बार व्रतना एंसी अतिचार तथा संलेखनाना पांच, तपाचारना छ बाह्य अने छ अभ्यंतरना मळी बार अने वीर्याचारना त्रण अतिचार मळी कूल २० पूर्वना १०४ साथे मेळवतां १२४ अतिचार थया. आ १२४ अतिचारोने हुं गुरु साक्षीए हंमेशां निंदा करीश. १–३.

नाणतणा आठे आचार, विपरीताचरणे अतिचार; ते प्रमाद वलि आणाभोग, ते आलोवुं गुरुसंजोग ॥ ४ ॥

काले न भण्यो गण्यो अकाल, विनय-हीन बहुमान निटाल; न वह्या आवश्यक उपधान, पूछ्या गुरु ओलव्या प्रधान ॥ ५ ॥

अक्षर काने मात्र अशुद्ध, सूत्र अर्थ पण कह्यो विरुद्ध; सूत्र अर्थ जिनभाषित बेय, भण्या कूड विस्तर संखेव ॥ ६ ॥

ज्ञानाचारना आठ आचार छे ते उलटा आचरवाथी अतिचार थाय छे. ते प्रमादथी अने अजाणता थइ जाय तो तेनी गुरुनी समीपे आलोचना करुं छुं. ४

भणावाना समये न भण्यो, अकाळमां भण्यो, विनय रहितपणे भण्यो, बहुमान करीने न भण्यो, योग–उपधान जे जे सूत्रोना योग वहेवा जोइए ते न वह्यां, जे गुरुपासे भण्यो तेनी पासे भण्यो नथी एम कह्युं. ५

तथा काना–मात्राथी अशुद्ध अक्षर बोल्या, सूत्र खोटां बोल्यां, अर्थ खोटां कर्यां, सूत्र अने अर्थ बन्ने खोटां कर्यां, विस्तारथी या संक्षेपथी बोल्या. ६

नाणे ए आठ अतिचार, वलिय अनेरा घणा प्रकार; निह्नवणा–सायण अंतराय, विसंवादने कर्यो कसाय ॥ ७ ॥

अक्षर चांप्या चरणह हेठ, मुद्रागालण दोधी द्रेठ; नाणोपगरण आशातना, जे मे कीधी तसु भावना ॥ ८ ॥

सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडो मस्तक नामीये, आ भव परभव ते खामीये ॥ ९ ॥

आ आठ अतिचार ज्ञानना जे अने बीजा पण घणा भेद थई शके ते, ओळववा–छुपाववां ने आशातन करवी, विशेष संवाद करवो, विवाद करवो विगेरे. ७

तथा पगनी नीचे अक्षर दबाववा, छाप आपवा माटे दबाण कीधुं ज्ञान संबंधी उपकरणोनी जे आशातना थइ होय तेनी भावना. ८

झीणी रीते अथवा मोटी रीते जे कोइ दोष लाग्यो होय, तेनी हुं बे हाथ जोडवा साथे मस्तक नमावी, आभव तथा परभवने विषे पण दोष खमावुं छुं. ९

**अहनिसि पक्खि चउमासी कुडं, संवच्छरि मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ १० ॥**

हंमेशां, पंदर दिवसे, चार महीनाना चोमासि प्रतिक्रमणमां, तथा संवत्सरि प्रतिक्रमणमां प्रगट रीते हुं मारुं थयेलुं पाप फोगट थाओ. अरिहंत तथा सिद्धभगवान आदि बधां जाणज्यो. हुं गुरु समीपे तेनो माफी चाहुं छुं. १०

**ज्ञानाचारना आठ अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दीवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छामिदुक्कडं.**

वळी ते ज्ञानाचारना अतिचारने विषे जे पक्खि, चउमासी, के सांवत्सरीक **अतिक्रम**—जे मनमां प्रतिज्ञा करी होय, नियम कर्यो होय तेने तोडवाने माटे जे विचार करवो ते **अतिक्रम** दोष गणाय. **व्यतिक्रम**—तेना माटे जे पग उपाडवो लेवा जवुं पण लीधुं नथी, त्यां सुधी **व्यतिक्रम** दोष थयो, तेज चीजने लइने ज्यांसुधी भोगवटो कर्यो नथी त्यांसुधी **अतिचार** छे, पण ज्यारे मुखमां नाखे त्यारे **अनाचार** दोष गणाय. जेम के काचा पाणीनो नियम छे छतां पीवानी भावना थइ ते **अतिक्रम**, लेवा चाल्यो ते **व्यतिक्रम**, लीधुं ते **अतिचार**, अने पीधुं तो **अनाचार** दोष लाग्यो तो अतिचार सुधी आलोयणा, अतिचार आलोवाय पण अनाचारना शुं अतिचार आलोवे? अर्थात् न आलोवे १०

**दंसण भण्या आठ आचार, विपरीताचरणे अतिचार; ते प्रमाद वली आणाभोग, ते आलोवुं गुरु संजोग ॥ ११ ॥ संका देसत सर्वत करी, निरती आण हीये नहु धरी; लेखव्या धर्म सवे सारिखा, सत्य न लीधो करी पारिखा ॥ १२ ॥ धर्मतणा फलनो संदेह, अहवा निरखी मुनिवर देह; मलि मइला दुर्गंध विशेष, तसु हीला कीधी विद्वेष ॥१३॥**

**श्रुतसागर गाढो गंभीर, रह्यो मूंझ नवि पाम्यो तीर; साधु साहम्मी जाणी गुणी, उप-**

**दर्शनाचारना अतिचार**—दर्शनाचारना आठ आचार छे, पण ते विपरीतपणे थाय त्यारे अतिचार थाय छे, ते प्रमादथी अथवा अजाणता थइ जाय तो, तेनी गुरु समीपे आलोयणा करुं छुं. ११.

देशथी अथवा सर्वथी शंका करी, चोख्खी रीते जिनआज्ञा हृदयमां धारण न करी, बधां धर्मो सरखां मान्या, परन्तु परीक्षा करी सत्य—साचो धर्म न कर्यो. १२.

धर्मतणा फळमां संदेह कर्यो, अथवा मुनिवरना मेलवाळा शरीरने जोइ, दुर्गंध विशेष जोइने तेनी निंदा कीधी—द्वेष कर्यो. १३.

घणो गंभीर शास्त्ररूप समुद्र जाणी मुंझाणो, पण पार पाम्यो नहीं. साधु—स्वामीभाइ आदिना गुणने जाणी तेनी बहु भक्ति, आदर-सत्कार न कर्यो. १४

बृहणा नहु कीधी घणी ॥१४॥ शुद्ध धर्मथी पडतो जाण, उठंभादिक नहु मन आण; ते थिर न कर्यो जिम श्रीवीर, मेघकुमार पहुचाव्यो तीर ॥ १५ ॥ महाशतक संताप्यो नार, संथारे चडियो अवधार; रीसाणो गौतम पाठवी, रोष खमावी दृढमति ठवी ॥ १६ ॥

एहवो थिरीकरण नहु कर्यो, जिनशासन वच्छल गुण भर्यो; भले भाव ते कीधो नहि, अंतरभगति चित्त नहु वही ॥१७॥ धन धन

अथवा शुद्ध धर्मथी पडता जाणीने तेने टेको—मदद—आश्वासन न आप्युं. जेम श्री वीर परमात्माए मेघकुमारने चारित्रथी पडवा न देतां, तेने टेको आपी स्थिर कर्यो तेम में न कर्युं. १५

महाशतक नामना श्रावकने जेम तेनी स्त्रीए घणो ज हेरान कर्यो. पोताना संथारामां हतो त्यारे तेना मनमां द्वेषभाव उत्पन्न थयो ए जाणीने श्री महावीर परमात्माए गौतमस्वामीने मोकली, रोष खमावीने, पाछो धर्ममां स्थिर कर्यो. १६

आवी रीते आपणे पण धर्मथी पतित थतां जीवोने धर्ममां स्थिर करवा प्रयत्न करवो जोइए. जिनेश्वरना शासन प्रत्ये भक्तिभाव राखी, धर्मथी पतित थतांओने स्थिर करवा, भली भक्ति अंतरमां राखवी विगेरे न करे.–१७

**जिनशासन इम कहे, मिथ्याती सुधी मती लहे; जे देखी भावे भावना, ते नहु कीधी सुप्रभावना १८**

**सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; करजोडी मस्तक नामीये, आ भव परभव ते खामिये॥१९॥अहनिसि पक्खि चउमासि फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥ २० ॥**

दर्शनाचारना आठ अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खि, चउमासी, संवच्छरी दीवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

जिनशासननी आ प्रमाणे आज्ञा छे के एवां धर्म प्रभावनाना कार्यो करवा के जेथी मिथ्यात्वीओ पण जिनशा सननी प्रशंसा करे, धन्यवाद आपे, शुभ भावना भावे, जो आवी प्रभावना न करे तो दोष लागे छे. १८

सूक्षम अथवा बादर जे कोइ अतिचार मने लाग्यो होय, तेनी हुं बे हाथ जोडी मस्तक नमावी आ भवमां, परभवमां, हंमेशां, पक्खि, चउमासि, संवत्सरी ए बधां दिवसोमां मारा पापनी प्रगटपणे गुरुसमीपे क्षमा चाहुं छुं, ते अरिहंत, सिद्ध सर्वे जाणजो. १९–२०.

दर्शनाचारना आठ अतिचारमां पाखी, चउमासी के संवत्सरी संबंधी जे कोइ अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार दोष लाग्यो होय तेने हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं चाहुं छुं

चरणे भण्या आठ आचार, विपरीताचरणे अतिचार; ते प्रमाद वली आणाभोग, ते आलोवुं गुरु संजोग ॥ २१ ॥ मारग समितिसहित चालिये, सावद्यरहित वचन बोलिये; दोषरहित लिजे आहार, करिवो मुकण ग्रहण विचार ॥ २२ ॥

दृष्टिये जोइ पमज्जण करी, लेवुं मूकेवुं चित्त धरि; चोथी समिति एह जाणवी, हवे पंचमी हीयडे आणवी ॥ २३॥ रूडे दसगुण ठंडिल जोय, जीवविराहण जिहां नवि होय; उच्चारादिक तिहां

**चारित्राचारना अतिचार**—चारित्राचारना आठ आचारो छे. तेज उल्टी रीते आचरवाथी अतिचारो कहेवाय छे, ते प्रमादथी के अजाणता थयां होय, तो तेनी गुरु समीपे आलोयणा लउं छुं. २१

मार्गमां चालता इर्या समिति साचववी अने पाप रहीत वचन बोलवुं, दोषरहित आहार लेवो अने विचार करीने लेवुं मुकवुं. २२

बराबर देखी शकाय तेवा समये प्रमार्जन करवुं, अथवा कंइ चीज-वस्तु चित्त राखीने लेवी–मूकवी, आ चोथी आदान–भंड–मत्त–निख्खेवणा समिति छे. हवे पांचमी पारिष्ठापनिका समिति हृदयमां लाववी. २३

ठंडील भूमिना दशगुण जोवा, के ज्यां जीवनो विराधना=नाश न

परिठवे, पंचमिसमिति एणिपरे हुवे ॥ २४ ॥ आर्त्तरौद्रचिंतन परिहरे, सर्व जीवनी समता धरे; एणिपरे चित्त सदा राखिये, मनोगुप्ति प्रवचन भाखिये ॥ २५ ॥ मौनो साने नहु ववहरे, हुंकारादिक सवि संवरे; वचनगुप्ति ते कहिये सहि, सुगुरुतणे वचने में लही ॥ २६ ॥

दुस्सह चउविह उवसग्ग सहे, मेरुतणी परे निश्चल रहे; तनु वोसिरावी काउस्सग करे, कायगुप्ति जिन इम उच्चरे ॥ २७ ॥ इणिपरे आठे

थाय, मळ मूत्र श्लेषमादिक तेवि जग्यामां परठववा, ए प्रमाणे पांचमी समिति सचवाय. ॥२४॥

मनमां आर्त्त–रौद्रध्यान त्याग करवां, सर्व जीवो उपर समता राखवी, आवी रीते हंमेशां चित्त राखे, तेने मनोगुप्ति कहे छे. २५

मौन करीने इसाराथी व्यवहार न करवो, हुंकार विगेरे पण न करे, आने गुरु महाराज स्वमुखे वचनगुप्ति कहे छे. २६

दुःखथी सहन थाय तेवा चार प्रकारना उपसर्गने, मेरु पर्वतनी जेम स्थिरपणे सहे अने शरीरने वोसरावी काउस्सग करे, तेने जिनेश्वर भगवाने कायगुप्ति कही छे. २७

**प्रवचन माय, सघलुं प्रवचन जिहां समाय; जावजीव साधे पालीये, असमितिमति दूरे टालिये ॥ २८ ॥ पोसह सामायिक अवसरे, श्रावक एहतणी खप करे; नाणादिक पंचे आचार, साधु श्रावकने सरिस विचार ॥ २९ ॥ सूक्षम बादर उभयप्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; करजोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ३०**

**अहनिसि पक्खि चउमासि कुडं, संवच्छरि मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरु-साखे ते मुजने हजो ॥३१॥**

चारित्रचारना आठ अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासि, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाये करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

आ रीते आठ प्रवचन माता कही छे, जेमां बधा प्रवचन समाया छे, तेने साधु आखा जीवन सुधी पाळे अने असमिति बुद्धिने दूर करे. २८

आ आठे प्रवचन माताने श्रावक पण पोसह, सामायिक विगेरे समये पाळे अने ज्ञानाचार, दर्शनाचार अने चारित्राचार तपाचार, विर्याचारना पांचे आचार साधु तथा श्रावकने सरखाज होय छे. २९

आ अतिचारो सूक्षम अथवा बादर जे रीते मने लाग्या होय, ते बे हाथ जोडी, मस्तक नमावी, आभव परभवने विषे हुं खमावुं छुं. ३०

**हवे विशेष श्रावकनो धर्म, समकित तत्त्व लहे लघुकर्म, समकित लाधे सर्व प्रमाण, जप तप संयम नाण विनाण ॥ ३२ ॥**

**समकित रतन जतन करि ग्रहो, जासु प्रसादे शिवसुख लहो; समकित पाखे शिवपद दूर, चउगई जीव भमे भव भूर ॥३३॥ चारित्र पाले**

हंमेशां, पाखी, चउमासो, संवत्सरी दिवसोमां प्रगट रीते मने मिच्छामि दुक्कडं हजो. अरिहंत-सिद्ध सर्वे जाणजो, गुरु साक्षीए मारुं पाप मिथ्या थाओ. ३१

चारित्राचारना आठ अतिचार छे ते संबंधी अने पाक्षिक, चौमासिक के सांवत्सरिक जे कोइ अतिक्रम, व्यतिक्रम के अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सर्वे हुं जाते मन, वचन कायाए मिथ्या करुं छुं.

हवे पछी विशेषे करी श्रावकना धर्ममां रहेला आचार अने अतिचारोने कहे छे. कारण के ज्ञानादिक अतिचार साधु अने श्रावकना सरखाज छे. तेथी जूदा नथी पाड्या. लघुकर्मी जीवो समकित मेळवी शके छे. समकित मेळव्या पछी जप-तप-संयम-ज्ञान-विज्ञान विगेरे मेळवे. ३२

समकितरूप रत्न मेळवीने बहु सारी रीते तेनुं रक्षण करे, कारण के तेनी महेरबानीथीज मोक्षनुं सुख प्राप्त थाय छे. कारण के समकित विना मोक्ष मेळववुं मुश्केल-दूर छे. अने प्राणी चारे गतिमां घणा लांबा काळसुधी भव भ्रमण कर्या करे छे. ३३

वार अनंत, तो पण नहु पामे भव अंत; इम जाणी समकित आदरो, समकित आदर किरिया करो॥३४॥ समकित किरिया बे जो मिले, तो भव भम-वाना भय टले; समकित सूधा दंसण नाण, देवगुरु धर्म विषे ते प्रमाण ॥ ३५ ॥

देव एक अरिहंत विदित, रागद्वेष वेरी जिण जीत; दोष अढार रहित हितकार, त्रिभुवन जनने तारणहार ॥३६॥ नाम ठवण द्रव्य भाव विचार,

अनन्तीवार घणा लांबा वखत सुधी चारित्र पाळवा छतां आ संसारनो पार पमातो नथी, एम जाणी समकित ग्रहण करवुं जोइए अने समकित प्राप्त करवा माटे योग्य–क्रियाओ करवी जोइए. ३४

समकित अने क्रिया ए बन्नेवाना जो मळे तो भवभ्रमणानो भय दूर थाय छे, अने समकित सहित दर्शन, ज्ञान, होय तो देव–गुरु अने धर्मने विषे प्रमाणभूत गणाय छे. ३५

राग अने द्वेष रूप बे शत्रु जेओए जीत्या छे, अने अढार दोषो रहित छे अने त्रण भुवननुं हित करनारा तथा रक्षण करनारा छे, एवा अरिहंत देवने ज एक देव तरीके जाणवा. ३६

नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव आ चार निक्षेपा विचारवा जोइए, तेनुं

**निक्षेपा अनुयोग दुवार; चिहुं प्रकार इणिपरे अरिहंत, चउथे भेद नमुं जयवंत ॥३७॥ चउवीसत्थो भणतां नाम, जिन नामे तसु करुं प्रणाम; ठवणा श्री जिनप्रतिमा कही, जिनभावे ते वंदु सही ॥ ३८ ॥ पंचमज्झयण आवश्यकतणे, अधिकारे यति श्रावक भणे; पढम उवंगे दसमे अंग, प्रगट साखी जाणो मनरंग ॥ ३९ ॥**

**आवंती चउवीसी हुस्ये, लहि केवल**

**अनुयोगद्वार**मां वर्णन कर्युं छे. अरिहंत भगवान चार प्रकारना छे अने चोथा भेदमां भाव तीर्थंकर वर्णव्या छे, जे जयवंत छे, ए प्रमाणे तेमने हुं नमस्कार करुं छुं. ३७

लोगस्स—जेमां चोवीशे तीर्थंकरनी स्तुति करी छे—ते नाम प्रमाणे चोवीशे तीर्थंकरोने हुं प्रणाम—वंदन करुं छुं अने श्री जिनप्रतिमानी स्थापनानेज भाव तीर्थंकर मानी वंदना करुं छुं. ३८

आवश्यक सूत्रनां पांचमां अध्ययनना अधिकारमां श्रावकने माटे कीधेल छे अने प्रथम उपांग—उववाइ सूत्रमां अने दशमे अंग प्रश्न व्याकरणमां प्रगट साक्षीए मनना उच्छरंगथी जाणो. ३९

आवती चोवीसीमां जीनेश्वर भगवान थशे, तेओ केवलज्ञान पामीने

**जिनधर्म भाखस्ये; आगम भाख्या द्रव्य जिणंद, ते प्रणमुं मन धरि आणंद ॥ ४० ॥ इम चउवीसी जे जिन यदा, एहीज चउ-वीसत्थो तदा; वंदनीक इम द्रव्य जिनेश, गुरु पूछी जाणो सुविशेष ॥ ४१ ॥ एणिपरे देवतत्त्व अरिहंत, गुरु सुसाधु जे जग गुणवंत; सूधो निरवद्य दे उपदेश, टाले सावद्यनो लवलेश ॥ ४२ ॥ परि-ग्रहने आरंभ निवार, वरते निरते पंचाचार; आण-**

धर्मनो फेलावो करशे एमने आगममां द्रव्य जीनेश्वर कीधां छे, तेमने हुं मनना आनंदथी प्रणमुं छुं. ॥४०॥

ए रीते जे चोवीशी अने जिनेश्वरो ज्यारे हशे, त्यारे एज चउविसत्थो चोवीश जिनवरनी स्तुति हशे, ए रीते द्रव्य जिनेश्वरो पण वंदन करवा योग्य छे. वधारे जाणवानी इच्छा होय तो गुरु महाराजने पूछो. ४१

ए रीते देवतत्त्व श्री अरिहंत अने जगतमां गुणे करी सुशोभित पवित्र साधु गुरु कह्यां छे. जेओ पाप व्यापार रहित शुद्ध उपदेश आपे छे अने लेश—जरापण सावद्य—पाप करता नथी—पापथी दूर रहे छे. ४२

परिग्रह धन, धान्य विगेरे नव प्रकारना आरंभथी—दूर रहे छे अने पांच आचार पाळवामां हंमेशां सावध—चतुर—निपुण, शुद्ध रहे छे अने जेओ आज्ञा अने क्रिया शुद्ध रीते पाळे छे तथा बेंताळीश दोष रहित

**क्रिया जे पाले खरी, दोषरहित वहोरे गोचरी ॥४३॥ इस्या सुगुरु गुरुतत्त्व सद्दहुं, तेनी आणा मस्तक वहु, जिनभाषित ते साचो धर्म, पालंतां आपे शिवशर्म ॥ ४४ ॥ सर्व जीव वलि हणवा नहि, इण उपदेशे धर्म हुवे सही; एक करि थापे आरंभ धर्म, ते जिनमतनुं न लहे मर्म ॥ ४५ ॥ धर्मारथ आरंभ मिथ्यात, एहवि वात करे विख्यात; बहुजन मांहे जे इम कहे, ते पण जैन धर्म नवि लहे ॥ ४६ ॥ बे बे भाव जिहां ए**

(छन्नु दोषथी) मुक्त आहार ले छे. (जो इच्छा थाय तो **एषणाशतकमां** छे. त्यां जोइ लेवुं ४३.

एवां सुगुरुथी गुरुतत्त्व जाणुं अने तेमनी आज्ञा मस्तकथी वहुं. जिनेश्वरदेवे कहेलोज धर्म साचो छे. जे पाळवाथी मोक्षसुख मळे छे. ४४

जिनेश्वर प्ररूपित धर्मनी आज्ञा छे के सूक्ष्म या बादर कोइपण जीवने हणवो नहीं. एकांतथी जे कोइ धर्म आरंभने मानतो होय, ते जिनेश्वरना मतनो मर्म ( रहस्य ) नहीं जाणे. ४५

धर्म अने अर्थ माटे जे जे आरंभो करवा पडे अथवा तेवी वात करवी ते पण मिथ्यात्व छे. अने घणा लोकोनी सभामां आवी वात करे, ते पण जैनधर्मने प्राप्त नहीं करी शके. ४६

नही, तेहिज धर्म साचो सद्दही; एणिपरे पालुं त्रिणे तत्त, साचुं सद्दहतां समकित ॥ ४७ ॥

समकित मूल भण्या व्रत बार, तेहना पंच पंच अतिचार; गुरुमुख सांभळी तेहनी विगत, जाणी टालिशुं आतमशकत ॥ ४८ ॥ जीवादिक जिनभाषित तत्त, साचुं सद्दहतां समकित; तेह विषे संशय आणिए, शंकादोष ते श्रुत जाणिये ॥ ४९ ॥ बीजा धर्मतणो अभिलाष, ते कंखा कहिये जिन भाष, धर्मतणा फलनो संदेह, त्रीजी

जे धर्ममां आवां बे भाव नथी तेज साचो धर्म कह्यो छे. ए रीते त्रण देव, गुरु अने धर्म तत्त्वने पाळुं अने तेने ज सारी रीते पाळतां समकित कहेवाय छे. ४७

आवी रीते समकितना मूळ बार व्रत कह्यां छे अने तेना पांच पांच अतिचार छे. तेओनी विगत गुरुमुखथी जाणी; आत्मशक्तिए ते टाळवा प्रयत्न करीशुं. ४८

जीवादि छ द्रव्य नवतत्त्वो जिनेश्वर भगवाने कह्यां छे. तेने साची रीते सद्दहतां समकित थाय छे. तेने विषे संशय करीए तो शास्त्रमां शंकादोष वर्ण्व्यो छे. ४९

बीजाना धर्मनी इच्छा ते जिनधर्ममां आकांक्षा कही छे अने धर्मना फळमां

**वितिगिच्छानी रेह ॥ ५० ॥**

**मिथ्यादृष्टि प्रशंसा करे, तसु परिचय दंसण अतिचरे; समकितना पंचय अतिचार, तेहतणो करिशुं परिहार ॥ ५१ ॥ एह छतां समकित दुषाय, मूल विना फल फूल न थाय; धर्म मूल तिम समकित जाण, एह विना हुवे बहु व्रत हाण ॥५२॥ समकितविणु व्रत वार अनंत, पालंता न थयो भव अंत; करे अभव्य बहु कायकलेश, तोय न आवे समकित लेश ॥ ५३ ॥**

संदेह करवो तेने वितिगिच्छानामनो त्रीजो प्रकार कीधेल छे.५० मिथ्यादृष्टिनी प्रशंसा करवी, तेनो परिचय करवो. आ समकितना पांच अतिचारो छे, तेने दूर करीशुं. ५१ एम छतां समकितने दूषण लागे अने रही जाय तो जेम मूळ न होय तो **मूलं विना कुतः शाखा** ए कथन अनुसार मूळज न होय, सडेलुं होय तो फळ-फूलनी आशा केम रखाय? तेवी ज रीते धर्मनुं मूळ समकित छे, तेज जो न होय तो पछी व्रतो पळे नहि पण नाश थाय, व्रत भंग थाय. ५२

समकित न होय अने वारंवार व्रत-जप-तप-नियम करवामां आवे तो पण भव-संसारनो अंत थइ शकतो नथी. अभव्य कायक्लेश घणा सहन करे तोपण लेशमात्र समकित न पामी शके. ५३

**तिण समकित जा मलि नहु कोय, जिनवर वचन विमासी जोय; समकित लाधे दुर्गति टले, अनुक्रमे शीवपुर पदवी मीले ॥५४॥ सूक्ष्म बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामीये, आ भव परभव ते खामिये ॥ ५५ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥ ५६ ॥**

समकितना पांच अतिचार तेहने विषे, जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

ते समकित ज्यांसुधी मलीन न थयुं होय त्यांसुधी कोइ पण जिनेश्वरना वचनमां विचार करी जोशो. समकित मळवाथी दुर्गति-नरक टळी जाय छे अने परंपराए मोक्ष मळे छे. ५४

सूक्ष्म अने बादर बे प्रकारमांथी जे कोइ अतिचार मने लाग्या होय तेनी बे हाथ जोडी आ भव अने परभव माटे हंमेशा, पख्खी, चोमासी के संवत्सरीनी प्रगट रीते गुरु समीपे मिच्छामि दुक्कडं चाहुं छुं. ते अरिहंत, सिद्ध सवे जाणजो. ५५–५६

समकितनां पांच अतिचारो संबंधी जे कोइ दोष पाक्षिक,

**रीसे दृढबंधन दृढघात, अंग चर्मनो करे विघात; अति भारारोपण विख्यात, रुंधी जे जे पाणी भात ॥ ५७ ॥ पहिला व्रतना ए अतिचार, न लगाडे श्रावक सुविचार; व्रतनो धारक इम जाणिये, तेहना गुण हियडे आणिये ॥ ५८ ॥ सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; करजोडी मस्तक नामीये, आ भव परभव ते खामिये ॥ ५९ ॥ अहनिशि पक्खि चउमासी फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥६०॥**

चउमासिक, संवत्सरिक दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार लाग्यो होय ते बधुं, हुं, मन, वचन अने कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं आपुं छुं.

**प्रथम स्थूल प्राणातिपातना** अतिचारनी आलोचना करे छे.

पशुने क्रोधथी कठन बांधवुं, सख्त बांधी मारवुं, शरीरथी अथवा चामडाथी घा करवा, घणो भार भरवो, रुंधी राखवो अने खावा—पीवानुं न आपवुं.५७ आ प्रथम व्रतना अतिचार अत्यंत विचारक श्रावक लागवा न दे, अने पोते विचार करे के में व्रत लीधेलुं छे, माटे आ न करवुं जोइए. अने व्रतना गुण हृदयमां धारण करवा जोइए—५८ (अर्थ गाथा ५५—५६ प्रमाणे छे. ५९—६०)

पहेलुं स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत, तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

**कूड आल दे सहसाकार, गुज्झ प्रकाशे जे अविचार; मंत्रभेद नीज नारी तणो, करतां लागे दूषण घणो ॥ ६१ ॥ जे दीजे मिथ्या उपदेश, कर्मधर्म पामीये किलेश; कूड लेख ए बीजे व्रते, अतिचार समरसुंदीन प्रते ॥ ६२ ॥ सूक्ष्म बादर**

पहेले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतना पांच अतिचार संबंधी ते कोइ दोष, पाक्षिक, चउमासिक, संवत्सरीक दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार लाग्यो होय ते बधुं, हुं, मन, वचन, अने कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं आपुं छुं.

**बीजे स्थूल मृषावादना** अतिचारनो आलोचना करे छे:—

एकदम खोटुं आळ देवुं, विचार कर्या विना छानी वात प्रकाश करवी, पोतानी स्त्रीनी छानी वात जाहेर करवी विगेर बाबतोथी घणुं दूषण लागे छे. ६१

खोटो उपदेश आपवो, खोटो लेख लखवो. आथी धर्मकार्यमां घणो क्लेश थाय छे. बीजा व्रतना अतिचारनी आलोचना करशुं. ६२.

**उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामीये, आ भव परभव ते खामिये ॥ ६३ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥ ६४ ॥**

बीजुं स्थूल मृषावाद विरमण व्रत, तेहना पांच अतिचार, तेहने बिषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

**चौर हरी वस्तु ववहरे, चौरप्रयोग सखायत करे; दाण विसाइ राज्यविरुद्ध, उत्तम श्रावकने प्रतिषिद्ध ॥ ६५ ॥**

(अर्थ गाथा ५५–५६ प्रमाणे ६३–६४.)

बीजे स्थूल मृषावादना विरमण व्रतना पांच अतिचारो संबंधी जे कोइ दोष, पाक्षिक, चउमासिक, संवत्सरिक दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार लाग्यो होय ते बधुं, हुं, मन वचन, अने कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं आपुं छुं.

**त्रीजा स्थूल अदत्तादान**ना अतिचारनी आलोचना करे छे:—

चोरे लावेली वस्तुनो वहेपार करे-खरीदे, चोरने हमणा केम कंइ लावतो नथी एम चोरी लाववा प्रेरणा करे, जगात चोरी करी राज्य विरुद्ध आचरे, आ बाबत विचारक व्रतधारी श्रावकने न करवी जोइए. ६५

वानि भेलने कूडु मान, कूड तोल परिहरे सुजाण; त्रीजा व्रतना ए अति-चार, पंचलणो करिशुं परिहार ॥ ६६ ॥ सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ ६७ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरु साखे ते मुजने हजो ॥ ६८ ॥

त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत, तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खि, चउमासी, संवच्छरी, दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

अनाजने राख भेळवी, खोटे मापे मापी, खोटो तोल करी, ल्ये-वेचे. आ त्रीजा व्रतना पांच अतिचार छे तेने टाळवा जोइए. ६६

( अर्थ गाथा ५५-५६ प्रमाणे ६७-६८ )

त्रीजे स्थूळ अदत्तादान विरमण व्रतना पांच अतिचारो संबंधी जे कोइ दोष, पाक्षिक, चउमासिक, संवत्सरिक दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार लाग्यो होय ते बधुं हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं आपु छुं.

भाडे राखी थोडे काल, इत्तर परिग्गहिया संभाल; विधवा दासी वेश्या जाण, अपरिग्गहिया ते मन आण ॥ ६९ ॥ तेहतणो जे कीजे संग, उत्तमने जाणो व्रत भंग; फरसे परनारीना अंग; क्रीडा कहिये तेह अनंग ॥ ७० ॥ आतम संतति विणु परतणा, मेले नात्रा जे नर घणा; कामभोग नावे संतोष, चउथे व्रत ए पंचय दोष ॥ ७१ ॥ शेठ सुदंसण प्रमुख अनेक, तेहना गुण जाणो सुविवेक; निरतिचार जे पाले शील,

### हवे चोथा व्रतना अतिचार वर्णवे छे.

थोडा समय माटे कोइए भाडे राखेली, बीजानी स्त्री, कोइए ग्रहण करेली स्त्री वीधवा दासी, के वेश्या अने कोइए नहि ग्रहण करेली स्त्री आटलाने मनमां लाववाथी अथवा तेमनो संग करवाथी उत्तम व्रतधारी श्रावकने व्रतभंग दोष लागे छे. पर नारीना अंगने अडकवाथी तथा तेनी साथे विषयभोग करवाथी अनंग क्रीडानो दोष लागे छे. ६९–७०

पोताना बच्चा सिवाय बीजाना बच्चाना सगपण कराबी आपे थोडा या घणा जे माणस नातरां करे अने कामभोगमां संतोष न पामवो आ पांच प्रकारना दोष चोथा अतिचारना छे. ७१. सुदंसणशेठ आदि घणा गुणवान पुरुषोना गुणोने विवेकपूर्वक जाणवा जोइए के जेओ

आ भव परभव तेहने लील ॥७२॥ सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; करजोडो मस्तक नामीये, आ भव परभव ते खामिये; ॥७३॥ अहनिशि पक्खि चउमासी कुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरु साखे ते मुजने हजो ॥ ७४ ॥

चोथुं स्थूल स्वदारा संतोष, परदारा विरमण व्रत, तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासी, संवच्छरी दीवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन,वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

बांधी मुके जे धन धन्न, इणिपरे रुप सोवन्न हिरन्न; खेत्र गेह वे मेली एक, दुपद चउपद गर्भ

अतिचार रहितपणे पोताना शीयळ पाळवा तत्पर हता अने जेओए आभव अने परभवने भोगव्यो. ७२. (अर्थ गाथा ५५-५५प्रमाणे७३-७४.)

चोथा स्थूल स्वदारसंतोष विरमण व्रतना पांच अतिचारो संबंधी जे कोइ दोष पाक्षिक, चउमासिक, संवत्सरिक दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार लाग्यो होय ते बधुं हुं मन, वचन, अने कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं आपु छुं.

हवे पांचमां परिग्रह परिमाण व्रतने वर्णवे छे.

धन-धान्य, रुपुं-सोनुं, हीरा, क्षेत्र-घर, विगेरे तेमज बे पगवाळा

**अनेक ॥ ७५ ॥ कुविय वधारे तोले जेह, परिग्रह मान अतिक्रम तेह; पंचमव्रत अतिचार निवार, सफल करे ते धन संसार ॥ ७६ ॥ सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खा- मीये ॥ ७७ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासि फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जा- णजो, गुरु साखे ते मुजने हजो ॥ ७८ ॥**

दास–दासी तथा चार पगवाळां गाय, भेंश आदिना अनेक गर्भना बच्चानो संग्रह करे तथा तांबा विगेरे वासणना तोलमां वधारो करे अने तेथी परिग्रह ओळंगी गयो गणाय छे. आ पांचमा अतिचारनो जे त्याग करे ते आ संसारने सफळ करी जाय छे. ७५–७६. (अर्थ गाथा ५५–५६ प्रमाणे ७७–७८).

## हवे त्रण गुणव्रत कहे छे.

पांच अणुव्रतने लाभ करनार होवाथी तेने गुणव्रत कहे छे जेमके छट्टुं व्रत ग्रहण करनारे परिमाण करेली दिशानी बहार रहेला तमाम जीवोनी दया पाळी, त्यांनी कन्या विगेरे संबंधी असत्य टळ्युं, त्यां रहेला द्रव्यादिक माटेनुं अदत्तपणुं गयुं, त्यां रहेली स्त्रीओनो सहेजे त्याग थइ गयो अने त्यां रहेला द्रव्य माटे परिग्रहबुद्धि नाश पामी. आ प्रमाणे पांचे अणुव्रतने गुण करवाथी नीचेना त्रणने गुणव्रत कहे छे.

पांचमुं स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत, तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दीवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

**उंचो नीचो तिरछो दीसे, मान अतिक्रम करिये वसे; स्वारथ उणो अधिको करे, पंचम मान कर्यो विसरे ॥ ७९ ॥ छठ्ठा व्रतना ए अतिचार, न लगाडे श्रावक सुविचार; व्रतनो धारक इम जाणिये, तेना गुण हियडे आणिये ॥ ८० ॥**

पांचमा परिग्रह परिमाण व्रतना पांच अतिचारो संबंधी जे कोइ दोष, पाक्षिक, चउमासिक, संवत्सरिक दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार लाग्यो होय ते बधुं हुं मन, वचन, अने कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं आपु छुं.

## छठ्ठा दिग्परिमाण व्रतने बतावे छे.

ऊर्ध्व, अधो अने चार दिशा–विदिशाओमां जवा–आववानुं परिमाण करी, तेने उल्लंघी जाय ते तथा स्वार्थ जोइ एक बाजु ओछी करी, बीजी बाजु वधारे तथा यादी भूली जइ कइ दिशाए केटलुं जवानुं या नहीं जवानुं ते भूली जाय. आ पांच छठ्ठा व्रतना अतिचार छे तेने विचारक व्रतधारी श्रावक लागवा देतो नथी, आवा गुणधारी श्रावकना गुणोने हृदयमां धारण करवा जोइए. ७९–८०, ( अर्थ गाथा ५५–५६ प्रमाणे ८१–८२ ).

सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ ८१ ॥ अहनिसि पक्खि चउ-मासी कुडं, संवच्छरि मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥ ८२ ॥

छट्ठुं दिसिविदिसिपरिमाण व्रत, तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासी, संवच्छरी दीवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

सप्तमव्रत हवे करिशुं विचार, तेना संभारुं अतिचार; करमे पनरह भोजन पंच, एवं वीस

छट्ठा दिग् परिमाण व्रतना पांच अतिचारो संबंधी जे कोइ दी पाक्षिक, चउमासिक, संवत्सरिक दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार लाग्यो होय ते बधुं हुं, मन, वचन अने कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं आपु छुं.

**सातमा भोगोपभोग परिमाणव्रतने वर्णवे छे.**

हवे सातमा व्रतना अतिचारने आलोवुं छुं. तेमां कर्मने आश्रयी पंदर अने भोजनने आश्रयी पांच मळी वीस अतिचार थाय छे तेमां जरापण फेरफार नथी. ८३.

**नही खल खंच ॥ ८३ ॥ सचित आहारे अचिते वृंद, वृक्षथकी उखेडी गुंद; खारेक रायण बीज समिद्ध, बीजो छे सच्चित्त प्रतिबद्ध ॥ ८४ ॥ अग्नि अपक्क ते अप्पोलिआ, ओला पहुंक ते दुप्पोलिआ; बीज रहित ओसही जे तुच्छ, जे भुंजे तेहनी मति तुच्छ ॥ ८५॥ अतिचार भोजन जाणवा, कर्मादान पनर टालवा; त्रिविधे श्रावकनो आचार, पंचमंगिए भण्यो विचार ॥ ८६ ॥**

सच्चित्त खाय अथवा सचित्तथी मळेल पदार्थ-जेमके वृक्षने चोटेल गूंद उखाडी खाय, खारेक, रायण, बीजवाळी चीज, आ सच्चित्तनोज बीजो भेद छे. ८४.

सचित्त वस्तु पकव्या वगर खाय, कांइक पाकी, कांइक काची, ओळा, (चणाना), उंबी (घउं ने जवनी), पोंख—घउं के बाजरानो अने पापडी—वाल, चोळी विगेरेने खावाथी अतिचार लागवानुं कह्युं छे ते पण सचित्त त्यागना अंगनुं ज छे. अने तेने दुप्पोलिआ कहे छे. बीज वगरनी तुच्छ औषधि—थोडुं खवाय अने झाझुं काढी नखाय तेवुं जे खाय, तेनी मति हल्की छे. आ भोजन आश्रयी पांच अतिचारो पांचमां अंगमां कह्या छे तेने अने कर्मादानना पंदर दोष श्रावके मन, वचन, कायाथी टाळवा. ८५-८६.

**(यतः श्रीभगवतीसूत्रे अष्टमे शतके पंचमोद्देशके)**

**"जे ईमे पुणोसमणोवासगा भवन्ति तेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं सइं करेत्तए वा ॥ करवेत्तए वा, करंतं वा अन्नं समणुजाणित्तए वा ॥ तंजहा इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे; विसवाणिज्जे, जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछण कम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असइजणपोसणया." (इतिवचनात्)**

( भगवतीसूत्रना आठमा शतकमां पांचमा उद्देशमां कह्युं छे)—

जे आवी रीते श्रावक होय तेओने आ जातना पंदर कर्मादान न कल्पे. पोते करे नहीं, बीजा पासे करावे नहीं अने करता एवा बीजाने अनुमोदन—योग्य न जाणे ते आवी रीते छे—इंगाल—कर्म, वनकर्म, साडीकर्म, भाटककर्म, फोडीकर्म, दंतवाणिज्य, लख्खवाणिज्य, रसवाणिज्य, केशवाणिज्य, विषवाणिज्य, यंत्रपीलण कर्म, निर्लांछन कर्म, दवाग्निदापणय, सरदहतलावसोषण कर्म अने असती पोषण कर्म. ( आ प्रमाणे पाठ छे )

भाडभुंज सोनार ठंठार, इंटवाह नीवाह लोहार; धातुधमण इत्यादि अधर्म, ए पहेलो इंगाली कर्म ॥ ८७ ॥ कण भरडावे आटा दाल, पान फूल फल विक्रय टाल; मुंढ लोढावे जे कपास, वणकर्म ते भणि पाप निवास ॥ ८८ ॥ वेचे सगड अने सगडंग, साडिकर्म करे व्रतभंग, सकट पमुह जसु भाडे वहे, भाडीकर्म ते गिरुआ कहे ॥ ८९ ॥ जे भुंइ फोडे हल कुद्दाल, खणिवो कूप सरोवर पाल; काढे लूण माटि पाषाण, फोडी

भाडभुंजा, सोनी, कंसारा, इंटोना निभाडा करनार कुंभार, लुहार, धमणीओ अने अग्निनुं काम इंगालकर्म छे. ने ते अधर्म छे. ८७.

धान्य भरडावे, आटा—डाळ पीसावे, पान, फळ, फूलनो वेपार करे, कपास, कपासीया विगेरे पीलावे, लाकडा कपाववा, कोलसा पडाववा विगेरे वनकर्म कहेवाय अने तेमां पापनो वास छे. तथा घोडागाडीओ विगेरेनो सामान वेचे तेने साडी कर्म कहे छे अने ते व्रतनो भंग करनारुं छे. घोडा, हाथी, बळदीया, उंट, खच्चर विगेरे पशुओथी भाडुं उपजावे ते सर्वने गुरुओ भाडीकर्म कहे छे. ८८—८९.

वळी जे हळथी अथवा कोदाळीथी जमीन फोडे—हळे तथा तळाव, कुवा विगेरे खोदावे, तथा खाणमांथी मीठुं, माटी, पत्थर कढावे

**कर्म कुकर्मनि हाण ॥ ९० ॥ मृगमद चामर ने गज दंत, करे प्राण जे त्रसना अंत; आगर जलपी ए ववहरे, दंतवणिज्ज पापे पिंड भरे ॥ ॥ ९१ ॥ लाख गुली मणसिल धाहुडी, तूरी दुषी सूरो फिटकडी, साजो साबु ने पडवास, इण व्यापारे दुर्गति वास ॥ ९२ ॥ मधु माखण विस मद ववहार, मीण महुडां प्रभृति असार; दुपद चउपद विक्रय करे, रस केसहवाणिज किम तरे ॥**

तथा फोडावे ते बधां कुकर्म कहेवाय छे अने ते फोडीकर्म कहेवाय छे. ९०.

कस्तूरी माटे कस्तूरीआ हरणने, चामर माटे चमरी गायने, दांत माटे हाथीने, पीछांओ माटे पक्षीने मारे. आवी रीते पोतानी आजीविका माटे जंगलमां घास खाइ अने खाणोना पाणी पी जीवतां अनेक प्राणीओनो नाश करे. आ दंतवाणिज्य कर्मथी घणुं पाप बंधाय छेछे. ९१ लाख, गळी, मणसील, धाउडी, तेजंतूरी, हडताळ, राइ, पटमां वास (पापडीओ खारो) आपवो, फटकडी, साजी, साबू, टंकणखार, बनाववा-वेचवा, आ व्यापारोथी दुर्गति मळे छे अने आ लाखवाणिज्य कहेवाय छे. ९२

मध, माखण, मदिरा, मीण, महुडां, मांस, तेल विगेरेनो व्यापार रसवाणिज्य कहेवाय छे. दास, दासी, गाय, भेंशनो वेपार केशवाणिज्य कहेवाय छे रसवाणीज्य अने केशवाणीज्य करनारा भवतरी न शके. ९३.

॥ ९३ ॥ विसहल लोह अने हरताल, वेचे बहु सावद्य हथियार; ए विष वाणिज प्रवचन जाण, नहु टाले तेहने व्रतहाण ॥ ९४ ॥ ईष तेल सरसव एरंड, पमुह पीलणे पाप प्रचंड; तिल दलेलनुं देवुं वार, यंत्रपीलण कर्म अधर्म निवार ॥ ९५ ॥ नासा वेध अंकनुं दाण, गलकंबल कापे जे अजाण; वींधी करे करणनो छेद, निर्लंछणनो करे निषेध ॥ ९६ ॥ पुण्यबुद्धि वसुने दव देइ, दवदाणे ते सुकृत खवेइ; कूवा सर नदि द्रह जल शोष,

विष, हळ दिक, शस्त्र, कोश, कोदाळो विगेरेनो वेपार बहु पापवाळो छे, तेने विषवाणिज्य कहे छे. तेने जे हठावे नहीं तेने व्रतनी हानि थाय छे. ९४. शेरडी, तल, सरसव, एरंडा प्रमुख पीलववामां घणुं पाप छे. पीलेला तल आपवानो व्यवहार बंध करवो जोइए. तथा शीला, खारणीयो, घंटी, रेंट, विगेरेनो वेपार करवो या उपयोग करवो तेमां घणुंज पाप छे अने ते यंत्रपीलन कर्मकहेवाय छे. तेथी ते अधर्म छे अने तेनुं निवारण करवुं जोइए ९५. गाय विगेरे पशुओना गळकंबल, शींगडा, पुच्छ विगेरे कपाववा, नाक वींधवा, चिह्न कराववा, कान छेदाववा आ निर्लांछन कर्म कहेवाय छे. माटे तेनो निषेध करवो जोइए ९६. पुण्यबुद्धिथी वननी झाडी बाळवी, जंगलो बाळवा, ते महापाप छे तेने दवदान

मोटुं दुषण ते सर शोष ॥ ९७ ॥ सूआ सालहि तितर मोर, कूकर कूकड हीये कठोर; दुष्ट चित्त दासी मंजार, पोषे असती पोष निवार ॥ ९८ ॥ सप्तम व्रत विसे अतिचार, टालंता श्रावक आचार; पाटा तुलावट दाण अधर्म, एम अनेरा जे खर कर्म ॥ ९९ ॥ सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ १०० ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥ १०१ ॥

कर्म कहे छे. अने तेथी पुण्यनो नाश थाय छे. कुवा, तळाव, नदी, जंगल, पाणी सूकाववा, आदि महापापो छे अने तेने शोषकर्म कहे छे. ९७. सूडा, पोपट, मेना, तेतर, मयूर, कूकडा, कूतरा, वांदरा तथा हिंसक प्राणी चित्तो बिलाडी आदिने पोषवा ते असती पोषण कहेवाय छे. ९८. सातमा व्रतना आ उपर कह्यां ते वीस अतिचारो छे तेने श्रावके टाळवा जोइए. गाडाना पैडाना पाटा (वाटो) एने तोलवापूर्वक दानमां आपी देवा अथवा दाणचोरी विगेरे अधर्म छे आवा बीजा जे दुष्ट कर्मो होय ते बधां वर्जवा जोइए. ९९ (अर्थ ५५-५६ प्रमाणे १००-१०१).

सातमुं भोगोपभोग परिमाण व्रत, तेना वीस अतिचार, पांच भोजनना ने पंदर कर्मादानना, एवं वीस अतिचार, तेने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

**अष्टम व्रत पंचय जाणवा, सकतिसीम ते पण टालवा; जेहथी दीपे कामविकार, इस्या वचन बोले अविचार ॥ १०२ ॥ भंडतणी पर चेष्टा करे, लोक हसाडी व्रत अतिचरे; मुखथी भाखे आलपंपाल, लोकमांहो भणीए वाचाल ॥१०३॥**

सातमा भोगोपभोगना वीस अतिचारो संबंधी जे कोइ दोष पाक्षिक, चउमासिक, संवत्सरिक दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार लाग्यो होय ते बधुं हुं मन, वचन, अने कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं आपु छुं.

### हवे आठमा व्रतने बतावे छे.

आठमा व्रतना पांच अतिचार छे. शक्ति अनुसारे ते टाळवा जोइए. जेनाथी कामविकारने उत्तेजन मळे एवुं विचार विनानुं वचन न बोले. १०२

भांडनी जेम चेष्टा करवी, लोकोने हसाववा व्रत भंग करे, मोढेथी जेम आवे तेम वगर विचार्युं बोले, आयाने लोकमां पण वाचाळ कहे छे. १०३

जोग करे अधिकरणह तणो, इणपरे लागे दूषण घणो; न्हाण अधिक खल जल रेडवो, अधिको भोजन आरंभवो ॥१०४॥ ए अतिचार सहु टालिये, निर्मल अष्टम व्रत पालिये; श्रावकने ए करवा नहि, एह वात जिन आगम कही॥१०५॥ सुक्ष्म बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामीये, आ भव परभव ते खामीये ॥ १०६ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥ १०७ ॥

पाप लागे तेवा साधनोनो जोग राखे खेल, नाटक, सीनेमा विगेरे जोवा, जळ क्रीडा जळाशये जवुं, खूब पाणीथी न्हावुं, जीववाळी भूमिमां पाणी नाखवुं, भोजन माटे जातजातना आरंभ करवा, आथी घणुं पाप लागे छे. आ अतिचारो टाळवा जोइए आ आठमुं व्रत निर्मळ रीते पाळवुं जोइए. श्रावके आ नहीं करवुं, ए वात जिनेश्वर भगवानना आगममां कहेलछे.१०४-१०५ (अर्थ गाथा ५५-५६ प्रमाणे १०६-१०७)

आठमुं अनर्थदंड विरमणव्रत तेना पांच अतिचार, तेने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

## सामायक लीधे दुर्ध्यान, मन आणे ते दोषनिधान, वचने भाषे जेय सपाप, कायाए करि ते प्राण संताप ॥ १०८ ॥ विस्मृति आवे

आठमे अनर्थदंड विरमणव्रत तेना पांच अतिचारो संबंधी जे कोइ दोष, पाक्षिक, चउमासिक, संवत्सरिक दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार के अनाचार लाग्यो होय ते बधुं हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं थजो.

### नवमा सामायिक व्रतने वर्णवे छे.

नवथी बार सुधीना चार व्रतो शिक्षाव्रत कहेवाय छे. जे वारंवार करवामां आवे ते शिक्षा कहेवाय छे. सामायिकादिक श्रावके दररोज करवा जोइए अने पौषध पर्व दिवसे करवो जोइए. कारणके आ व्रतोना आराधनथी समकित निर्मळ थाय छे तथा देशविरतिधर्मनुं चारित्र स्वरूपे आराधन थाय छे. तेमां प्रथम सामायिक व्रत छे तेने बतावे छे.

सामायक लइ त्रण प्रकारना दुर्ध्यान ध्यावे, मनमां घर दुकान विगेरे संबंधी सावद्य व्यापारनुं चिंतवन करे ते मनोदुष्प्रणिधान, कर्कश आदि सावद्य वचन बोले ते वाग्दुष्प्रणिधान, अने प्रमार्जन अने पडिलेहण न करेली भूमि उपर बेसे अथवा पग विगेरे अवयवो लांबा—टूंका करे ते कायदुष्प्रणिधान कहेवाय छे. आ त्रण अतिचार कहेवाय छे.१०८

वेळातणी, आदर न करे जे व्रत भणी, नवमा व्रतना ए अतिचार, जे टाळे तसु हुं बलिहार ॥१०९॥ सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ ११० ॥ अहनिसि पक्खि चउमासि फुडं, संवच्छरि मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥ १११ ॥

नवमुं सामायिक व्रत, तेना पांच अतिचार तेने विषे जे कोइ पख्खो, चउमासो, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

बे घडी समय पूरो थया पहेला अथवा सामायिक लीधानो या पारवानो समय भूली जइ सामायिक पारे अथवा जेम तेम सामायक करे अथवा अवकाश छतां सामायिक न करे अने घर--वेपारनी चिंताने लइ शून्य मन थवाथी में सामायक कर्युं, आ सामायिकनो समय छे. विगेरे स्मृतिविहिन थाय, आ नवमा व्रतना अतिचार छे, तेने जे हठावे तेनी बलिहारी छे. १०९ ( अर्थ गाथा ५५–५६ प्रमाणे गाथा ११०–१११)

दशमे व्रत दिसिनुं परिमाण, संखेपे जे श्रावक जाण; तेना जाणी पंचय दोष, टाली आणे मन संतोष ॥ ११२ ॥ बाहिरथकी मांहि आणवे, मांहिथकी बाहिर मोकले; साद करी देखाडी रूप, कांकरि नांखी कहे सरूप ॥११३॥ सूक्ष्म बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामीये ॥ ११४ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासि कुडं, संवच्छरि मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥११५॥

**दशमुं देशावगाशिक व्रत वर्णवे छे.**—आ व्रतमांजे सातमा व्रतमां आखा जीवन माटे स्वीकारेला चौद नियमने माटे करेली धारणामां एक दिवस माटे संक्षेप करवानो छे, तेमां पण दिशा—उपाश्रय के पौषधशाळाथी बहार न जवानो नियम करवानो छे (धर्मकार्य माटे जवानी छूट होय छे) तेना पांच दोष टाळी श्रावक पोताना मनमां संतोष करे छे. ११२ मुकरर करेली हदनी बहारथी कंइ वस्तु मंगाववी, तेमज अंदरथी मुकरर करेली हदनी बहार कंइ वस्तु मोकलवी, नियमित भूमिकाथी बहार रहेलाने बोलाववा माटे व्रतनुं उल्लंघन न थाय ए भयथी शब्द करी बोलावे, कंइ मुंगो शब्द करे, अथवा पोतानुं शरीर देखाडे या

दसमुं देसावगासिक व्रत, तेना पांच अतिचार, तेने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

अतिचार इग्यारमे व्रते, सकतिसिम टालसुं दिन प्रते; अप्रतिलेखी दुप्रति लेख, शय्या संथारो उवेख ॥ ११६ ॥ अपमज्जण दुपमज्जण करी, शय्या संथारो परिहरी; नीति वडी लहुडी ठंडीला, पडीलेहण पमज्जण भला ॥ ११७ ॥ सम्यक्-विधिए नहु पालिये, पोसह अतिचार टालिये; पर्वतिथे ए व्रत अधिकार, जाणे श्रावक जे सु-विचार ॥ ११८ ॥ सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; करजोडी मस्तक नामिये,

कांकरो नाखी पोतापणुं प्रगट करे. ११३. ( गा. ५५–५६ प्रमाणे गा. ११४–११५नो अर्थ. )

**अग्यारमुं पौषधोपवास व्रत बतावे छे.**—अग्यारमा पौषधो-पवास व्रतधारी श्रावके संथारो, वडीनीति—लघुनीति, संबंधी अविधि एटले ते बन्ने थाना शक्ति अनुसार दिवसे बराबर जोइ न राख्या, जेम तेम दरकार—उपयोग वगर जोयां, पडिलेह्यानहीं, वेठ—खराब रीते पडिलेह्या. ११६–११७ पौषध लइने विधि प्रमाणे करवा योग्य न कर्युं

**आ भव परभव ते खामिये ॥ ११९ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी कुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥ १२० ॥**

इग्यारमुं पोसह व्रत, तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासि, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाये करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

**पर्वदिवस पोसह पारणे, अवलोके निज घर बारणे; भोजन वेला पामी साध, मन चिंतवे भले ए लाध ॥ १२१ ॥ मूके सचित्त उपरे जेय, सचित्तशुं वलि ढांके तेय; वस्तु आपणी परनी कहे,**

अने पौषधना अतिचार टालवा जोइए ज्यारे श्रावकने पर्वतिथिए पौषध लेवानो अधिकार छे. जे विचारक श्रावक जाणे छे. ( अर्थ गाथा ११९–१२० नो गाथा ५५–५६ प्रमाणे )

**बारमा अतिथि संविभाग**–व्रतना पांच अतिचार छे. तिथि एटले पर्व जेने न होय अर्थात् बधां दिवस जेने सरखां होय ते अतिथि कहेवाय. तेमने दान आपवुं ते अतिथि संविभाग. पर्वना दिवसे, पोषहना पारणे जे पोताना घरना आंगणे जुवे छे के भोजन समय थयो छे अने साधु–मुनिराज पधार्या छे तो पोताना मनमां शुभ चिंतवन करे

भोलपणे मन मच्छर वहे ॥ १२२ ॥ गोयरवेला टाली करी, साधु निमंत्रे भोलम धरी; बारमा व्रतना ए अतिचार, टालंता श्रावक आचार ॥ १२३ ॥ सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ १२४ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाण जो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥१२५॥

बारमुं अतिथिसंविभाग व्रत, तेना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खि, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

"सारुं थयुं." १२१ पण कोइ वस्तु सचित्त उपर मूकवी अथवा सचित्त वस्तुवाळा वासणथी अचित्त वस्तुवाळा पात्रने ढांकवुं के जेथी मुनि लइ शके नहिं. अथवा पोतानी वस्तु छतां नहीं देवाना कारणे पारकी कहे अने पारकी वस्तु छतां देवानी बुद्धिथी पोतानी कहेवी तथा भोळासथी मत्सर —अभिमान करी दान दे. १२२. तथा गोचरीनो समय पूरो थइ गया पछी मुनिने तेडवा जाय अने आग्रह करी लावीने वहोरावे. आ रीते आ पांच अतिचार बारमा व्रतना छे तेने आचारवाळो श्रावक आलोवे—टाळे. १२३ (गाथा १२४-१२५ नो अर्थ गाथा ५५-५६ प्रमाणे छे.)

**राजरिद्धि वंछे इहलोक, इंद्रादिक पदवी परलोक; सुखियो वंछे बहु जीविये, दुख आवे मरवुं वंछिये ॥ १२६ ॥ कामभोगनी आशा करे, संलेहण इणिपरे अतिचरे; ए अतिचार टालि व्रत धरे, तासु प्रशंसा सुरपति करे ॥ १२७ ॥ सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ १२८ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासि फुडं, संवच्छरि मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो॥१२९॥**

आ रीते बार व्रत पूरां थयां. पण श्रावके खास याद राखवुं जोइए के–मरण क्यारे थशे ? तेनो निश्चय नथी, अचानक थशे, तेथी अंत समये करवानी संलेखनाने अंगे जे पांच अतिचार लागवा संभव छे, तेनो दर-रोज अथवा पाक्षिक प्रतिक्रमणानुसरे तो अवश्य ख्याल राखवो जोइए.

उपरना कारणथीज **संलेखणाना अतिचार** बतावे छे–

संलेखणा अंत समय नजीक जणाय त्यारे करवानी होय छे. तेमां 'आलोक संबंधी, परलोक संबंधी, जीववा संबंधी, मरवा संबंधी तथा कामभोग संबंधी इच्छा करवारूप पांच अतिचार मने मरण सुधी न थाओ

संलेखणाना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

**तपाचार बारह आचार, विपरीताचरणे अतिचार; ते प्रमाद वलि आणाभोग, ते आलोवुं गुरु संजोग ॥ १३० ॥ बाहिर अभ्यंतर छह छह भेद, ए जाणे जे होइ सभेद; देखीतो ते बाहिर**

गूजरेली जींदगीमां करेला धर्मना प्रभावथी आलोक संबंधी मनुष्यपणाने लगता राजऋद्धि, मरण पाम्या पछी परलोकमां देव-देवेन्द्र-विद्याधर-चक्रवर्त्ती, राजा-महाराजा, धनाढ्य विगेरे थवानी इच्छा, सुख आव्ये वधारे जीववानी इच्छा करवी, दुःख आव्ये तात्कालिक मरण चाहे. १२६ पांच इन्द्रियोना विषयोनी अनुकूळता इच्छवी. संलेखणाना आ पांच अतिचार टाळी व्रत धारण करे तो देवाधिदेव इंद्र महाराज पण प्रशंसा करे. १२७. ( गाथा १२८-१२९ नो अर्थ गाथा ५५-५६मां जुओ. )

तपाचारना बार आचार छे, तेने विपरीत आचरता अतिचार थाय छे. ते प्रमादथी या अजागता थयां होय तो तेने गुरु साक्षीए आलोवुं जुं. १३०. तेना छ बाह्य अने छ आभ्यंतर मळी बार भेद छे. तेना भेदो जाणवा जोइए. देखावमां आवे ते बाह्य अने अंतरमां थाय न देखाय

कह्यो, अभ्यंतर बीजो संग्रह्यो ॥ १३१ ॥ अणसण कहीए जे उपवास, एक थकी ज्यां लगी छम्मास; ऊणोदरी उणो आहार, इक बि ति–कवले करी विचार ॥ १३२ ॥ विगइ सचित्त द्रव्यादिकतणो, एहनो करिये संखेपणो; वृत्तिसंखेप ए त्रीजो भेद, आंबील नीवी रस विच्छेद ॥ १३३ ॥ सीत वात आतप जे सहे, एहने कायकिलेस जे कहे; संलीनता जे अंग उवंग, आसन करि संवरबेरंग ॥ १३४ ॥ ए छ भेद बाहिर तप जाण, छती

ते आभ्यंतर. बाह्य करतां आभ्यंतरनुं फळ वधारे होय छे अने अभ्यंतर तपज निकाचित कर्म तोडी शके छे. १३१ अणसण–एक उपवासथी छ महीनाना उपवास सुधी जाय ते, उणोदरी–पोताना आहार करता एक–बे के तेथी वधारे कोळीआ ऊणा रहेवुं–ओछुं जमवुं. १३२ वृत्तिसंक्षेप–सचित्त द्रव्यादिनो त्याग ए त्रीजो भेद तथा चौद नियममां पण जेम बने तेम घटाडो करवो. रसत्याग-तपमां एक–बे या क्रमथी एकेक विगयनो त्याग करवो अने आयंबिल, नीवी, विगेरे करवुं.१३३. कायक्लेश–शरदी–गरमी, हवा, तडको वगेरेने सहेवा अने संलीनता–तप एकलठाणुं करतां मात्र हाथ ने मुख बेज हलाववा, बीजा अंग न हलाववा, एक आसन करी बेसवुं–जूदी जूदी रीते अंगने न हलावतां संवर–अटकाव करवो, तेमज संलीनताना बीजा पण द्रव्य–भाव आदि भेदो छे. १३४

शक्ति आलस मन आण; न कर्यों जतन रतन आदरी, जाणे नाख्यो कांकर करी ॥ १३५ ॥ अभ्यंतर तपतणा प्रकार, सुगुरु साखे आलोयण सार; काढी शल्य न तप पडिवज्यो, वडातणो विनय में तज्यो ॥ १३६ ॥ बालगिलानने तप-सीतणो, वेयावच्च न कीधो घणो; वायण पुच्छण परियट्टुणा, धम्मकहा ने अणुपेहणा ॥ १३७ ॥ पंचभेद सज्झाय नहु कर्यों, ध्यानरंग हियडे नहु धर्यो; यथाशक्ति काउसग नहु कीध, मणुय जनमनुं नहु फल लीध ॥ १३८ ॥ सूक्षम बादर

आ छ भेद बाह्य तपना छे. छती शक्तिए मनमां आळस करी मन उपर न लीधुं अथवा आवा हाथमां आवेला रत्ननुं रक्षण न कर्युं पण कांकरो जाणी ज फेंकी दीधुं. १३५.

हवे अभ्यंतर तपना भेदो गुरु साक्षीए आलोवे छे. माया, निदान अने मिथ्यात्व, आ त्रण शल्य रहितपणे तप न कर्यो, मोटानो विनय छोडी दीधो. १३६ बाळक के ग्लान के तपस्वी तणो खूब वेयावच्च न कर्यो, वाचना, पृच्छना, पुनरावर्त्तन, धर्मकथा तथा अनुप्रेक्ष्या (१३७) आ पांच रीते स्वाध्याय न कीधो तथा हृदयमां ध्यान न कर्युं, छती शक्तिए काउस्सग्ग न कर्यो, आ रीते मनुष्य जन्मनुं फळ लीधुं नही. १३८.

उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार; कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ १३९ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुडं, संवच्छरि मिच्छादुक्कडं; अरिहंत सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥ १४० ॥

तपाचारना बार अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खी चउमासी संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

विरियायार त्रणे आचार, विपरीताचरणे अतिचार; ते प्रमाद वलि आणाभोग, ते आलोवुं गुरु संजोग ॥ १४१ ॥ रुडुं धर्मध्यान परिहरी,

( गाथा १३९–१४० नो अर्थ गाथा ५५–५६ प्रमाणे )

वीर्याचार ( मनोवीर्य, वचनवीर्य ने काया संबंधीवीर्य )ना आ त्रण आचार विपरीतपणे आचरता अतिचार थाय छे. ते प्रमादथी या अजाणता थयां होय तेनी गुरु साखे आलोयणा चाहुं छुं. १४१

ध्यान करवा योग्य धर्मध्यान ने शुक्लध्यान छोडी आर्त्तध्यान ने रौद्रध्यान ध्यायां तथा शक्ति छूपावी राखी, आ प्रथम अतिचार छे.

आर्त रौद्र तिहियडे धरी; मननो वीर्य एम गो-
पव्यो, अतिचार पहिलो ए ठव्यो ॥ १४२ ॥
ताति कलह निंदा चस्तरी, पाप तणे उपदेशे
करी; फोरव्यो वीरिय वचनतणो, बीजो अति-
चार ए भण्यो ॥ १४३ ॥ कायाए कीधो आरंभ
घणो, न कर्यो आवश्यक वंदणो, छती शक्ति
आलस व्यापार, कायवीर्य त्रीजो अतिचार ॥१४४॥
सूक्षम बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या
अतिचार; कर जोडी मस्तक नामीये, आ भव
परभव ते खामिये ॥ १४५ ॥ अहनिसि पक्खि
चउमासी फुडं, संवच्छरी मिच्छादुक्कडं; अरिहंत
सिद्ध सवे जाणजो, गुरुसाखे ते मुजने हजो ॥१४६॥

१४२, घणी कजीओ कर्यो, चोतरफ निंदा फेलावी तथा पापनो उपदेश दीधो, ए प्रमाणे वचननो वीर्य फेलाव्यो ते वचनवीर्यनामनो बीजो अतिचार छे. १४३, शरीरथी घणां आरंभ कर्या, खमासमणा बराबर न दीधां, आवश्यक साचवीने वांदणा न दीधां, कायाथी करातां अनेक प्रकारना धर्मकार्य छती शक्तिए कर्यां नहीं, आ कायवीर्य नामनो त्रीजो अतिचार छे. १४४ (गाथा १४५–१४६ नो अर्थ गाथा ५५–५६ मां जुवो. )

विर्याचारना त्रण अतिचार तेहने विषे, जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

**इम आलोवे सवि व्रत धार, एकसो चउवीसे अतिचार; पर्व दिवस गुरु साखे करी, जिनवर वचन ते हियडे धरी ॥ १४७ ॥ जासु नही व्रतनो उच्चार, ते आलोवे पाप अढार; दाडातणो वरतारो करे, गुणतो सूत्र सवे ऊचरे ॥ १४८ ॥ जिनवर प्रतिषेध्युं ते कर्युं, करवा कह्युं ते नहु कर्युं; जिनभाषित जे नहु सद्दह्युं, आगमथी विपरीत जे कह्युं ॥ १४९ ॥ व्रतधारकने जे**

जिनेश्वर भगवाननी आ प्रमाणे आज्ञा छे एम हृदयमां धारी आ रीते बधां मळीने १२४ अतिचार जे बार व्रतधारी श्रावक पर्व दिवसे गुरुनी साक्षीए आलोवे. १४७. अने जे बार व्रतधारी न होय तेणे पण अढार पापस्थानक आलोववा. आखा दिवसनी वर्त्तणुक केवी रीते करी छे तेनो हिसाब गणी बधां सूत्र उच्चारी जाय. १४८. जिनेश्वर भगवाने जे कार्य करवानो निषेध कर्यो होय ते कर्युं १, जे कार्य करवा कहेल होय ते न कर्युं, २, परमात्माना वचनोनी अश्रद्धा करी ३, अने परमात्माना शास्त्रोक्त कथनथ विपरीत प्ररूपणा करी ४, १४९–आ चार प्रकारमां तमाम

अतिचार, अविरतने ते पाप व्यापार; आलोवंता हलुवा करे, अल्प अल्प भारे उतरे ॥ १५० ॥ निंदण गरहण टाले दोष, थाये धर्मतणो इम पोष; सहुए श्रावक इणपरे करे, हेले जेम भव-सायर तरे ॥ १५१ ॥ धन धन दश श्रावक निर्मला, आणंदादिक मन निश्चला; करे सलाघा श्री मुख वीर, जे प्रभु सागर जिम गंभीर ॥ ॥ १५२ ॥ तेणिपरे हुं व्रत न शकुं पाल, पण तेहना गुण मन संभाल; शक्तिसीम अविरती परिहरुं, वार वार अनुमोदन करुं ॥ १५३ ॥ एवं

अतिचारनो समावेश थाय छे. व्रतधारीने जे अतिचार छे तेज अविरति श्रावकने पापनो व्यापार छे, तेने आलोवी हळवो थाय अने एम करी हळवो थतो थतो पापनो बोजो–भार उतारे. १५० थयेलां पापनी निंदा, गर्हा, करतो बधां दोषो टाळे अने एम करी धर्मनी पुष्टि करे. आवी रीते बधां श्रावको करे तो जल्दी भवसागरने तरी जाय. १५१ आनंद आदि मनथी पण चलायमान न थाय तेवां दस श्रावकोने धन्य छे के जेओनी समुद्रनी जेवा गंभीर परमात्माश्री वीर भगवाने पोताना मुखे प्रशंसा करी. १५२. आवी रीते जो के हुं व्रत पाळी न शकुं पण तेओमां रहेला गुणनी प्रशंसा जरुर करुं अने पोतानी शक्ति प्रमाणे अविरतिने दूर करुं, अने

श्रावकना अतिचार, एकसो चउवीसे सुविचार; एकठ छंद करी चउपई, पार्श्वचंद्र सूरि हरखे कही ॥ १५४॥ पक्खि चउमासो संवच्छरी, सहुए श्रावक आदर करो; श्राविका भणजो गुणजो सदा, लहिजो शिवसुखनी संपदा ॥१५५॥

एवंकारे समकितमूल बारे व्रततणा एकसोचोवीस अतिचार तेहने विषे जे कोइ पक्खि, चउमासी, संवच्छरी, दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

## ॥ इति श्रावक पाक्षिकादि अतिचार ॥

बारंवार अनुमोदना करुं. १५३ आवी रीते श्रावकना १२४ अतिचारोने बहु विचार पूर्वक छंदोने एकठा करी चोपाइमां गोठवी श्रीपार्श्वचंद्रसूरिजीए हरखथी बनाव्या छे. १५४. पाखी, चोमासी, संवच्छरी आ दिवसोमां बहु आदर साथे बधां श्रावक तेमज श्राविकाए तेने बोली जवां, विचारी जवा. जो आ प्रमाणे करशो तो पापनी परंपराथी हळवा थइने मोक्षरूपी लक्ष्मीने मेळवशो. १५५.

पछी सव्वस्सवि० पक्खिय. दुच्चिंतिय, दुब्भासिय, दुच्चिट्ठिय, इच्छाकारेण संदिसह भगवान् इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं, इच्छाकारेण० पक्खितप प्रसाय करोजी. पछी पक्खितप चउत्थ भत्तेणं, एक उपवास, बे आयंबिल, त्रण निवि, चार एकासणा, बे हजार सज्झाय. ( तप कर्यो होय तो पइट्ठिओ कहिये अने करवो होय तो तहत्ति कहिये, न करवो होय तो मौन रहिये ) पछी नीचा बेसी नवकार० करेमिभंते० चत्तारि-मंगलं० इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ० इरियावहि कही अढारलाख चोवीस हजार एकसोवीस भेदे इरियावहिनी क्रियाने विषे दूषण लाग्या होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं, पछी वंदित्तु कहेवुं, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए पद बोलतां उभा थवुं. पछी वांदणां +बे देवां. तेमां पक्खिओ वइक्कंतो भणवो, पछी इच्छाकारेण संदिस्सह भगवान् अब्भुट्ठिओमि अब्भितर पक्खियं खामेउ? इच्छं खामेमि पक्खियं, एगपक्खाणं पन्नरसह दिवसाणं, पन्नरसराइयाणं जंकिंचि अपत्तियं, मिच्छामि दुक्कडं दइ उभा थइ नीचेनुं सूत्र बोलवुं.

## ४५ पुढवाइसु पत्तेयं

**पुढवाइसु पत्तेयं, सगवण पत्तेयणंत दस चऊदस।**
**विगले दुदु सुरनारय, तिरियचऊ चउदसनरेसु ॥ १ ॥**

शब्दार्थः—

**पुढवाइसु**—पृथ्वीकाय आदि. **पत्तेयं**—दरेक **सग**—सातलाख **वणपत्तेयणंत**—प्रत्येक वनस्पतिकाय अने अनन्तकाय **दस**—दस **चऊदस**—चौद **विगले**—विकलेन्द्रियमां **दुदु**—बब्बे

---

+ बीजी वखतना वांदणा बेठा बेठा देवा ने आवस्सइ न बोलवुं.

| | | |
|---|---|---|
| **सुर**–देव | **नारय**–नारकी | **तिरिय**–तिर्यंच |
| **चऊ**–चार | **नरेसु**–मनुष्योमां | |

**भावार्थः**–पृथ्वीकाय ( पृथ्वी–अप्–तेउ–वाउ ) विगेरे दरेकमां सात लाख, प्रत्येक वनस्पतिकायमां दस लाख, अनन्तकायमां चौद लाख, विकलेन्द्रियमां बब्बे लाख, देव–नारकी अने तिर्यंचमां चार चार लाख अने मनुष्यमां चौद लाख जीवायोनि छे. १

**छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संवरइ जीवो।**
**जं च न संभरामि, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ २ ॥**

**शब्दार्थः**—

| | | |
|---|---|---|
| **छउमत्थो**–छद्मस्थ | **मूढमणो**–मूढ मनवाळो | **कित्तिय**–कहेला |
| **मित्तंपि**–मात्रथीज | **संवरइ**–संवरे छे | **जीवो**–जीव |
| **जं**–जे **च**–अने | **न संभरामि**-सांभरे नहीं | **मिच्छा**–मिथ्या थाओ |
| **मि**–मारुं | **दुक्कडं**–पाप | **तस्स**–तेनुं |

**भावार्थः**—छद्मस्थ मूढ मनवाळो जीव कहेला मात्रथी ज संवर करे छे अने जे नथी सांभरतुं तेनुं पाप मारे मिथ्या–फोगट थाओ.

**मू०—जं जं मणेण बद्धं, जं जं वायायभासियं पावं।**
**असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥**

**शब्दार्थः**—

| | | |
|---|---|---|
| **जं जं**–जे जे | **मणेण**–मनवडे | **बद्धं**–बांध्युं होय |
| **वायाय**–वाणी वडे | **भासियं**–कह्युं होय | **पावं**–पाप |
| **असुहं**–अशुभ | **कायाए**–कायाथी | **कयं**–कर्युं होय |

**भावार्थ**—मनद्वारा जे जे पाप बांध्युं होय, वचन वडे जे जे पाप कर्युं होय अने कायाए जे जे अशुभ कर्युं होय, ते बधुं पाप मारे फोगट थाओ. ३

**सव्वे जीवा कम्मवस, चऊदहरज्जभमंत ।**
**ते में सव्वखमाविया, मुज्झ वि तेह खमंत ॥ ४ ॥**

**शब्दार्थ—**

**सव्वे**—बधां **जीवा**—जीवो **कम्मवस**—कर्म आधीन
**रज्ज**—राजलोकमां **भमंत**—भमे छे **ते**—तेओने
**में**—में **खमाविया**—खमाव्या छे **मुज्झ**—मने
**वि**—पण **तेह**—ते बधां **खमंत**—क्षमा करो

**भावार्थ**—पोतपोताना शुभाशुभ कर्मने आधीन थयेला बधां जीवो चौद राजलोकमां फरे छे, ते तमाम जीवोने में त्रिकरणयोगे खमाव्या छे अने तेज प्रमाणे तेओ पण मने क्षमा करे. ४.

**खम्यो खमाव्यो में खम्यो, छव्विहजीवनिकाय ।**
**सिद्ध साख आलोयणा, ते मुज वैर न भाव ॥ ५ ॥**

**शब्दार्थ—**

**छव्विह**—छ प्रकारना **निकाय**—समूहने **साख**—साक्षीए
**आलोयणा**—आलोचना करी

**भावार्थ**—छ प्रकारना जीव समुदायने में क्षमा करी छे अने करावी छे. तेओ पण मने क्षमा करो, हुं सिद्ध भगवाननी साक्षीए आ-लोचना करुं छुं के मारे तेओ पर द्वेषभाव नथी. ५

जे मे जाणंति जिणा, अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु ।
तं तहा आलोएमि, मायामोसं पमुत्तूणं ॥ ६ ॥

शब्दार्थ:—

जे—जेओ मे—मारा जाणंति—जाणे छे
जिणा—जिनेश्वरो अवराहा—अपराधो जेसु—जे
ठाणेसु—स्थानोमां तं—ते तहा—ते रीते
आलोएमि—प्रगट-करुं छुं मायामोसं—कपट-जूठुं पमुत्तूणं—छोडी दइने

**भावार्थ**—जे जे स्थानमां मारा जे जे अपराध थया होय, ते बधांने जिनेश्वर भगवंतो जाणे छे, ते अपराधो—गुन्हाओ तेवी ज रीते कपट अने असत्य—जूठने छोडीने प्रगट—खुल्ला करुं छुं. ३

पछी नवकार० करेमिभंते० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं० तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कही बार लोगस्स ( अथवा ४८ नवकार )नो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, मुहपत्तिनी दृष्टि पडिलेहण करी, वांदणां दइ, इच्छामो अणुसट्ठि नमो खमासमणाणं, नित्थारपारगाहोह, पक्खियं पडिक्कमणं सम्मत्तं, अवसेसं देवसियं भणेमि० पछी वांदणां देवसिना देवा, अब्भुट्ठिओ खमाववो, पछी आयरिय उवज्झाए कही, नवकार, करेमिभंते० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कही बे लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही, सव्वलोए अरिहंत चेइआणं० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी, पुक्खरवरदीवड्ढे० कही, एक लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी,

सिद्धाणं बुद्धाणं कही मुहपत्ति दृष्टिए जोइ वांदणां देवां, पछी सामायिक, चउविसत्थो, वांदणां, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण कर्युं छे जी. पछी इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, नमो दुर्वाररागादि० कही, नमुत्थुणं कही, खमासमण दइ स्तवनं संदिसावेमि, बीजे खमासमणे स्तवनं भणेमि, एम कही नवकार गणी, अजितशांति स्तवन बोलवुं. (कहेवुं)

## ४६ अथ अजितशांतिस्तवनम्. ×

अजिअं जिअसव्वभयं*, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ।
जयगुरु संतिगुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥१॥ (गाहा)

---

× पूर्वे श्रीवर्धमानजिन शिष्य श्रीनंदिषेणजी श्रीशत्रुंजय तीर्थे यात्रामाटे गयेला. त्यां मूळ प्रासादमां प्रथम तीर्थंकर श्रीआदिनाथने नमस्कार करीने पछी बे प्रासादमां रहेला अजितनाथ अने शांतिनाथने नमस्कार करी ते बन्ने प्रासादनी वच्चे कायोत्सर्गे रह्या. यथाशक्ति कायोत्सर्ग पूर्ण करीने श्रीअजितनाथ अने शांतिनाथ जिननी एक साथे स्तुति करी. आ विषे कोइ आचार्य एम कहे छे के—आ श्रीनंदिषेणजी मुनि श्रीनेमिनाथना शिष्य हता, अने तेमणे उपर प्रमाणे बे प्रासादनी वच्चे रहीने आ स्तवन कर्युं छे. ते बाबत श्रीशत्रुंजय महाकल्पनेविषे कह्युं छे के–"नेमिवयणेण जत्तागएण जहिं नंदिसेणगणिवइणा। विहिओ अजिअसंतिथओ, जयउ तयं पुंडरिअं तित्थं ॥१॥"—श्रीनेमिनाथना वचनवडे यात्राने माटे गयेला नंदिषेण नामना गणिपतिए एटले गणधरे ज्यां रहीने अजितनाथ अने शांतिनाथनुं स्तवन कर्युं छे, ते श्रीपुंडरीक तीर्थ जय पामो." आ प्रमाणे आ स्तवनना कर्ता श्रीनंदिषेणने श्रीनेमिनाथना शिष्य पण कहे छे. सत्य वात तो ज्ञानीगम्य छे.

*१ भय सात प्रकारे छे ते आ प्रमाणे—इहलोक भय, २ परलोक भय, ३ आदान भय, ४ अकस्मात् भय, ५ आजीविका भय, ६ मरण भय अने ७ अपकीर्ति.

**शब्दार्थः—**

| | | |
|---|---|---|
| **अजिअं**—अजितनाथ | **गय**—रोग | **गुणकरे**—गुणना करनारा |
| **जिअ**—जीत्या छे | **पावं**—पाप | **जिणवरे**—जिनेश्वरोने |
| **भयं**—भयने | **जय**—जयपामो | **पणिवयामि**—नमस्कार—करुं छुं |
| **पसंत**—शांत थया छे | **संति**—शांतिना | |

**भावार्थ—**इहलोक भय १, परलोक भय २, आदान भय ३, अकस्मात् भय ४, आजीविका भय ५, मरण भय ६, अने अपकीर्ति भय ७, ए साते भयने जितवावाळा श्रीअजितनाथ तथा सर्व रोग अने पापनो नाश करनार श्रीशांतिनाथ ए बन्ने जिनेश्वरो जगतना गुरु एटले धर्मतत्त्वना उपदेशक अने शांतिने करनारा छे, तेमने हुं नमस्कार करुं छुं. १.

**ववगयमंगुलभावे, तेहं विउलतवनिम्मलसहावे ।**
**निरुवममहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा)**

**शब्दार्थः—**

| | | |
|---|---|---|
| **ववगय**—नाश थयो छे | **तव**—तपवडे | **सु**—रुडी रीते |
| **मंगुल**—मोहभाव जेमनो | **निम्मल**—निर्मळ छे | **दिट्ठ**—दीठां छे |
| **ते**—ते बन्ने प्रभुओनी | **सहावे**—स्वभाव जेमनो | **सब्भावे**—छता-भावो |
| **हं**—हुं | **निरुवम**—निरूपम | |
| **विउल**—विस्तीर्ण | **महप्पभावे**—मोटो प्रभाव | **थोसामि**—स्तुति-करीश |

**भावार्थ**—जेमनो अशुभ परिणाम नाश पाम्यो छे, उग्र तपवडे जेमनो स्वभाव निर्मळ थयेलो छे, जेमनो प्रभाव उपमा रहित अने मोटो छे तथा जेमणे यथार्थ तत्त्वोने संपूर्ण रीते जाण्या छे, ते श्रीअजितनाथ अने शांतिनाथनी हुं स्तुति करीश. २.

**सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं।**
**सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो)**

**शब्दार्थः—**

| | | |
|---|---|---|
| **सव्व**–बधां | **दुक्ख**–दुःखनी | **प्पसंतिणं**–शांति छे जेमने |
| **सया**–हंमेशां | **अजिअ**–नहीं जिताय एवा | **संतिणं**–शांतिने धारण-करनारा |

**भावार्थ**—सर्व दुःखथी रहित, सर्व पापथी रहित, कोइथी जीताय नहीं तेवा अने शांतिने धारण करनार एवा श्रीअजितनाथ अने शांतिनाथने नमस्कार थाओ. ३

**अजिअजिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नामकित्तणं।**
**तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥४॥**
**(मागहिआ)**

**शब्दार्थः—**

| | | |
|---|---|---|
| **सुह**–सुख | **प्पवत्तणं**–करनारुं छे | **तव**–तमारुं |
| **पुरिसुत्तम**–पुरुषोने विषे उत्तम | **नामकित्तणं**–नामकीर्त्तन | **य**–तथा |
| | **जिणुत्तम**–हे जिनोत्तम | **संति**–शांतिनाथ |
| **तह**–तथा | **धिइ**–धीरज | **मइ**–मति |

**भावार्थ**—हे पुरुषोत्तम अजितनाथ ! तथा हे जिनोत्तम शांतिनाथ! तमारा बन्नेनुं नाममात्र कीर्तन करवाथी ज प्राणीओ सुख, धीरज अने बुद्धिने पामे छे. ४.

**किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं,**
**अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं।**
**अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं,**
**सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥**

(आलिंगणयं)

शब्दार्थः—

**किरिआविहि**—क्रियाना विधान वडे **संचिअ**—एकठा करेला **कम्म**—कर्म **किलेस**—कषायथी अथवा कर्मना क्लेशथी× **विमुक्खयरं**—विशेष करीने मूकावनार
**निचिअं**—परिपूर्ण
**गयं**—पामेला, **नमंसणयं**—नमस्कार **सययं**—हंमेशा
**मम**—मारो **निव्वुइ**—निर्वृत्तिनुं **कारणयं**—कारण थाओ

**भावार्थ**—श्री अजितनाथने तथा महामुनि श्री शांतिनाथने करेलो नमस्कार हमेशां मने मोक्षनुं कारण थाओ. ते नमस्कार *कायिकी आदिक

---

* कायिकी वगेरे पांच अथवा पच्चीश क्रिया तेनुं स्वरूप **नव तत्त्व**थी समजवुं.

× अहीं कषायनुं कर्ममांहे अंतर्गतपणुं छे तो पण संसारना कारणने विषे कषायनी मुख्यता छे, ए जणाववा माटे कषायनुं जूदुं ग्रहण कर्युं छे.

क्रियाथी करेला कर्म अने कषायथी अथवा कर्मना क्लेशथी मूकावनार छे, आ नमस्कारनो प्रभाव एटलो बधो छे (के बीजा अन्य देवोना नमस्कारथी जीताय तेवो नथी एटले के अन्य देवादिकना नमस्कारथी आ नमस्कार अधिक फळ आपनार छे;) तथा आ नमस्कार समग्र गुणोवडे युक्त छे, महा योगीओने अणिमादिक अष्ट *सिद्धिने आपनार छे, अने शांतिने आपनार छे. ५.

**पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गह सुक्खकारणं।**
**अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥६॥**

**( मागहिआ )**

---

* अणिमादिक आठ सिद्धिओ आ प्रमाणे [illegible] अणिमा—झीणा छिद्रमां प्रवेश करवानी शक्ति १, महिमा—मे[illegible] मोटुं शरीर करवानी शक्ति २, गरिमा—तोलमां अत्यंत भारे [illegible]नी शक्ति ३, लघिमा—वायुथी पण हलका थवानी शक्ति ४, प्राप्ति—पृथ्वीपर उभा रहीने आंगळीवडे मेरुना शिखरने तथा सूर्यादिकने स्पर्श करवानी शक्ति ५, प्राकाम्य—जळमां स्थळनी जेम चाले अने स्थळमां जळनी जेम डूबकी मारीने नीकळे तेवी शक्ति ६, ईशित्व—स्थावर पण आज्ञा माने तेवी शक्ति अथवा तीर्थंकर, चक्रवर्तीनी जेवी ऋद्धि विस्तारी शके ७, अने वशित्व—जीव अजीव सर्व पदार्थ वशमां रहे तेवी शक्ति, ८.

**शब्दार्थः—**

**पुरिसा**–हे पुरुषो **जइ**–जो **दुक्खवारणं**–दुःखना निवारणने
**विमग्गह**–शोधता हो **अभय**–निर्भय
**करे**–करनारा **भावओ**–भावथी **शरणं**–शरण रूप
**पवज्जहा**–अंगीकार करो

**भावार्थः**—हे प्राणीओ ! जो तमे दुःखना निवारणने एटले विनाशने तथा सुखना कारणने शोधता हो तो अभयने करनारा श्रीअजितनाथ तथा शांतिनाथने भावथी तेमना शरणने प्राप्त करो. ६.

## श्री अजितनाथनी स्तुति.

**अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं,**
**सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवइयं ।**
**अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं,**
**सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहियं सययमुवणमे ॥७॥**
**(संगययं)**

**शब्दार्थः—**

**अरइ**–दुःख **रइ**–समाधि **तिमिर**–अज्ञान
**विरहिअ**–रहित **उवरय**–विनाश पाम्या छे **जर**–घडपण
**मरणं**–मरण **गरुल**–सुवर्ण कुमार **भुयग**–नागकुमार
**वइ**–पतिओए **पयय**–प्रयत्नथी **पणिवइयं**–नमस्कार-करेला

**अहमवि** अ–हुं पण **सुनय**–सुंदर नैगम-
**नय**–न्याय आदि नय **निउण**–डाह्यो
**उवसरिअ**–पामीने **भुवि**–पृथ्वी पर **दिवि**–देवलोकमां
**ज**–उपजेला **महियं**–पूजेला **उवणमे**–नमस्कार करुं छुं

**भावार्थः**—जे भगवान संयमने विषे अरति, असंयमने विषे रति अने अज्ञानवडे रहित छे, अथवा अरतिमोहनीयना उदयथी थयेलो चित्तनो उद्वेग अने रतिमोहनीयना उदयथी थयेलो चित्तनो आनंद ए बन्ने सम्यक् ज्ञानने आच्छादन करनार होवाथी तेरूप अज्ञानवडे रहित छे. जे जरावस्था अने मरणथी मुक्त थया छे, अथवा '**उपरतजरम्**' अने '**अरणं**' एवो पदच्छेद करी जरा रहित तथा रणसंग्राम रहित एवो अर्थ करवो. तथा सुर एटले वैमानिक देव, असुर एटले भवनपति देव, गरुड एटले ज्योतिष्क देव अने भुजग एटले व्यंतर देवना अथवा सुर, असुर, सुवर्ण कुमार अने नागकुमारना इंद्रोए जेमने आदरथी नमस्कार कर्या छे, तथा जे सारी नीति अने न्यायने विषे निपुण छे, तथा जे अभयने करनारा छे, तथा जे मनुष्य अने देवोथी पूजित छे, ते अजितनाथनुं शरण लइने हुं पण तेमने सदा नमस्कार करुं छुं.

## श्री शांतिजिननी स्तुति.

**तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं,**
**अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं ।**

**संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं,**
**संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ (ऊ) ॥ ८ ॥**
**(सोवाणयं)**

**शब्दार्थः—**

**जिणुत्तमं**—सामान्य-केवळीमां उत्तम
**उत्तम**—उत्तम
**नित्तम**—अज्ञान रहित
**सत्तधरं**—भाव यज्ञने-धारण करनार
**अज्जव**—सरळता
**मद्दव**—नम्रता
**विमुत्ति**—निर्लोभता
**खंति**—क्षमा
**समाहिनिहिं**—समाधिना भंडार
**संतिकरं**—शांतिना करनारा
**पणमामि**—नमस्कार-करुं छुं
**दमुत्तम**—इन्द्रिय दमन करवामां श्रेष्ठ
**तित्थयर**—तीर्थंकर
**संतिमुणी**—शांतिनाथ मुनि
**मम**—मने
**संति**—शांतिवडे
**समाहिवरं**—समाधि रूपी वरदान
**दिसउ**—आपो

**भावार्थ**—जे शांतिनाथ सामान्य केवळीने विषे उत्तम छे, जे [illegible] हत एवा भावयज्ञने अथवा पराक्रमने धारण करनारा छे. जे आर्जव, मार्दव, क्षांति, निर्लोभता अने समाधिना निधान छे, जे शांतिने करनारा छे तथा जे इंद्रियोनुं दमन करवामां श्रेष्ठ अने तीर्थने करनारा छे, ते श्रीशांतिमुनिने हुं प्रणाम करुं छुं, वळी ते शांतिमुनि मने शांति अने समाधिरूप वरदान आपो. ८.

## श्रीअजितनाथनी स्तुति.

**सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थविच्छिथसंथियं,**
**थिरसिरिच्छवच्छं मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थियं**

संथवारिहं । हत्थिहत्थबाहु धंतकणगरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवं, सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ ९ ॥

(वेड्ढओ)

## शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| **सावत्थि**–श्रावस्ति | **पुव्वपत्थिवं**–प्रथमराजा | **वरहत्थि**–श्रेष्ठहाथीना |
| **भत्थय**–भरतकनी समान | **पसत्थ**–प्रशस्त | **विच्छिन्न**–विस्तीर्ण |
| | **संथियं**–संस्थान | **थिर**–स्थिर |
| **सिरिच्छ**–श्रीवत्सवाळुं | **वच्छं**–हृदय | **मयगल**–मदोन्मत्त |
| **लीलायमाण**–लीलायुक्त | **वरगंधहत्थि**–श्रेष्ठगंध-हस्तीनी | **पत्थाण**–गति जेवी छे |
| **पत्थिअं**–गति जेनी एवा, | **हत्थि**–हाथीनी | **संथवारिहं**–स्तुति करवाने योग्य |
| **हत्थ**–सूंढ | **बाहु**–हाथ | **धंत**–धमेला |
| **कणग**–सोनाना | **रुअग**–घरेणा | **निरुवहय**–स्वच्छ |
| **पिंजरं**–देहवाळा | **पवर**–श्रेष्ठ | **लक्खण**–लक्षणोवडे |
| **उवचिअ**–व्याप्त | **सोम**–सौम्य | **चारु**–सुंदर |
| **रूवं**–रूप | **सुइसुह**–कानने सुख करनार | **मणाभिराम**–मनने आनंदकारी |
| **परमरमणिज्ज**-अतिरमणीय | **देवदुंदुहि**–देवदुंदुभिना | **निनाय**–नाद करतां पण |
| **महुरयर**–अत्यंत मधुर | **सुह**–सुखकारक | |
| **गिरं**–वाणी जेनी एवी | | |

**भावार्थ**—जे प्रभु(दीक्षा लीधा पहेलां)श्रावस्ती—अयोध्या नगरीना राजा हता, हाथीना मस्तकनी जेवुं सुंदर अने विशाळ जेमनुं संस्थान हतुं, जेमना हृदयमां निश्चळ श्रीवत्स हतुं, जेमनी चाल उत्तम हाथीनी चाल जेवी हती, जे प्रशंसाने लायक छे, जेमनी भुजाओ हाथीनी सूंढ जेवी लांबी हती, जेमना शरीरनो वर्ण तपावेला सुवर्णना अलंकार जेवो पीळो हतो, जेओ उत्तम लक्षणोवडे सहित हता, जेमनुं रूप कांतिवाळुं अने मनोहर हतुं, जेमनी गंभीर वाणी कानने सुख कारक, मनने आनंद दायक अने अत्यंत रमणीय एवा उत्तम देवदुंदुभिना नादथी पण अतिमधुर हती. ९

**अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं ।**
**पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ! ॥१०॥**

**(रासालुद्धओ)**

**शब्दार्थः—**

**जिआरिगणं**–जीत्या छे शत्रुना समूह जेमणे **जिअसव्वभयं**–जीत्या छे सर्वभय जेमणे एवा **भवोहरिउं**–संसारनी परंपराना शत्रुरूप
**पणमामि**–प्रणाम करुं छुं **पयओ**–आदरथी
**पावं**–पापने **पसमेउ**–शांत करो **मे**–मारा
**भयवं**–हे भगवान !

**भावार्थ**—जेमणे मोहादिक शत्रुना समूहने जीत्या छे, जेमणे सर्व प्रकारना भयने जीत्या छे, तथा जे संसारनी परंपराना शत्रु छे–नाश करनार छे, ते श्रीअजितनाथने हुं आदर पूर्वक प्रणाम करुं छुं, तो हे श्रीअजितनाथ भगवान ! मारा पापने दूर करो. १०.

## श्रीशांतिनाथनी स्तुति.

कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टि-भोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणव-यवई बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो। चउदसवररयणनव-महानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई, चुलसीहयगयर-हसयसहस्ससामी छन्नवइगामकोडिसामी आसी जो भारहम्मि भयवं ॥ ११ ॥ (वेड्ढओ)

### शब्दार्थ—

कुरुजणवय—कुरुदेशना हत्थिणाउर—हस्तिनापुर नरीसरो—नगरनाराजा
पढमं—प्रथम तओ—पछी
महाचक्कवट्टि—म्होटा चक्रवर्तिना भोए—भोगवता महप्पभावो-म्होटा प्रभाववाळा
जो—जे
बावत्तरि—व्होंतेर पुरवर—घरवडे श्रेष्ठ सहस्स—हजार
नगर—नगरो १ निगम-निगम २ जणवय—देशना
वई—पति—स्वामी बत्तीस—बत्रीश रायवर—राजाओमां श्रेष्ठ
अणुयाय—अनुयायी मग्गो—मार्ग चउदस—चौद
वर—श्रेष्ठ रयण—रत्नो३ नव—नव४
महानिहि—महानिधान चउसट्ठि—चोसठ पवर—श्रेष्ठ

---

१ जेमां कर न होय ते.

२ महोटा व्यापारीओनी दुकानवाळा स्थाने—व्यापारना स्थानो.

| | | |
|---|---|---|
| **जुवईण**--स्त्रीओनां | **सुंदर**--सुंदर | **चुलसी**--चोराशी |
| **हय**--घोडा | **गय**- हाथी | **रह**--रथ |

---

२ चौद रत्नो दरेक चक्रवर्तिने होय ते आ प्रकारे जाणवा--१ **चक्ररत्न** ते धनुष्य प्रमाण होय, वैरिनुं मस्तक छेदे. २. **छत्ररत्न** ते धनुष्य प्रमाण होय, चक्रवर्तिना हस्त स्पर्शे बार योजन विस्तारवाळुं थाय, जे उत्तरना म्लेच्छराजानां देवताए वरसावेला वर्षादने रोकवा समर्थ थाय, ३ **दंडरत्न** ते धनुष्य प्रमाण होय, वांकी भूमिने सरखी करे, जरुर पडचे हजार योजन जमीन खोदे. ४ **चर्मरत्न** बे हाथनुं होय, जरुर पडचे चक्रवर्तिना स्पर्शे बार योजन लांबुं थाय, तेमां सवारे शालि प्रमुख धान्य वाव्यां होय ते सांजे उपभोग योग्य तैयार थाय. ५. **खड्गरत्न** बत्रीश आंगळनुं होय ते संग्राममां अत्यंत शक्तिवंत होय. ६ **कांगिणीरत्न** चार अंगुल प्रमाण होय तेना वडे वैताढ्य पर्वतनी गुफामां बंने बाजु ओगणपचास प्रकाश आपनारा मंडळ करे. ७ **मणिरत्न** चार अंगुल लांबु बे आंगळ पहोळुं होय, ते छत्र रत्नना तुंबा उपर बांध्युं छतुं बार योजन प्रकाश करे अने हाथे के मांथे बांध्युं छतुं समस्त रोगने हरे. ए सात रत्न एकेन्द्रिय जातिना छे अने बीजा सात पंचेद्रिय जातिना छे. ८ **पुरोहितरत्न** ते शांति कर्म करे. ९ **अश्वरत्न**, १० **गजरत्न** ए बंने महापराक्रमवाळा होय. ११ **सेनापतिरत्न** ते चक्रवर्तिनी सहाय विना गंगां सिंधुनी बाहेरनी पासेना चार खंडने जीते. १२ **गृहपतिरत्न** ते गृहनी चिंता राखे. १३ **वार्धिकरत्न** ते मकानो बांधे, लश्करना पडाव करावे, वैताढ्यनी गुफामां आवेली उन्मगा अने निम्नगा

| | | |
|---|---|---|
| सय -सो | सहस्स--हजार | सामी--स्वामी |
| छन्नवइ--छनु | गाम--गाम | कोडि--कोड |

नदीना पूल बांधे. इत्यादि बांधकाम करे. १४ स्त्रीरत्न अत्यंत अद्भूत रूपवंत चक्रवर्तिने भोग योग्य होय. ए प्रत्येक रत्न एक हजार यक्षोए अधिष्ठित होय अने बे हजार यक्ष चक्रीनी बे बाहुना अधिष्ठित होय एम १६ हजार यक्ष चक्रवर्तिना सेवक होय. चक्र, दंड, छत्र अने चर्म ए चार आयुधशाळामां उत्पन्न थाय. खड्ग, कांगिणी अने मणि ए त्रण भंडारमां उत्पन्न थाय. गज अने अश्व वैताढ्य पर्वतमां उपजे, स्त्री रत्न क्षत्रीय राजाने घेर थाय अने बाकीना चार चक्रीना नगरने विषे उत्पन्न थाय.

४ नव निधाननुं स्वरूप आ प्रमाणे जाणवुं--१ ग्राम ( फरती वाडी होय ते ) आकर ( मीठुं पाके ते ), नगर ( राजधानी थाय ते ), पाटण ( जळ अने स्थळना मार्ग होय ते ), द्रोणमुख ( ज्यां जळ-मार्गज होय ) मंडप ( अढी गाउ फरतां गाम न होय ते ), सैन्य अने गृहनी मांडणी ए सर्व **नैसर्पि** नामे निधानने विषे होय. २ गणित, गीत, चोवीश जातना धान्यना बीज तथा तेनी उत्पत्तिना प्रकार ए सर्व **पांडुक** विधानमां होय. ३ सर्व जातना आभरण, अश्व तथा हाथीना आभरण, तेना विधि **पिंगलक** निधानने विषे होय. ४ चक्रवर्तिना चौद रत्न विगेरे **सर्वरत्न** चोथा निधानना योगे थाय. केटलाएक कहे छे के--आ निधानथी ते रत्नो महा दिप्तिवंत थाय वस्त्रनी उत्पत्तिनां प्रकार रंगनी उत्पत्ति, सात धातु, वस्त्र धोवानी रीत वगेरे **महापद्म** निधानमां होय. ६. समस्त काळ ज्ञान ( ज्योतिष्क ),

**आसी**-हता **जो**-जे **भारहम्मि**-भरतमां
**भयवं**-भगवान्

**तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया ।**
**संतिं थुणामि जिणं संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ (रासानंदियं)**

**शब्दार्थ—**

**संतिं**—उपशम रूप **संतिकरं**—शांतिने करनारा **संतिण्णं**—रुडी रीने तर्या
**सव्वभया**—बधा भय **संतिं**—शांतिनाथने **थुणामि**—स्तवुं छुं
**जिणं**-जिनने **संतिं**—शांति **विहेउ**—करवाने
**ए**—संबोधन अर्थमां (हे उत्तम ! पुरुष)

---

तीर्थंकरादिना वंशादिकनुं कथन, शिल्प विद्या, कर्षण, ( खेती ), वाणिज्य ( वेपार ) वगेरे **काळ** विधानमां होय. ७ लोढुं, सोनुं, मणि, मोती, स्फटिक अने प्रवाळाना समूह **महाकाळ** निधानमां होय, ८ शूरवीर योद्धानी उत्पत्ति, हथीयार वगेरे युद्ध सामग्री, युद्धनीति, दंडनीति, ए **माणवक** निधानमां होय. ९ नाट्यविधि, गद्य पद्यनी विधि ए **महाशंख** निधानमां होय. आ नवे निधान उत्सेधांगुले आठ योजन उंचा, नव योजन पहोळा अने बार योजन लांबा पेटीना आकारे गंगानदीना मुख आगळ सदा रहे छे. चक्रवर्ति उत्पन्न थइ छ खंड साधीने ज्यारे पाछा वळे त्यारे तेनी साथे आवी चक्रवर्तिनी नगरीमां पाताळमां रहे. आ निधानो विविध रत्नमय छे अने घणा धन अने रत्नादि समृद्धिए करी सहित छे. आनुं विशेष वर्णन जोवानी इच्छावाळाए **प्रवचनसारोद्धारादि** ग्रंथ जोवा.

**भावार्थ**—श्री शांतिनाथ स्वामी प्रथम तो कुरुदेशमां हस्तिनापुर नगरना राजा हता. पछी छ खंड भरतक्षेत्रना मोटा चक्रवर्ती थया. ते वखते महाप्रभाववाळा ते स्वामी बहोतेर हजार नगरो, निगमो अने देशोना स्वामी थया, बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजाओ तेना सेवक हता. चौद महारत्नो, नव महानिधि अने चोसठ हजार श्रेष्ठ स्त्रीओना ते सुंदर स्वामी हता. चोराशी लाख अश्व, हस्ती अने रथना तथा छन्नुं करोड गामना स्वामी आ भरत क्षेत्रमां थया. ११. उपशमरूप, शांतिने करनारा अने सर्व भयथी मुक्त थयेला ते श्री शांतिनाथनी हुं स्तुति करुं छुं. ते भगवान मने शांति आपो. १२.

## श्रीअजितनाथनी स्तुति.

**इक्खाग विदेहनरेसर नरवसहा मुणिवसहा,❋**
**नवसारयससि ×सकलाणण विगयतमा विहुअरया।**
**अजि उत्तम तेअगुणेहिं ÷ महामुणि अमिअबला विउलकुला,**
**पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा• मम सरणं ॥ १३ ॥**

**(चित्तलेहा)**

---

❋ मुणिवसहानव ए प्रकारे पद लइए त्यारे "मुनिपसभानव इन्द्रोनी सभाने विषे स्तुति थाय छे जेनी एवा" आवो अर्थ थाय छे.

× सकल शब्दनो अर्थ पूर्ण लइए त्यारे चंद्रनुं विशेषण लेवुं पडे ते विशेष्यनी पहेला आववुं जोइए पण प्राकृतने लीधे पर निपात थाय छे.

÷ गुण बे प्रकारना छे—रूप वगेरे बाह्य अने ज्ञानादि ते अभ्यंतर.

• जयसरण अने अमम (निर्ममत्व) एवा बे पद पण नीकळे छे.

## शब्दार्थ:—

| | | |
|---|---|---|
| **इक्खाग**—हे इक्ष्वाकु-कुलवंश्य | **विदेह**—विदेहना | **नरवसहा**—मनुष्योमां-श्रेष्ठ |
| **नव**—नवीन | **मुणिवसहा**—मुनि-ओमां श्रेष्ठ | **सारय**—शरद्‌ऋतुना |
| **ससि**—चंद्र | **सकलाणण**—कलायुक्त मुखवाळा | **विगयतमा**—अज्ञान-रहित |
| **विहुअरया**—कर्मरूप रजरहित | **अजि**—हे अजित | **उत्तम**—उत्तम |
| **तेअ**—तेजवाळा | **गुणेहिँ**—गुणोवडे | **महा**—मोटा |
| **मुणि**—मुनिवडे | **अमिअ**—माप वगरना | **बला**—बळवाळा |
| **पणमामि**—नमस्कार करुं छुं. | **ते**—तमोने | **भव**—संसारना |
| | **भय**—भयने | **मूरण**—तोडनारा |
| **जग**—जगतना | **सरणा**—शरण | **मम**—म्हारा |
| **सरणं**—शरण | | |

**भावार्थः**—हे इक्ष्वाकु वंशमां जन्मेला ! हे विदेह देशना राजा ! हे मनुष्योमां प्रधान ! हे मुनिओमां श्रेष्ठ ! हे शरद् ऋतुना पूर्ण चंद्र जेवा मनोहर मुखवाळा ! हे तमोगुण—अज्ञान अने कर्मरज रहित ! हे तेजस्वी गुणोवडे अथवा तेज अने गुणोवडे उत्तम ! अथवा गुणोवडे हे उत्तम तेजवाळा ! हे महामुनिओथी पण जाणी न शकाय तेवा सामर्थ्यवाळा ! हे विशाळ कुळवाळा ! हे संसारना भयनो नाश करनार ! एवा हे अजितनाथ ! हुं तमने प्रणाम करुं छुं. केमके तमे जगतना

शरण छो, तेथी मारा पण शरण थाओ. अथवा 'जगसरण अमम' एवो पदच्छेद करी हे जगतना शरण अने हे ममता रहित एवो अर्थ करवो १३.

## श्रीशांतिनाथनी स्तुति.

देवदाणविंदचंदसूरवंद हट्ठतुट्ठजिट्ठपरम,
लट्ठरूव धंतरूप्पपट्टसेयसुद्धनिद्धधवल।
दंतपंति संति सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर,
दित्ततेअवंद धेअ* सव्वलोअभाविअप्पभाव
णेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ (नारायओ)

### शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| देव–देव | दाणव–असुरना | इंद–इंद्र |
| चंद–चंद्र | सूर–सूर्यने | वंद–वंदनयोग्य |
| हट्ठ–आरोग्य वाळा | तुट्ठ–प्रीतिवाळा | जिट्ठ–प्रशस्य |
| परम–अत्यंत | लट्ठ–कांतियुक्त | रूव–रूपवाळा |
| धंत–धमेल | रूप्प–रूपाना | पट्ट–पाटा |
| सेय–सपेद | सुद्ध–निर्मळ | निद्ध–कोमळ |

---

* धेयसव्वलोय पोषण करवा योग्य छे सर्व लोक जेना वडे एवा, भाविअप्पभाव ( भावित आत्मभावः ) जाण्यो छे आत्मारूप पदार्थ जेणे एवा ( आत्मगुणमां रक्त ) अने णेय (नेतः) स्वामि एम पण पदो नीकळे छे.

धवल—उज्ज्वळ दंत—दांतनी पंति—पंक्ति
सत्ति—शक्ति कित्ति—कीर्ति मुत्ति—निर्लोभता
जुत्ति—युक्ति गुत्ति—गुप्ति छे पवर—श्रेष्ठ
दित्त—देदीप्यमान तेअ—तेजना वंद—समूहवाळा
धेअ—ध्यानकरवा योग्य भाविअ—जाण्यो छे प्पभाव—प्रभाव
णेअ—जाणवा योग्य पइस—आपो मे—मने
समाहिं—समाधि

**भावार्थ**—सुर असुरना इंद्रोए अने चंद्र सूर्ये वांदवा योग्य ! हर्षित, प्रसन्न, श्रेष्ठ, उत्कृष्ट अने पुष्ट स्वरूपवाळा ! तपावेली रूपानी पाट जेवी श्वेत, निर्मळ, चकचकित अने उज्ज्वळ दंतश्रेणिवाळा ! शक्ति, कीर्ति, निर्लोभता, युक्ति अने गुप्तिवडे सर्वोत्तम ! देदीप्यमान तेजना समूहवाळा ! ध्यान करवा योग्य ! सर्व लोकमां प्रसिद्ध महिमावाळा ! तथा जाणवा योग्य ! एवा हे श्री शांतिनाथ स्वामी ! मने समाधि एटले चित्तनी शांति आपो. १४.

## श्रीअजितनाथनी स्तुति.

**विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेयं ।**
**×तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥१५॥**

**(कुसुमलया)**

× सर्व देवता मळी पोतानुं रूप एकत्र करी भगवंतनी टचली आंगळी पासे मूके तो सुवर्ण अने तांबाना रूपमां जेटलो अंतर लागे तेटलो भगवंतनी टचली आंगळी अने देवताना एकत्र करेल रूपमां लागे.

## शब्दार्थ—

| | | |
|---|---|---|
| **विमल**—निर्मळ | **ससि**—चंद्रनी | **कला**—कळाथी |
| **अइरेअ**—वधारे | **सोमं**—सौम्यता वाळा | **वि**—रहित |
| **तिमिर**—अंधकार | **सूर**—सूर्यना | **कर**—किरण |
| **तेयं**—तेजवाळा | **तिअस**—देवना | **वइ**—स्वामी (इंद्र) |
| **गण**—समुदाय | **रूवं**—रूपवाळा | **धरणि**-पृथ्वीने |
| **धरप्पवर**—धारण-करनारा (मेरु) | **असारं**—स्थिरतावाळा | |

**भावार्थ**—हुं श्री अजितनाथ जिननी स्तुति करुं छुं. ते प्रभु निर्मळ चंद्रनी कळाथी पण अधिक सौम्यतावाळा छे, वादळाना आवरण रहित सूर्यना तेजथी पण अधिक तेजस्वी छे, इन्द्रोना समूहथी पण अधिक रूपवाळा छे अने मेरुथी पण अधिक सारवाळा छे. १५.

**सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं ।**
**तवसंजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥१६॥**

(भुअगपरिरिंगिअं)

## शब्दार्थ—

| | | |
|---|---|---|
| **सत्ते**—सत्वमां | **अ**—वळी | **सया**—हंमेशां |
| **सारीरे**—शरीर संबंधी | **बले**—बळमां | **तव**—तपमां |
| **संजमे**—संयममां | **एस**—ए प्रकारे | **थुणामि**—स्तवुं छुं |
| **जिणं**—जिनने | | |

**भावार्थ**—वळी ते प्रभु सदा आत्मबळमां कोइथी जीताया नथी, शरीरना बळमां जीताया नथी, अने तप तथा *संयममां पण जीताया नथी. ए प्रकारे हुं अजितनाथ जिनने स्तवुं छुं. १६.

## श्रीशांतिनाथनी स्तुति.

×सोमगुणेहिं पावइ न ÷तं नवसरयससी,

---

* संयम सत्तर प्रकारे छे ते आ प्रमाणे—पांच इन्द्रिय अने चार कषायनो जय, पांच अव्रतनो त्याग अने त्रण योग ( मन, वचन, काया) नुं निवर्तन. संयमना १७ प्रकार बीजी रीते पण छे ते आ प्रमाणेः—१ पृथ्वीकाय संयम, २ अप्काय संयम, ३ तेउकाय संयम, ४ वाउकाय संयम, ५ वनस्पतिकाय संयम, ६ बे इंद्रिय संयम, ७ तेइंद्रिय संयम, ८ चौरिंद्रिय संयम, ९ पंचेंद्रिय संयम, १० प्रेक्ष्य ( जोवुं ) संयम, ११ उपेक्ष्य ( उपेक्षा करवी ) संयम, १२ प्रमार्जना संयम, १३ अपहृत्य ( परठववुं ) संयम, १४ मन संयम, १५ वचन संयम, १६ काय संयम अने १७ अजीव ( उपकरण ) संयम.

× चंद्र, सूर्य, इंद्र अने मेरुपर्वत पोताना सौम्यता, तेज, रूप अने स्थैर्य गुणवडे करीने भगवंतना सौम्यता आदिगुणनी समानता प्राप्त करी शकता नथी एटले के भगवंतना गुणो अधिकतर छे.

÷ अहीं तत् शब्दे पूर्वोक्त अजितनाथ लीधा छे. परंतु हवे पछी शांतिनाथ कहेवा एम वृद्धो कहे छे. केमके अजितनाथनी स्तुति आवाज गुणोवडे प्रथम कराइ गइ छे तेमज तत् शब्दनो अर्थ वक्ष्यमाण पण करी शकाय छे.

तेअगुणेहिं पावइ× न तं नवसरयरवी ।
रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई,
सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥
( खिज्जिययं )

शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| सोम—सौम्य | गुणेहिं—गुणवडे | पावइ—पामे |
| न—नहीं | नव—नवीन | सरय—शरद्ऋतुना |
| ससी—चंद्र | रवी—सूर्य | सार—स्थिरताना |

**भावार्थ**—शीतळताना गुणोवडे शरद् ऋतुनो पूर्णचंद्र पण श्री शांतिनाथनी तुलनाने पामतो नथी, तेजना गुणवडे शरद् ऋतुनो सूर्य पण तेमनी तुलनाने पामतो नथी, सुंदरताना गुणवडे इन्द्र पण तेमनी तुल्यताने पामतो नथी अने दृढताना गुणवडे सुमेरु पर्वत पण ते प्रभुनी तुल्यताने पामतो नथी अर्थात् प्रभुना ते ते शीतळतादिक गुणो चंद्रादिकथी अधिक छे. १७.

*तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं,
धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं ।

---

× पामइ एवो पाठ होय त्यां पण प्राकृत गत्यर्थक होवाथी एवोज अर्थ थाय छे.

* तित्थयर एवो पाठ पण छे त्यां तीर्थंतर एटले प्रकृष्ट तीर्थ एवो अर्थ थाय छे.

संतिसुहप्पवत्तयं× तिगरणपयओ,
संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥

( ललिअयं )

शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| तित्थवर—श्रेष्ठ तीर्थना | पवत्तयं—प्रवर्त्तक | तम—अज्ञान रूपी अंधकार |
| रय—कर्मरजथी | रहियं—रहित | धीर—धीर |
| जण—पुरुषवडे | थुअ—स्तवाया | अच्चिअं—पूजायेल |
| चुअ—गयेलां | कलि—वैर | कलुसं—मलिनता |
| संति—शांति (मोक्ष) | सुह—सुखना | तिगरण—त्रिकरण |
| पयओ—सावधान | उवणमे—लउं छुं | (मन–वचन–काया) |

**भावार्थ**—उत्तम धर्मतीर्थने स्थापन करनार, अज्ञान अने कर्मरजथी अथवा तमोगुण अने रजोगुणथी रहित, विद्वान जनोए स्तवेला अने पूजेला, क्लेश अने मलिनताथी रहित एवा तथा शांति अने सुखने आपनारा महामुनि श्री शांतिनाथ भगवाननुं मन, वचन अने कायाथी हुं शरण लउं छुं. १८.

---

× शांतिसुखप्रवृत्तदं शांति सुखने माटे प्रवर्तनार ( संयमी ) ने पालन करनारा एवो पण अर्थ थाय छे.

## श्री अजितनाथनी स्तुति.

विणओणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं,×
+विबुहाहिवधणवइनरवइथुअसहिअच्चिअं बहुसो ।
अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा,
गयणंगणवियरणसमुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥

( किसलयमाला )

### शब्दार्थः—

| | | |
|---|---|---|
| **विण**–नियम | **ओणय**–नमेला | **सिर**–मस्तकने विषे |
| **रइ**–रचेली | **अंजलि**–हाथजोडी | **रिसि**–ऋषिओना |
| **गण**–समुदाये | **संथुअं**–स्तवायेल | **थिमिअं**–निश्चळ |
| **विबुह**–इंद्रना | **अहिव**–स्वामी | **धणवइ**–कूबेर |
| **नरवइ**–चक्रवर्ती | **बहुसो**–घणीवार | **अइर**–तत्काळ |
| **उग्गय**–उगेल | **सरय**–शरद्ऋतुना | **दिवायर**–सूर्य |
| **समहिअ**–खूब | **सप्पभं**–शोभनिक कांतिवाळा | **तवसा**–तपवडे |
| **गयणंगण**–आकाशने विषे | | **वियरण**–विचरवावडे |
| **समुइअ**–एकठा थयेल | **चारण**–चारण मुनि | **वंदिअं**–वंदायेला |
| **सिरसा**–मस्तकवडे | | |

---

× मनना शुभ अशुभ विकल्परहित होवाथी तरंग विनाना समुद्र जेवा निर्मळ.

+ विबुध एटले पंडित—सारा कवि तेना अधिप एवो अर्थ पण थाय छे.

**भावार्थ**—विनयथी नमेला मस्तकपर अंजळि करीने मुनिओना ([1] जंघाचारण अने विद्याचारण) समूहे जे प्रभुनी स्तुति करी छे, जे कदापि चलायमान नथी, देवेंद्रोए, कुबेर विगेरे दिक्पाळोए अने चक्रवर्तीओए जेमनी वचनवडे स्तुति करी छे, कायावडे जेमने नमस्कार कर्या छे अने पुष्पादिकवडे जेमनी पूजा करी छे, जे तपवडे तत्काळ उदय पामेला शरद् ऋतुना सूर्यथी पण अधिक कांतिवाळा छे, आकाशने विषे विचरवाना क्रमथी एकठा थएला चारण मुनिओए मस्तक नमावी जेमने वंदन कर्युं छे. १९.

**असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं ।**
***देवकोडिसयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥**

**( सुमुहं )**

**शब्दार्थः—**

**परिवंदिअं**—समस्त प्रकारे वंदाएला **नमंसिअं**—नमस्कार करायेला **समण**—श्रमण **संघ**—संघवडे

**भावार्थ**—असुरकुमार अने सुवर्णकुमारोए जेमने समग्र रीते वंदना करी छे, किन्नर अने नागकुमारोए जेमने नमस्कार कर्या छे, सेंकडो करोड देवोए जेमनी स्तुति करी छे, श्रमणसंघ—साधुसमुदाय जेमने निरंतर वंदन करे छे. २०.

---

१ चारण मुनि मुख्य बे प्रकारना छे—जंघाचारण अने विद्याचारण. ए सिवाय बीजा पण अनेक प्रकारना चारण मुनिओ ज्योतिरश्मि चारण विगेरे श्री प्रवचनसारोद्धारादिमां बतावेला छे.

* जघन्यथी पण एक क्रोड देवता भगवंतनी सेवामां होय छे.

**अभयं अणहं, ×अरयं अरुयं ।**
**अजियं अजियं, पयओ पणमे ।। २१ ।।**
**( (विज्जुविलसिअं ) (त्रिभिर्विशेषकम् )**

**शब्दार्थः—**

**+अणहं**–पापरहित **अरयं**–आसक्ति रहित **अरुयं**–रोगरहित **पयओ**–आदरवडे **पणमे**–नमुं छुं.

**भावार्थ**—जे भयरहित, पापरहित अने रोगरहित छे, तथा जे बाह्य अभ्यंतर शत्रुथी कदापि जीताया नथी, ते श्री अजितनाथस्वामीने हुं आदरपूर्वक प्रणाम करुं छुं. २१.

## श्री शांतिनाथनी स्तुति.

**आगया वरविमाणदिव्वकणग–**
**रहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं ।**
**ससंभमोअरणखुभिअलुलियचल–**
**कुंडलंगयतिरीडसोहंतमउलिमाला ॥२२॥ (वेड्ढओ)**

**शब्दार्थ—**

| | |
|---|---|
| **वरविमाण**–श्रेष्ठ विमान | **तुरय**–अश्वना |
| **दिव्वकणगरह**–मनोहर सुवर्णमय रथ | **पहकरसएहिं** – सेंकडो समूह वडे |

× अरजं कर्मरज रहित एवो अर्थ पण थाय छे.

+ पांशयति–मलिनयति तत् पापं आत्माने मलिन करे ते पाप.

हुलिअं–शीघ्रपणे
आगया–आवेला
ससंभमोअरण–संभ्रम सहित
एटले उतावळे उतरवाथी
खुभिअ–क्षोभ पामे छते
लुलिय–डोलता
चल–चंचल एवा
कुंडलंगयतिरीड–कुंडळ, अंगद
–बाजुबंध, किरीट–मुगट
सोहंतमउलिमाला–शोभती मु-
कुटनी माळाओ छे जेमनी
एवा,

**भावार्थ**—आ चार श्लोकोवडे भगवानने देवादिक वंदन करवा आवे छे ते केवी रीते ? विगेरे बतावीने पछी आचार्य वंदना करी छे ते आ प्रमाणे–देवो तथा असुरो श्रेष्ठ विमान, मनोहर सुवर्णना रथ अने अश्वना समूह लइने शीघ्रपणे आवे छे, ते वखते उतावळथी उतरतां क्षोभ पामीने डोलता अने चंचळ कुंडळ, बाजुबंध, मुगट अने शोभती मुगटनी माळाओथी तेओ देदीप्यमान देखाय छे. २२.

**जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता,**
**आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुट्ठुसुविम्हिअसव्वबलोघा ।**
**उत्तमकंचणरयणपरूवियभासुरभूसणभासुरिअंगा,**
**गायसमोणयभत्तिवसागयपंजलिपेसिअसीसपणामा ॥२३॥**

**( रयणमाला )**

**शब्दार्थः—**

जं–जे
सुरसंघा–देवोना समूह
सासुरसंघा–असुरना समूह स-
हित एवा

**वेरविउत्ता**—वैरभाव रहित एवा
**भत्तिसुजुत्ता**—भक्तिवडे युक्त एवा
**आयरभूसिअ**—आदरथी—बाह्य उपचारथी भूषित थयेलो
**संभमपिंडिअ**—उतावळथी एकठो थयेलो
**सुट्ठुसुविम्हिअ**—अत्यंत विस्मय पामेलो
**सव्वबलोघा**—सर्वगजाश्वादिक सैन्यनो समूह छे जेमनो एवा अथवा "आयर भूसिअ" विगेरे देवनां विशेषण करवां.

**उत्तमकंचणरयणपरूविय**—उत्तम कांचन अने रत्नवडे अत्यंत रूपवाळा करेला
**भासुरभूषणभासुरिअंगा**—देदीप्यमान अलंकारोवडे दीप्त छे अंग जेना एवा.
**गायसमोणय**—शरीरना अवयवो वडे नम्र थयेला
**भत्तिवसागय**-भक्तिने वश थयेला
**पंजलिपेसिअसीसपणामा**—हाथ जोडीने कर्यो छे मस्तकवडे प्रणाम जेमणे एवा

**भावार्थ**—वळी ते देवो अने असुरो वेरभाव तजी भक्तियुक्त थइ बाह्य अलंकारो पहेरी सर्वे एकत्र थइ अत्यंत विस्मय पामेला गज, अश्व विगेरे सैन्य समूहने साथे लइने आवे छे, तथा उत्तम सुवर्ण अने रत्नोवडे देदीप्यमान अलंकारोथी तेमना शरीरो सुशोभित देखाय छे, तथा तेओ शरीरथी नम्र थइ भक्तिथी हाथ जोडी मस्तकवडे वंदन करे छे. २२

**वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो ×पयाहिणं ।**
**पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइँ तो गया ॥२४॥**
**॥ खित्तयं ॥**

## शब्दार्थः—

**वंदिऊण**–वांदीने
**थोऊण**–स्तुति करीने
**तो**–त्यार पछी
**जिणं**–जिनेश्वरने
**तिगुणमेव**–त्रण वारज
**य**–तथा
**पुणो**–वळी
**पयाहिणं**-प्रदक्षिणा दईने
**पणमिऊण**–प्रणाम करीने
**य**–तथा जती वखते फरीथी
**जिणं**–जिनेश्वरने
**सुरासुरा**–ते सुर अने असुरो
**पमुइआ**–हर्ष पाम्या छता
**सभवणाइँ**–पोताने स्थाने
**गया**–गया

**भावार्थ**—आ रीते ते देवो तथा असुरो जे जिनेश्वरने वांदी, स्तुति करी अने त्रण प्रदक्षिणा पूर्वक फरी वांदीने हर्ष पामता पोताने स्थाने जाय छे. २४

**तं महामुणिमहं पि पंजली, रागदोसभयमोहवज्जिअं ।**
**देवदाणवनरिंदवंदिअं, संतिमुत्तममहातवं नमे ॥ २५ ॥**
**खित्तयं ॥**

---

×. प्रदक्षिणा करायेल छे जेने–प्रदक्षिणा करायेला एवा भगवंत ए प्रकारे भगवंतनुं विशेषण लेवाथी अर्थ थाय छे. अहीं कृत्वा अध्याहार छे.

## शब्दार्थ—

**तं**—ते

**महामुणिं**—मोटा छे मुनिओ जेने एवा

**अहं पि**—हुं पण

**पंजली**—जेणे हाथ जोड्या छे एवा

**रागदोसभयमोहवज्जिअं**—राग, द्वेष, भय अने मोहे करीने रहित एवा

**देवदाणवनरिंदवंदिअं**—देवेंद्र, दानवेंद्र अने नरेंद्रोए वंदना करेला एवा तथा

**संतिं**—शांतिनाथने

**उत्तममहातवं**-श्रेष्ठ मोटा तपवाळा एवा

**नमे**—नमुं छुं.

**भावार्थ**—ते जिनेश्वर, मुनिओना मोटा परिवारवाळा छे, राग, द्वेष, भय अने मोहने जीतनार छे, तेमने देवेंद्र, दानवेंद्र अने नरेंद्रो निरंतर नमन करे छे, तथा ते उग्र तपस्या करनार छे, आवा ते शांतिनाथने हुं पण हाथ जोडीने नमुं छुं. २५.

## श्री अजितनाथनी स्तुति.

**अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणियाहिं ।**
**पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥२६॥**
**॥ दीवयं ॥**

**पीण[1]निरंतर[2]थणभरविणमिअ[3]गायलयाहिं,**
**मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ।**

---

१ **प्रीण** कामीजनने खुशी करे एवा. २. व्यवधान (आंतरा) रहित. ३. नाजुक अने कोमळ शरीर होवाथी नमी गयेला.

वरखिंखिणिनेउरसतिलयवलयविभूसणिआहिं,
रइकरचउर+मणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥२७॥ चित्तक्खरा ॥
देवसुंदरीहिँ पायवंदिआहिँ वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
अप्पणो निडालएहिँ मंडणोड्डणप्पगारएहिँ केहिँ केहिँ वी।
अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिँ चिल्लएहिँ संगयंगयाहिँ,
भत्तिसन्निविट्ठवंदणागयाहिँ हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥२८॥
॥ नारायओ ॥

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं।
धुयसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

शब्दार्थः—

अंबरंतरविआरणिआहिं—आकाशना अंतराले विचरनारी

ललिअहंसवहुगामिणिआहिं—मनोहर हंसीना जेवुं गमन करनारी

पीणसोणिथण—पुष्ट एवा कटीतट अने स्तनवडे

सालिणिआहिं—शोभती

सकलकमलदल—संपूर्ण कमळना पत्र जेवा

लोअणिआहिं—लोचनवाळी

पीणनिरंतर—पुष्ट अने आंतरा रहित—गाढ एवा

थणभर—स्तनना भारवडे

विणमिअ—नमेली छे

गायलयाहिं—गात्रलता—शरीर रूपी लता जेमनी एवी

मणिकंचण—मणि अने सुवर्णनी

पसिढिलमेहल—शिथिल एवी मेखळावडे (कंदोरो)

सोहिअ—शोभायमान छे

+मनोधर—मनने अन्यत्र गमननो निषेध करवाथी मनने अटकावनार एवो पण अर्थ थाय छे.

**सोणितडाहिं**—कटिप्रदेश जेमनो एवो

**वर**—श्रेष्ठ

**खिंखिणि**—घुघरीओ

**नेउर**—नुपूर—झांझर अथवा घुघरीओवाळा झांझर

**सतिलय**—उत्तम तिलक

**वलय**—कंकण, ते रूप छे

**विभूसणिआहिं**—आभूषणो जेमने एवी

**रइकर**—प्रीतिकारक

**चउरमणोहर**—चतुर जनना मनने हरण करनार

**सुंदर**—सुंदर छे.

**दंसणिआहिं**—दर्शनीय शरीर जेमनुं एवी

**देवसुंदरीहिं**—देवांगनाओए

**पायवंदिआहिं**—शरीरना अथवा आभूषणोना पाद एटले किरणोना वृंद एटले समूहवाळी

**जस्स**—जे प्रभुना

**अवंग**—अपांग—नेत्रप्रांत अर्थात् नेत्रमां रहेला अंजन

**तिलय**—तिलक

**पत्तलेह**—पत्रलेख एटले कस्तुरी विगेरेथी कपाळ पर करेली पत्रलेखा (आड्य)

**नामएहिं**—नामना

**चिल्लएहिं**—देदीप्यमान एहवा

**अप्पणो**—पोताना

**निडालएहिं**—ललाटवडे

**मंडणोड्डणप्पगारएहिं**—आभूषणनी रचनाना प्रकारे करीने

**केहिं केहिं वी**—कोइ कोइ—अपूर्व

**संगयंगयाहिं**—युक्त छे अंग जेमनां एवी

**भत्तिसन्निविट्ठवंदणागयाहिं**—भक्ति युक्त थइने वंदन करवाने आवेली एवी

**तें**–ते एटले प्रसिद्ध एवा
**सुविक्कमा**–सुंदर गतिवाळा
**कमा**–बे चरणो
**वंदिआ य**–वांद्या छे
**ते**–ते चरणो
**पुणो पुणो**–वारंवार
**वंदिआ हुंति**–वांद्या छे
**तं**–ते
**अहं**–हुं

**जिणचंदं**–सामान्य केवळीने विषे चंद्र समान एवा
**अजिअं**–अजितनाथने
**जिअमोहं**–मोहने जीतनार
**धुअसव्वकिलेसं**–सर्व क्लेशने नाश करनार
**पयओ**–आदरवाळो छतो
**पणमामि**–प्रणाम करुं छुं

**भावार्थ**—भगवानने देवांगनाओए जे रीते वंदन कर्युं ते चार श्लोकवडे बतावे छे.—आकाशमां विचरनारी, मनोहर हंसीना जेवी गतिवाळी, पुष्ट एवा नितंब अने स्तनोवडे शोभित, संपूर्ण एटले विकस्वर कमळना पत्र जेवा नेत्रवाळी, जाडा अने गाढ स्तनना भारवडे जेमनुं शरीर नमी गयुं छे. जेमना कटिप्रदेश उपर मणि अने सुवर्णनी बनावेली विशेष शिथील मेखळा शोभी रही छे, श्रेष्ठ घुघरीओ अने झांझर अथवा घुघरीवाळा झांझर, सुंदर तिलक अने कंकणवडे जेओ अत्यंत शोभे छे, जेमना शरीरनुं सौंदर्य प्रीतिकारक, चतुर जनना मनने हरनारुं अने सुंदर छे, शरीरना अथवा अलंकारोना किरणोथी जेओ शोभे छे, देदीप्यमान अपांग, (नेत्रने विषे अंजननी रचना) तिलक अने पत्रलेख नामनी अपूर्व रचनावडे जेमना अंगो युक्त करेलां छे तथा भक्ति युक्त थइ वंदन करवा आवेली एवी देवांगनाओए पोताना ललाट वडे जे प्रभुना सुंदर गतिवाळा बे चरणोने

वारंवार वांधा छे, तेवा मोहने जीतनार अने सर्वक्लेशनो नाश करनार श्रीअजितनाथ जिनचंद्रने हुं आदरथी वंदन करुं छुं. २६–२९.

## श्रीशांतिनाथनी स्तुति.

थुअवंदिअयस्सा रिसिगणदेवगणेहिँ,
तो देववहुहिँ पयओ× पणमियस्सा।
÷जस्सजगुत्तमसासणयस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं।
देववरच्छरसाबहुआहिं, +सुरवररइगुणपंडिअयाहिं ॥ ३० ॥
॥ भासुरयं ॥

वंससद्दतंतितालमेलिए [1]तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ,

---

× नमंसियस्सा ( नमंस्यितकस्य ) इति पाठान्तरं. भगवंत समीपे प्रथम गणधर नमस्कार करे, पछी देवता अने देवीओ नमस्कार करे ते क्रम अहीं दर्शाव्यो छे.

÷ जसूच मोक्षणे जस् धातु मोक्ष करवाना अर्थमां छे तेथी जास्य एटले मोक्ष प्राप्त कराववाने शक्तिवान.

+ श्रेष्ठ देवोने प्रीति जे थकी थाय एवा ( संगित कुशळता वगेरे गुणोने विषे पंडिता–विदुषी एवी देवनर्तकी एवो अर्थ पण थाय छे.

१ एक मुखवाळा अने बे मुखवाळा वाजित्र मळीने त्रण मुखवाळुं वाजित्र ते त्रिपुष्कर.

सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं ।
वलयमेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ,
देवनट्टिआहिँ हावभावविब्भमप्पगारएहिँ ।
नच्चिऊण अंगहारएहिँ वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेस हं
नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥

## शब्दार्थः—

**रिसिगणदेवगणेहिं**—ऋषिओना समूह अने देवोना समूहोए

**थूअवंदिअयस्सा**—स्तुति करायेला तथा वंदना करायेला

**तो**—त्यारपछी

---

१ अनुनासिकादि दोष रहित शुद्ध उच्चारवाळुं.

२ षड्ज, मयूर, केका, शंख आदिना शब्दोवडे ( सद् ) सारुं अथवा सद्य तत्काळ गायेलुं. एवो अर्थ पण थाय छे.

३ नृत्यकळामां कुशळ एवी देवांगनाओ. ४ मुखनी चेष्टादि बहु कामविकारवाळो अभिप्राय. ५ चित्तमां रहेल अल्प कामविकारनो अभिप्राय, ६ वाणी, वस्त्र अने भूषण वगेरेनुं भ्रमथी स्थान बदलावुं अथवा विलास. ७ नेत्र मुख वगेरेना विकारी फेरफार. ८ हाथ आंगळी प्रमुख अंगना लटका—अभिनय वडे. ९ शोभितो पंडित जनोनो आचार जेना समीपे छे एवा, एवो अर्थ पण थाय छे.

**देववहुहिं**–देवांगनाओए

**पयओ**–सावधानपणे

**पणमियस्सा**–नमस्कार करायेला

**जस्सजगुत्तमसासणयस्सा**–
मुक्ति पमावडआने शक्य छे
जगत जेनावडे एवुं उत्तम
शासन छे जेनुं एवा

**भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं**–भ-
क्तिना वशथी आवीने एकत्र
थयेली

**देववरच्छरसाबहुआहिं**–नृत्य
करनार अने वगाडनार
एवा श्रेष्ठ देवो तथा
नृत्यमां कुशळ एवी अप्स-
राओवडे घणी संख्यावाळी
थयेली

**सुरवररइगुणपंडिअयाहिं**–सुर-
वरोनी साथे रतिक्रीडा
करवारूप गुणने विषे
कुशळ एवी

**वंससद्दतंतितालमेलिए**–वांस-
ळीनो शब्द, वीणा अने
पटहनो ताल मेळवे छते

**तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए**

**अ**–त्रिपुष्कर वाजित्रना मनोहर
शब्दवडे मिश्र करे छते

**सुइसमाणणे अ**–सर्व शब्दनी
प्राप्ति थवा माटे कानने
समान–सावधान करे छते

**सुद्धसज्जगीअपायजालघंटि-
आहिं**–शुद्ध–निर्दोष एवुं षड्ज
स्वरवडे जे गीत अथवा
सज्ज करेलुं जे गीत, तेणे
करीने सहित एवी पगने
विषे जाळना आकारवाळी
घुघरीओवडे नृत्यादिक
जणाते छते तथा

**वलयमेहलाकलावनेउराभि-
रामसद्दमीसए कए अ**–कंकण
कटिमेखला, कलाप नामनो
अलंकार अने नूपुरना म-

नोहर शब्दथी मिश्र करे छते

**देवनट्टिआहिं**–देवनी नर्तकीओ

**हावभावविब्भमप्पगारएहिं**–हाव, भाव अने विलासना प्रकारवाळा

**नच्चिऊण**–नृत्य करीने

**अंगहारएहिं** – अंगना विक्षेपे करीने

**वंदिआ य**–जेना बे चरणोने वांद्या छे

**जस्स**–जे भगवानना

**ते सुविक्कमा कमा**–ते उत्तम पराक्रमवाळा बे चरणोने

**तयं**–ते

**तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं**–त्रण जगतना सर्व प्राणीओने शांति करनारा अथवा मोक्षने आपनारा

**पसंतसव्वपावदोसं**–विशेष शांत थया छे सर्व पाप–कर्म अने द्वेष विगेरे जेना एवा

**एस हं**–आ हुं

**नमामि**–नमस्कार करुं छुं

**संतिं**–शांतिनाथ

**उत्तमं**–उत्तम

**जिणं**–जिनेश्वरने

**भावार्थ**—आ बे छंदमां देवीओए नृत्य पूर्वक श्रीशांतिनाथने वंदना करी छे, तेनुं वर्णन आपेलुं छे.—जे प्रभु प्रथम ऋषिओ अने देवोना समुदाय वडे स्तुति तथा वंदन कराया छे, अने पछी देवांगनाओए सावधानपणे नमस्कार करेला छे, जेनी शक्ति आखा जगतने मुक्ति पमाडे तेवी छे अने जेनुं शासन सर्वोत्तम छे, तथा जेना श्रेष्ठ पराक्रमवाळा बे चरणोने भक्तिना वशथी आवीने एकत्र थयेली, नर्तक वादक देवो तथा देवीओथी युक्त थयेली अने देवोनी साथे रतिक्रीडा करवामां कुशळ एवी देवनी

नर्तकीओए हाव, भाव अने विभ्रमना प्रकारवाळा अंगना विक्षेपे करीने नृत्य करवा पूर्वक वंदना करी छे, के जे नृत्य वखते वांसळीनो शब्द, वीणानो स्वर अने पटहादिकनो ताळ मेळववामां आव्यो हतो, त्रिपुष्कर नामना वाजित्रनो मनोहर शब्द मिश्र करवामां आव्यो हतो, सर्व प्रकारना शब्द सांभळी शकाय तेम सर्वना कान सावधान थया हता, षड्ज स्वरवडे शुद्ध गीत गातां पगमां बांधेली घुघरीओना शब्दथी नृत्यादिकनी संभावना करवामां आवती हती, तथा ते नृत्य कंकण, कटिमेखळा, कलाप अने नूपुरना मनोहर शब्दथी मिश्र हतुं. आवा त्रण जगतना सर्व प्राणीओने शांति करनारा अने पाप, द्वेष विगेरेथी मुक्त थयेला उत्तम श्रीशांतिनाथ जिनने हुं नमस्कार करुं छुं. ३०–३१.

**श्रीअजितनाथ तथा शांतिनाथनी स्तुति—**

**१ २ ३**<br>
**छत्तचामरपडागजूअजवमंडिआ,**<br>
**४**<br>
**झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा ।**<br>
**५ ६ ७**<br>
**दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिया,**<br>
**सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिया ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥**

---

१ नानी ध्वजा. २ यज्ञ स्तंभ. ३ सिंहादिना चित्रवाळो मोटो ध्वज. ४ उत्तम पुरुषना वक्ष स्थळ ( छाती )मां आ लक्षण होय छे कोइने पगमां पण होवानो संभव छे.

५ जंबू द्वीप वगेरे द्वीप अने लवण समुद्र वगेरे समुद्र जाणवा.

६ मंदिरं एवो पाठ होय त्यां "प्रासाद" एवो अर्थ करवो.

७ मेरु पर्वतनी आसपास चारे दिशाए हस्तिना आकारना करीकुटो भद्रशाळ वनमां छे ते.

सहावलट्ठा [1] समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा [2] गुणेहिं जिट्ठा

[3] पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥२३॥

वाणवासिआ ॥

ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया ।

[4] संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण [5] दायया ॥२४॥

॥ अपरांतिका ॥

## शब्दार्थ—

| | |
|---|---|
| छत्त–छत्र | जव–जवखडे |
| चामर–चामर | मंडिआ–शोभित |
| पडाग–पताका | झयवर–श्रेष्ठ ध्वज |
| जूअ–यज्ञस्तंभ | मगर–मघर |

---

१ **असमप्रतिष्टाः** निरुपम छे प्रतिष्ठा (ख्याति) जेमनी एवा.

२ रताश तथा कोमळता आदि अथवा ज्ञान दर्शन चारित्रादि गुणो.

३ **प्रसातशिष्ठाः** एटले उत्कृष्ट सुखवाळा श्रेष्ठ पुरुषो छे जेनी समीपे एवा.

४ **शंस्तुता** सुखना कारणभूत स्तवन कर्युं छे जेनुं एवा.

५ शिव सुखना दातार एवा अजितनाथ अने शांतिनाथ पूज्य मने स्तुति करायेला थाओ, अर्थात् तेमनुं नित्य दर्शन थाओ एम पण अर्थ लइ शकाय.

तुरय—अश्व
सिरिवच्छ—श्रीवत्सरूप
सुलंछणा—सुंदर लांछनवाळा
दीव—द्वीप
समुद्द—समुद्र
मंदर—मेरु
दिसागय—दिग्गजवडे
सोहिया—शोभता
सत्थिअ—स्वस्तिक
वसह—वृषभ
सीह—सिंह
रह—रथ
चक्कवर—श्रेष्ठ चक्रवडे
अंकिया—चिन्हवाळा
सहावलट्ठा—स्वभावथी ज सुंदर
समप्पइट्ठा—समभावने विषे रहेला.
अदोसदुट्ठा—दोषवडे अदुष्ट
गुणेहिं जिट्ठा—गुणोवडे मोटा
पसायसिट्ठा—रागादिकना अभावरूप निर्मळतावडे श्रेष्ठ
तवेण—तपवडे
पुट्ठा—पुष्ट
सिरिहिं इट्ठा—लक्ष्मीवडे पूजायेला
रिसीहिं जुट्ठा—मुनिओए सेवेला
तवेण—तपवडे
धुअसव्वपावया—नाश कर्यां छे सर्व पाप जेमणे एवा
सव्वलोअहिअमूलपावया-सर्व लोकना हितरूप जे मोक्ष तेनुं मूळ जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेने पमाडडनारा
संथुआ—सम्यक् प्रकारे स्तुति करेला
ते—ते
अजिअसंतिपायया—पूज्य एवा अजितनाथ अने शांतिनाथ
हुंतु—थाओ
मे—मने
सिवसुहाण—मोक्षसुखना
दायया—आपनार

**भावार्थ**—जे छत्र, चामर, पताका, यज्ञस्तंभ अने जवना लक्षणोवडे शोभता छे, जे श्रेष्ठ ध्वज, मगर, अश्व अने श्रीवत्सना सुंदर लांछनवाळा छे, जे द्वीप, समुद्र, मेरुपर्वत अने दिग्गजना चिन्हवडे शोभायमान छे, जे स्वस्तिक, वृषभ, सिंह, रथ अने श्रेष्ठ चक्रना चिन्हवाळा छे, जे स्वभावथीज सुंदर छे, जे समतानी भूमिपर प्रतिष्ठित छे, जे रागादिक दोषवडे दूषित थया नथी, जे ज्ञानादिक गुणोवडे मोटा छे, जे रागादिक मळना अभावने लीधे निर्मळतावडे श्रेष्ठ छे, जे तपवडे पुष्ट छे, जे लक्ष्मीवडे पूजित छे, जे मुनिओवडे सेवायेला छे, जेमणे तपवडे सर्व शुभाशुभ कर्मनो नाश कर्यो छे, जे सर्व लोकना हितना—मोक्षना मूळरूप ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने प्राप्त करावनार छे, तथा जे सम्यक् प्रकारे स्तुति कराया छे, ते श्रीअजितनाथ तथा शांतिनाथ प्रभु मने मोक्षसुखना आपनारा थाओ ३२—३४

**एवं तवबलविउलं, थुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं।**
**ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं+ ॥३५॥ गाहा ॥**

**शब्दार्थः**—

**एवं**—आ प्रकारे [मोटा
**तवबलविउलं**—तपना बळथी
**ववगयकम्मरयमलं**—गया छे ज्ञानावरणादिक आठ कर्म, रज एटले बंधाता कर्म अने मल एटले बांधेला कर्म जेमना एवा
**थुअं**—स्तुति करी छे.
**मए**—में
**अजिअसंतिजिणजुअलं**-अजि-

---

+ विमलं इति पाठान्तरं.

तनाथ अने शांतिनाथ नामना बे जिनेश्वरोनी

**ववगयकम्मरयं अलं**—अत्यंत गयो छे कर्मनो रय—प्रवाह जेमनो एवा

**गइं**—मोक्षरूप गतिने

**गयं**—पामेला एवा

**सासयं**—शाश्वती

**विउलं**—विपुल—विस्तारवाळी

**भावार्थ**—आ प्रमाणे श्रीअजितनाथ अने शांतिनाथना जिनयुगलनी में स्तुति करी छे, ते बन्ने प्रभु तपना बळथी बळवान छे. बंधाता अने बांधेला कर्मथी मुक्त थया छे, अने शाश्वती तथा विस्तारवाळी मोक्षगतिने पामेला छे. ३५.

**तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण *अविसायं ।**
**नासेउ मे विसायं,कुणउ अ परिसा वि अ पसायं ॥३६॥ गाहा॥**

**शब्दार्थ—**

**तं**—ते बन्ने जिनेश्वरो

**बहुगुणप्पसायं**—ज्ञानादिक घणा गुणोनी निर्मळतावाळा

**मुक्खसुहेण**—मोक्षसुखवडे

**परमेण**—उत्कृष्ट एवा

**अविसायं**—विषाद रहित एटले विकळता रहित

**नासेउ**—नाश करो

**मे विसायं**—मारा विषादने—खेदने अथवा विसातने एटले दुःखने

**कुणउ**—करो

**अ**—तथा

**परिसा वि अ**—आ स्तवनने सांभळनार सभा पण

* **अविसातं** गयुं छे सुख जेनुं ते विसात अने न विसातं **अविसातं** सुख रहित नहि अर्थात् **सुखवाळा** एवो अर्थ पण थाय छे.

**पसायं**–प्रसादने एटले मारा वचनमां गुणनुं ग्रहण अने दोषना त्यागरूप महेरबानीने

**भावार्थ**—ज्ञान दर्शनादि अनेक गुणनो प्रसाद छे जेने एवुं (अथवा घणा प्रकारनी निर्मळतावाळुं); उत्कृष्ट मोक्ष सुखवडे विषाद (विकलता) रहित ते युगल; मारा विषाद (अथवा विसात दुःख) ने नाश करो अने वळी सभा (आ स्तवनने सांभळनारी सभा) पण मारा उपर अनुग्रह (कहेल स्तवनना गुणनुं ग्रहण अने दोषना त्यागरूप महेरबानी) करो. ३६

## अंत्य मंगळाचरण.

**तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ ×नंदिसेणमभिनंदिं ।**
**परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥गाहा॥**

### शब्दार्थ—

**तं**–ते बन्ने जिनेश्वरो लोकोने
**मोएउ**–हर्ष आपो
**अ**–अने
**नंदिं**–आनंदने अथवा समृद्धिने
**पावेउ**–पमाडो
**अ**–तथा

---

× आ **नंदिषेण** मुनि श्रेणिकना पुत्र के बीजा कोइ महर्षि छे तेनो बराबर निर्णय थतो नथी. केटलाक वळी एम कहे छे के श्री शत्रुंजयनी गुफामां अजितनाथ अने शांतिनाथ वर्षाऋतुमां रहेला हता ते जग्याए अनुपम सरोवरनी समीपे अजितनाथनुं चैत्य हतुं अने मरुदेवीनी टुंकनी पासे शांतिनाथनुं चैत्य हतुं त्यां नेमनाथजीना गणधर नंदिषेणजीए अजितशांति स्तवननी रचना करी तेथी ते बंने चैत्यो पूर्वाभिमुख थयां. मूळ ग्रंथकारे अहीं सुधी रचना करी छे तेमां ३७ गाथा अने २४२३ अक्षरो आवे छे. बाकीनी गाथाओ अन्यनी करेली छे.

नंदिसेणं–नंदीषेणने
अभिनंदिं–समस्त प्रकारे समृद्धि अथवा आनंद
परिसा वि अ–श्रोताओनी सभाने पण
सुहनंदिं–सुखनी वृद्धिने
मम य–अने मने
दिसउ–आपो
संजमे नंदिं–संयमने विषे आनंदने

**भावार्थ**—श्रीअजितनाथ तथा शांतिनाथ लोकोने हर्ष आपो, समृद्धि आपो, नंदीषेणने विशेष समृद्धि आपो, श्रोताओने सुखनी वृद्धि आपो अने संयमने विषे आनंदने आपो. २७.

## आ स्तवननो महिमा कहे छे.—

**पक्खिअचाउम्मासिअ–+संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो× ।**
**सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥ २८ ॥**

(गाहा)

### शब्दार्थ—

एसो–आ अजितशांति स्तवन
पक्खिअ–पाक्षिक
चाउम्मासिअ–चातुर्मासिक
संवच्छरिए–सांवत्सरिक प्रतिक्रमणने विषे
अवस्स–अवश्य

---

+ संवच्छर राइए अ दीअहे अ इति पाठान्तरं.

× आ स्तवन एकज जणे भणवानुं कह्युं छे तेनुं कारण ए के एक साथे घणाना बोलवाथी कोलाहल थाय तेथी सर्वने उपयोग पूर्वक संभळाय नहि तेथी एक साथे बोलवानी पद्धति उचित नथी.

**भणिअव्वो**-भणवानो छे
**सोअव्वो**-सांभळवानो छे
**सव्वेहिं**-बीजा सर्वेए
**उवसग्गनिवारणो** - उपसर्गने निवारण करनार

**भावार्थ**—पाक्षिक, चातुर्मासिक अने सांवत्सरिक प्रतिक्रमणने विषे आ अजितशांतिस्तोत्र एक जणे अवश्य भणवो अने बीजा सर्वेए सांभळवो. केमके आ स्तव उपसर्गनो नाश करनार छे. (एक साथे सर्व भणे तो कोलाहलनो संभव छे, माटे एक जणे ज भणवो ए योग्य छे.) ३८.

**जो पढइ जो अ निसुणइ,**
**उभओ कालं पि अजिअसंतिथयं ।**
**नहु हुंति तस्स *रोगा, पुव्वुप्पन्ना विणासंति ॥३९॥**
**( गाहा )**

**शब्दार्थ—**

**जो पढइ**-जे माणस भणे
**जो अ निसुणइ**-अने जे माणस सांभळे
**उभओ कालं पि**-प्रातःकाळ तथा सायंकाळ बन्ने वखत
**अजिअसंतिथयं**-आ अजित-शांति स्तवने
**न हु हुंति**-थता ज नथी तेम
**तस्स**-तेने
**रोगा**-कास, श्वास, विगेरे रोगो
**पुव्वुप्पन्ना वि** - पूर्वे उत्पन्न थयेला होय ते पण
**णासंति**-नाश पामे छे

---

* कास, श्वास, भगंदर, कोढ वगेरे रोगो, अथवा सर्व प्रकारनी पीडाओ.

**भावार्थ**—आ अजितशांति स्तवने प्रातः सायं बन्ने काळे (उपलक्षणथी सवार बपोर ने सांज) जे भणे छे अने सांभळे छे, तेने रोगो थता नथी, अने प्रथम उत्पन्न थया होय तो ते पण नाश पामे छे. ३९

**जइ इच्छह परमपयं, अहवा किर्त्ति सुवित्थडं भुवणे।**
**ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥**

**(गाहा)**

**शब्दार्थ—**

**जइ**–जो तमे
**इच्छह**–इच्छता हो
**परमपयं**–मोक्षने
**अहवा**–अथवा
**किर्त्ति**–कीर्तिने
**सुवित्थडं**–विस्तार पामती
**भुवणे**–जगतने विषे
**ता**–तो
**तेलुक्कुद्धरणे** – त्रण लोकनो उद्धार करनार
**जिणवयणे**–जिनेश्वरना वचनने विषे
**आयरं**–आदर
**कुणह**–करो

**भावार्थ**—जो तमो मोक्षने इच्छता हो अथवा त्रण जगतमां विस्तार पामेली कीर्तिने इच्छता हो तो त्रण लोकनो उद्धार करनार श्रीजिन वचनने विषे आदर करो—जिनेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे करो.

**ववगयकलिकलुसाणं, ववगयनिद्धंतरागदोसाणं।**
**ववगयपुणब्भवाणं, नमोत्थु देवाहिदेवाणं ॥ ४१ ॥**

### शब्दार्थ—

| | |
|---|---|
| **ववगय**—नाश पाम्या छे | **पुणब्भवाणं**—पुनर्भव |
| **कलि**—क्लेष | **नमोत्थु**—नमस्कार थाओ |
| **कलुसाणं**—मलीनता | **देवाहिदेवाणं**—देवाधिदेवने |
| **निद्दूत**—अत्यंत | |

**भावार्थ**—नाश पाम्यां छे क्लेश अने मलीनता जेनां एवा, निर्मूळपणे नाश पाम्यां छे राग द्वेष जेना एवा, गया छे पुनर्जन्म जेनां एवा, ते देवाधिदेवोने नमस्कार हो. ४१

**सव्वं पसमइ पावं, पुणं वड्ढइ नमंसमाणस्स ।**
**संपुणचंदवयणे, कित्तयणे अजिअसंतिनाहस्स ॥ ४२ ॥**

| | |
|---|---|
| **सव्वं**—सर्व | नारना |
| **पसमइ**—शान्त थाय छे | **संपुण**—संपूर्ण |
| **पावं**—पाप | **चंदवयणे**—चंद्र जेवा मुखवाळा |
| **पुणं**—पुण्य | **कित्तयणे**—कीर्त्तन |
| **वड्ढइ**—वधे छे | **अजिअ-संति-नाहस्स**—अजित |
| **नमंसमाणस्स**—नमस्कार कर- | —शांति—नाथनुं |

**भावार्थ**—संपूर्ण चंद्रना जेवा मुखवाळा अजितनाथ अने शांतिनाथ जिननुं कीर्तन कर्ये छते वंदन करनारनां सर्व पाप विशेषे शांत थाय छे अने पुन्य वधे छे. ४२

**॥ इति अजितशान्तिस्तवन संपूर्णम् ॥**

पछी जयवीयराय कही त्रण खमासमणे आचार्य० उपाध्याय० सर्व साधु वांदी, खमासमण दइ इच्छाकारेण० देवसिप्रायच्छित्त अन्नत्थ कही चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, प्रगट लोगस्स कही; पछी सज्झाय माटे चार खमासमणा दइ, नवकार गणी पछी सज्झाय कहेवी.

## ४७ अथ पक्खि सज्झाय ॥

नमिऊण तिलोअ गुरुं, लोयालोयप्पयासअं वीरं ।
संबोह सत्तरि महं, रएमि उद्धार गाहाहिं ॥ १ ॥

**अर्थः**—त्रण लोकनां गुरु अने लोकालोक प्रकाशक श्री महावीर देवने नमस्कार करीने संबोधसित्तरी ( नामा ग्रंथ ) उधृत गाथाओ वडे हुं रचुं छुं. १

सेयंबरो अ आसंबरो अ, बुद्धो अ अहव अन्नो वा ।
समभाव भाविअप्पा, लहेइ मुक्खं न संदेहो ॥ २ ॥

**अर्थः**—श्वेताम्बर–दिगंबर–बौद्ध अथवा अन्य कोइ पण दर्शनी जो समभावथी वासित ( राग द्वेष रहित ) आत्मा होय तो ते मोक्ष मेळवे छे एमां संशय नथी. २

अट्ठदस दोसरहिओ, देवो धम्मोवि निउण दयसहिओ ।
सुगुरु वि बंभयारि, आरंभ परिग्गहा विरओ ॥ ३ ॥

**अर्थ**—अढार दोष रहित देव; दया सहित श्रेष्ठ धर्म अने आरंभ परिग्रह रहित ब्रह्मचारि गुरु. ३

अन्नाण कोह मय माण लोह, माया रइअ अरइअ ।
निद्दा सोग अलिअवयण चोरिया मच्छर भयाय ॥४॥

पाणिवह पेमकीला पसंग हासा य जस्स ए दोसा ।
अट्ठारसवि पणठा, नमामि देवाहिदेवं तं ॥५॥

[ आ बे गाथानो अर्थ पाछळ चैत्यवंदनमां आव्यो छे. तेथी त्यां जोइ लेवो. ]

पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, दुक्खक्खय कम्मक्खय कहो, अन्नत्थ, कही, चारलोगस्सनो काउस्सग्ग करी; पारी पछी प्रगट लोगस्स कही; पछी सामायिक पारवानी विधी करवी.

॥ इति पक्खि प्रतिक्रमण ॥

## ॥ ४८ अथ श्री चोमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

चोमासी प्रतिक्रमणनी पण एज विधि जाणवी, पण एटली विशेषता के, पख्खिना स्थानके (ठेकाणे) चोमासीनो पाठ कहेवो; तथा बार लोगस्सना ठेकाणे वीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. तथा तपने ठेकाणे छट्ठेणं, बे उपवास, चार आंबिल, छ निवी, आठ एकासणा, चार हजार सज्झाय; ए रीते कहेवुं. ( इति )

## ॥ ४९ अथ श्री सांवच्छरिक प्रतिक्रमण विधि ॥

आ पण उपर लखेली विधि प्रमाणे छे पण पक्खिना ठेकाणे संवच्छरीना आगार कहेवा. (बोलवा) तथा बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे चालीस लोगस्स, अथवा एकसोने साठ नवकारनो काउसग्ग करवो अने तपने ठेकाणे संवच्छरीतप अट्ठमेणं, त्रण उपवास, छ आंबिल, नव निवि, बार एकासणा अने छ हजार सज्झाय, ए रीते कहेवुं.

॥ इति सांवत्सरिक प्रतिक्रमण विधि ॥

## ॥ ५० अथ श्री पोसह विधि ॥

पोसह करनार श्रावक आभूषण अलंकारनो त्याग करे, पहेलां राइप्रतिक्रमण विधिपूर्वक करी; आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, पछी इरियावही पडिकमि, एक लोगस्सनो काउसग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पोसह मुहपत्ति पडिलेहुं? एम कही मुहपत्ति पडिलेहवी, पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्. पोसह संदिसाऊं? बीजे खमासमणे पोसह ठावुं? कही, नवकार गणी, इच्छकारी० भ० पोसह दंडक ऊच्चरावोजी ॥

---

## ॥ ५१ अथ पोसहनुं पच्चक्खाण ॥

करेमिभंते पोसहं, आहार पोसहं, देसओ सव्वओवा, सरीर सक्कार पोसहं सव्वओ, अव्वावार पोसहं सव्वओ, बंभचेर पोसहं सव्वओ, चउव्विहे पोसहे ठामि; जावदिवसं अहोरत्तं वा, पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥

( पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण० सामायक संदिसाहुं? बीजे खमासमणे सामायक ठाउं? एम कही नवकार गणी सामायक उचरीयें )

करेमिभंते सामाइयं सावज्जंजोगं पच्चक्खामि, जावपोसहं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

ए पछी खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुवेलं संदिसाएमि? बीजुं खमासमण दइ; इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, बहुवेलं करेमि?

## ॥ ५२ सवारना पडिलेहण, विधि ॥

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसिहियाए मत्थएण वंदामि. इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, पडिलेहणं संदिसाएमि ? बीजा खमासमणे पडिलेहणं करेमि ? इच्छं कही मुहपत्ति, चरवलो, कटासणुं पडिलेहि; खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, अंगपडिलेहणं संदिसाएमि? बीजे खमासमणे अंगपडिलेहणं करेमि? एम कही पेहेरवानुं वस्त्र, तथा सुतरनो कंदोरो, उतरासण पडिलेहि; पछी खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पडिलेहणा पडिलेहावो? एम कही स्थापनाचार्येनी वेयावच्च करीयें, स्थापना न होय तो वडीलनुं एक कपडुं पडिलेहो पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् उपधि पडिलेहणं संदिसाएमि? बीजे खमासमणे उपधि पडिलेहणं करेमि? एम कही बाकी रहेला सर्व उपकरण (वस्त्र) पडिलेहियें. पछी खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, पोसहसालं पमज्जेमि; एम कही उपाश्रय पुंजी, जयणाथी काजो उद्धरीने शुद्ध भुमिकामां परठवतां अणुजाणह जस्सवग्गहो कही, काजो परठवो, पछी वोसिरे वोसिरे त्रण वखत कहेवुं. पछी गुरु स्थापनाजी पासे आवीने खमासमण दइ इरियावहि पडिक्कमि, एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही खमासमण दइने, इच्छाकारेण० बेसणे संदिसाएमि, बीजे खमासमणे बेसणे ठाएमि, इच्छामि० इच्छा० सज्झायं संदिसाएमि? बीजे खमासमणे सज्झायं करेमि; एम नवकार कही अरहंदेवोनी सज्झाय कहेवी ॥

## ॥ ६३ अरहंदेवोनी सज्झाय ॥

अरहं देवो गुरुणो, सुसाहुणो जिणमयं महपमाणं ।
इच्चाइ सुहो भावो, सम्मत्तं बिंति जगगुरुणो ॥ १ ॥

**अर्थः**—अरिहंत देव, सुसाधुओ–गुरु अने जिन मत ए मारे प्रमाण छे, इत्यादि शुभ भाव तेने जगतगुरु तीर्थंकरो सम्यक्त्व कहे छे. १

लब्भइ सुरसामित्तं, लब्भइ पहुअत्तणं न संदेहो ।
एगं नवरि न लब्भइ दुल्लहं रयणं च सम्मत्तं

**अर्थः**—देवेन्द्रपणुं मळे छे, स्वामिपणुं मळे छे एमां शंका नहि; परन्तु एक दुर्लभ समकित रत्न नथी मळतुं. २

सम्मत्तमि ऊ लद्धे, विमाण वज्जं न बंधए आउं ।
जइवि न सम्मत्त जढो अहव न बद्धाउ पुव्वि ॥ ३ ॥

**अर्थः**—जो समकितथी भ्रष्ट न थयो होय, अथवा ते पहेलां आयुष्य न बांध्युं होय तो समकित प्राप्त थवाथी वैमानिक सिवायनुं आयुष्य न बांधे. ३

दिवसे दिवसे लक्खं देइ सुवन्नस्स खंडियं एगो ।
एगो पुण सामाइयं, करेइ न पहुप्पए तस्स ॥ ४ ॥

**अर्थः**—कोइ दररोज एक लाख सुवर्ण खांडीनुं दान करे, तो पण ते एक सामायिकनी समान फळ न पामे. ४

निंद पसंसासु समो, समोअ माणावमाण कारिसु ।
समसयण परिअणमणो, सामाइय संगओ जीवो ॥ ५ ॥

**अर्थः**—सामायिकना संगथी जीव निंदा अने प्रशंसामां, मान अने अपमान करनारा उपर तेमज स्वजन अने परिजन उपर समान चित्तवाळो—समभाववाळो थाय छे. ५

**पछी बे वांदणां दइ, अब्भुट्ठिओ खमावी, पच्चक्खाण करवुं पछी विस्तार पूर्वक चैत्यवंदन देव वांदे ॥**

## ॥ ५४ अथ देववंदन विधि ॥

**खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, इरियावहियं पडिक्कमामि, एम कही इरियावहि पडिक्कमिने एक लोगस्सनो, काउस्सग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही; पछी खमासमण दइ, उत्तरासण करी, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् चैत्यवंदन करुं? एम कही चैत्यवंदन करवुं ॥**

## ॥ ५५ अथ चैत्यवंदन ॥

**सिरिरिसह पढमनाहं, निवं मुणिं जिणवरं च तित्थयरं ।**
**युगआइ सयल भवियण, मंगल जयकारगं वंदे ॥ १ ॥**

**अर्थः**—सर्व भव्य जीवोने युगनी आदिमां मंगळ अने कल्याण करनार एवा प्रथम नाथ—प्रथम राजा—प्रथम मुनि—प्रथम जिन अने प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवस्वामिने हुं वांदुं छुं १

**सयल जीवलोय पयडं, संतिकरं संतिनाह मुणि पवरं ।**
**सोलसमं तित्थयरं, पंचम चक्कि नमंसामि ॥ २ ॥**

**अर्थः**—सर्व जीव लोकने प्रगट करनार, शान्ति करनार, मुनिओमां श्रेष्ट अने पांचमा चक्रवर्ति एवा सोळमा श्री शांतिनाथने हुं नमुं छुं. २

**जा जीव बंभयाहिं, नियजस पसरेण रंजियं भुवणं ।**
**मोडिय वम्मह माणं, नेमिजिणं तं पणिवयामि ॥ ३ ॥**

**अर्थः**—यावत् जीवनपर्यन्त ब्रह्मचारि अने पोताना यशना फेलावावडे त्रिभुवनने प्रसन्न करनार तेमज कामदेवना मानने नाश करनार ते बावीसमा श्री नेमि जिनेश्वरने हुं नमस्कार करुं छुं. ३

**सुरअसुर नाग महियं, लोगालोगप्पयासगं सूरं ।**
**मिच्छत्त तमोहरणं, पासजिणंदं थुणिस्सामि ॥ ४ ॥**

**अर्थः**—देव-दानव अने भुवनपतिथी पूजीत, लोकालोकने प्रकाश करवाने सूर्य समान तथा मिथ्यात्व रूप अंधकारने हरनार श्री पार्श्वनाथ जिनेश्वरने हुं स्तवीश. ४

**तित्थपइं सिरिवीरं, गुणागरं खंतिसागरं धीरं ।**
**पत्तं भवोहतीरं, वंदे कम्मारि सिरिवीरं ॥ ५ ॥**

**अर्थः**—गुणना भंडार, क्षमाना सागर, धीर, संसार समूहना तीरने पार पामेला अने कर्मना शत्रु एवा तीर्थपति श्री वीर जिनेश्वरने हुं वांदुं छुं. ५

**सव्वे विय जिणनाहा, गणहर सहियाय केवलदिणंदा ।**
**अन्ने वि जेय सिद्धा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ ६ ॥**

**अर्थः**—गणधरसहित केवळज्ञानरूप सूर्यसमान सर्वे तीर्थंकरो अने बीजा पण सिद्धो ते सर्वने मन-वचन अने कायाथी हुं वांदुं छुं. ६

**संपइ वट्टइ जे जिण, सीमंधर सामी पमुह ते सव्वे ।**
**भविय पडिबोह दिणयर, तिकरण सुद्धेण पूएमि ॥ ७ ॥**

**अर्थः**—हमणा सीमंधरस्वामि विगेरे जे तीर्थंकरो भव्यजनोने प्रतिबोध करवाने सूर्यसमान छे, ते सर्वने मन-वचन अने कायाए त्रिकरण शुद्धे पूजुं छुं. ७

**पछी उभा थइ गुनह गंभीरनी थुइ कहेवी ॥**

## ॥ ५६ अथ श्री जिनेंद्र स्तुति ॥

**गुनह गंभीर अचलजीम धीर कर्म्मरिपुवीर भवजल तारी,**
**वसी गृहवास तजी उद्दास भजी वनवास भए अनगारी;**
**मनमथ मान मोरिकर ध्यान पाय सुभ ग्यान बहुत सुखकारी,**
**समर अरिहंत भजित भगवंत मुक्तिवरकंत वृषभपदधारी. १**
**अजित जिनराय सुरासुरपाय नमत बहुभाय गुणाकर जाणी,**
**सुधाकर वृष्टि करत सुखसृष्टि सदा समदृष्टि कहत मुखवानी;**
**सुनत संतोष करत धर्म पोष हरत मनरोष धरत जे प्राणी,**
**समरसिंघदेव करहु तसु सेव जोड करबेव भाव मन आणी. २**
**संभव जगदीस नमुं निसदीस भक्ति सुजगीस मुक्तिपंथ गामी,**
**मानमात्तंग दमीउत्तंग भये निरभंग मिथ्या मत नामी;**
**सफल मुझ नयन देखी प्रभु वयन अभिनव मयन रूपसम पामी,**
**परं तुझ चरण छोर जरा मरण भवभयहरण करहु मोरा स्वामी. ३**
**अभिनंदननाथ परम सुख साथ जोर दोउं हाथ रंग चित लावुं,**
**बारजीउंमाय पालफुनिआय कहत्त निम्माय भाग्यवसि पाउं;**
**रस नमुहएक बहुरन विवेक तुम गुन छेक केम हुं गाऊं,**
**भ्रमणकउमूर कर्मउनमूर रहे प्रभु दूर भावधर ध्यावुं. ४**

पछी जंकिंचि० नमोत्थुणं० कही खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् चारित्राचार विसोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं. अन्नत्थ० बे लोगस्सनो काउस्सग्ग,पछी प्रगट लोगस्स कही; सव्वलोए अरिहंत चेइआणं करेमि काउसग्गं, वंदण वत्तिआए० एक लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी, पुख्खरवरदीवड्ढे कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही निचा बेसी नमोत्थुणं जावंति० जावंत० कही, खमासमण दइ, स्तवनं संदिसाएमि, बीजे खमासणे स्तवनं भणेमि, एक नवकार गणी, श्री समेतसिखरनुं स्तवन कही, जयवीयराय जगगुरु० कहेवा ॥

## ॥ इति देववंदन विधि ॥

पुर्णपोरसी समय थाय त्यारे उग्घाडापोरसी भणाववी. तेहनी विधि. खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् उग्घाडापोरसी, बीजे खमासणे इरियावहि पडिकमि एक लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् उग्घाडपोरसी मुहपत्ति पडिलेहुं ? एम कही मुहपत्ति पडिलेहिने, जे पोषहमां भाजन वपराय ते पण पडिलेहवां, पाणी लाववा माटे ॥ इति ॥

पछी बपोरे विधिथी देव वांदवा तेमां आयंबिल के एकासणु कर्या पछी चैत्यवंदन जगचिंतामणिथी जयवीयराय सुधी करवुं.

## ॥ ५७ अथ पच्चक्खाण पारवानी विधि ॥

समासमण दइ इच्छाका० इरियावहि पडिकमि एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही खमासमण दइ इच्छाकारेण० चैत्यवंदन करुं ? सिरि रिसहनुं० चैत्यवंदन

करी जंकिंचि० नमोत्थुणं० जावंति० जावंत० बे खमासमण दइ स्तवननो आदेश मागी नवकार० उवसग्गहरं० जयवीयराय० पछी खमासमण दइ इच्छाका० पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं? मुहपत्ति पडिलेहिने पछी खमासमण दइ इच्छाका० पच्चक्खाण पारुं? खमासमण दइ इच्छाका० पच्चक्खाण पुरु. नवकार गणी उपवास कीधो तिविहार पोरसी, साढपोरसी, पुरमड्ढ, अवड्ढ पच्चक्खाण कर्युं चोविहार.

## ॥ ५८ पच्चक्खाण पारवानी गाथा ॥

फासियं पालियं चेव सोहियं तिरियं तहा।
किट्टियं आहाराहियं चेव, विसोहिज्ज जयंजइ ॥ १ ॥

**अर्थः**—पच्चक्खाण फरस्युं, पाळ्युं, शोध्युं, पूर्ण कर्युं, प्रशंस्युं अने आराध्युं. आ प्रमाणे यतनावान मुनि पच्चक्खाणने विशेष शुद्ध करे.

योग्य समये पच्चक्खाण पूर्ण थाय ते फरस्युं कहेवाय, वारंवार तेने संभाळवुं ते पाळ्युं कहेवाय, पच्चक्खाण पाळती वखते लावेलो आहार गुरुने आप्या पछी वधे ते आहार करवो ते शोध्युं कहेवाय, पच्चक्खाणनो काळ पूर्ण थया पछी थोडी वार रहीने पारवुं ते तीर्युं कहेवाय, पच्चक्खाण पाळीने आहार करती वखते "में अमूक पच्चक्खाण कर्युं हतुं पूर्ण थयुं" एम कहेवुं ते कीर्त्युं कहेवाय, जे प्रतिज्ञाए पच्चक्खाण लीधुं होय ते प्रतिज्ञाए पारे ते आराध्युं कहेवाय. आ छ प्रकारे पच्चक्खाण विशुद्ध करीने यतनावान् मुनि पोताना आत्माने मोक्षगामी करे. १

**फासुयं एसणिज्जं च, जं जिणेहिं पवेइयं ।**
**तं च नीरं गहिस्सामि, सामाइय पोसहे तहा ॥२॥**

**अर्थः**—निर्जीव अने दोषरहित जे आहार–पाणी जिनेश्वरोए कह्युं छे ते आहार–पाणी हुं [ साधु धर्मनी प्रवृत्ति माटे ] सामायिक अने पौषधमां ग्रहण करीश. २

## ॥ ५९ सांजना पडिलेहण विधि ॥

**पाछला पहोरे छ घडी दिवस रहे ते समये पडिलेहण करवुं, तेहनी विधि. खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पडिपुन्ना पोरसी; बीजे खमासमणे इरियावहि पडिक्कमि लोगस्स कही, खमासमण दइ इच्छाकारेण० पडिलेहणं संदिसाएमि बीजे खमासमणे पडिलेहणं करेमि एम कही मुहपत्ति पडिलेहवी. पछी चरवलो, कटासणुं पडिलेहीने बे खमासमणे अंग पडिलेहणनो आदेश मागी कंदोरो सुतरनो तथा धोतीयुं, उत्तरासण पडिलेहवुं पछी खमासण दइ इच्छाकारेण० पोसहसाला प्रमार्जुं एम कही पोसहशालानो काजो एक स्थानके भेगो करवो. पछी इरियावहि पडिक्कमि एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी पछी खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पडिलेहणा पडिलेहावो एम कही स्थापनाजी पडिलेहवा. स्थापना न होय तो वडीलनो एक कपडो पडिलेहवो. पछी खमासमण दइ, सज्झायं संदिसाएमि, बीजे खमासमणे सज्झायं करेमि, एम आदेश मागी एक नवकार गणी अरहंदेवो० सज्झाय करी पछी वांदणा दइ, पच्चक्खाण करवुं, पछी खमासमण दइ, इच्छाका० पहेले खमासमणे उपधि पडिलेहणं संदिसाएमि. बीजे उपधि पडिलेहणं करेमि एम कही बाकी रहेलां वस्त्र संथारा प्रमुख सर्व पडिलेहीने, पछी सर्व काजो**

शुद्ध करी जतनाथी परठववो; परठवतां अणुजाणह जस्सवग्गहो कहेवुं, परठव्या पछी त्रण वखत वोसिरे वोसिरे एम कहेवुं. पछी इरियावही तस्सउ० अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो पछी देववंदन करवुं (जुवो पृष्ट ४०६ मा) देव वांदी पछी जो रात्रि पोसह होय तो प्रतिक्रमणमां मांडला करवा तेनी विधि. खमासमण दइ इच्छाका० इरियावही पडिक्कमि काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पच्चक्खाण करावोजी, पछी खमासमण दइ थंडिलभूमि प्रमार्जुं. ते आ प्रमाणे,-पोसहमां वडोनीति, लघुनीति, परठववा योग्य शुद्ध भूमि निरीक्षण माटे चोवीस मांडला करवा ते नीचे प्रमाणे.

## ॥ प्रथम संथारा पासेनी जग्यायें ॥

आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे, ॥ १ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहिआसे ॥ २ ॥ आगाढे मज्झे ऊच्चारे पासवणे अणहिआसे ॥ ३ ॥ आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे दूरे ऊच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥

## ॥ उपाश्रयना द्वार मांहेनी तरफना ॥

आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहिआसे ॥ १ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहिआसे ॥ २ ॥ आगाढे मज्झे ऊच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे दूरे ऊच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ५ ॥ आगढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ ६ ॥

## ॥ उपाश्रयना द्वार बाहिर नजीक रहीने करे ॥

अणागाढे आसन्ने ऊच्चार पासवणे अणहिआसे ॥ १ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे ॥ ॥ ४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥

## ॥ स्थंडिलने स्थानके वेगला ॥

अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २ ॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ३ ॥ अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ५ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ ६ ॥ इति चोवीस मांडला संपूर्ण ॥

पछी इरियावही कही संध्या प्रतिक्रमण विधिथी करवुं, तेमां देवसियं आलोएमि, जो मे देवसिओ पाठ कही रह्या पछी, गमणागमण आलोवुं ? इच्छं कही इर्यासमिति १, भाषा समिति २, एषणा समिति ३, आदान भंडमत्त निक्खेवणा समिति ४, पारिष्ठापन समिति ५, मनोगुप्ति ६, वचनगुप्ति ७, कायगुप्ति ८, ए पांच समिति, त्रणगुप्ति ए अष्ट प्रवचन माता श्रावक तणे धर्मे पोसह सामायक मांहि, खंडन विराधना थइ होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं, पछी सात लाख० अढार पापस्थानक० चार विकथा० कहेवी, पछी. सव्वसवि० आ विधि पोसहवालाने देवसियं आलोएमि,

जोमे देवसियो० आ पाठ कह्या पछेनी छे, अने छुटाने तो, आठ प्रवचन मातानो पाठ न कहेवो ॥

## ॥ ६० अथ राइ संथारा विधि ॥

पहोर रात गया पछी खमासमण दइ, बहुपडिपुन्ना पोरसी, आदेश मांगी इरियावहि पडिक्कमि, प्रगट लोगस्स कही, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् बहुपडिपुन्नापोरसी; एम कही बेसीये. चउक्कसाय० चैत्यवंदन० नमुत्थुणं० जावंति० जावंत. बे गाथा कही अनंता सिद्धजीवने माहरो नमस्कार होजो कही; स्तवननो आदेश मागी नवकार, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, राइ संथारा मुहपत्ति पडिलेहुं ? एम कही मुहपत्ति पडिलेही, संथारभूमि पाट पडिलेहवी, पछी संथारे बेसीने संथारा पोरसी भणवी ॥

## ॥ ६१ अथ संथारा पोरिसी ॥

**अणुजाणह जिट्ठिज्जा, जिट्ठिज्जा निसिही नमो**
**खमासमणेणं गोयमाइणं महामुणीणं** पछी त्रण वखत नमस्कार अने [illegible]
**अणुजाणह परमगुरु गुणगण रयणेहि मंडिय सरीरा।**
**बहु पडिपुन्ना पोरसी राइयं संथारयं ठामि ॥ १ ॥**

अर्थः—हे परमगुरु ! मोटा गुणरूप रत्नोथी शोभायमान शरीरवाळा, मने आज्ञा आपो के हुं रात्रिनो संथारो करुं. केमके पोरसी पूर्ण थइ छे. १

**अणुजाणह संथारं बाहु वहाणेण वाम पासेणं।**
***कुक्कड पाय पसारण अतरंतो पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥***

**अर्थः**—हे गुरु ! मने संथारानी आज्ञा आपो. (पछी) डाबा पासे हाथना ओशीकावडे कुकडीनी पेठे पग प्रसारीने (सूइ) न शके तो भूमिनुं प्रमार्जन करे. २

**संकोइय संडासा उव्वट्टंतेय कायपडिलेहा ।**
**दव्वाइउवओगा ऊस्सास निरुंभणा लोए ॥ ३ ॥**

**अर्थः**—ढींचण संकोचीने पासु फेरवतां शरीरनुं पडिलेहण करे अने द्रव्यादिनो विचार श्वास रुंधीने करे. ( जेम के हुं कोण छुं ? क्यां छुं ? केवा समयमां छुं ? लघुनीति विगेरेनी बाधा छे के नहि ? विगेरे चिंतवे ).

**जइ मे हुज्ज पमाओ इमस्स देहस्सि माइ रयणीए ।**
**आहारमुवहिदेहं सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ४ ॥**

**अर्थः**—जो आ रात्रिमां आ शरीरनुं मरण थाय, तो आहार-उपधि अने शरीर ए सर्व हुं वोसिरावुं ( तजुं ) छुं.

**अरिहंतो महदेवो जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।**
**जिण पन्नत्तं तत्तं इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ ५ ॥**

**अर्थः**—अरिहंत मारा देव, यावत् जीव पर्यन्त सुसाधुओ गुरु अने जिनेश्वरे कहेल तत्त्व. ए प्रमाणे में सम्यक्त्व ग्रहण कर्युं छे. ५

**( पछी चत्तारीमंगलं पूर्ण कहीने )**

**चउरंगो जिणधम्मो न कओ चऊरंग सरणमविनकयं ।**
**चऊरंग भवुच्छेओ,न कओ हा हारिओ जम्मो ॥ १ ॥**

**अर्थः**—चार अंगवाळो जिनधर्म न कर्यो, चार प्रकारनुं शरण न कर्युं अने चार प्रकारना भवनो नाश पण न कर्यो, अरे रे ! आ जन्म फोगट हारी गयो. १

**अरिहंत सिद्ध साहू केवलि कहिओ सुहावहो धम्मो ॥**
**एए चउरो चउगइ हरणो सरणं लहइ धन्नो ॥ २ ॥**

**अर्थः**—अरिहंत–सिद्ध–साधु अने केवळी भगवन्ते कहेलो सुखकारी धर्म ए चार, नरकादि चार गतिना हरनार छे. तेनुं शरण जे धन्य पुरुष होय ते पामे छे. २

**पाणाइवाय मलियं चोरिकं मेहुणं दविणमूच्छं ।**
**कोहं माणं माया लोहं पिज्जं तहा दोसं ॥ ३ ॥**

**अर्थः**—प्राणातिपात–मृषावाद–चोरी–मैथुन–द्रव्यनी मूर्च्छा (परिग्रह)–क्रोध–मान–माया–लोभ–प्रेम तथा द्वेष. ३

**कलहं अब्भक्खाणं पेसुन्नं रइअरइ समाऊत्तं ।**
**परपरिवायं माया मोसं मिच्छत्त सल्लं च ॥ ४ ॥**

**अर्थः**—कलह ( कजीओ, जुठुं आळ, चाडी, प्रीति–अप्रीतियुक्त परनिंदा, माया ( कपट ) युक्त मृषा भाषण अने मिथ्यात्वशल्य. ४

**वोसिरिसु इमाइं मुक्खमग्ग संसग्ग विग्घ भूयाइं ॥**
**दुग्गइ निबंधणाइं अट्ठारस पावठाणाइं ॥ ५ ॥**

**अर्थः**—आ अढार पापस्थानको मोक्ष मार्गनी प्राप्तिमां विघ्नभूत छे अने दुर्गतिना कारण छे, माटे तेमनो त्याग करवो.

**( आ पछी सातलाख० कहेवा ते पछी )+**

**एगोहं नत्थि मे कोइ, नाह मन्नस्स कस्सइ ।**
**एवं अदीणमणसो अप्पाण मणु सासइ ॥ १ ॥**

---

+ पण अढार पापस्थानक तथा चार विकथा न कहेवी.

**अर्थः**—हुं एकज छुं, मारुं कोइ नथी अने हुं पण कोइनो नथी. एम दीनतारहित मनवाळो थइने पोताना आत्माने शिक्षा आपे. १

**एगो वच्चइ जीवो, एगो चेव ऊवज्जई।**
**एगस्स होइ मरणं, एगो सिज्जइ नीरओ ॥ २ ॥**

**अर्थः**—आत्मा एकलोज परलोकमां जाय छे, एकलोज उत्पन्न थाय छे, एकलानुंज मरण थाय ने एकलोज कर्मरहित थइ मोक्ष पामे. २

**एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ।**
**सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ ३ ॥**

**अर्थः**—ज्ञान–दर्शन युक्त एक मारो आत्माज शाश्वत [ नित्य ] छे, बाकीना मारा बाह्यभावो छे, ते सर्वे संयोगथी प्राप्त थया छे. ३

**संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा।**
**तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ४ ॥**

**अर्थः**—संयोग जेनुं मूळ कारण छे एवी दुःखोनी परंपरा आ जीवे प्राप्त करी छे, माटे सर्व संयोग संबंध त्रिविधे वोसिरावुं छुं–तजुं छुं ४

पछी नवकार गणवा, संसार स्वरूप भाववुं, अर्थ विचारीए, निद्रा टाळवानी खप करवी. **॥ इति रात्रि संथारा विधि ॥**

पाछली राते उठी इरियावहि पडिक्कमि राइ पडिक्कमणुं करवुं, ते विधि पूर्वे जेम लखी छे ते प्रमाणे जाणवी; पछी पडिलेहण (जुवो पृष्ठ ४०४) करी सज्झाय करवी, पछी देव वांदवा (जु. पृ. ४०६) इच्छामि० इच्छाका० इरियावहियं पडिक्कमामि एम कही इरियावहि पडिक्कमि काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी पोसहपारवा मुहपत्ति पडीलेही इच्छामि०

इच्छाका० पोसह पारु ? इच्छामि० इच्छाका० पोसह पुरुं एम कही नवकार गणी पोसह पारवानी गाथा कहेवी.

## ॥ ६२ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

**सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो ।**
**जेसिं पोसहपडिमा, अखंडिया जीवियंतेवि ॥ १ ॥**

**अर्थः**—सागरचंद्र, कामदेव, चंद्रवतंसक अने सुदर्शन शेठ (विगेरेने) धन्य छे, के जेमनी पौषधप्रतिमा जीवितना अंते पण अखंडीत रही. १

**जे तव सोसियकाया, ते सव्वे हुंति संथुआ जाया ।**
**आणंदकामदेवा, सुसावया दस वि ते धन्ना ॥ २ ॥**

**अर्थः**—जेमणे तपथी काया शोषवी छे, ते सर्वे स्तववा योग्य छे, तथा आनंद—कामदेव विगेरे दस सुश्रावकोने पण धन्य छे. २

**धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंदकामदेवा य ।**
**जेसिं पसंसइ भयवं, दढव्वयं तं महावीरो ॥ ३ ॥**

**अर्थः**—सुलसा—आनंद अने कामदेव श्रावक धन्य छे, तेओ वखाणवा योग्य छे के जेमना दढव्रतनी भगवान महावीरे प्रशंसा करी. ३

**पोसहेसु सुहे भावे, असुहाइ खवेइ नत्थि संदेहो ।**
**छिंदइ तिरिनिरयगइ, पोसहविहि अपमत्तो य ॥ ४ ॥**

**अर्थः**—पौषधमां शुभभावे वर्तता अशुभ कर्मो खपावे एमां संदेह नथी; वळी तिर्यंच अने नरकगति पण प्रमाद रहित पौषध करवाथी छेदे छे. ४

**पोसह सामाइय, संठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ।**
**सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफलहेउ ॥ ५ ॥**

**अर्थः**—पौषध अने सामायिकमां रहेला जीवनो जे काळ जाय छे ते सफळ छे, बाकीनो काळ संसार फळ हेतु जाणवो. ५

पछी इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायक पारुं ? इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायक पुरुं. पछी एक नवकार गणी सामाइयवयजुत्तो कहेवो. पछी त्रण नवकार गणवा. ॥इति श्री पोसह विधि समाप्त॥

## अथ पच्चक्खाणानि.

## ६३ पुरिमड्ढ अवड्ढनुं पच्चक्खाण.

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

## ॥ ६४ एकासणा बियासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं पोरिसिं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं; पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एगासणं बियासणं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ ॥

## ६५ ॥ आयंबिलनुं पच्चक्खाण. ॥

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं साढपोरिसिं, पच्चक्खाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ आयंबिलं पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, एगासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ ॥

## ६६ ॥ तिविहार उपवासनुं ॥

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणहार पोरिसिं, साढपोरिसिं पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ ॥

## ६७ ॥ चउव्विहार उपवासनुं ॥

सूरे उग्गए अब्भत्तठ्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिठ्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

## ॥ अथ सांजना पच्चक्खाण ॥

## ६८ ॥ पाणहारनुं पच्चक्खाण ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ इति ॥

## ६९ ॥ चउविहारनुं पच्चक्खाण ॥

दिवसचरिमं, पच्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

## ७० ॥ तिविहारनुं पच्चक्खाण ॥

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

## ७१ ॥ दुविहारनुं पच्चक्खाण ॥

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ । दुविहंपि, आहारं, असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

## ७२ ॥ चउदनियमनुं पच्चक्खाण ॥

देसावगासियं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ । अन्नत्थणाभोगेणं; सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥इति॥

## ७३ ॥ अथ मुट्ठिसहियं गंठ्ठसहियंनुं पच्चक्खाण ॥

मुठिसहियं गंठिसहियं पच्चक्खामि, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्व-समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

## ॥ ७४ अथ देशावगाशिक पच्चक्खाण ॥

अहन्नभंते तुम्हाणं समिवे देसावगासियं पच्चक्खामि तं जहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं देशावगासियं खित्तओणं इत्थं वा अन्नत्थं वा कालओणं मुहुत्तपरिमाणं जाव धारणापमाणं पज्जुवासामि भाव-ओणं जावगहेणं नगहिज्जामि जावछलेणं नछलिज्जामि अन्नेण केण रोगायं-केण वा, परिणामो न परिवडइ ताव मे अभिगहो अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सा-गारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति ॥

## ७५ ॥ श्री आदि–अजित–श्रीशांतिनो स्तवन ॥

आदि अजित श्रीशांतिनो, दीठो दरिसण आज ॥ जाणिक जय-वंता मिल्या, सीधां सवि काज ॥ १ ॥ त्रिजगजीवन जिन भेटिये, थयो हरख अपार ॥ ए संसार असारनो, लाधो एहिज सार ॥ त्रि० ॥२॥ वंश इख्यागे राजीयो, नृप नाभिमल्हार ॥ माता मरुदेवा उरे, धन धन अवतार ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ अढार सहस सीलंगरथे, सोहे धोरी धीर ॥ वृषभलंछन तिहां आवियो, समरथ गंभीर ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ जितशत्रु विजया कुलतिलो, स्वामि अजिअ जिणंद ॥ सौम्यकला ससियर जिसो, दीपे तेजे दिणिंद ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ गयलंछण धनु च्यारसे, साढा देह प्रमाण ॥ तसु दिन दिन दीपे कला, माने जे जग आण ॥ त्रि० ॥६॥ तीर्थंकर जग सोलमो, मृगलंछन एह ॥ त्रीस अधिक दश धनुषनो,

सो परिमाणे देह ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ गर्भ छतां गुण एहवा, शांतिकरण श्रीशांति ॥ पूरो आशा अम तणी, टालो भवभयभ्रांति ॥ त्रि० ॥ ८ ॥

॥ कलश ॥ इम जिनचउवीसे, प्रतिमा दीसे, आदि अजित श्रीशांतिजिन ॥ जसु वासे पउमा, च्यारे पडिमा, आणी हियडे भाव घण ॥ महिमागुणसुंदर, धीरिममंदर, मतिमंदिर त्रिभुवनधणी ए ॥ जे जिनवर वंदे, ते चिरनंदे, श्रीपार्श्वचंद्रसूरि संथुणीए ॥

## ७६ शान्तिनाथ स्तवन. ( राग—रखीया बंधावो भैया. )

शान्ति प्रभुनी सेवा, करी गुण गावो रे, अरिहंत ध्यावो भैया, कुमति हठावो रे. ( टेक. ) विश्वसेनराय पिता, अचिरादेवी माता; पूजो देवाधिदेवा, शिवसुख पावो रे. ॥ शान्ति० ॥ १ ॥ माताने गर्भे आया, मारी रोग निवार्या; प्रभुना प्रभाव एवा, सेवी लो लावो रे, ॥शान्ति०॥२॥ भावे वंदन करीए, भावशत्रु हरिए, तेथी शीवपद मेवा, वेगेथी पावो रे. ॥ शान्ति० ॥ ३ ॥ पार्श्वचन्द्रसूरि, गुण गणना भूरी, सहज राजेश देवा, एक चित्त ध्यावो रे. ॥ शान्ति० ॥ ४ ॥ मंगळ माळा वरवा, सरवे दुःख हरवा, परम पदने लेवा, भवसागर नावो रे. ॥शांति०॥५॥

## ७७ श्री पार्श्वनाथ स्तवन. ( मीठा लाग्या छे—ए देशी )

नीरखी श्री पार्श्वतणी, मूरति मन मोहनी, आतम थयो उजमाल रे, जिनराज मुजने संभारजो, कृपानिधि भवने हठावजो ॥ १ ॥ मुगट कुंडल दोय, दीपे रळीआमणा, कंठे हीरा तणा हार रे ॥ जिन० कृपा० ॥ २ ॥ समये समये प्रभु, स्मरण कर्ता, आनंद प्रगटे अपार रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ प्रशम रसे प्रभु, ध्यान लगायो, करुणा रसे गरकाव रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥ देदार देखी प्रभु, निरागी निर्मोही, भव्यो थया

अवधार रे ॥ जिन० ॥ ५ ॥ सूरि सागरचन्द्र, शिष्य वृद्धिचन्द्र, नमे प्रभुने वारंवार रे ॥ ६ ॥ जिन० कृपानिधि० ॥७॥

**७८ श्री पार्श्वनाथ मंत्र गर्भित स्तवन** (देशी—चालती अने त्रुटकनी)

**सकल सदा फल चिंतामणी समो, नवरंग नारंग पास भविक नमो. ॐ नमो भावे पास ध्यावे नाथ श्री श्री भगवती, धरणेंद्र पद्मावतीय माया बीजराया संजुती; अट्टेय मट्टे क्षुद्र विघट्टे क्षुद्रान्थभय थंभया, वाजंती भूंगल दूरि मयगल चूरि अष्ट महाभय ॥ १ ॥ आशा पूरे पास पंचासरो, श्री वरकाणो पास संखेश्वरो. संखेश्वरो श्री पास थंभण, गोडी मंडण नाहलो, नवखंड श्री कलि कुंड, इण जग जागतो जीराउलो; जागतो तीरथ हरे, अनरथ पास समरथ तुं धणी, हवे चडो म्हारे विघ्नभयहर, सारकर तिहुअण तणी ॥ २ ॥ कुरु कुरु वंछित नवनिधि संपदा, स्वाहा पदस्युं टाले आपदा. आपदा टाले राजपाले, पास त्रिभुवन राजीओ, कलिकाल मांहि पास नामे, मंत्र महिमा गाजीओ; दारिद्र चूरे आस पूरे पास तुं जगदीश ए, चरण प्रमोद तसु शिष्य जंपे, पूरइ संघ जगीस ए ॥ ३ ॥**

**७९ श्री पार्श्वनाथ ( २१ नाम गर्भित ) स्तवन.**

( आतो लाखेणी आंगी कहेवाय—ए राग )

प्रभु पार्श्व ते प्रेमे नमाय, शोभे जिनवरजी; भक्तिभावे ते भावना भवाय, शोभे जिनवरजी; पूजा आंगी ते सुंदर रचाय, शोभे जिनवरजी; टेक० (आंतरो) प्रभु चमत्कारे बहु नाम स्थपाय; भवि भयो स्थंभि, पार्श्व

स्थंभन कहेवाय, एतो नवपल्लव निरखाय, ॥ शोभे जिन० ॥ १ ॥ (आंतरो)-गोडी वाडलीया, वळी शंखेश्वरा; सेवुं चिंतामणि, पूजु अजाव्हरा, एतो गंभीरागुणे सोहाय, ॥ शोभे जिन० ॥ २ ॥ भीडभंजन फलोधी, नमु भीलडीया; वरकाणा कंशारी, सोहे सामळीया, एतो अंतरीक नवखंडा नमाय; ॥ शोभे० ॥ ३ ॥ जगवल्लभ शेरीसा, जिन अमीजरा, मन मोहन पार्श्व, प्रभु पंचासरा; एतो लोडण पार्श्व देखाय ॥ शोभे० ॥ ४ ॥ भ्रातृसागर सूरीश्वर, सेवि सदा, बृद्धि विनति स्वीकारो, आजे मुदा, एतो निरमल भावे सेवाय. ॥ शोभे० ॥ ५ ॥

## ८० जगडीआ मंडन-श्रीरुषभदेव स्तवन देखी श्रीपार्श्वतणी०

मंगलकारि प्रभु रुषभदेव ते, दीठा जगडिआ माय रे; आदि देव सेवक संभारजो, कृपानिधि आत्म उगारजो. टेक. ॥ १ ॥ सुन्दर जिनालय शोभे छे सारुं, पधराव्या प्रभुजी ते माय रे. ॥ आ० ॥ २ ॥ ध्यानस्थ मूर्ति, श्री रुषभदेवनी, नीरखिने मन मलकाय रे. ॥ आदि० ॥ ३ ॥ मातृ वच्छल प्रभु, आप कहावो, उगार्या श्रेयांस राय रे. ॥ आदि० ॥ ४ ॥ सिधि सुखोने, भोगवता भारी, अजर अमर पद पाय रे. ॥ आ० ॥ ५ ॥ ओगणीसे सताणुं, चैतर मासनी, वदि सातमे कराय रे. ॥ आ० ॥ ६ ॥ प्रभुजी भेटीने, स्तवना करीए, बृद्धिचंद्र हरखाय रे. ॥ आ० ॥ ७ ॥

## ८१ जिनेंद्र स्तवन ( भावना. )

नाथ ! मुने निर्बळ जाणी निभावो, तुज पर दीन दासनो दावो; नाथ ! मने निर्बळ जाणी निभावो. ॥ १ ॥ भवसागरमां कष्टनो भडकुं,

शोध्यो जडे नहि आरो; आभमां काळा वादळ उमट्यां, क्यारे मळशे किनारो ? नाथ! मने निर्बळ जाणी निभावो. ॥ २ ॥ डगमग डगमग डोलतो नैया, गुरु ! हलेसां मारो, संकटमां मने शरणुं तमारुं, संसार पार उतारो; नाथ ! मने निर्बळ जाणी निभावो. ॥ ३ ॥ मंदमतिनो हुं कांइ न समज्यो, देहथी नेह वधार्यो, स्नेही, सबंधी, सगाव्हालामां, तुजने छेक विसार्यो; नाथ ! मने निर्बळ जाणी निभावो. ॥ ४ ॥ सूरज चांदो तेजथी छल्के, एक किरण दरशावो, दिलमां उछळे सिंधु दयानो, एक बिंदु वरसावो; नाथ ! मने निर्बळ जाणी निभावो. ॥५॥ दुरीशन आपो दीनदयाळु प्रभु, **विद्याचंद** विनवे ओथ विनानो, दीन दयाळ शरणागत वत्सल, भेरु पंथ भूल्यानो; नाथ ! मने निर्बळ जाणी निभावो. ॥ ६ ॥

## ८२ श्री सद्गुरुनी स्तुति.

शांति जिणंद प्रणाम करी, अहनिश निज चित्त प्रमोद धरी, पाप पडल सवि दूर हरी, सूरिपार्श्वचंद्र थवशुं हरखभरी ॥१॥ सूरिशिरोमणी जग राजे, जसु सद्गुरु साहूरयण छाजे, वडतपगच्छ नायक गाजे, सवि अरिहंत केरादल भाजे. ॥ २ ॥ शास्त्र सकल लघुपणे जाणे, वळि देव प्रभावे मेह आणे, रायराणा जेहने प्रणमे, पूज्य आगळ हीयडे मदनाणे ॥ ३ ॥ शीख लही सद्गुरु पासे, ग्रही संजम समता मनवासे, उत्तम लक्षण जसु तनु भासे, नर नारी गुण गावे रासे ॥४॥ गुर्जर मरु मालव देशे, प्रतिबोध्या भवियण उपदेशें, कुमति

मिथ्यात्व न रहे लेशे, जिन मारग सुधो सम वेसे. ॥ ५ ॥ नयर जोधाणे अनुक्रमे आवे, लही अणसण सुरनी गति पावे, संघ मिली पगलां ठावे, जसु जात्रा दिशो दिशथी आवे ॥६॥ पूज्य थूंभ भली महिमा परसे, सेवक घर कमला केलि करे, परघर पुण्य भंडार भरे, जसु कीरति चिहु दिश काज सरे ॥ ७ ॥ आतुर अरति रोग सोग समे, भय सात सहि ततकाल गमे, अडवी पड्या जे पूज्यजी नमे, ते कुशल कल्याणे पंथ क्रमे. ॥ ८ ॥ जे गुरु चरण कमळ ध्यावे, सुत वंछे ते नर सुत पावे, अष्ट महासिद्धि घर लावे, दुःख सायर उत्तरि तट जावे. ॥ ९ ॥ वयर विरोध सन्ताप टले, गुरु समर्या वेरीना मान टळे, नवि भूत व प्रेत पिशाच छले, ग्रह गोचर भूडा जाय विले. ॥ १० ॥ नयर जोधाणे शोभा सुणी, वली नागोर बीकानेर पूजा घणी, सानिध करो पूज्यजी संघभणी, मुनि मेघराज भणे सुख लाभ गणी ॥११॥

## ८३ श्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वरजीनो छंद.

(हरिगीत छंद)

श्रीपार्श्वचंद्र सूरींद नागपुरींद तपगण नभमणी, तसपट परंपर गण धुरंधर हेमचंद्रसूरि गुणी; निर्ग्रंथ गुरु तस पाट राजे आज गाजे मुनिवरा, भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्रसूरीश्वरा ॥१॥ छे शांत दांत महंत किरियापात्र समता-सागरु, पंडित प्रवर विद्वान बुद्धिनिधान विद्याआगरु, अघ-

ओधवारक महाप्रभावक धर्मधोरी धुरंधरा, भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्रसूरीश्वरा ॥ २ ॥ छे भव्य आकृति धर्म मूर्ति प्रभु तुल्य मनोवृत्ति, तव तेज दीपे कदि न छीपे भाग्यनी चडती रति, वळी शरद शशि सम सौम्य कांति शांतिवान शुभंकरा, भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा. ॥ ३ ॥ गुरु गच्छनायक ज्ञानदायक संघमां लायक मुदा, गतराग रोष न दोष जरिए तोष सुख दुःखमां सदा, छत्रीस गुणगण युक्त सूरीश्वर चरण गुणथी अलंकर्या, भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा ॥ ४ ॥ जिनभाण अस्त थतां सूरीश्वर ज्ञानदीप प्रकाशता, मिथ्यांधकार विकार टाळी भविकजन प्रतिबोधता; शुभ छंद सांकळचंद कहे पावन करी भारतधरा, भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा. ॥५॥

## ८४ आचार्य० दे० श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वरगुणनी सज्झाय.

॥ अरणीक मुनिवर चाल्या गोचरी-ए राग ॥

सुगुण सनेहारे घडीय न विसरे, श्रीभ्रातृचंद्र सूरिराजरे, शासन सुधोरे स्वर्ग सिधावियो, क्यां प्रगट्यो दिन आज रे ॥ सु० ॥ १ ॥ भुज मुनि भक्ति शशि संवत्सरे ( १९७२ ), कृष्ण पक्ष वैशाखे रे, अष्टमी रात्रे रे राजनगर विषे, अस्त दीपक थयो दाखे रे ॥ सु० ॥२॥ ज्ञानदिवाकर आज डुबी गयो, मध्यवये शुभ ध्याने रे; स्वपर समय जाण गुरु क्यां

गया ? निश्चय देव विमाने रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ भारतभूषण गतदूषण गुरु, समता सागर धीर रे; मिथ्यामत घनघोर विखेरवा, अप्रतिबद्ध समीर रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पंखी मेळो रे तजी शिष्य वर्गनो, हंसराज गयो उडी रे; निरागीथी रे रागनी रीतडी, प्रीत अनित्य ए कुडी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ धर्म प्रासादनो भांग्यो थांभलो, त्रुटी पुण्यनी पाज रे, गिरुवा गुणनिधि गीतारथ गया, सकल मुनि शिरताज रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ भव्य स्वरूप तपतेज दिवाकरु, गौरवर्ण गुरुराज रे; कंचन वरणी रे काया गुरु तणी, भवोदधिमां गुरु झाझ रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ सौम्य शीतलता रे चन्द्र समानता, सागर सम गंभीर रे; अमीय कचोळां रे नेत्र बे निर्मळां, वयण खरे फूल वीर रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जंगमतीरथ सुरतरु साह्यबो, मुनिपति करुणासिंधु रे; परमपुरुष परमारथ पुतळु, निष्कारण जग बंधु रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ धर्मधुरंधर धोरी भांगीयो, रथडो दड पडयो घाडो रे; वळी कोइ एवो रे सद्गुरु पाकशे, काढशे खुंत्यो गाडो रे ॥ सु० ॥१०॥ सेवक कहीने रे कोण बोलावशे ? कोण करशे संघ साज रे ? पाप ताप हवे कोण निवारशे ? क्यां सरशे हवे काज रे ? ॥ सु० ॥ ११ ॥ वहेला मोडा रे सौ संसारमां, संचरवुं ए वाटे रे; पण गुरु निजपर कारज साधिने, कर्म निकाचीत काटे रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ समरण करतां रे ए सूरिराजनुं, मटे पाप संताप रे, स्वप्नमां मळजो रे एक दिन साह्यबा, सांकळचंदने आप रे ॥सु०॥१३॥

## ८५ आचार्यदेव श्री सागरचंद्रसूरीश्वरजीनी स्तुति

( आतो लाखेणी आंगी कहेवाय, शोभे जीनवरजी–ए राग )

आ तो आचार्य देव कहेवाय, शोभे सूरीश्वरजी;
शुद्ध संयमथी कर्मो दलाय, शोभे सूरीश्वरजी,
महीयले विचरी भव्यो तराय, शोभे सूरीश्वरजी. टेक

(आंतरो)–भाव शत्रुओ दळवा तत्पर रहे,
द्रव्य शत्रुओ देखीने वैराग्य वहे;
जाणे सूर्योमां सूरि सोहाय, शोभे सूरीश्वरजी. १

(आंतरो)–जिनवाणी वडे भवि भवो दहे,
शुद्ध समकित दइ शुभ मार्गे वहे;
जाणे ज्ञानमां गुरु मलकाय, शोभे सूरीश्वरजी. २

(आंतरो)–गुरु वाणी सुधा नित्य भवि ग्रहे,
जंगम कल्प जाणी गुरु सेवा वहे;
ए तो निरमल नयणे निरखाय, शोभे सूरीश्वरजी. ३

(आंतरो)–गुरु भक्तिना उत्तम जे कार्यो करे,
नित्य शुद्ध भावे शुभ गति वहे;
ए तो पुन्य दीपक प्रगटाय, शोभे सूरीश्वरजी. ४

(आंतरो)–सूरि सागरचन्द्रजी गुरु अनोपम,
वृद्धि वंदन स्वीकारो आजे शुभोपम;
भवि कुमुदो सहे जे विकसाय, शोभे सूरीश्वरजी. ५

## ८६ आचार्यदेव श्री सागरचंद्रसूरीश्वरजीनी सज्झाय

( सुगुण सनेहा रे घडीय न वीसरे–ए राग )

सागरचंद्रसूरीश्वर क्यां गया, मुकी सौ समुदाय रे; भव्योधारक गुरुवर आप छो, आवो अम मन माय रे ॥ सागर० ॥ १ ॥ वैराग वासीत वाणी सुणावीने, तार्यां केइ नरनार रे; तुम उपगार न भूले भविजनो, भक्तिने भजनार रे ॥ सागर० ॥ २ ॥ भाडीआ गामे जन्म्या गुरु तमे, शुभ पुन्ये पाम्या नाण रे; उत्तम दीक्षा खंभात नगर विशे, आपे भ्रातगुरु नीज हाथे रे; ॥ सागर० ॥ ३ ॥ ज्ञानी ध्यानी चारित्र चूडामणी, उत्तम गुणे गुरु गाजे रे, संघ सकळने भाव घणो थयो, अर्पवा पद सौ साजे रे ॥ सागर० ॥ ४ ॥ चतुर्विध संघ मळी सौ भावथी, राजनगरमां आवे रे; भ्रात सूरीश्वरनी पाटे स्थापना, सागरचंद्रमुनिने भावे रे ॥ सागर० ॥ ५ ॥ ध्रांगध्रा गामे सूरिजी पधारीया, वरसावी अमृत वाण रे; आयु कर्म ते पुरण भोगवी, गया स्वर्गे स नाण रे ॥ सागर० ॥ ६ ॥ विसरे न घडी पल सूरि तुम नाम जे, सागर सम गंभीर रे;अम मन भमरा ते पुष्प खरी जता, दुःख माने जंजीर रे ॥ सागर० ॥ ७ ॥ स्वप्नमां आवो रे आप दया करी, सेवकने संभारी रे; वृद्धिचंद्रनी विनती स्वीकारजो, महेर करी उपगारी रे ॥ सागर० ॥ ८ ॥

## ८७ स्व० गणिवर्यश्री जगतचंद्रजी महाराजकी स्तुति

( जिनने क्राडो० देशी )

जगतचंद्र तपस्वो मुनिने कोटी नमन, मुनिने कोटी नमन. देशलपुरमां जन्म ज लीधो, साल १९३५ सीधो, श्रावक कुल अभिराम. ॥ मुनिने. ॥ १ ॥ पिता रायशीभाइना नंदन, माता नेणबाइ गुणकंदन, तस कुखे अवतार. ॥ मुनिने. ॥ २ ॥ बाळपणे संयमना रागी, आत्मकल्याणनी लगनी लागी, करे धर्म अभ्यास. ॥ मुनिने. ॥ ३ ॥ ओगणीसे पंचावन साले, फागण वदी १० शुभवारे, संयम ले सुखकार. ॥ मुनिने. ॥ ४ ॥ भ्रातृचंद्र सूरीश्वर हाथे, वासक्षेप नंखाव्यो माथे; दिक्षा अंजार गाम. ॥ मुनिने. ॥ ५ ॥ धारशीभाइना नंदन जाणो, दामजीभाइ छे गुणखाणो; कर्यो दिक्षा महोत्सव. ॥ मुनिने. ॥ ६ ॥ अखंड ब्रह्मचारी रहीने, शुद्ध मने चारित्र वहीने, सार्यो आतम काम. ॥ मुनिने. ॥ ७ ॥ अरिहंत प्रभुनुं ध्यानज धरता, समता भावमां मन रस बसता, पाम्यां स्वर्ग सदन. ॥ मुनिने. ॥ ८ ॥ ओगणीसे सत्ताणुं साले, वैशाख सुदि चोथ बुधवारे, देह छोड्यो उनावा गाम. ॥ मुनिने. ॥ ९ ॥ नाथ विनानो कर्यो परीवार, सफल कीधो निज अवतार, हवे अम कोण आधार. ॥ मुनिने. ॥ १० ॥ भीडभंजन पारस दरबारे, अट्ठाइ ओच्छव कीधो भारे. संघ मळीने साज. ॥ मुनिने. ॥ ११ ॥ उन्नीसो सत्ताणु वर्षे, विजयादशमी मंगळवारे, चरण स्थाप्या ते गाम. ॥ मुनिने ॥ १२ ॥ जगतचंद्रजी गुरु अमारा, विद्याचंद्र करे गुणगान तमारा, वंदन करीने विराम. ॥ मुनिने. ॥ १३ ॥

—: समाप्त :—

# श्री परम पू. गुरुदेवोनी–स्तुतिः॥

(स्रग्धरा–वृत्तम्)

श्रीमत्पार्श्वेन्दुसूरिस्सकलमुनिजनैरर्च्य पादारविन्दो,
भक्तेभ्यस्सत्प्रबोधं सपदि भवगदच्छेदशक्तिं ददानः॥
सोऽयं गच्छाधि नाथो जयति जिनमते भव्य सौभाग्यकीर्त्ति,-
स्तं भक्त्या भो पुमांसो नमत नतिगुणश्रेणीपंतत्त्वधीशम् ॥१॥

श्रीमद्विद्यावतंसाः शमदमसहिताबाल भावाद्विरक्ता,
ज्ञानाभ्यासे प्रवृत्तानिखिलजनमनो हर्षदाःस्वैर्गुणौ घैः।
मध्यस्था मान्यवाक्या दलितमदबला भ्रातृचन्द्राभिधाना,-
सारुण्ये तीर्णमोहा निरुपमचरिताः सूरिराजा जयन्तु ॥२॥

— शार्दूलवीक्रिडीतवृत्तम —

श्रीपार्श्वप्रभुपादपद्ममधुलिड् जातः सदा सेवया,
श्री जैनेंद्रमुखाब्जनिस्सृतवचो वीस्तारितं श्रेयसे।
संसाराब्धि नियामकं बुधवरं देवैःसु सं पूजितं,
तं सूरिं सुखदं भजे गुरुवरं चंद्रोत्तरं सागरम् ॥३॥

(शीखरीणि – वृत्तम्)

सुरनरऋषिसेव्यो सर्वदोषैर्विमुक्ते
भवजलधितरौही साधु भृङ्गः सुयुक्ते
तवचरणसरोजे कोटिशो मे प्रणामः
हृदि वसतु गुणिन मे श्रीजगचंद्र देव ॥४॥

---